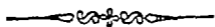


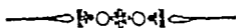
जैनधर्म सवधीगपेला पुस्तकोनु सूचीपत्र.

- १ श्री जैन धर्म ग्यान प्रदिपक पुस्तक किमत १॥ रुपया
- २ जैन धर्म सिद्धांतसार पुस्तक किमत १। रुपया
- ३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किमत १२ घ्राणें
- ४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किमत १। रुपया
- ५ चंदरानाको रास किमत १ रुपया
- ६ लक्ष्मण भोष नाट किमत १२ आणा
- ७ श्रीपाल रामाकोरास चार खडको किमत १० आणें
- ८ जैन शिल्लोका संग्रह किमत ९ घ्राणें
- ९ मानतुंग मानवतीकोरास किमत ८२ आणें
- १० रतनकवरकी चोपाई किमत ४ घ्राणे
- ११ मक्तामर स्तोत्र किमत ९ घ्राणें
- १२ घन्ना साळमद्र शैठकी चोपाई किमत ४ आणें
- १३ मगळ कळसकी चोपाई किमत ४ आणें
- १४ देवकी राणीको रास (छे भाइनो रास) कि० ४ आणें
- १५ लिलावती राणीकी चोपाई किमत ४ आणें
- १६ अमरसेन जयसेन रामाकी चोपाई किमत ४ आणें
- १७ चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किमत ४ आणें
- १८ परदेशी राजाको रास किमत ४ आणें
- १९ कवचघ्ना शाहको रास किमत ८४ आणें
- २० महिपती रामा अने मत्तिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४ आणें
- २१ कानड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंध रास किमत ८४ आणें
- २२ स्यात्र पूजा तथा वीस धानकनी पूजा किमत ४ आणें
- २३ स्तवन संग्राय संग्रह प्राग पहीला किमत ४ आणें
- २४ मेणरहयानी चोपाई किमत २ आणें
- २५ पांचपदारी मोठी वदना किमत १ आणें
- २६ करकडू आदि चारराभाका चाररास किमत ९ घ्राणें
- २७ एलापुत्रकी चोपाई अने विमेशेठनो रास किमत ४ घ्राणे
- २८ श्री जैन काव्यमाला [घ्याठ प्राग] किमत १ रुपया
- २९ श्रीरामलक्ष्मणनीको रास किमत १। रुपया
- ३० श्री विषय रतन प्रकाश किमत १२ घ्राणा
- ३१ हंसराम बडरामको रास किमत ९ घ्राणा
- ३२ हरीचंद रामाकी चोपाई किमत ४ घ्राणें

॥ श्री अरिहंत परमात्मनेज्योनम ॥



॥ अथश्री हरीवस प्रवध ढालसागर लिख्यते ॥



दुहा ॥ श्री जिन आदिजिनेसरु, आदि तणी
किरतार ॥ युगलाधर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार
॥ १ ॥ शांति सकल सुखदायक, शातिकरण, संसार ॥
अरति असुख दुख आपदा, चारे निवारण हार
॥ २ ॥ नेमनाथ मति निर्मलि, अनमि नमाणव देव
॥ बालब्रह्मचारी प्रज्जु, सुरनरसारे सेव ॥ ३ ॥ पार्श्व
पार्श्व सारिखो, सुख सपति दातार ॥ ऋद्रुपद्रव टा
लणो, नामे सदा जयकार ॥ ४ ॥ वीरस्वामी त्रिजुव
न तिलो, गुणमणिनो जडार ॥ तिर्थेकर चउविसमो,
शासणरो सिरदार ॥ ५ ॥ काल अतिते जे हुवा, वर्तमान
जिन ईश ॥ कोडी दोय केवल धरा, चरण नमु निसदी
स ॥ ६ ॥ गणहर गौतमगुण निलो, गौतमगुरु यो नाम
॥ गौतमगुरु सर्वमे वडो, गौतम करु प्रणाम ॥ ७ ॥ का
मधेनु गौ शब्दथी, तते तरु सुरवृक्ष ॥ ममेयु मणि
चिंतामणि, गौतमस्वामी प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ देश देशांत
र काइ जमो, मूरखलोक अजाण ॥ घर देठा हरीपू
रिसो, गौतम केरो ध्यान ॥ ९ ॥ ब्रह्माणी ब्रम्हा सु
ता, सारद मात प्रणाम ॥ करी मागु मति निर्मली,
जीम पामु कवि नाम ॥ १० ॥ कविवाणि वारु कही,

जस तूठि तुं माय ॥ तुऊ तूठा विण बोलणो, मूरख
 माहि कहाय ॥ ११ ॥ पढे गुणे मति आगलो, रास
 सजा सनमान ॥ लहेनिवाजा ताहरा, मोटप मेरु स
 मान ॥ १२ ॥ मात मया करी सांजलो, सेवकनी अ
 रदास ॥ तिमकर जिम पोहचे सहि, माहरा मननी
 आस ॥ १३ ॥ गुरु नमीए गुरुतानणि, गुरुविण गु
 रुता नाहि ॥ गुरुजनने प्रगटो करे, लोक त्रिलोका
 मांदि ॥ १४ ॥ गुरु कारीगर सारिखा, टाके वचन प्र
 हार ॥ पथ्यरथी प्रतिमा किया, पूजा लहे अपार
 ॥ १५ ॥ अंधकार अज्ञानता, ज्ञान सलाइ सार ॥
 फेरी किया जग देखता, धन्य गुरुना उपगार ॥ १६ ॥
 तिर्थकर गणधर सहू, सारद सुगुरु सकाम ॥ सहू
 मिलि मुऊ आपज्यो, काव्यकला अनीराम ॥ १७ ॥
 उतपति श्री हरीवशनी, हलधर कृष्ण नरेश ॥ नेमी
 मदन जुग पांडवा, चरित्र जणु सुविशेष ॥ १८ ॥
 जादव कथा सुहामणी, जे सुणशे नरनार ॥ सुकृत
 तणो फल पामशे, नहीं सदेह लिगार ॥ १९ ॥

ढाल १ ली ॥ दश कधर राजा, चढतो तेज प्रतापे
 ॥ एदेशी ॥ नहीं सदेह लिगार निरोपम, श्रीहरी वश
 वखाणु ॥ उत्तम पुरुषतणा गुण सुणता, याइ जन्म
 प्रमाणु ॥ जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख क
 हावे ॥ पटकूलगीरीने खेत्रसातशु, शोजा अधिकी
 पावे ॥ १ ॥ जंरत खेत्र जोयणसे पत्र, ववीसकला

ठोठावे ॥ गिरी वैताळ्य विचाल विशेषके, आधोआ
 ध कहावे ॥ सोल हजार सुसारदेशमें, आर्य साढापं
 चविसे ॥ जिहां जिन पचकल्याणिक होवे, इम जिनम
 तमां दिसे ॥ २ ॥ कोसवि नगरी वनवामी, कुवा वा
 व विशेषी ॥ गढमढ मदिर पोल पगारक, इद्रपुरी स
 म लेखी ॥ राजा राज करत विशेषे, विद्यावतसनूरो ॥
 ह्य गय रथ पायक दल पुरित, राय महा रणसूरो
 ॥३॥ आयो मासवसत विराजीत, राय सुमुख सरागी ॥
 गमतिरग करेवाकारण, नृपतिनी माति जागी ॥ कोइ अ
 टाले कोइ माले, नारी तमासे लागी ॥ कौतक जोणुं व
 स विगोणुं, हुइ घण अनुरागी ॥ ४ ॥ वीरकोविंदक केरी
 नारी, वनमाला सुविशाला ॥ नयणे निरखि हरखि राजा,
 राग धरे ततकाला ॥ रुपे रुडी रजा सरशी, वश वर
 तावे देवा ॥ आइ इहा हु जाणु ए मुऊ, पास कराव
 ण सेवा ॥ ५ ॥ खेली ख्याल बेहाल प्रणामे, राजा
 मदिर आवे ॥ मत्रीश्वर उपाय करीने, वनमाला राय
 तेढावे ॥ नारी सुसिला पर पुरुषाने, कदिय न आवे
 पासे ॥ वायतणे बलदेवलनीध्वज हुइ अपुठि नासे
 ॥ ६ ॥ शीलसुधारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी न श्रुके
 ॥ रामचद्रजी सुर्पनखा ज्यु, माथे मारी मूके ॥ नूडे
 चुडा दौय भीलता, कोडी अकारज फिजे ॥ दीरघ रा
 जा चुलणिराणी, केरी उपमा दिजे ॥ ७ ॥ राजाराणी
 प्रिततणे वश, जोगवे जोग उदार ॥ विद्युत पाते मरण

लहि तव, हरीवरपे अवतार ॥ त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वा
 सर, त्रण मासे त्रण वरपे ॥ प्रगट उखाणो ए जग
 जाणो, पुण्य पाप फल वरशे ॥ ८ ॥ नारी विजोगे वि
 रकोविंदक, गहिलो गर्व गिमारो ॥ रढ्योपढ्यो विलव्यो
 विलखाणो, विद्वल थयो अपारो ॥ तापसरुपी चारित्र
 पालि, कष्टतणि करी कोमी, स्वर्गसौधमेंकील्विपीयामे,
 देव थयो दिन थोमी ॥ ९ ॥ किधाकर्म न कोइ ठूटे,
 काइ राकने राणो ॥ राजा राणि साथे केहिपरै, सालेवैरे पु
 राणो ॥ पहिलि ढाल रसाल रागमे, आणद रगविलासा
 ॥ श्री गुणसागर सुरिपयपे, सबजुग मिठिआसा ॥ १० ॥

दुहा ॥ सेवकरुपे देवता, कहे तदा सिरनाम ॥ कु
 ण कारण सुर उपना, आप प्रकासो स्वाम ॥ १ ॥
 अवधिज्ञान करी देखियो, पूर्व जवतर ताम ॥ राजा रा
 णि पेखिया, युगलपणे अचिराम ॥ २ ॥ अगुठाथि
 उपनी, अग्नीज्वाल असंरालं ॥ कालरुप कोप्यो तिहा,
 आव्यो सुर ततकाल ॥ ३ ॥ मारुतो सुरगति लहे, खे
 त्रस्वजावे एह ॥ दु खफोढ्यो फूटे नहि, तो फिर चिते
 तेह ॥ ४ ॥ नरक तणी गति सचरे, पावे दु ख अपा
 र ॥ एह मतो मनमें धरी, किधो तव अपहार ॥ ५ ॥
 साथेलिया सुरतरु तदा, चपापुरी सुर जाय, वनमें मू
 कि देवता, मनरलियायत थाय ॥ ६ ॥

ढाल २ जी ॥ विसजणासु वाद नकिजे ॥ ए देशी ॥
 ॥ आदिनाथनो नदननीको, बाहूबल बलवतजी ॥ नर

तेश्वर नूजवले हरायो, ए बहुलो विरतजी ॥ आ० ॥
 ॥ १ ॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगटे, तिनलाख गुणधाम
 जी ॥ सोमजसार्थी सोमवसनी, थिरथापन अन्निराम
 जी ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमजसा कुवर करमेतो, श्री
 श्रेयासकुमारजी ॥ आदिनाथने जीणे करायो, इन्द्रस
 नो आहारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेहनो नदन सार्व जो
 मजी, तेहनो हुवो सुनुमजी ॥ सुघोपराजा तस पाटे,
 वैरीकुलनो धूमजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ घोषसुवर्द्धन तेह
 नो नदन, महानद सुनदजी ॥ सुजद्रसुजकर सोमवस
 मे, उदया पुनमचंदजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ को मुगते को सु
 रगति पामी, एह वसना नूपजी ॥ असख्यातमी पेढी
 ए उपज्यो, किरतिचद्र अनूपजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ नि
 सतान राजा तव मूवो, देवतणे सजोगजी ॥ नृप पद
 वी लायक नहि कोइ, मिलिया सघला लोकजी ॥ आ०
 ॥ ७ ॥ पचदिव्य करी वनमें आया, सुजट ने मत्रीश
 जी ॥ हरी हरणि युगलपणे देखी, मनमें धरे लगीशजी
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ अबरथी सुरवाणी प्रगटी, सोच करो
 तुम्हे काइजी ॥ चपा नगरीनो जल नूपति, थाप्यो ए
 ह उजाहिजी ॥ आ० ॥ ९ ॥ राजाराणीनें तुम्हे देज्यो,
 मदिरा मास आहारजी ॥ माहरो वचन न मानशोतो, क
 रशु सहि संहारजी ॥ आ० ॥ १० ॥ सुर वचने चपापु
 र नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी ॥ वैरी वेरपणुं न
 वि मूके, अमरख पाल्यो एमजी ॥ आ० ॥ ११ ॥ हरि

नामे राजा तव हुवो, लोक नम्या करजोमजी ॥ पाय
 क लायक परीग्रहपूरो, हय गय रथनो कोडजी ॥ आ० ॥
 ॥१२॥ एह थापना हरिवशनी, वसुधामे विख्यातजी ॥
 दसमा जिनवरजीने वारे, आगेनी सुणो वातजी ॥
 ॥ आ० ॥ १३ ॥ हरी हरणीधी नदन उपज्यो, पृथ्वी
 पती गुणधामजी ॥ महागिरी वसुगिरी राजा, उत्तम
 नाम प्रणामजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ मन्निगिरी सुयसान
 र नायक, ए मोठो राजानजी ॥ त्रणखड पृथ्वी माहि
 अखमीत, वरतावी निज आणजी ॥ आ० ॥ १५ ॥
 एवा हरिवशी नृप हुवा, सख्या रहित अपारजी ॥
 किण सुरगति किण सिवगति सार्धी, सफल कीया अ
 घतारजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ मुनि सुव्रत स्वामि जगता
 रक, राजग्रही हरिवशजी ॥ मुनि सुव्रत सुत सुव्रत
 राजा, वशतणो अवतशजी ॥ आ० ॥ १७ ॥ चुरी चू
 पनो अतर होता, मथुरापुरी मजारजी ॥ वसु पुत्र व
 र बहुतकेतुवर, वश विचुषण सारजी ॥ आ० ॥ १८ ॥
 केतलाएक कालने अतर, यदुराजा उत्पन्नजी ॥ जेह
 धी यादव नाम कहाया, धन ए पुरुष रतनजी ॥ आ०
 ॥ १९ ॥ यदुराजानो सुत सनुरो, सूर सरीखो रावजी ॥
 शाखा प्रतिशाखा हिवे चाली, ते कहेवा चित्त वा
 वजी ॥ आ० ॥ २० ॥ त्रिजी ढाल सुणंता गौरी, दुः
 ख दुस्मतिनु आजनी ॥ गुणसागर गुणवत नमता,
 सिजे सघला काजजी ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुरवश मूरराजाना, नंदन उपज्या दाय ॥
 पहेलो सौरी सुलहणी, सुवीर विजो होय ॥ १ ॥
 सौरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज ॥ सूर
 नृप सजम ग्रही, सारथा आतमकाज ॥ २ ॥ सौरीराय
 सौरीपुरी, वास कियो निज वास ॥ लघु आताने आ
 पीयो, मथुरापुरी निवास ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी ॥ इणपुर कवल कोइ नलेशी ॥ ए
 देगी ॥ सौरीराय नदन वखाणु, अधक विण्णु वडो नृ
 प जाणु ॥ सुविश्राय सुत विश्ववदितो, जोजग वि
 ण्णु जगमे जस नीतो ॥ १ ॥ रायसुविर मथुरानो रा
 जा, सुतने दिधो जाणीसकाजा ॥ सिंधुदेश जाइ पु
 रवासी, वास कियो नृप लिल विलासी ॥ २ ॥ अधक
 विण्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी
 ॥ सुप्रतिष्ठ मुनिपे व्रत पामी, सौरीराय हुवा सिवगा
 मी ॥ ३ ॥ जोजगविण्णु नरेशर राजा, पाले प्रजा ने
 सारे काजा ॥ उग्रसेन आदिक सुत सूरा, शस्त्र शा
 स्त्रकला गुणपूरा ॥ ४ ॥ अधकविण्णु घरे पटराणी,
 रुपेरुडी रजा समाणी ॥ सुनद्रा नामे गुणखाणी, सति
 यामाहि आधिक वखाणी ॥ ५ ॥ जाया कुवर दसहि
 दसार, पुत्रीदोय अति उत्तम सार ॥ समुद्रविजय गु
 णनो नमार ॥ दाता नृक्ता अधिक उदार ॥ ६ ॥ अहोच
 अहोच महारण सूरौ, स्तमित नाम कुंवर गुण पूरो ॥
 सागर सागर उपमा धारी, हिमतवान सहुने सुखकारी

॥७॥ अचल अचल सग्रामे लहि, धराणिधरसम धरण
 सग्रहि ॥ पूरण पुरो सघली वात धन्य अजिचत्रत
 णा अवदात ॥ ८ ॥ श्रीवासुदेव द्रुगधक देव, जेह
 नी सारे सुरनर सेव ॥ ए दसही बधवनी जोमी, पू
 ण्य पसाइ पहुचे कोडी ॥ ९ ॥ समआचारी सघला
 कहिया, माहोमाहि सप्रिती लहिया ॥ मायवापनि न
 क्ति करता, वहिनम आशीसे जयवता ॥ १० ॥ वहि
 न नलि दोइ समसीळा, जाग्यवति आति रुप सुलि
 ला ॥ कुति रुप कलागुण पात्र, माहेद्रि महिमावत
 सुगात्र ॥ ११ ॥ कुतिकुमरि व्याहण काम कवि कु
 रुवश कहे अजिराम ॥ आदिनाथनो सुत कुरु जाणु,
 तेहथी कुरुक्षेत्र कहाणु ॥ १२ ॥ कुरुमुत हस्तीराय
 कहायो, हथीणापुर नल नगर वसायो ॥ हस्ती नृप
 सतान वखाणु, विश्वविर्य नरेश्वर जाणु ॥ १३ ॥
 तदनतर कुरुवशे वारु, सनतकुमार चक्रीश्वर वारु ॥
 शातिकुथु अरजी सुख दाया, दोदो पदवी नाथ क
 हाया ॥ १४ ॥ इद्रकेतु नृप किरति केतु, शुभ्रविर्य
 सुविर्य समेतु ॥ रायअनत विर्यकृतविरज, मुनुम च
 क्रीश्वर अति धिरज ॥ १५ ॥ असख्यात नृप हुवा
 अनतर, सातनुराय हुवो हथीणापुर ॥ दुखकेदारण
 साधुउजागर, त्रिजीढालकहे गुणसागर ॥ १६ ॥

दुहा ॥ इस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निश
 क ॥ पिण राजाने एकए, लाग्यो वमो कलक ॥ १ ॥

साच कहे ए लोकहो, इह लोके अपजस अति पा
 मे ॥ अरु विणसे परलोकहो ॥ कु० ॥ २ ॥ मृगसा
 ये राजा एकाकी, अटवी माहि आवतहो ॥ गंगा त
 ट एक देवल देखी, गाढी सुख पावतहो ॥ कु० ॥ ३ ॥
 एटले खेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो ॥ न
 यणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित्त मजारहो ॥
 कु० ॥ ४ ॥ के इद्राणी के हरी राणी, के हरनार उ
 दारहो ॥ विद्याधर एक आवी जाषे, सांजल राय
 विचारहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ जानु सुता ए गंगा देवी,
 गिरि वैताव्य निवासहो ॥ ए कुवरी वर पूबयो राजा,
 जघाचारण पासहो ॥ कु० ॥ ६ ॥ सातनुराया सीधो
 धतायो, गगातट विवाहहो ॥ देवल कीधो कारज सी
 धो, स्वामी आणी उढाहहो ॥ कु० ॥ ७ ॥ खेचर ज
 इ खेचरपति लायो, माळ्यो व्याह मडाणहो ॥ गंगा
 जाखे तो हु व्याहु, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ॥
 ॥ ८ ॥ जीम कहीशु तिम करशो राजा, वाद कीया
 रसनाहीहो ॥ काम विमासीने धूरे कीजे, अविमास्यो
 दुख प्राहीहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ काम असोचि कीयोथो
 आगे, सूर्यजसा नरनाथेहो ॥ इद्रतणी नाटकणी पर
 णी, अरति करी सहु साथेहो ॥ कु० ॥ १० ॥ कणि
 क माही पडे जव पाणी, थाये ताम नीकामहो ॥ वा
 यस बोटयो कुन अकारज, लोक वचन अनिरामहो
 ॥ कु० ॥ ११ ॥ पतिव्रता पति साथे न वाजे, जन्म

अकारज जातहो ॥ ठोकी वजाइ घडो लीजे अवर
 तणी शी वातहो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सघली मानी करी
 पटराणी आव्या मंदिर रायहो ॥ लानीनी लावण्यता
 निरखी, सह रलियायत थायहो ॥ कु० ॥ १३ ॥ ग
 गा जायो लोक सुहायो श्रीगागेय कुमारहो ॥ राजा
 नव नवा कीधा उठव जगमाही जयकारहो ॥ कु० ॥
 ॥ १४ ॥ गगा वर मागती बोले, स्वामी आहेडो ठो
 डहो ॥ राय न माने पुत्र लेइसा. पिहर गइ मुहमोड
 हो ॥ कु० ॥ १५ ॥ कुव्यसन वालो वाच न माने मु
 ढ न जाणे मर्महो ॥ नेम न माने प्रेम न माने नवी
 माने कुल कर्महो ॥ कु० ॥ १६ ॥ मात न माने ता
 त न माने, आत न माने जोरहो ॥ नारी न माने न
 द न माने, बोले बोल सजोरहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ हा
 थी जेरे हरायो होवे, कीम सामो थया जायहो ॥ न
 मीए नहीतो जाजी सकीजे, रुसी गइ सा न्यायहो ॥
 ॥ कु० ॥ १८ ॥ मात पिता घर नदन शिरुयो, सक
 ल कला गुण बढहो ॥ चउवीसा बरसानो हुत्र, नदन
 आनद कदहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ एक दिवस राजा नि
 कलायो, साथे घणा नर वृदहो ॥ गगातटे अति ऊ
 गनो मळ्यो, श्री गागेय नरेदहो ॥ कु० ॥ २० ॥ ग
 गा विते दोइ पवाढा, ए मुऊ आरति ठामहो ॥ पुत्र
 मरता निपुत्री प्रीतम, मरता राम कुनामहो ॥ कु० ॥
 ॥ २१ ॥ गगा आवी दे समजावी, पाणि गइ ततका

लहो ॥ गुणसागर नृप सुत घर आव्या, चौथी ढाल
रसालहो ॥ कु० ॥ २२ ॥

ढुहा ॥ राजा कुव्यसन नवी तजे, गंगा नावे वार
॥ साहकारी नारीनी, ए सहीनाणी विचार ॥ १ ॥
आदरनो जलो कापडो, निरादर स्यो घीर ॥ जलो
समुहनी रावडी, महातम विणसी खीर ॥ २ ॥ बालो
सोनु सामटु, बालो जोग विलास ॥ आदर अजराम
र महा. बीजु सहु विखास ॥ ३ ॥ खेचीकुटी कामनि,
लाता बुकाखाय ॥ निःपितामरवाडरे, ते कीम मुह
गी थाय ॥ ४ ॥ तेज नसहे ताजणो, त्रिया नसहे अ
पमान ॥ तिम तिम मूल वाधे घणो, शक धरे राजा
न ॥ ५ ॥ जाध जीवनु रूशणु, गंगादेवी नरेश ॥ ए
क वचनने कारणे, सह्यो न जाय कलेस ॥ ६ ॥ कुवरे
करी नृप सोजीउ, कमले करी जिम वार ॥ दिवस क
री दिनकरजू, सिलेकरी जिम नार ॥ ७ ॥ जमुना त
ट नृप आवियो, दिठी कुमरी एक ॥ तनमन लाग्यो ते
हसु, विसरी गयो विवेक ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ बधव बोल मानोहो ॥ ए देशी ॥
राजा प्रेम लगायोहो, लोचन हुवा लालची ॥ लज्या
गुण जाग्योहो ॥ रा० ॥ १ ॥ नयन अन्याइठे खरा,
जिहा तिहा लागेहो ॥ सोध न आगल पावले, जुमा
पण आगेहो ॥ रा० ॥ २ ॥ कोडी कुहेडा केलवे, ए
केकिमा कुवाणीहो ॥ चतुरा चहुटे पारिखा, ए मनकी

सहिनाणहो ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्वर्गमृत्य पातालनी, स
 ब नारी लुटीहो ॥ जातीथी उची अवरै, अधवचथी
 तूटीहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ एकही अग वखाणता, कवि
 पार न पावेहो ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरू, ए तिला गावे
 हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ इद्र चद्र नर राजवी, बलवता ब
 लीयाहो ॥ कोई किरणरो को नहि, एह माया ठलिया
 हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ नयण न पाठा आवहि, जाणी वा
 ध्या ताणीहो ॥ नाविढा साये बोलीयो, राय कोमल
 वाणीहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ ए कहे केहनी कुवरी, डोकर
 तं जाणेहो ॥ ए कुवरी नृप माहरी, राय केरे मुख आ
 णेहो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सत्यवती नामे जली, सुरतरु
 नी वेलीहो ॥ पुण्यवत जे प्राणीया, थाइतसु जेलीहो
 ॥ रा० ॥ ९ ॥ राय प्रधान बोलावीयो, ए मुऊ परणा
 बोहो ॥ ढिल किया ढीलो पडे, व्याह वेग करावोहो ॥
 रा० ॥ १० ॥ नावडीयो माने नहि, एक अडवी रोने
 हो ॥ पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोनेहो ॥ रा० ॥
 ११ ॥ विलखाणो राजा फिरी, निज मदिर आवे
 हो ॥ बाप दुर्चितो देखता, कुवर दुख पावेहो ॥ रा० ॥
 १२ ॥ जक्ति नहि मा बापनी, नवी जाणे पीमाहो ॥
 तेतो बेटा जाणवा, पेटना किडाहो ॥ रा० ॥ १३ ॥
 जाणी वात सुवेगसु, नाविमा समजावेहो ॥ करी दि
 लासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ रा
 ज तणे तो कारणे, सुत बापने मारेहो ॥ गागेया गुरु

आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ माहरो धरणी
 धरणिनो, हु धणीज कहेताहो ॥ उचा जाइ अचरे,
 बोले गह गहताहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करी नहि कर
 शे नहि, को करत न दीठोहो ॥ गुरु गागेया सारी
 खा, जगमे जस मीठोहो ॥ रा० ॥ १७ ॥ नाविमो कुव
 रसु कहे, एठे नृप कुमरीहो ॥ वेली समां फल नीप
 जे, एसा नहि अमरीहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ सत्यवती
 सुव्याहती, कीधा रगरोलहो ॥ पचेद्रि सुख जोगवे,
 वर पुण्य कलोलहो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सत्यवती कूखे
 उपना, दो नदन सलुणाहो ॥ वाप थकी अधिका हुवा,
 तेजे करी दुणाहो ॥ रा० ॥ २० ॥ चित्रागद नामे ज
 लो, कुवरजी नीकोहो ॥ चित्रविरज ए दूसरो, कुरु
 वशी टीकोहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ राजा आहेडो तजी,
 शुच मारग आयोहो ॥ साधु सगति चालता, जग
 मे जस पायोहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ पाप खमावी पाठ
 लो, आतम आराधिहो ॥ काल कीयो धरणि ढली,
 सुरनी गति साधीहो ॥ रा० ॥ २३ ॥ चित्रागद रा
 जा कीयो, सब लोका साखीहो ॥ श्रीगागेयनरेश्वरे, नि
 ज वाचा राखीहो ॥ रा० ॥ २४ ॥ निलागद गाधर्व
 सु, चित्रागद लडीयोहो ॥ कह्यो न मान्यो जाइनो, स
 मरागण पडीयोहो ॥ रा० ॥ २५ ॥ माय रीती सुत दु
 खथी, फिरी सोग मीटायोहो ॥ पाचमी ढाले सांतनुं,
 गुणसागरे गायोहो ॥ रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ सगपण ससारे घणा, जाइ समो नव को
 य ॥ लक्ष्मण काजे रामजी, कहो केम दीवो गय ॥
 ॥ १ ॥ नीरु पख्या जाइ नजे, जाइ विराणा जाज ॥
 नरतनूप नर रात्रिमे, दोख्यो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥
 पुरुपोने नारी घणी, नारीथी सुत होय ॥ मा जाया ब
 धव हुवे, अतर मोठो जोष ॥ ३ ॥ जाइ वयर वीशो
 धवा, श्रीगागेय कुमार ॥ निलागद रणमें हण्यो, रा
 ख्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापियो,
 वरती आण अखड ॥ प्रवल प्रताप महावली, तस
 नुज दरु प्रचड ॥ ५ ॥ कासी नूपतिने नली, कन्या
 तीन प्रधान ॥ अवा वाली अविका, व्याह तणो म
 नाण ॥ ६ ॥ काशी नूप ते तेढीया, राजा राजकुमा
 र ॥ गजपुर धणीमे तेनीयो, जाती द्विण अवधार ॥ ७ ॥
 ढाल ६ ठी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ आ
 मण दुमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय ॥ गगासु
 त पूव्यो तदारो, जाव नदिणो जायरे ॥ १ ॥ पक्षु न
 लो सहि, निपक्षिसिदायोरे, पक्षु नगजिए, पक्षिणि इ
 ना पायो ॥ ५० ॥ ए आकणी ॥ अरति अलूर वाधी
 घणीरे, गहवरीयो नूपाल ॥ जाणे धरणी विवर दीएरे,
 तो जइए पायालोरे ॥ ५० ॥ २ ॥ जाणी निश्चे वातनो
 रे, निपम निषमरूप ॥ मुऊ बइठा लघुता हुवेरे, तो मु
 ऊ वनो विरूपरे ॥ ५० ॥ ३ ॥ गगासुत घाली ग
 योरे, काशी नृपने पास ॥ कन्या तीने अपहरीरे,

माव्यो जुज उल्लासोरे ॥ ५० ॥ ४ ॥ नाना लोंगा
 मोचणोरे, बलीया उजड माग ॥ बलीया होड करे जी
 केरे, नली शिर उपर पागोरे ॥ ५० ॥ ५ ॥ हत प्रहत नू
 पति कीयारे, जोव्यो गगानह ॥ कन्या लैइ आवी
 योरे, गजपूरमे आणदोरे ॥ ५० ॥ ६ ॥ परणावी ती
 ने तदारे, हरख्यो गजपुर इग ॥ पद्म प्रसादे हुइ
 सहीरे, सफल सकल जगीसोरे ॥ ५० ॥ ७ ॥ अवी
 का कूखे उपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार ॥ बाला पाडु
 जाइतरे, अवा विदूर उदारोरे ॥ ५० ॥ ८ ॥ राग व
 से आतुर थयोरे, बूट्यां नृपना प्राण ॥ ए दया ग
 ति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥ ५० ॥
 ॥ ९ ॥ पाडु राजा थापीयोरे, अन्नण सहु परिवार ॥
 पृथ्वी फलदायक माहारे, राजा पुण्य प्रकारोरे ॥ ५०
 ॥ १० ॥ ठाळ सुहामणीरे, गुणसागर उवाह ॥ नवि
 कजनो तुमे साजलोरे, कुता कुमरी व्याहोरे ॥ ५० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ श्री पाडु पृथ्वीपति, मधु उडवने काज ॥
 राजी गाजी वनमे गयो, खेलण केरे साज ॥ १ ॥ खे
 ल खेलता खातसु, एक नर आव्यो नेठ ॥ पलक
 विलोकन कीजतो, उचो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ पलक
 हाथ राजा लीयो, नारी रूप अपार ॥ सुदरता नख
 शिख लागे, जोवे वारवार ॥ ३ ॥

ढाल ७ मी ॥ सीताजी दीएरे उलजडो ॥ एदेगी ॥
 राजा रज्यो रूपसु, नयन रह्या लोनाय ॥ जोता त्रप

ति न ऊपजे, सोना मुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए ज
 ग माही मोहनी, मोह्यो सहु ससार ॥ पशु पखी न
 र देवता, वश कीचा इण नार ॥ ए० ॥ २ ॥ पर्हीलो
 मोह्यो मुरपति, सो लाग्यो इद्राणी पाय ॥ इद्राणी ला
 ते हण्यो, तो तस रोप न थाय ॥ ए० ॥ ३ ॥ शकर
 स्वभ्रगज ठवियो. राच्यो पार्वती रूप ॥ टेक तजी त्रि
 या आगले, नाच्यो धरी विरूप ॥ ए० ॥ ४ ॥ राधा
 रूप रमापति, रमीयो रलियायत होय ॥ रासममल
 रचना कीया ए कौतक प्रगट्यो जोय ॥ ए० ॥ ५ ॥
 गजा पुढे पुरुषने ए रूप कहे केहनो होय ॥ कुति
 रूप सुहामणी इम चाखे परदेशी सोय ॥ ए० ॥ ६ ॥
 खेल सहु ए वीसरयो. वीसरियो सहु काज ॥ छुधा त्र
 षा सहु विसरयो जाणे मिलीए आज ॥ ए० ॥ ७ ॥ कु
 ति कुति कुतिको लाग्यो राजा ध्यान ॥ उठे जल जि
 म माबलो नृप वेदन असमान ॥ ए० ॥ ८ ॥ दीघो
 दान अनतते पयी सोरीपूर जाय ॥ राजा आगे व
 र्णवे, गुणवतो गजपूर राय ॥ ए० ॥ ९ ॥ तात गोदे
 बेठि सुणे कुति नृपना वखाण ॥ रूपकला गुण मन
 धर्यो तव कुवरी करहि निदान ॥ ए० ॥ १० ॥ के
 परणु गजपूर धणी के परणु परे नव जाय ॥ अवर
 पुरुष बधव समा ए निश्रे मन लाय ॥ ए० ॥ ११ ॥
 पाहु नृप घर आवियो आहाट दोहट अपार ॥ करे फि
 रे उघाटीये. न जणावे केहने सार ॥ ए० ॥ १२ ॥ एक

दिवस वनमे गयो, खेचर खील्यो देख ॥ आप चिंता
 तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेष ॥ ए० ॥ १३ ॥
 विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम ॥ विरला पर
 कारज कस, पर दुखे दुखीया तेम ॥ ए० ॥ १४ ॥ उ
 रेपरे अवलोकता, खाडो दिठो उदार ॥ उपध वलिया
 दोय नला, एक घाव रुजावणहार ॥ ए० ॥ १५ ॥ खी
 ला काढ्या अगथी, उपधे कीध निरोग ॥ राजा पुढे
 ए वडो, कीयो तुऊ दु ख सजोग ॥ ए० ॥ १६ ॥ खे
 चर कहे सुण मित्रजी, मुऊ राणी लीधो को जाय ॥
 केड हुवो हु एकलो, तेह कारण दु ख थाय ॥ ए० ॥
 ॥ १७ ॥ नि कारण उपगारीयो, हु थारी फिरफोर व
 लिजाउ ॥ चाम करावु खासडा, तोहि उंसीगल नवि
 थाउ ॥ ए० ॥ १८ ॥ उपध वलिया ए ग्रहो, ए मु
 द्रडीलीजे स्वाम ॥ बहु गुणगारी ए मुद्रडी, लेइ जा
 ये वळित ठाम ॥ ए० ॥ १९ ॥ अवसर जाणी काम
 नो, चित्तमाहि आणावे देव ॥ इम कही सोइ चाली
 यो, निज स्थाने ततखेव ॥ ए० ॥ २० ॥ मुद्रडी प्र
 सादथी, मन केरी पहुचे आश ॥ जयति श्रीशुनग
 ति मति, पामे ते पुण्य प्रकाश ॥ ए० ॥ २१ ॥ ढाल
 सातमीए कह्यो, मिलधा उपाय अपार ॥ गुणसागर
 उपदेशथी, नवि करजो सर्वने उपगार ॥ ए० ॥ २२ ॥
 दुहा ॥ कुती कुमरी चितवे, मन चित्या ए काज
 ॥ देवन पूरा पाडसे, तो नलो मरवो आज ॥ १ ॥

इम चिंतवि ते नीसरी, गई महावनमांही ॥ गलफा
सो माडी कहे, सुण कुलदेवते प्राहि ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ गौतम समुद्रकुमार ॥ ए टेडी ॥ तु
जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पाडु पृथ्वीपति
जणीए ॥ कुतिकुमरी आज, विरह तुमारने, प्राण त
ज्या विण तु धणीए ॥ १ ॥ इम कहीं गले पास, मा
ने जेटले, सानिध हुई तेटलेए ॥ वर मुद्रनी प्रजाव,
मिलवा सुदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥ २ ॥ पल
करुप अनुहार, कुमरी उलखी पासो तोडी नाखीयो
ए ॥ पदमनिने परसग, आतुरता घणी, जाव हिया
नो जाखियोए ॥ ३ ॥ दासी पास मगावी, सामग्री
सहू, व्याहतणी विधि साचवीए ॥ पूरो मनना कोड,
होडा होरसु, हसीरमी मन राचवीए ॥ ४ ॥ गर्ज त
णी उत्पति, चित्त विचारीउं राय जणावी सादरीए ॥
सहिनाणिने काज आपी मुद्रडी, राय गयो घर सच
रिए ॥ ५ ॥ कुमरी पिण घरे आवी, माय जणावीए,
दिनकेतेए घातडीए ॥ गुप्तगणे सुत जायो जलमे वा
हिउं, जई निसरीयो शुन घनीए ॥ ६ ॥ कर्ण कहा
यो नाम, मोटो राजवी, माता कीधी उजलिए ॥ कु
मरी केरो व्याह पाडुरायसु, प्रगट कियोपुगीरलिए ॥
॥ ७ ॥ शुनसुपना अवलौय सुन वेलासाहि युधीष्ट
र सुत जाईउंए ॥ नीम महा बलवत, कौरव किचक
हता नाम धराविउंए ॥ ८ ॥ अर्जुन श्री कुलकोल,

त्रिष्व करणनो हणणहार कहाड्डंए ॥ नकुल अने
सहदेव, पाडव पचए, जगमाहि जसपाइउंए ॥ ९ ॥
परमारथ आराधी, करणिने वले मातासु सिव पाम
शेए ॥ उत्तमगति मतिवास, लेहसे ते सहि, गीरुआ
ना गुणगायशेए ॥ १० ॥

दुहा ॥ तेणे समे देश गधारनो, नृप सुवल इणे
नाम ॥ आठ ठे तेहने अगजा, गधारी आदे गुण
ग्राम ॥ १ ॥ गोत्रदेवीना वचनथी, धृतराष्ट्रने गेह ॥
शकुनी सुतसु मोकली, कन्या आठे तेह ॥ २ ॥ श
कुनी धृतराष्ट्रने, जगनी परणावी आठ ॥ माहामोहव
मडाणसु, सघलो मेली ठाठ ॥ ३ ॥ कन्या नामे कौमु
दीनी, देवक नृपनीताम ॥ वीदुर पिण परणयो वली,
सुधारया सघला काम ॥ ४ ॥

ढाल तेहिज ॥ श्री धृतराष्ट्र सुग्रेह, गधारी कूखे,
कौरव शतहि सुतपणेए ॥ ऊपजीया अदञ्जुत दुर्योध
न आदे, वाधे आनद अतिघणोए ॥ ११ ॥ माहेद्रि
कुमरी व्याही, दमघोषा जणी, सुत शीसुपाल चरी
घणीए ॥ सक्केपे सबध, ग्रथ वधतो घणो ॥ जाणी
कथा न विस्तरिए ॥ १२ ॥ ढाल आठमी एह, नेह
धरी सुणे, तस आगणे अफला फलेए ॥ गुणसागर
गुणगेह, तेह पनोताए, जेह कथा रस सांजलेए ॥ १३ ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कपटि महा, कपटकेलवे कोम ॥
पाडव सरल सजाविया, न करे तोम तोड ॥ १ ॥

कौरव निखस खोटणी, पाडव जोर विगेष ॥ बालप
 णाहीथी चलयो, माहो माही अद्वेष ॥ २ ॥ कौरव
 वावी नीमने, नाखे पाणी मांही ॥ बधन तोडी कुटि
 या, कौरव सोहि प्राही ॥ ३ ॥

ढाल ९ मी ॥ जुठन हाले ने जुठन चाले ॥ ए दे
 शी ॥ बलवतो जाणी खरो, श्री नीम कुमार होलाल ॥
 विप दौधो दुर्योधने, आणी द्वेष अपार होलाल ॥ १ ॥
 जोजो क्यु न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होला
 ल ॥ कोई म करजो पडितो, अरिथी विपनास होला
 ल ॥ जो० ॥ २ ॥ काम पढ्या वेटो हुवे, काम सरी
 या बाप होलाल ॥ दाव लही दुर्जन घणु, देखावे सहि
 आप होला० ॥ जो० ॥ ३ ॥ अत करण न मेलवे, मु
 खे मीठा होय होलाल ॥ सङ्गन ललिताग सवदथी,
 समजो नविलोय होला० ॥ जो० ॥ ४ ॥ जो परमे
 श्वर पाधरो, नहि पीसु न प्रवाह होलाल ॥ कौरवनी
 गरसण कला, पाडव जुए राह होला० ॥ जो० ॥ ५ ॥
 उरयामे अतर करे, मुगाने ए जोई होलाल ॥ कर
 ता राखे जेहने, अरिथी सु होई होलाल ॥ जो० ॥
 ॥ ६ ॥ विप अमृत होई प्रणामिउ, वायु सुतने सोई
 होलाल ॥ पूर्व पुण्य प्रसादथी, पहुचे नहि कोई हो
 लाल ॥ जो० ॥ ७ ॥ विजकुखेता दानज्यु, वि
 णपात्र विचार होलाल ॥ वांजणसु घरवासजी, नीफल
 ते अवधार होलाल ॥ जो० ॥ ८ ॥ कौरवना उपक

मथी मारण श्री जीमहोलाल ॥ एक न लागे आक
 रो, बाउल जीम हीमहोला ॥ जो ० ॥ ९ ॥ ठोत्तरसो
 एकठा, पढवाने काजहोलाल ॥ कृपाचारज जी नणी,
 सोप्या श्री माहाराज होला ॥ जो ० ॥ १० ॥ प्रज्ञा
 बले आगे निसरे, अर्जुन ने ए कर्ण होलाल ॥ बुद्धी
 विशेष विचारिये, ग्रहे पडता वर्णहोला ॥ जो ० ॥ ११ ॥
 दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल ॥ गेद
 दडे अति खेलता, रलियायत थायहोलाल ॥ जो ० ॥
 ॥ १२ ॥ दडी कूदी कूवे पडी, न कढाई जामहोला
 ल ॥ माखि जेम महूआलने, रहे विंटी तामहोला
 ल ॥ जो ० ॥ १३ ॥ द्रोणाचारज आवीयो, कीधो त
 व प्रणाम होलाल ॥ बाणकलासु गइदने, काढी ते
 अनिराम होलाल ॥ जो ० ॥ १४ ॥ कृपाचारज पू
 ठियो, जीष्म धरी स्नेहहोलाल ॥ द्रोणाचारज पा
 खति, मेल्या सुत तेहहोलाल ॥ जो ० ॥ १५ ॥ अ
 श्मशान्त्रनीकला, साधे ते सु विशेषहोलाल ॥ कर्ण श
 शि तारा विषे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥ जो ० ॥
 ॥ १६ ॥ धनुष्य चहाढे खेंचवे, नाखेवे ए बाणहोला
 ल ॥ करवे चोट अचुकजी, हरीनद सुजाणहोला ॥ जो ०
 ॥ १७ ॥ दिन दिन तेज प्रतापसु, बाधतो ए वान
 होलाल ॥ सघला माही सामटो, पामे अति सन्नमा
 न होलाल ॥ जो ० ॥ १८ ॥ द्रोणाचारज एकदा, का
 लिंद्रीमें स्नानहोलाल ॥ करतां तातणिए ग्रह्यो, नवि

दोह्या आनहोलाल ॥ जो० ॥ १९ ॥ अर्जुन तव
 आयो धसी, ठोढावणने हेतहोलाल ॥ हेत घणो गु
 रु शिष्यने, जेहवा ए युग नेतहोलाल ॥ जो० ॥ २० ॥
 बाहिर आव्या प्रेमसु, न प्रसगो तेहहोलाल ॥ जा
 एयु कौरव कोपशे, गर्वामे वलि एहहोलाल ॥ जो० ॥
 ॥ २१ ॥ एकाते हरीनदसु, गुरु वोल्या एमहोलाल ॥
 धनुष्यकला अवरानणि, देवा मुऊनेमहोलाल ॥ जो०
 ॥ २२ ॥ राधावेद कला शिखवी, अर्जुन वाचा ली
 धहोलाल ॥ दुर्योधनने नीम गदानी, युद्धतणी विधि
 साध होलाल ॥ जो० ॥ २३ ॥ यथा योग्य जे जा
 णिया, नेहवी विद्या आपहोलाल ॥ कला देखावणआ
 पणी, वात विशेषे थायहोलाल ॥ जो० ॥ २४ ॥ ए
 तो नवमी ढाल विशेषे, कुमर विद्या पामहोलाल ॥ श्री
 गुणसागर सूरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोला ॥ २५ ॥
 दुहा ॥ निष्म तो जलपण नणी, मचक सच आ
 रन ॥ मढावी पुत्रा तणो, देखण समरारन ॥ १ ॥
 बैठा वड वड राजीया, आगल सकल कुमार ॥ कला
 दिखावे आपणी, शस्त्रास्त्र तणी अपार ॥ २ ॥ रणरगे
 राच्या सह, विस्मय पाम्या ताम ॥ लोक सकल मन
 चिंतवे, मतको थाय अकाम ॥ ३ ॥ दुर्योधनने नीम
 जी, माहोमाही कलेश ॥ करत निवारया, द्रोणसुत,
 लहि तात आदेश ॥ ४ ॥
 ढाल १० मी ॥ तुमें पीताबर पेरों होके मुखने

मरकलडे ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु दृढक प्रेरयाहो, पा
 ढव अर्जुन उदाश ॥ एतो विद्या देखावेहो, पाढव ध
 नुष्यकी वारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेदहो पाम्त्र निरखी
 राजानो ॥ एतो सराहण किजेहो पाढव मेरु समान
 ॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो पाढव सयनी वताई ॥ ए
 तो करण करईहो पाढव चपापुरी पाई ॥ ३ ॥ ए तो
 सारथ सुतहो पाढव एतजे आयो ॥ ए तो रायके आ
 गेहो पाढव करणे बेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरित्त वा
 तहो. पाढवराय रिसाणा ॥ ए तो खरखावा द्राखहो
 पाढवकु दिये सयाणा ॥ ५ ॥ ए तो अर्जुन जीमहो.
 पाढव लठिया दोई ॥ ए तो चपाकि उपावेहो. पाम्
 व कर्णवे कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वरुविराहो. पाढव
 रणरग मागे ए तो कौरव करणहो पाढव उजा आ
 गे ॥ ७ ॥ ए तो हाकोहाकहो. पाढव रवि रथ वाली ॥
 ए तो चालीया वेगेहो, पाढव रजनी विराजी ॥ ८ ॥
 ए तो रजनी उमासहो, पाम्त्र कौरव जाणी ॥ ए तो
 मडीया प्रातहो, पाढव गुरु दया आणी ॥ ९ ॥ ए
 तो समजीया दोइहो, पाढव मेट लडाई ॥ ए तो कौ
 रव तातेहो, पाढव सुत बोलाई ॥ १० ॥ ए तो पूगी
 यो वशहो, पाढव मुद्रा देखाई. ॥ ए तो करणजी जा
 एयोहो, पाढव पाम्त्र जाई ॥ ११ ॥ ए तो गगामे
 आयोहो, पाम्त्र लीयो कढाई ॥ ए तो कियो मोठ
 वहो, पाढव खाट वधाई ॥ १२ ॥ ए तो सहणामा दे

रूयोहो, पाडव सरस तेजो ॥ ए तो रविमुत नामहो,
 पाडव लहियो सहेजो ॥ १३ ॥ ए तो करतल काने
 हो, पाडव दीठा ताम ॥ ए तो थाप्यो अजिरामहो,
 पाडव वर्णजो नाम ॥ १४ ॥ ए तो कौरव नृपहो, पा
 डव मन्तर धरता ॥ ए तो निज घर आवेहो, पाडव
 सोच करता ॥ १५ ॥ ए तो प्रचुतार्द पेखेहो, पाडव
 जगीमळरो ॥ ए तो प्रत्यक्त खिजेहो, पाडव वेह अ
 तिखारो ॥ १६ ॥ ए तो माहोमाहीहो पाडव उपज्यो
 विरोधो ॥ ए तो पाडव नृपहो, पामव टालवा क्रोधो
 ॥ १७ ॥ ए तो देश विलातहो पामव आपिया जुवा ॥
 ए तो एवमो पद्धहो पाडव जूया जूआ हुवा ॥ १८ ॥ ए
 तो गयाकरो शोकहो, पामव रचन आणे ॥ ए तो हो नारी
 वातहो पाडव अधिक न ताणे ॥ १९ ॥ ए तो वरत ति
 वारहो पाडव वरते अपारो ॥ ए तो एहथी जाण्योहो,
 पामव श्रीहरीप्यारो ॥ २० ॥ ए तो कहि दसमीहां
 पामव ढाल थुणिजे ॥ ए तो श्रीगुणसागरहो, पामव
 सुजस सुणिजे ॥ २१ ॥

दुहा ॥ अथक विष्णु दिक्का ग्रही पाले जिनवर
 आण ॥ सौरिपुरा राज करे नलो समुद्रविजे राजान
 ॥ १ ॥ नामे शिवादे, जामनी, आश्रव तणो परीहार ॥
 सुखदाई सहू लोकने शिलतणे शिणगार ॥ २ ॥ रूप
 गिरे लक्षण शिरे, कलाशिरे गणधाम ॥ श्रीवसुदेव
 कुमारनो, चरित्र नणु अजिराम ॥ ३ ॥ चारित्र पाली

निर्मलो, नांदिखेण अणगार ॥ करी वेयावच साधुनी,
पायो सुजस अपार ॥ ४ ॥ आयु सागर विशनो,
जोगवि सुर सुख सार, शेष पुण्यने कारणे, थयो वसु
देव कुमार ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ नणदलनी देगी ॥ श्री वसुदेव
कुमारजी रूप अनुप रसाल हो कुमर ॥ जोग
पुरदर मुदरु. सोजागी सुकुमाल हो ॥ कु० ॥
॥ १ ॥ माहिनवेल कुमारजी ॥ ए आंकणी ॥ अवर
अनेरा गर्जीया. राजा नरत कहेवहो ॥ कु० ॥ अवर अ
नेरा कुमारीया, कुवर तो वसुदेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २ ॥
॥ मित्र इद्र समान ठे सेवक अमर अनूपहो ॥ कु०
॥ आपण सुरपति साचलो गजपेरावण रूपहो ॥
कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए सौरिपुर सु
ख वासहो ॥ कु० ॥ स्वईचा रमत करे. करतो लि
ल विलामहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ४ ॥ देव द्रुगधक सारिखो,
काम तणो अवतारहो ॥ कु० ॥ मोही रही अति मान
नी लागी होमे लारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ५ ॥ करे
कुतुहल कामनी बाडी घर व्यापारहो ॥ कु० ॥ फि
रे कुदाते हरणली, न लहे घरनी सारहो ॥ कु० ॥
मो० ॥ ६ ॥ केइ अलुणो रावति, केई लुण दोवार
हो ॥ कु० ॥ आधो पीरसी पिरसणो, जाइ तजी न
रतारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ७ ॥ जूषण थानक पालटे,
आधो करी सिणगारहो ॥ कु० ॥ टोले टोले सामटि,

साथे फिरे सब नारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ८ ॥ घर उधा
 ढाहि रहे, थाये अति उजारहो ॥ कु० ॥ साह मिली
 रावले गयां, वालण पगे किवाडहो ॥ कु० ॥ मो० ॥
 ॥ ९ ॥ राजा नाखे सादरो, केम पधरया साहहो ॥ कु० ॥
 पामी आदर अति घणो, साह वदे सोठाहहो ॥
 ॥ कु० ॥ मो० ॥ १० ॥ पुज्य प्रसाद तुमारडे सुखि
 या सगला लोकहो ॥ कु० ॥ लाज घणो व्यापारमे,
 अनधन सर्व सजोगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ११ ॥ तो तुमे
 केम देखाउंगे, आरतिवता आजहो ॥ कु० ॥ जे जिमठे
 तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १२ ॥
 एवात कहंता सकिए अण कहिया नरहायहो ॥ कु० ॥
 सापे अहि ठठुदरी, एह परे अम थायहो ॥ कु० ॥
 ॥ मो० ॥ १३ ॥ दोश न कोई कुमारनो, निरकुशी
 त्रिय जातहो ॥ कु० ॥ विकल थइ विधुल महा, किशी
 कराई तातहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कान गया
 लोचन गया, गई लाज विशेषहो ॥ कु० ॥ कुमर दे
 रूया प्रियानी, रहिठे इद्रि शेषहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १५ ॥
 तरुणि बुद्धि बालिका, एक सरिखि होयहो ॥ कु० ॥
 सोवती नाखे सखी, आवतो प्रनु जोयहो ॥ कु० ॥
 मो० ॥ १७ ॥ कुमर न रहे खेलतो, त्रिया न रहे घ
 र माहिहो ॥ कु० ॥ वास अनेरी जायगा, आप आप
 नृप प्राहिहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १८ ॥ नृपने थइ वि
 च्यारणा, कुमरशु अति प्रेमहो ॥ कु० ॥ लोक विणा

नहीं साहिबी, अब कहो किजे केमहो ॥ कु० ॥ मो०
 ॥ १९ ॥ अर्थ मीत दोई राखणो, एह सयाणो का
 महो ॥ कु० ॥ विप्रसुता सवधथी, सोच महा अजिरा
 महो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २० ॥ शिख देइ शाहा जणी,
 महिलमाहि नर देवहो ॥ कु० ॥ आयो आराति जा
 एके, देवि वदे ततखेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २१ ॥ ना
 मे शिवा शिव कारणी, षट गुण धारक नारहो ॥ कु०
 जेद लही लोका तणो, किम ले बात समारहो ॥ कु०
 ॥ मो० ॥ २२ ॥ एतले कुमर आविया, वेठो नृप
 नी गोदहो ॥ कु० ॥ राजा राणी रिंजवे, वारु बात
 विनोदहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २३ ॥ त्रिती पोषी परि
 घल पणे, राय वदे सुविच्यारहो ॥ कु० ॥ आज का
 ल तो अति घणो दुर्वल थयो कुमारहो ॥ कु० ॥
 मो० ॥ २४ ॥ राणी जाखे रायशु, आणी अतिशे प्या
 रहो ॥ कु० ॥ माहारो वचन विशेषथी, माने नहींय
 लिगारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २५ ॥ फिरे घणु वन वा
 गमे तने लागे अति तापहो ॥ कु० ॥ थयो खरोही
 दूबलो, माहरे मन सतापहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २६ ॥
 जूप जणे वड साजलो, मित्रा केरे सगहो ॥ कु० ॥
 खेल करो मन जावतो, मेहेल माहीं मन रंगहो ॥
 कु० ॥ मो० ॥ २७ ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, जाई
 पुत्र समानहो ॥ कु० ॥ तुज सुखीए सुखीया हमे,
 तुजे प्रेम निधानहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २८ ॥ ए इ

ग्यारमी ढालमे, मानी वात विशेषहो ॥ कु० ॥ श्रीगु
णसागर सूरिजी, श्रवकीम उपजे द्वेषहो ॥ कु० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ मेहेल माहिणे वाग वर, तरुवर जात अ
नेक ॥ वृद्ध अशोक सुहामणा, कुचा वाव विशेष ॥

॥ १ ॥ कृण धरमें कृण वागमे, कृण जाई चित
चाव ॥ खेलावे अति खांतशु, नोजाई नल नाव ॥ २ ॥

ढाल १२ मी ॥ ऊठ गोविंदा ऊठ गोपाला ॥ ए
देशी ॥ जूठ न हाले जूठ न चाले, जूठ न आघो

थाय होलाल ॥ नैद लही जूठी मायानो, कुमर परदेशे
जायहोलाल ॥ जू० ॥ १ ॥ वावना चदन कर कचां

ली, दिधी दाशी हाथहोलाल ॥ एतले कुमरजी चली
आयो, मित्रा केरे साथहो लाल ॥ जू० ॥ २ ॥ कुमर

पूठे रे ए काई, सा तव बोले गाजहो लाल ॥ देवी शी
वाए चदन जेज्यो, राय विलेपन काजहो लाल ॥ जू० ॥ ३ ॥

घे मुजने ए चदन चेटी, करु विलेपन आपहो लाल
॥ चेडीनापे जीनकरता, दीए मुह माथे थापहो ला०

॥ जू० ॥ ४ ॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, घणु पो
मावे साईहो लाल ॥ माहरा मारया वुव न वाहरु, प

हिली न समजी काईहो ला० ॥ जू० ॥ ५ ॥ होइ
खिसाणी बोले ताणी, चेडी चचल जातहो ला० ॥

तन मन जूठी ने अति रूठी, वाणी वदे अकुलात
हो ला० ॥ जू० ॥ ६ ॥ नमणी खमणी मोणस नि
की, न नेमे न खमे जेहहो ला० ॥ आका केरा इधण

सरिखो, लेखविए नर तेहहो ला० ॥ जू० ॥ ७ ॥ जो
 एहवां लक्षण ठे तारां तरे पुकारया लोकहो ला० ॥
 न्याये पढ्योठे वधीखाने, कुंमर कहे ए रोकहो ला०
 ॥ जू० ॥ ८ ॥ चित्तमे चमकी चतूर पणाथी, करी दि
 लासा सातहो ला० ॥ पूठता तव प्रगट कीधो, सह
 सवध प्रकाशहो ला० ॥ जू० ॥ ९ ॥ साच जूठनी
 करण परिक्षा, षोले आवे तामहो ला० ॥ दरवाजो
 शेकि तव जाणयो, साचो सघलो कामहो ला० ॥ जू०
 ॥ १० ॥ पागे फीरी मदिर आयो, चित्तशु चिते ए
 हहो ला० ॥ कुंकर भूसानो काम नही कोई, जाणयो
 जाई सनेहहो ला० ॥ जू० ॥ ११ ॥ धिग् मुज जा
 णपणो ए अधिको, धिग् मुज रूप रसालहो ला० ॥
 दु खढाई हुठ हु सहुने, अरु शिर आयो आलहो
 ला० ॥ जू० ॥ १२ ॥ अहि मणि कस्तूरी मृग मँग
 ल, दत्त थकी विपनाशहो ला० ॥ चमरी पूठ थकी
 नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला० ॥ जू० ॥ १३ ॥
 विण गुणहे ए लोक पुकरया, राजा मानी वातहो
 ला० ॥ अणख आया जाई रीसे, मेंतो दु ख न ख
 मातहो ला० ॥ जू० ॥ १४ ॥ मान गयो ने माहतम
 मिटीयो, रेहणो नहि एह थानहो ला० ॥ जांगी शा
 खाए विलगेधो, तेतो उपजे हानहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १५ ॥ पुरुपा पाणी इम राखेवो ज्युं राखे नालिये
 हो ला० ॥ गोकलकोतो पैने न्यारो, साधा सुधो

शेरहो ला० ॥ जू० ॥ १६ ॥ गाम तलाई न तजे ब
 गलो, न तजे मालो कागहो ला० ॥ मानसरोवर त
 जे ततद्विण. हस तणो सो जागहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १७ ॥ मध्यम राते अश्व चढीने, साथे एक खवा
 सहो ला० ॥ निकलियो पुर बाहीरे आयो मतो करे
 सोल्हासहो ला० ॥ जू० ॥ १८ ॥ अश्व ग्रहीने रहे
 तु अलगो शेवकशु दाखतहो ला० ॥ हु विद्या सा
 धु समसाने, नेद न को जाखतहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १९ ॥ लाकर लावे चित्ता वनावे, मृतक आणी ए
 कहो ला० ॥ आचूषण-पहिरावी वाले, टालण खोज
 विवेकहो ला० ॥ जू० ॥ २० ॥ जघा चीरी लोही का
 ढी ताम लिख्यो ए लेखहो ला० ॥ में ए किधीराजा
 परजा, करज्यो राज विशेषहो ला० ॥ जू० ॥ २१ ॥
 पोले चिठी बाधी चाल्यो-धरी ब्राम्हणनो वेशहो ला
 ल ॥ एहे वारमी ढाले जाखे, गुणसागर सु-विशेष
 हो ला० ॥ जू० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ प्रात हुआ सहु-जागीया-कुमर न दीठो
 सोय ॥ सुध न-लाधी शोधता. आरतिवतो होय ॥
 ॥ १ ॥ नूप नलीपरे पूबीयो, सेवक सोई सुजाण ॥
 विचरी वात कही सहु आचूषण, अहिनाण ॥ २ ॥
 चिठी-दीठी, पोलेजी, खोले, वाची-जाम ॥ साची सघ
 ली-जाणता-मुरछाणो नृप-ताम ॥ ३ ॥ मुरछाणो जा
 ई अवर. मुर्छाणी नृपनार, ॥ बान गुलाम आदे करी,

हाहारव ससार ॥ १ ॥ चेतन लेई राजा प्रजा गुणनो करे
प्रकाश हा वरुनाग कियो किशु, विलवे राय उदास ॥ ५ ॥

ढाल १३ मी ॥ सारगीयो गणरुद्धिबे ॥ ए देशी ॥
कुमरजी एसी किजे केम समुद्र विजय शीवादेवी वि
लवे ॥ बेह न दिजे एम ॥ कु० ॥ १ ॥ हा सोनाग
निध्यान निरुपम, जादव वश वतस ॥ हा सतवत
महत गुणाकर, प्रथ्वि माहि प्रसस ॥ कु० ॥ २ ॥ हा
चद्रानन पकज लोचन, हा गुण चरित शरीर ॥ स
व विध सुदर जोग पुरदर सायर जेम गंजीर ॥ कु०
॥ ३ ॥ हा चाई हा वधु सहोदर, हा वडवीर सधी
र ॥ जीवेक्यु चित करि अति गाढो, माठलडि विण
नीर ॥ कु० ॥ ४ ॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे, रमणी
रूप अनूप ॥ गाम नगर पुर नवि पामिजे, चाईजी
जल नूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ देवरियो दिल दरियो देख
त, पेखत प्रचुता पूर ॥ नजरे न आवे नर कोइ बी
जो, किया काम करूर ॥ कु० ॥ ६ ॥ शुं किजे ए
लोका साथे, सोर मचायो चूर ॥ वात कहता विचि
क्षण शु ऊडी गयो अति दूर ॥ कु० ॥ ७ ॥ रे
कुडा किरतार कलेशी, सोच नहीं तुज माहि ॥ सा
जन मेलि विगोहो करतां, कालज कापे प्राहि ॥ कु०
॥ ८ ॥ इम विलवता राजा राणि, एक नीमतियो
ताम ॥ बलते वाट सुधारस केरी, वाणि वदे अचि
राम ॥ कु० ॥ ९ ॥ कुमर न मूठ वे जयवतो अ

रति म करजो कोई ॥ लान घणो दिन थोडा मा-
हि, आवि मिलशे सोई ॥ कु० ॥ १० ॥ काईक ए
निमति वचने, काईक चित्त विचारी ॥ मुसता हुआ
राजा राणि, आठाने अधिकारी ॥ कु० ॥ ११ ॥ ए
तेरमी ढाडे राजा, वरते धरतो कोड ॥ श्री गुणसाग
र नाई दसनी, ठे जग अविहड जोर ॥ कु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ चालतो-पश्चिम दिशे, मेलतो वहू ग्राम ॥
विजय खेडपुर आवियो, ताम ग्रहो विसराम ॥ १ ॥
नूप जलो-सुग्रीवजी, सुदरि नाश नार ॥ पुत्र पचउ
परैहूई, पुत्रि-दोय सुविच्यार ॥ २ ॥ सोमा नाम सु
हामाणे, सोम सुसेना जाण ॥ पढि गुणि मति आ
गलि पुत्रि गुण मणिखाण ॥ ३ ॥

ढाल १४ मी ॥ राग खेंगारना गीतनी देखी ॥ गुण
वताने गुण चढे, किरति हो किरति वधाति जोय ॥ में
गलनि परे मानवि, जुलेहो जुले मूघा होय ॥ गु० ॥ १ ॥
हीरा लाल-पिरोजडा, मोतीहो मोति माणिक मोल ॥
पारखियाथि बांधतो, माणसहो माणस तिम निर मो
ल ॥ गु० ॥ २ ॥ कुमरी कला गुण आगलि जा
णेहो जाणे राग प्रमाण ॥ वेण वजावे चातुरी, रीं
जेहो रींजे चतुर सुजाण ॥ गु० ॥ ३ ॥ एह आनि
ग्रह मन-धरयो, अमने हो अमने जिते जेह ॥ वेण ब
जावी वेगशु, पिउढो हो पिउढो म्हारो तेह ॥ गु०
॥ ४ ॥ राय जादा रूयडा राजाहो राजा आवेके

ई ॥ काज न सरहि कोईनो, जाईहो जाइ कर शी
 र देई ॥ गु० ॥ ५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो,
 लिधोहो लिधो विणा हाथ ॥ सुघड पणैरे वजावतो,
 अचरिजहो अचरिज सघले साथ ॥ गु० ॥ ६ ॥ के
 किन्नर के खेचरु, के हो के ए सुर अवतार ॥ नूचर
 नरमाणा घणु, कुमरीहो कुमरी मोहि अपार ॥ गु०
 ॥ ७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधि
 क उवाह ॥ कुमरी दोई शुं नलो हुठहो हुठ ते वि
 वाह ॥ गु० ॥ ८ ॥ सुख विलसंता सुंदरु, नदनहो नंदन
 नाम अकूर ॥ सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दि
 न दिन चरुतो नूर ॥ गु० ॥ ९ ॥ एक दिवस आगे चा
 लियो, खबर न हो खबर न जाणि केण ॥ सजला व
 र्त सुहामणो, दीठोहो दिठो सरोवर तेण ॥ गु० ॥
 ॥ १० ॥ सरोवर जलमे जीलतां, आयोहो आयो ए
 क गयद ॥ गज शिक्काए वश करी, चढियोहो चढि
 यो ताम नरिंद ॥ गु० ॥ ११ ॥ खेलावे अति खात
 शु उलखियोहो उलखियो असवार ॥ मैंगल मनमें
 मोहियो, उलट हो उलटनो अधिकार ॥ गु० ॥ १२ ॥
 कुमरे उचो देखियो इहाहो इहां नहि निज कोई ॥
 जे देखे बल माह्यरो, सोरीहो सोरीपुर कहि सोई
 ॥ गु० ॥ १३ ॥ आया दोई विद्याधरु, जाखेहो जा
 जे मीठी बात ॥ नागावर्तन पुर नलो, राजाहो रा
 जा विश्वविख्यात ॥ गु० ॥ १४ ॥ असनी वेग वि

राजतो, राणिहो राणि विजया ताम ॥ कुमरी करम
 यति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥ गु० ॥ १५ ॥
 कुमरीनो वर पूवता, निमतिहो निमति चारयो सार ॥
 जे गजने वग आणशे, थाशेहो थाशे सोई चरनारा ॥ गु०
 ॥ १६ ॥ वेगी विमाने हरखशु, आवेहो आवे पुरमे
 चाल ॥ राजा राणी रजीयां, प्रचुनोहो प्रचुनो नूर
 निहाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ कचननो मडप कियो, मणि
 ना हो मणिना थन उदार ॥ पूतलियो मन मोहनी,
 शोचाहो शोचा विविध प्रकार ॥ गु० ॥ १८ ॥ ढो
 ल दमामा दम्बमी, वाजाहो वाजा अधिक उदार ॥
 विहाह तणी विधि साचवि, वरत्याहो वरत्या मंगल
 चार ॥ गु० ॥ १९ ॥ ए चउदमी ढालमें, सुखमेहो
 सुखमें विसरजाय ॥ श्री गुणसागर सूरिजी पूरवहो
 पूरव पुण्य पसाय ॥ गु० ॥ २० ॥

दुहा ॥ शामा मजुल चाषिणी, सुघडमहा गुणजा
 ण ॥ विणा वजावि एकदा रजवियो राजान ॥ १ ॥
 रजीयो राजाघणु, वाणिवदे अनूप ॥ भाग भाग व
 र माननी फिरफिर चाखे चूप ॥ २ ॥

ढाल १५ मी ॥ आदि जिणद मया करो ॥ ए दे
 शी ॥ तव बोले सा सुदरी, साजल जादव नाथरे ॥
 निसदिन रेहेशु पाखति, नवि बोडू तुम साथरे ॥ त
 व ॥ १ ॥ प्रचुं चणी शु मार्गीयु, ए लघुतानी वा
 तोरे ॥ पुरुप अवध सराहयो, बधक परवश थातोरे

॥ त० ॥ २ ॥ अति मनमानि माननी, नर शिर च
 ढती जायरे ॥ गगा देवी शीव तणे, वेठी माथे आ
 यारे ॥ त० ॥ ३ ॥ नारी कहे निजसुखजाणि, एतो
 हु नवि जाखुरे ॥ कारण जाणि विशेषथी, देव तमासो दा
 खुरे ॥ ४ ॥ खेचर अगारक आकतो, पापीडो मति पीडेरे
 ॥ नूचर जाणी नोलवी, नुज वलशु मति नीडेरे ॥ त०
 ॥ ५ ॥ नूप नलीपर जाखेरे, एठे कवण विचारोरे ॥
 रुपाचल दक्षणादिशे, पुरवरठे अति सारोरे ॥ त० ॥
 ॥ ६ ॥ कीन्नर उठगति एहवो, अर्चितमाली राजारे ॥
 प्रजावती कूखे उपन्या, नदन दो अति ताजारे ॥
 त० ॥ ७ ॥ अग्निवेग अति आकरो अशनी सुवेग
 सोजागीरे ॥ समरथ जाणी नदन, राजा थयो वैरा
 गीरे ॥ त० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ती वर विद्यासु, प्रथमने नृ
 पपद आप्योरे ॥ अवर नणी युवराजनों, पदतो स्थी
 र करी थाप्योरे ॥ त० ॥ ९ ॥ आपण सजम लेह
 ने, मुनिनो मारग साध्योरे ॥ तप जप करणीने वले,
 आपे आप आराध्योरे ॥ त० ॥ १० ॥ विमंला ना
 म सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे ॥ अगारक सुत जा
 ह्यो, कीराति अधिक वखाणीरे ॥ त० ॥ ११ ॥ युव
 राजा घर जाणइ, नामे सुप्रजा नारारे ॥ तस उरे हु
 उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ त० ॥ १२ ॥ रा
 यतणे पद थापियो, प्रीति नणी लघु जाइरे ॥ वि
 द्यासु निज नदन, युवराज पद ठाइरे ॥ त० ॥ १३ ॥

चारित्र लीधो मुनीवरु, मोटप मेरु समाणीरे ॥ आ
 प सरीखा लेखवे, जगमां जे ठे प्राणीरे ॥ त० ॥
 ॥ १४ ॥ राय अने युवराजमा, उपज्यो अधिक क
 लेशरे ॥ चुजवलने विद्यावले, राय ठमायो देशरे ॥
 त० ॥ १५ ॥ नागावर्त्तसु नगरीए, राजाजी गयो ना
 सीरे ॥ पखी पिंजरानी परे, वासर जाए उदासीरे ॥ त
 व० ॥ १६ ॥ एक दिवस नदन वने, गयो एह नरिं
 दोरे ॥ जघाचारण ज्ञानीजी, मीलियो एक मुणिंदोरे
 ॥ त० ॥ १७ ॥ पगे लागीने पूठीयो, राज गयो के
 आसोरे ॥ पुत्री पतिथी थाशेये, तरे लील विला
 सोरे ॥ त० ॥ १८ ॥ पुनरपि जाखे रायजी, पुत्री प
 ति कोण थाशेरे ॥ सजलावर्त्त सरोवरे हाथी सा
 मो धाशेरे ॥ त० ॥ १९ ॥ गज शीखाइ खेलवी,
 हाथीने वश करशेरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वरु, सामा कुम
 री वरशेरे ॥ त० ॥ २० ॥ ते उपर ए खेचरु जा
 सुसीने हेतोरे ॥ काम सरया प्रचु तुमने, लेइ आ
 व्यो गह गहतोरे ॥ त० ॥ २१ ॥ विस्तारथी ए वा
 तजी खेचर सगली जाणीरे ॥ पिशुनपणे तुम हण
 वानी, बुद्धी अबे तिही ठाणीरे ॥ त० ॥ २२ ॥ उ खे
 चर तुम नूचरु, मतके धीणसे कामोरे ॥ तेहथी हुं
 वर मागुठु, साथरही अनिरामोरे ॥ त० ॥ २३ ॥ तव
 वर आपी थापियो गाढो प्रेम अपारोरे ॥ ए पन
 रमी ढालमा गुणसागर जयकारोरे ॥ त० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ निशिनर निंदमे सोवतो, खेचर ते अगा
 र ॥ लेइ गयोवसुदेवने, आणी द्वेश अपार ॥ १ ॥
 जागी शामा सुंदरी, पीउ न देख्यो जाम ॥ शस्त्र ग्र
 ही पुठे हुइ, आण पहुती ताम ॥ २ ॥ अरि सघाते
 सामीका, लागी होई विरूप ॥ अरिने सनमुख होव
 ता. कोप्यो जादव जूप ॥ ३ ॥ सुष्टी प्रहारे मारियो,
 खेचर जादवराय ॥ नाखी दीधो आकाशथी. पढ्यो
 सरोवर माह्य ॥ ४ ॥ समरंता नवकारने. आल न
 आयो अग ॥ जलपयरी तट आवियो, सुसतो थ
 यो सुचग ॥ ५ ॥

ढाल १६ मी ॥ गोरंजी थे मुने गोमे न राख्यो
 ॥ ए देशी ॥ धन धन करमे तो नर कहीउ जिहा
 जाइ तिहा आदर लहीउ ॥ ध० ॥ ए आकणी॥मार
 ग जाता बलदेव केरो, देवल देखी हरख घणरो ॥
 जाणी शुज स्थान राते तिहां वसियो, कर्म चरि लि
 खी मनमा हसीयो ॥ ध० ॥ १ ॥ प्रात हुओ एक
 आव्यो पूजारो, देखी कुमर मनहरख अपारो ॥ पूठे प्रजु
 जी पुज प्रकासो, ए कवण पुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध०
 ॥ २ ॥ नगरी चपा नामे निकी, जु जामनीने सीर
 टीकी ॥ चारुदत्त राजा जयवंतो, विशालाक्ष त्रीय
 नो कतो ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी, रु
 पे रुढी जाणी अमरी ॥ चोसठ नारी कला ते
 जाणे. राग कलामां अधिकु ताणे ॥ ध० ॥ ४ ॥

वेण वजावे ने मुख गावे आपे रहीं अधिक्
 दावे ॥ एह कलाए जीते-जेही मुज नरताए
 करु हु तेही ॥ ध० ॥ ५ ॥ नूपतने नूपतिना जाया. पच
 सया परिणाम कहाया ॥ श्री सुदर्शन गधर्व पाथे, रात दि
 वस ए कला अज्यासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन
 स्वर सात कहीजे. मूर्तना एरुविस लहीजे ॥ गुण
 पचासय तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि
 ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सा
 मु जोवे ॥ कारज करवा कोई-न-सुरो, कुमरी हसी
 कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अ
 धिकी सीखे हठे पढीया ए नूपति जाखे ॥ वणिना
 वे ठे एलेतन-मेलत मास-मास एक आघो ठेलत
 ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर गयो आचारज-सगे, साचवतो
 अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहता वार-न-लावे, पिण
 तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ राजकुमार
 तव करता हासो, मुख जाखे एवढो तमासो ॥ अवर
 नही पण ए गुणवतो, थारो-कुमरी-केरो कथो ॥ ध० ॥
 ११ ॥ तामस आपे यादव जाचो, अबही जाणशे
 कुनो साचो ॥ कासो शब्द करेवे जेही, सोना शब्द
 करे नाहे तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो दिन आयो
 जामो, कुमरी मरुप आवी तामो ॥ गाइवाइ वीण वहे
 ली, साथे घणेशी तास साहेली ॥ ध० ॥ १३ ॥ तिलोत्तमा
 उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने पारुण पासो ॥ स्वर्ग थ

की जेम चाली आवी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥
 ध० ॥ १४ ॥ गाँव अने वजावे विणा, मोहीरह्या सब
 लोक प्रवीणा ॥ कमरी रूप कला गुण देखी, एही स
 नामा सुख विपेखी ॥ ध० ॥ १५ ॥ भूप तदा नरमा
 णा नारी, विसरीया सुघडाइ सारी ॥ आरतियो आ
 चारज होइ, विणा ग्रही कर कुवर सोड ॥ ध० ॥ १६ ॥
 उत्तम घाट बनायो रूडो, कोड वाते नाहिज कूडो ॥
 गान वजावणी ठे वेड सरखी, कुमरी घणु मनमाही
 हरखी ॥ ध० ॥ १७ ॥ कुमरी जाखे वात नलेरी, ए
 सी विणा आणी अनेरी ॥ विण सुघोषा नामे वारु,
 जेही रिंजायो विणु कुमार ॥ ध० ॥ १८ ॥ सा विणा
 कर साहि प्यारे, आचरज तव हूओ जगसारे ॥ कहे
 अब केवो गोंड गानो, सहुने लागे अमी समानो ॥
 ध० ॥ १९ ॥ सा जाखे सुण चतुर सिरोमणि तु दे
 खाय ठे नजो मणि ॥ विणु कुमारनो टालण क्रोधो,
 उपद्रव्य मेटणने प्रतिबोधो ॥ ध० ॥ २० ॥ हाहा तु
 वुरु नारद आयो, जेहि ग्याने ऋषिजी रिंजायो ॥ जो
 आवे तो सोहि सुणावो, अवर ग्यान ठे मोहि अजा
 वो ॥ ध० ॥ २१ ॥ नेद सगितहि जाणे सुधो, जेहि
 ग्याने ऋषिजी प्रतिबोधो ॥ सोहि सुणायो ग्यान स
 याणे, नलो नलो कही खलक वखाणे ॥ ध० ॥ २२ ॥
 रजी रामा अति अजीरामो पहेरावी वरमाल सकामा
 ॥ व्याह तणो कीधो मन्नाण, ए विण मोटो पुण्य प्रमाण

वेण वजावे ने मुख, गावे, आपि, रहीठ अविठ
 दावे ॥ -एह कलाए जीते-जेही मृज नरताण
 करु हु तेही ॥ ध० ॥ ५ ॥ नूपतने नूपतिना जाया. पच
 सया परिणाम कहाया ॥ श्री सुदर्शन गंधर्व पाथे, रात दि
 वस ए कला अज्यासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन
 स्वर सात कहीजे. मूठना एकविस लहीजे ॥ गुण
 पचासय तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि
 ॥ ध० ॥ ७ ॥ -पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सा
 मु जोवे ॥ कारज करवा कोई न सूरु, कुमरी हसी
 कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अ
 धिकी सीखे हठे-पढीया ए नूपति जाखे ॥ -वणिना
 वे ठे एलेतन मेलत मास-मास एक आघो ठेलत
 ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर ज्यो आचारज सगे, साचवतो
 अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहता वार-न लावे, -पिण
 तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ -राजकुमार
 तव करता हासो, मुख जाखे एवढो तमासो ॥ अवर
 नही पण ए गुणवतो, थारो-कुमरी-केरो कथो ॥ ध० ॥
 ११ ॥ तामस-आणे यादव जाचो, अवही जाणशे
 कुमो साचो ॥ -कासो शब्द करेवे जेही, सोना, शब्द
 करे नाहे तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो-दिन आयो
 जामो, कुमरी-मरुप-आवी तामो ॥ गाइवाइ वीण वहे
 ली, साथे घणैरी तास साहेली ॥ ध० ॥ १३ ॥ तिलोत्तमा
 उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने पारुण-पासो ॥ स्वर्ग ध

रजी ॥ दिठो देव उठव करता चित्तनो चोरण हा
 रजी ॥ कु० ॥ ५ ॥ ए वरपासुं तो परणवो, अवर न
 परण कोइजी ॥ अणसरखे पीउडे पद्मनीनो, आवट
 मरणो होयजी ॥ कु० ॥ ६ ॥ धाइ तणा मुखनी सुणी
 राजा, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ सतोपी वचने वर कु
 मरी, चाल्यो आप तुरतजी ॥ कु० ॥ ७ ॥ सोवंतो कु
 मर अपहरियो, करीयो काम अनूपजी ॥ नीजपुर
 आणी राजारणी, पुज्यो यादव नूपजी ॥ कु० ॥ ८ ॥
 कुमरी अमरी सरखी सघली, सात सया परिमाण
 जी ॥ परणावी कुमरने हरखे, किधो अति मनाएजी
 ॥ कु० ॥ ९ ॥ सोर सुणतो पूढे प्रनुजी, एशो सोर
 प्रकारजी ॥ प्रतिहारणी जाखे स्वामी, एहनो एह वि
 च्यारजी ॥ कु० ॥ १० ॥ कुमरी तणी मातासु जाइ,
 बोल्योथो ए बोलजी ॥ जो माहरे होशे सुत सुदर,
 ताहरे सुता अमूलजी ॥ कु० ॥ ११ ॥ सगपणनो सबध
 करेसा, ए हुवो ते न्यायजी ॥ लोक मिली ए जगढो
 जाज्यो, नारी कियो नवी थायजी ॥ कु० ॥ १२ ॥ क
 मली रमली करतो अति वरते, जोगी जमरो जेमजी ॥
 श्री वसुदेव कुवर रमतो, पदमनियाने प्रेमजी ॥ कु०
 ॥ १३ ॥ गिरिसिर खेलत निलकठसो, आयो होई मो
 रजी ॥ निलयगाने लेइ गयो तव, काइ न चाल्यो
 जोरजी ॥ कु० ॥ १४ ॥ दक्षिणदिश गिरितटवर नगरे,
 सोमा राज कुमारिजी, देवतणे वादे जीती प्रनु, पर

॥ ध० ॥ २३ ॥ बहू वरनी सरखीठे जोढी, पोहोचावे
 मन केरा कोढी ॥ धर्म विपे पिण सरिखा दोड, सुखमा
 वासर जाता जोड ॥ ध० ॥ २४ ॥ एरुदिवस हरी उठव
 हेते, आवे कुमर निज महिलसमे ते ॥ ढाल सोलमी क
 ही सुणावे. श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ ध० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ विद्याधर आव्या घणा. हरीउठवने काज
 ॥ हमत रमत खेले तिहा, नरनारी शुज साज ॥ १ ॥
 विद्याधरनी कुमरी, नीलजसा नामेण ॥ कुमरी रूपे रगी
 ली. अमरी जीती नेण ॥ २ ॥ नीलजसा वसुदेवने,
 दृष्टी रागनी चूर ॥ उपजी जाणी विशेषथी, घमकी
 चुचरी चूर ॥ ३ ॥ प्रीतम लेइ पाधरी आवी निज आवा
 स ॥ विद्याधर उठव करी, चाली गया आकाश ॥ ४ ॥

ढाल १७ मी ॥ हम मगनजये प्रज्नु ध्यानमे ॥ ए
 देशी ॥ कुमरी हूइरे उदासणी, हसत न बोलत ढो
 लत चित्तढो, कुमर चरण निवासणी ॥ कु० ॥ १ ॥
 जोजन त्याग न पिवत पाणी सोवत निंद न आव
 ती ॥ लाबा अति निसासा लेती, यदुपतिने चित्त
 धावती ॥ कु० ॥ २ ॥ प्रेम रागठे तीखीकाती, का
 लिजने अति कापती ॥ जो सुख चाहे सानृनी मन
 मा, परने चित्त मत आपती ॥ कु० ॥ ३ ॥ जाणी
 आरती अपार अनोपम, धाइ पूठे वातजी ॥ ज्त
 तणा बलनीपरे तुतो, दिसेठे अकुलातजी ॥ कु० ॥
 ॥ ४ ॥ तव सा धाइ प्रते ज्ञाने, श्रीवसुदेव कुमा

ढाल १८ मी ॥ चांदलिती देशी ॥ हाथी आकांशे
 चालित, विद्याधर विद्या बलित ॥ जन जाखे कुंवर
 बलियोहो ॥ कुंवरजी ॥ १ ॥ कुंवरजीरुपे निको, कुव
 रजी प्यारो जीको ॥ कुवर कुमरा सीर टिकोहो ॥ कु०
 ॥ २ ॥ हाथी तो चाल्यो जाये, राख्यो कोइनो न र
 हाये ॥ कुवर चित चिंता थायेहो ॥ कु० ॥ ३ ॥
 तव मुष्टि प्रहारे मारयो, हाथिनो मद उतारयो ॥ आ
 पणु काम समारयोहो ॥ कु० ॥ ४ ॥ पढीयो गगाज
 ल माही, नवकार जणतो प्राहि ॥ अगे दूखाणो ना
 हिहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ गंगाजल पयरी जामो, अटवि
 मे पनीयो तामो ॥ आगे आयो एक गामोहो ॥ कु०
 ॥ ६ ॥ सिंहगुहा तस नामो, विमलप्रज्ञ नृप गुण
 धामो ॥ त्रीय श्रीमति अजीरामोहो ॥ कु० ॥ ७ ॥
 पुत्री पोमावाइ वारु, अति वेद कला इंचारु ॥ सा
 जीति आणी उदारुहो ॥ कु० ॥ ८ ॥ परणीने सुख
 मानीजे, आपणु पूधन जाणनि ॥ आगेकि मति ठां
 णिजेहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जयपुरना तो पति साधी,
 एक कुमरी नीकी लाधी ॥ दिन दिन अति किरति
 वाधीहो ॥ कु० ॥ १० ॥ नदिलपुर चाली आयो, ति
 हा राजा पोद्र सुहायो ॥ प्रजुजी सौने मन जायो
 हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ कुमरी धारयो पूर्व वेसो, तस रुप
 कला सुविशेसो ॥ परणे जंदुराय नरेशोहो ॥ कु० ॥ १२ ॥
 पुरुष वेशनो जेवो, तव पूढे श्रीवसुदेवो ॥ सा उत्तर दे

णी रति अवतारीजी ॥ कु० ॥ १५ ॥ ए केहेता रायथी
 सुर आवी, लेइ गयो ततखेवजी ॥ यत्त तणा देवल
 मांही मूक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥ कु० ॥ १६ ॥
 राक्षस एक तणोठे वासो, पेहेला देवल माहीजी ॥
 देश नगरना लोक सहने राक्षस दुःख दे त्राहीजी
 ॥ कु० ॥ १७ ॥ राक्षसने वश करवा सुरवर करता ज
 य जय कारजी ॥ रायथी पण सघले आवीने, प्रणम्यो
 कुमर उदारजी ॥ कु० ॥ १८ ॥ कन्या पाच सया प
 रीमाणे, परणावी, नूपालजी ॥ सुख मानता विविध
 प्रकारे. पुढ्यो सालो, स्यालजी ॥ कु० ॥ १९ ॥ कुल
 अणजाण्या किम परणावी, कन्या ए सतपचनी ॥
 सालो नाखे स्वामी साजल, सघलीनो एक सचजी ॥
 ॥ कु० ॥ २० ॥ निमति वचने यदूनायक, राक्षस जी
 तण सूरजी ॥ कन्या सकल तणो वरथाशे वाज्या ए
 जसतूरजी ॥ कु० ॥ २१ ॥ यादव राजा रायराया
 ना, जिहा जइए तिहा आपजी ॥ गुणसागर सत्तर-
 मी ढाले पूर्व पुण्य प्रतापजी ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ अचलपुरी प्रनु आवीयो, चनमाला सुखका
 र ॥ पुत्री सारथ वाहनी परणावी प्रेम अर्पार ॥ १ ॥
 सचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम ॥ कपीलरा
 पनी कुवरी, परणि कपिला नाम ॥ २ ॥ विविधप
 रे सुख मानता, सरोवरमा जीलत ॥ निलकूठ गजरू
 प धरी आइ-कुमर चढंत ॥ ३ ॥

क ऊमालिहो ॥ कु० ॥ २६ ॥ अष्टादशमी ढाले प्रे
मो, सुख विलसे सुरपति जेमो ॥ गुणसागर नांखे ए
मोहो ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ लाने लोन वाधे घणो, उद्यमे अधिको ला
न ॥ लाने सीर जाइ अडे, उचो तो अति आज ॥१॥
लान विशेष विचारवे. आगे चाल्यो स्वाम ॥ महापु
री आयो सहि, हररूयो अचरज पाम ॥ २ ॥ ठाम
ठाम दिसे घणा, मदिरना मनाण ॥ निश्चे करवा का
रणे पूढ्यो पुरुप प्रधान ॥ ३ ॥

ढाल १९ मी ॥ पाचमी वाडे परमेश्वरु ॥ ए दे
शी ॥ पुरुष कहे प्रनुजी सुणो, ए वातज वारु ॥ अ
चरजकारीठे घणी, चतुरा चितचारु ॥ १ ॥ सोमदत्त
राजा जलो, राणी सुविचारी ॥ पूरणनद्रा जाणीए,
नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोमश्री नामे जली, कुमरी
अजिराम ॥ स्वयवर मढप तेहनो, ए कीघा धाम ॥३॥
राय घणा चाली आवीया, ए निम्नरीखो ॥ विचे
हुवो सबधजी, ते सुणण सरीखो ॥ ४ ॥ उपर जोमी
एकदा, सा राजकुमारी ॥ देखे लबन चद्रनु, लय ला
गी जारी ॥ ५ ॥ ऋषि केवल उबव जणी, सुर जाता
देखी ॥ जाति समरण पामियो, मूरछा सुविशेखी
॥ ६ ॥ उठाडी वेठी करी, करी सीतलताइ ॥ मौन अ
हिने मा रहि, कही वात न काइ ॥ ७ ॥ धाय माय
ने पूढता, दिए जबाव गरीठो ॥ ज्ञान बले परजव

ततखेवोहो ॥ कु० ॥ १३ ॥ तव एक निमती राइ, पुठयो
 मुज वरने ताइ ॥ तिहां नाम लीयो गोसाइहो ॥ कु० ॥
 ॥ १४ ॥ योग कहो किम मिलशे, रुडे जइ रुडु न
 लशे ॥ ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु० ॥ १५ ॥ रूप
 पुरुषनो ठाणि, सा राज राखाति जाणि ॥ प्रचुर्जी मि
 लसे वेगो आणिहो ॥ कु० ॥ १६ ॥ गुरु गोत्रजने
 सुपसाइ ए एकसरीखे दोइ ॥ सातमे वासर जाइहो
 ॥ कु० ॥ १७ ॥ अगारक क्रोधे नरीयो, तिहा रूप
 हसको करीयो ॥ सुखे सोवतो अपहरीयोहो ॥ कु० ॥
 ॥ १८ ॥ मुष्टी प्रहार ज्या दीधो ॥ चेतनधी अलगो
 कीधो ॥ गगामे पनीयो सीधोहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ पा
 णि तरी काठे आवे, अटवि तजी वसती पावे ॥ इ
 लावर्धन नगर सुहावेहो ॥ कु० ॥ २० ॥ हाटे वेठा
 वेपारी, ते लक्ष्मीवता जारी ॥ एक शेठ अठे अधि
 कारीहो ॥ कु० ॥ २१ ॥ कुमर बेठो तस पासे, ति
 हा मिलिया लोक तमासे ॥ ए मोटो शेठ विमासेहो
 ॥ कु० ॥ २२ ॥ तव अन्न वस्त्रने नाणु, जुहरीयाने कि
 रीयाणु ॥ ते दिन अधिकु वेचाणुहो ॥ कु० ॥ २३ ॥
 लाजतणो नही पारो, तव शेठ करे सुविच्यारो ॥ ए
 तो एहनो उपगारोहो ॥ कु० ॥ २४ ॥ आदर अ
 धिके घर आयो, जोजनशु प्रेम परमाण्यो ॥ वख
 तावर पुरुष पिठ्याण्योहो ॥ कु० ॥ २५ ॥ कन्या ठे
 रूप रसाली, सा रतनवति सुबिशालि ॥ परणावी जा

कोप्योठे काल ॥ २१ ॥ बलबल केलवी घणो, हाथी
 वश आण्यो ॥ उवारी कुमारीको, जग जादव जा
 एयो ॥ २२ ॥ राय त्रीयाने कुमरी, हरिस्त्रिया मनमा
 हि ॥ ए मोठो उपगारियो, पुरुपोत्तम प्राहि ॥ २३ ॥
 सर घणो ने बलघणो, धन्य यौवनवतो ॥ ए उग
 णिसमी ढालेमा, गुणसूरि कहतो ॥ २४ ॥

दुहा ॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू जणी सुकु
 मार ॥ शेठ कुबेरज दत्तने, घर आयो तेणिवार
 ॥ १ ॥ कुमरीने राणी सहू, निज घर करे प्रवेश ॥
 वाट वधी ए अति घणी, उठव कीयो विशेष ॥ २ ॥

ढाल २० मी ॥ सुगण नरनारी रूप नजोय ॥ ए
 देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयोरे, किये प्रशस अ
 पार ॥ वारवार वधामणारे, मिलियो सहू परिवाररे ॥
 मोहनजी ॥ १ ॥ तु सूरतिका सोहनजी, तु दूपजल
 का प्रोहणजी ॥ तु गुणमणिका रोहणजी, तु चित्त
 कजका बोहनजी ॥ तेरारे तेरा धन, अवताररे, मोहनजी ॥
 मेरारे मेरा तुजशु प्याररे ॥ झुळ्यो झुळ्यो मुळ किर
 ताररे, पायोरे पायो जल जरताररे ॥ मो० ॥ ए आ
 कणी ॥ व्याह तणी विधी सांचवीरे, जेसा चित्त वित्त
 होय ॥ आनद रग विनोदमारे, चांसर जाता जोयरे
 ॥ मो० ॥ २ ॥ मनोवेग मनोहररे, विद्याधर बलवत ॥
 निशजर सुखे सोवतोरे, आइ गयो मयमंतरे ॥ मो० ॥
 ॥ ३ ॥ सोमश्री कुमरी हरिरे, चाली गयो आकाश.

तपो, मे प्रितम दीठो ॥ ८ ॥ हुं हुती देवांगना, तु
 हुतो देवो ॥ नोगवो आयु सुरगति तपो, चवीयो त
 तखेवो ॥ ९ ॥ तु उपज्यो हरीवंशमे, हु आइ इहाजी ॥
 देवे विगोहो पांभियो, केम कीने मार्जी ॥ १० ॥ जो प
 ति पामु मूलजी, तो र्थे परणावो ॥ नहीतर परणावा
 आखनी, सही सजम लेवो ॥ ११ ॥ धाय जणावी
 वातही, राजाने जाइ ॥ लोक विसरजा वेगशु, मन
 मा दुर्चिताइ ॥ १२ ॥ तुवे नूचरं राजवी, माह्यरो
 खग नाम ॥ विषम वात आवी बनी, केम सीजे का
 म ॥ १३ ॥ एटले एक निर्मीतीयो, जाखे सुसनेहो ॥
 इद्र उंभव देखण जणी, आवशे एहो ॥ १४ ॥ हाथी
 पासे बोढायने, परणाशे आपो ॥ इस सुणता हरखी
 यो, कुमरीतो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण जणी
 अते उर आयो ॥ वाहने विविध प्रकारनी, अति सो
 र मत्तायो ॥ १६ ॥ विधन तोमी जोरशु, हाथी
 विखरायो ॥ अबला उपरे आकुलो, होइने धायो
 ॥ १७ ॥ सुजट न आवे आसना, सह जाइ जा
 ग्या ॥ शस्त्र ग्रहिने सामटा, सर्वाहण लाग्या ॥ १८ ॥
 साचो मूर सिरोमणी, यादवजी जाचो ॥ १९ ॥ अटल ट
 ल्यो नही ठामथी, नरफाडे माचो ॥ १९ ॥ अग्नी
 जाल जज केसरी, एह सिमुं होणु ॥ नि सत्व नरने
 दोहिलु, साहसिग्राने जोणु ॥ २० ॥ श्वासजरी आ
 वी धसी, शरणे सा बाल ॥ राख राख - प्राणेशजी

रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चा
 ल्यो चोर ॥ केश मणिने कामनिरे, न लेवाइ जोररे
 ॥ मो० ॥ १६ ॥ हु सखीतु तेहनीरे, प्राणहीथी प्या
 र ॥ मोकलीतु तुम्ह कन्हरे, आणी एह विचाररे ॥
 मो० ॥ १७ ॥ मुऊ सघाते ठे घणोरे, नाथजीको नेह ॥
 वाकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥ मो०
 ॥ १८ ॥ रूपे मोही प्रचुतणेरे, शुद्धही नाठी दूर ॥
 हाणि मनमथ बाणशुरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो०
 ॥ १९ ॥ रूप धरीने बेहनी तणोरे, मानीयो मे नोग ॥
 स्वारथीयो ससार ठेरे, आपवणे लोकरे ॥ मो० ॥ २० ॥
 स्वामी थारी सुदरीरे, हु हुइ सुख हेत ॥ ठानी मणि
 चिंतामणीरे, काच कुण चित्त देतरे ॥ मो० ॥ २१ ॥
 सोमश्री अपहारनिरे, एहवी सुणी वात ॥ हुउं चूप
 उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ ढा
 ल नली ए विसर्मीरे, करत नोग विलास ॥ श्री गुण
 सागर सूरिजीरे, पुण्ये पूरे आशरे ॥ मो० ॥ २३ ॥
 दुहा ॥ श्री वसत ऋतु राजीयो, आयो अधिक
 विराज ॥ फूल फल शोजा खरी, कोयल बोले गान ॥ १ ॥
 मीत्रोना परीवारसु, खेले वसत नरेश ॥ सुखे सोवतो
 अपहरयो, मानसवेग विशेष ॥ २ ॥ मुष्टी प्रहारि मा
 रता, शुद्ध रही नही कोय ॥ समरतो नवकारने, उर
 होइ आयो सोय ॥ ३ ॥ गगा तटविद्याधरु, विद्या साधे
 नाम ॥ आणी पच्चो उपर प्रचु, विद्या सिद्धी ताम ॥ ४ ॥

जाग्यो श्री वसुदेवजीरे, देवी न दिठी पासरे ॥ मो०
॥ ४ ॥ प्रीया प्रीया पूकारतारे, सोमश्री आकार ॥
अरि जगनी आवी धर्सांरे. वेगवति वर नाररे ॥ मो
ह० ॥ ५ ॥ जेद न जाणयो जूपतिरे, पूठण लाग्यो
तास ॥ किहा गइथी बाहीरारे, बोले सां उल्हासरे ॥
मो० ॥ ६ ॥ गर्मिं हुइ मुजने घणीरे, सीतलताइ जा
ण ॥ उनीथी हुं वायरेरे, प्रीतम आरति मत आणरे ॥
॥ मो० ॥ ७ ॥ रामा रची रूपसुरे, ना कीयो. किश्यो वि
चार ॥ करी अति खिजमत खरीरे, जोगवे जोग उ
दाररे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पोढ्यो प्रजुजी पालकेरे, पोख्यो
पदमनी प्रेम ॥ विमासण-विधी साधवीरे, अवसर पा
मी तेमरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ एक-दिन-सुखे सोवतारे,
खेचरी ए अजिराम ॥ रूप-अरियो-मूलगोरे, जागी
यो प्रजु तामरे ॥ मो० ॥ १० ॥ बाल-मुद्रा शशिकलारे,
युवा हारधा दाम ॥ दिवस-धीजे प्रगटेरे, तिमही ए
ह अकामरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ पूगी-प्रजुजी पद्मनीरे, को
णगे तुमे आप ॥ रजुपणे नाखो जलोरे, कोइ न रा
खे पापरे ॥ मो० ॥ १२ ॥ रूपाचल दहणदिशेरे, स्व
र्ण प्रजपुर-देख्य ॥ चित्तवेग विद्याधरुरे, राय रुढो
पेख्यरे ॥ मो० ॥ १३ ॥ त्रिय-अगारवति. कहीरे, मनो
वेग तसु नद ॥ नदनी तो-हुं जलीरे, अबु नयना
नदरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ रूप-अधिको, साजलीरे, मनो
वेग नरेश ॥ सोमश्री-लेइ गयोरे, सीता ज्यु लकेशरे ॥

निमतीए गुणवत हेयादु ॥ ऊ० ॥ १० ॥ चंडसुवेग कु
 मारने हेयादु, विद्या साधन जोइ ॥ परुशे खाधा उप
 र हेयादु, पुत्रीनो वर सोइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ ते
 दिनथी लघु चाइजी हेयादु, निश्चय करवा हेत ॥ वि
 द्या साधे वेगशु हेयादु शुनवगीत फलदेत हेयादु ॥
 ऊ० ॥ १२ ॥ नननु तिलक सुहामणु हेयादु, नगर
 नीरोपम नाम ॥ श्री त्रिशिखर नरेश्वर हेयादु, सर्पक
 सुत गुण धाम हेयादु ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ तेहने अरथे
 मागता हेयादु, पुत्री नापी तात ॥ युद्धे हरावीता तेह
 ने हेयादु, चाल्यो लेइ आरात हेयादु ॥ ऊ० ॥ १४ ॥
 बधीखाने राखीया हेयादु, देव हमारो बाप ॥ जोरन
 चाले माहरो हेयादु, अरिनो प्रबल प्रताप हेयादु ॥
 ऊ० ॥ १५ ॥ पुज्य प्रताप करी खरो हेयादु, सरसे
 सघलो काज ॥ आज थकी तो आगले हेयादु, कुमर
 ने सबलि लाज हेयादु ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ विद्या साधी
 सादरी हेयादु बधव तुम प्रसाद ॥ साहज्जे करी स्वामि
 ने हेयादु, होसि ए अहिलाद हेयादु ॥ ऊ० ॥ १७ ॥
 दीन वचन साजली हेयादु, ठठयो मूठ मरोड ॥ आ
 रति कोइ मतराखजो हेयादु, करशु कारज कोड हेया
 दु ॥ ऊ० ॥ १८ ॥ साला पासे शिखयो हेयादु अ
 स्त्र अनेक प्रकार ॥ अग्नि अने ब्रह्मानला हेयादु, श्री
 महेन्द्र उदार हेयादु ॥ ऊ० ॥ १९ ॥ वैष्णव वारु नाम
 थी हेयादु, जमदड अस्त्र विचार ॥ स्थजन मोहन तो

ढाल २१ मी ॥ आजको दिहाडो मोहे जावे हो न
 एदी ॥ ए देशी ॥ आवी एक विद्याधरी हेयादु, ले
 इ चाली जाम ॥ प्रचुने मेली वागमे हेयादु, खबर क
 री अन्निरामहेयादु ॥ १ ॥ जगमगियोराय तेहवे, पर
 खड परदेशमे हेयादु ॥ शोना अधिकी पावे हेया
 दु ॥ ऊ० ॥ २ ॥ राजा अमृत द्वारना हेयादु, खेचर
 वधव तिन ॥ दधिमुख दिलनो सूरठे हेयादु, घतुर
 शिरे सुप्रविण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ दढसुवेग वि
 राजतो हेयादु, चढसुवेग प्रचढ ॥ आया प्रचुनी सा
 मा हेयादु, माने आण अखंड हेयादु ॥ ऊ० ॥ ४ ॥
 पधरावी निज मदिरे हेयादु, श्रीवसुदेव नरेश ॥ मद
 न सुवेगा वेगसुं हेयादु, परणावी सुविशेष हेयादु ॥
 ऊ० ॥ ५ ॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमशु हेयादु, मग्न महा
 मनमाही ॥ उलट अति घणी मानतो हेयादु, सुख मा
 ही दिन जाइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ६ ॥ उगतो दिनकार
 नो हेयादु, घमीए वधतो तेज ॥ तिम नरिंद वसुदेव
 नो हेयादु, चढतो तेज सहेज हेयादु ॥ ऊ० ॥ ७ ॥
 बाप बोनावण कारणे हेयादु, दधिमुख जाखे वात ॥
 श्रीनमीवश विशेषथी हेयादु, विद्युत वेग विख्यात हे
 यादु ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ पुत्र पनोता तेहना हेयादु, एह म
 ति नविआण ॥ थारा मननी जावती हेयादु, पुत्री चो
 थी जाण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ निमित्तिने पूगीयु हेया
 दु, कुमरी कारण कत ॥ निर्मल माति बोलीयो हेयादु

साथी, असवारे असवाररे ॥ रथसाथे रथ जिडीया
 ज्ञारी, मच्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० ॥ २ ॥ नील सुक
 ठ अगारक आतुर, सूर्पक मानसवेगोरे ॥ चमसवे
 ग तणे आगे ए, हारथो नफूरी तेगोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥
 खेचरने यादवने लडवे, एवो अचरिज पायोरे ॥ विवि
 ध प्रकार विशेष विशेषे, बाणे अवर बायोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥
 अग्निसु बाणे अग्नी विकुर्वि, हाथी घोडा बालेरे ॥ वारुण
 बाणे घन वरसावी, एह उपद्रव टालेरे ॥ पु० ॥ ५ ॥
 मोहन बाणे निंदतणे बल, लोक सह ते सोयरे ॥ ब्रा
 ण प्रबोधे निंद निवारी, हुशीयारिमां होयरे ॥ पु० ॥
 ॥ ६ ॥ श्री माहेन्द्र बाणे हणतो, खेचरे पढीयो मद
 रे ॥ यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आ
 नंदरे ॥ पु० ॥ ७ ॥ सुसरो बधनथी गोडावी, देह द
 मामे घावरे ॥ पामी घेग निज नगर जणी ते, आ
 वे सह परीवाररे ॥ पु० ॥ ८ ॥ सुर्पनखा नामे अरि
 नारी, वैर विशोधन आवीरे ॥ मदन सुवेगा रूम वि
 रोजी, प्रजुजीके मन जावीरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ बल पा
 मीने प्रजु सोवतो, चाली लेह आकाशरे ॥ मान सवे
 ग जणी प्रजु सोप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० ॥
 ॥ १० ॥ अरि करथी खसी अणु माही, पनीयो ला
 गी थोमीरे ॥ राजग्रही नगरी चाली आयो, नीती
 कचन कोमीरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कचन वाटे देतां बोले,
 किरति चारण जाटोरे ॥ श्रीवसुदेव पधारथा पहिली,

टिका हेयादु, अण रोहण अविधार हेयादु ॥ ७० ॥
 ॥ २० ॥ वधनमोद्धन जाणीए हेयादु, जजनने ए सा
 न ॥ वायव्य वेदन जेदना हेयादु, आरुढ अस्त्र प्रधान
 हेयादु ॥ ७० ॥ २१ ॥ सर्व सुअस्त्राहि वादना हयादु,
 शल्य निवारण हार ॥ गुणसागर गुण गाजतो हेयादु,
 ढाल एकवीसमी सार हेयादु ॥ ७० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश ॥
 चढीयो आडवर घणे, अरि उपरे सुविशेष ॥ १ ॥
 मगल मिलियो मलपतो, घामो दक्षिण हाथ ॥ मगल
 गाती गोरमी, सात पाचनो साथ ॥ २ ॥ उढयो न
 एती योगिनी, सामो आव्यो शाह ॥ दक्षिण नयरव
 कलकली, उपज्यो अति उवाह ॥ ३ ॥ खर देवी का
 बी नली, बोले होमाहोड ॥ कुंकर वामे उतरयो, का
 ज समारे कोरु ॥ ४ ॥ हरिणमाल अधूरडी, जमणी
 जाइ प्रात ॥ साड चास दक्षिण दिशे, वामे वायस
 जात ॥ ५ ॥ डाबा लाली बोलीया, अवर अनेरासा
 र ॥ शुकन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार
 ॥ ६ ॥ अरि पिण आयो सामुहो, दल बलनो नही
 अत ॥ रेणु रही उची चढी, समजे न कोई पढत ॥ ७ ॥
 ढाल २२ मी ॥ तेतरीया जाई तेतरीया ॥ ए दे
 शी ॥ पुण्य बले अधिको यदुराजा, करतो अधिक
 दिवाजारे ॥ खेचर सामे आणी अढीयो, वाज्या शुन
 जश वाजारे ॥ ५० ॥ १ ॥ हाथीउथी हाथी साथीउथी

दुहा ॥ वेगवति सात्री सती, आवी, पीजने काम
 ॥ प्रिती विशेष विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥ १ ॥
 गिरि, काठे उद्यानमे, खेल खेलता जाम ॥ नागपाश
 बाधी थकी, दीठी कुमरी ताम ॥ २ ॥ बंधन ठोड्या
 हाथशु, सा जाखे सुविच्यार ॥ विद्या सिद्धी माह्यरी,
 ए प्रनु तुम उपगार ॥ ३ ॥

ढाल २३मी ॥ वेधक जग विरळा ॥ ए देशी ॥ उप
 गारी राजाहो, थारा अधिक दिवाजा हो ॥ उ० ॥ ए
 टेक ॥ दक्षिण श्रेणि, नगर निरुपम, नामे गगन प्रि
 य वारुहो ॥ विद्युतदत्त नरेश्वर निको, गुणमणिनो न
 डारु हो ॥ उ० ॥ १ ॥ तेनो नदन बाल सुधाकर, हुं
 तु तास कुमारी हो ॥ विद्या साधत वैरीए मुजने, वा
 धी बधन नारीहो ॥ उ० ॥ २ ॥ बधन ठोड्यां करुणा
 आणी, हु थाइश तुमारी सणीहो ॥ अमृत गंडी
 खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ॥ ३ ॥
 विद्या आपु विविध प्रकारे, अतर न आणु कोइ हो
 ॥ वेगवतिने आप पनोति, जाखे प्रितम सोइहो ॥
 उ० ॥ ४ ॥ प्रनु आदेशे वेगवतिने लेइ निज घर
 आवीहो ॥ विद्या साधन करती वरते, वेगवति सुख
 पाविहो ॥ उ० ॥ ५ ॥ तापस स्थानक पधारयो वनमे,
 अचरिज अधिको पायोहो ॥ नौतम तापस ते सहु
 दिसे, एक तदावृत लायोहो ॥ उ० ॥ ६ ॥ सो जाखे
 तु साजल स्वामी, वात अचना कारिहो ॥ सावरती

जरासध उच्चाटोरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ निमीत्तिने पुठयोथो
 राजा, मुजने मारण हाररे ॥ वेग वतावी करु उपक
 र्मा, केरो कोइ विचाररे ॥ पु० ॥ १३ ॥ जोतिपि जा
 ण कहे जीतशे, जूआ खेली जेहरे ॥ कचन कोडी त
 णा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० ॥ १४ ॥
 तेनो जायो कृष्ण कुवर वर, ते तुम हता जाणरे ॥ निश्च
 य वात विशेष विचारी, सशय एक न आणरे ॥
 पु० ॥ १५ ॥ एम सुणी नासुसिकारण, नृपना लोक
 फिरतारे ॥ कचन जाती त्याग करता, मिलियो तते तं
 तारे ॥ पु० ॥ १६ ॥ चाम तणा नाथामें घाली, हु
 गरथी नाखतारे ॥ गरु गरुतो आवी पढ्यो नू उपर, प
 रमेष्टि नाखतारे ॥ पु० ॥ १७ ॥ वेगवाति राणी, सान
 लीयो, जब ए श्री नवकारोरे ॥ जाया खोली देखत दी
 ठो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० ॥ १८ ॥ वेगवाति
 रावे प्रनु आगे, प्रनुजी सुसतो होइरे ॥ नारी निहा
 ली नेह धरीने, पूठी नाखे सोइरे ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुम
 अपहरी श्रेणी दौयमें, शोधी शोध्ये जरतीरे ॥ मद
 न सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतीरे ॥ पु० ॥
 २० ॥ सुर्पनखार्थी मानस वेगे, लीधो मारण हेतो
 रे ॥ मारी न शक्यो राजग्रहिमें, आयो शुन सकेतोरे
 ॥ पु० ॥ २१ ॥ ढाल बाविसमी हु धन प्रनुजी, जे
 तुम सेवा लाधीरे ॥ श्रीगुणसागरसूरि, नलो जे, जा
 णे अवसर साधीरे ॥ पु० ॥ २२ ॥

रो, सोइ वर सुखदाइहो ॥ उ० ॥ १७ ॥ एम नीसु
णी मन ख्यालज लाग्यो, देउलमांही जायहो ॥ सवी
वार ए अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥ उ० ॥
॥ १८ ॥ देखी प्रचुने देवलमाही, शेठ आश्चर्य पाइ
हो ॥ परणावी पुत्री निज हाते, ढील न कीधी काइहो
॥ उ० ॥ १९ ॥ ढाल ए तेविशमी वरचारु, नोगवे
नोग उदारुहो ॥ श्री गुणसागर सूरि पयंपे, यादव
यश विस्तारुहो ॥ उ० ॥ २० ॥

दुहा ॥ अतेउर परीवारशुं, राजा वनमें जाय ॥
दिठो प्रचु वाजारमे, नयण रहरां लोनाय ॥ १ ॥ लो
नाया लोचण घणा, देखी कुमरनी शोच ॥ कुमरीने
सन्नोगनो, लाग्यो अधिको लोच ॥ २ ॥ शोध करंतां
साजल्यो, बधुमति जरतार ॥ बोलावी पूढे तदा, स
खियणने सुविचार ॥ ३ ॥

ढाल २४ मी ॥ धन धन जंबुस्वामीने ॥ ए देशी
॥ बहिन जणे वाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार ॥ नोग
पुरदर सुदरूं, कामतणो अवतार ॥ १ ॥ जाग्य प्रव
ल वसुदेवनो, एतो-गुणमणि रयण जमार ॥ जाग्यवं
ति जे नामानि, एतो पामे जल जरतार ॥ जा० ॥ २ ॥
एकाते तव दूतिका, आवी प्रचुजीने पास ॥ कुमरी
काम समारवा, आप करे अरदास ॥ जा० ॥ ३ ॥ देव
पधारो मदिरे, पूरो कुमरीनी आस ॥ हसी रमी रस
रगमे, कीजीए नोगाविलास ॥ जा० ॥ ४ ॥ जो नवि

नगरीनो नायक, इंद्र तणो अवतारीहो ॥ ३० ॥ ७ ॥
 एणो पुत्र पवित्र पनोतो, तास सुदरी नारीहो ॥ कुम
 री अमरीने अनुसरती, प्रियगु सुदरी प्यारीहो ॥ ३०
 ॥ ८ ॥ स्वयंवर मडप तेहतणेजी, नूप घणा बोलाव्या
 हो ॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणुं अक
 लायाहो ॥ ३० ॥ ९ ॥ जगडो मच्यो कुमरी पिताशुं,
 दिए पुत्री परणावीहो ॥ कुमरी हठीली अधिक अढी
 ली, समजे नही समजावीहो ॥ ३० ॥ १० ॥ नूप न
 णे हम जोरे वरसां, कुमरी पितां तव कोप्योहो ॥
 युद्ध करवा कारण काठो, सद्रपणायी रोप्योहो ॥ ३०
 ॥ ११ ॥ कोइ नरपति लढी लढी मूत्र्या, कोइ नांठा
 जुजूआहो ॥ लाज धरी वनवास अहीने, तांपिस रुपि
 हूँआहो ॥ ३० ॥ १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, य
 दुपतिनी मति जागीहो ॥ नगरी वनमे चाली आयो,
 अत्रयतो अनुरागीहो ॥ ३० ॥ १३ ॥ देवल एक
 जलोठे उत्तम, द्वार जमीत अति वारुहो ॥ पेखी पू
 ठिठ पुरष प्रजाविक, सो जांखे सुविचारुहो ॥ ३० ॥
 ॥ १४ ॥ सकल सिरोमणि शेठ प्रसीद्धो, कामदेवस
 कामहो ॥ ताघर सुदरी सुदर नारी, रूपगुण अनि
 रामहो ॥ ३० ॥ १५ ॥ तासपुत्री अठे गुणवति, ब
 धुमति सुकुमारीहो ॥ जोवन तन जन मोदन गारी, बा
 ली जाकजमालीहो ॥ ३० ॥ १६ ॥ शेठे पूबयो निमत्ति
 कवारु, सुता वर कृण थाइहो ॥ द्वारखोलशे नेवलके

दुहा ॥ सावरथी नगरीनो धणी, शीलायुध नरिंद ॥
घोडे खाच्यो आवीयो, तापस वन आनद ॥ १ ॥ पगे
लागता तापसे, आदर दीयो अपार ॥ तापस पुत्री
साचवे, विनय तणा आचार ॥ २ ॥ जोजन जक्ति वि
शेषथी, करती वरते जाम ॥ आ पुण्य माही उपज्यो,
काम राग अनिराम ॥ ३ ॥

ढाल २५ मी ॥ हु तुज साथे नही बोलु ॥ ए दे
शी ॥ काम राग अठे जग मोटो, जेहथी खाइ खोटो
जी ॥ एकलडे तीहु जग हरायो, कुण वमो कुण ठो
टोजी ॥ का० ॥ १ ॥ राजानी आतुरता जाणी, ऋ
षिपुत्री व्रत राखेजी ॥ व्याहतणो विधि साचवी, प्रेम
तणो रस चाखेजी ॥ का० ॥ २ ॥ राजा बोले काडम
मोले, नाम प्रकासे मारोजी ॥ सावरथी नगरीनो न
यक, ठे मुज प्रितम प्यारोजी ॥ का० ॥ ३ ॥ विविध
प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदे एवोजी ॥ जो उ
धान रहेशे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ॥ ४ ॥
राजा निकली गया पिठे, लोक घणा अकुलायाजी ॥
शुद्ध न लाधे तास पुत्री, पुढ्या उत्तर धायाजी ॥ का०
॥ ५ ॥ तापस वन राजा ठे नीसुणी सामा लोक सि
धावेजी ॥ राजा सन्मुख देखी आवत परम महा सु
ख पावेजी ॥ का० ॥ ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने,
वात जणावी एहोजी ॥ ढानी राखत जायो बेटो रु
पकला गुण गेहोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ वात सुणीने मा

मानो वात ए तो थागे विपरित ॥ प्राण तजगे कुमरी
 अति दुखदाइ ठे प्रित ॥ जा० ॥ ५ ॥ उत्तर दीधो अ
 वसरे, ज्ञानी दीठो होइ ॥ सतोपी घर, मोकली, हरखी
 कुमरी सोइ ॥ जा० ॥ ६ ॥ बडमाता कुमरीतणी, वि
 तरणि अजिराम ॥ चलण प्रज सह चारणी, नागश्री
 तसु नाम ॥ जा० ॥ ७ ॥ सोवतो नरनिंदमे, देवी की
 यो अपहार ॥ आवी वेठी वागमें, वाणी वंदे सुविचा
 र ॥ जा० ॥ ८ ॥ आरति कोइ मत आणजे, हु था
 री हितकार ॥ चरी सुणावु आपणी, आलस निंद, नि
 वार ॥ जा० ॥ ९ ॥ अमोघ दर्शन नामथी, चटनपुर
 नो राय ॥ चारुमति पति जाण ए, लोक सहने सुखदा
 य ॥ जा० ॥ १० ॥ चारुचद्र नामे जलो, नदन महा सु
 खकद ॥ राज करे रलीयामणो, ठे सुख कद निकद ॥ जा०
 ॥ ११ ॥ अनगसेनानी सुता, सरुपे अति अजिधान ॥
 कान पताका प्रगटी, हवी नामनी जीने वान ॥ जा० ॥
 ॥ १२ ॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात ॥
 राजा कीधी रागनी, सख माही दिन जात ॥ जा० ॥
 ॥ १३ ॥ दिन केताने अतरे राजा तापस थाय ॥ ग
 र्ज वहे वैरागनी, साथ रही सुख पाय ॥ जा० ॥
 ॥ १४ ॥ तापसी दिन पूरते, प्रसवी पुत्री सार ॥ ऋ
 षिदत्ता अजिधानथी, वाधे रूप अपार ॥ जा० ॥ १५ ॥
 ए चोवीसमी ढालमे, श्रावकना व्रत पच ॥ श्री गुणसा
 गर आदरे, जग न आणे रच ॥ जा० ॥ १६ ॥

साचो शीयल विचारोजी ॥ बालक लीधो कारज सी
 धो, मान्यो अति उपगारोजी ॥ का० ॥ १८ ॥ इण
 पुत्र कीयो वरराजा, राय हुवो व्रत धारीजी ॥ नेमि
 तीर्थकर तीर्थे एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का०
 ॥ १९ ॥ इण पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियगु सुदरी बाला
 जी ॥ रुपकला गुण सुदर साची, स्वामी ते सुखमाला
 जी ॥ का० ॥ २० ॥ तुमसु राग धरे अधिकेरो, सा
 रो एहनो काजजी ॥ जाणी अदत्ता मत खींचावो, मे
 दीधी-ए आजजी ॥ का० ॥ २१ ॥ ए घरमे हु हरतां
 फिरता, महारु कीधु चालोजी ॥ राजाजी तो एकम
 नो अति, आण हमारी पालोजी ॥ का० ॥ २२ ॥ का
 मदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी ॥ करी
 विवाह विनोद करीने, सुदरीने सतोखीजी ॥ का० ॥
 ॥ २३ ॥ देवल माहि देवि जाषित, कीधो लीधो ला
 होजी ॥ राय लिखी वींतरणी विलसीत, प्रगट कीयो
 विवाहोजी ॥ का० ॥ २४ ॥ ए पचविशमी ढाले जा
 खी, जिहा तिहा अधिकाइजी ॥ श्रीगुणसागरसूरि क
 हेजी, पुण्य सदा सुखदाइजी ॥ का० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एकवार एकलपणे, जागी जेवे जाम ॥ किं
 चित कुमरी आगले, उनी दीठी ताम ॥ १ ॥ कवण
 अगे तुम कामनी, कहो आपणो नाम ॥ काम किने
 आवीअगे, सोइ प्रकाशो काम ॥ २ ॥

ढाल २६ मी ॥ श्री सिमदर साहेब मेरा ॥ ए

ता मूढ सुरगतिनो अवतारोजी ॥ साहू नाग श्रावि
 तराणि, नहीं सदेह लिगारोजी ॥ का० ॥ ८ ॥ श्री जि
 नधर्म अठे जग साचो, जो आराधे कोईजी ॥ मोक्ष
 तणा घळ आपणहारो, सुरगाति सहेजे होइजी ॥
 का० ॥ ९ ॥ ज्ञान वले मे देख्यो पावो, जाग्यो नेह
 घणेरोजी ॥ मातापिताने सुत सघाते, मोही रह्यो मन
 मेरोजी ॥ का० ॥ १० ॥ चाली आव्या मातपितातो,
 दुखीया दीठा दोइजी ॥ मा पाखे वालक जिम जीवे,
 करे विमासण सोइजी ॥ का० ॥ ११ ॥ बालपणे मा
 ता मरी जाइ, तरुण पणे जो नारीजी ॥ वृद्धपणे सुत
 मरता चाख्या, ए तिने दु ख चारीजी ॥ का० ॥ १२ ॥
 आप जणावी मातपितानी, आराति अलगी टालीजी
 ॥ इणारे आप पधरावी, बालक लीघो पालीजी ॥
 का० ॥ १३ ॥ इणे पुत्र कही बोलाव्यो, तापस सघ
 ले तामोजी ॥ एहज नाम प्रसिद्धो चाल्यो, लोक व
 चन अचिरामोजी ॥ का० ॥ १४ ॥ मरण समे निज
 मातपिताने, जिनमतशु स्थिर स्थापीजी ॥ आणसणने
 आराधन वले, सुरवर पदवी आपीजी ॥ का० ॥ १५ ॥
 तापसणी होइने हुतो, बालक लेइ लारोजी ॥ शिला
 युद्ध तणे घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥ का० ॥
 ॥ १६ ॥ राजा साथे वदे मृदुवाणी, ए ल्यो थारो न
 दोजी ॥ अपुत्रियाने नदन क्यार्थी, जाखे ताम नरि
 दोजी ॥ का० ॥ १७ ॥ मूलथी वात सुणावत, जाण्यो,

माहर्षे, अँवला तो धुर नामोरे ॥ पुरुषपणो तेहनो
 श्यो उँप्रांजो, जेहथी नँ सरे कामोरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥
 दिन वचन मे एही वीनविज, जिम जाणो तिम कीजे
 रे ॥ एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युए सुयश न ली
 जेरे ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चालो तो प्रचुने पोंहोचावु,
 सोमश्रीने पासेरे ॥ चाली कहता चतुरपणाथी, चाली
 लेइ उलहासेरे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ स्वामी निरखी सुद
 री हरखी, आरति कीधी कोणेरे ॥ नारी रुप धरी प्या
 रो पिउढो, पद्मनिशु सुख माणेरे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥
 काम समारी सँहार केरो, प्रजावति घर चालीरे ॥ लो
 काचार व्यवहार विशेखे, चित्तो पिउने आलीरे ॥ स्वा०
 ॥ १५ ॥ दिन केताने अतरे मानस, वेगे लिखी ए वा
 तोरे ॥ कोपतणे वश कलकलिते अति, कालो पीलो
 थोतोरे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ मांडी समर तणीरे संजाई,
 शोधन कीधी कोइरे ॥ सिंहतणीपर सुरपणाथी, आ
 णी अँढीयो दोइरे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ जाणी अन्याइ
 गेडे जाई, जाई धर्म सहाइरे ॥ खेचर प्रचुनो पद
 करता, मची अधिक लढाइरे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ तव
 तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारोरे ॥ दिव्य
 तीरना तरकस दोई, दीधो धनुष्य उदारोरे ॥ स्वा० ॥
 ॥ १९ ॥ प्रज्ञापति वर विद्यावारु, प्रजावतिथी पाइरे
 ॥ विद्या बलने जुज बले वली, बांध्यो त्रीयनो जाइरे
 ॥ स्वा० ॥ २० ॥ सासु सामी आवी मागे, पुत्र जिह्वा

देशी ॥ स्वामी मुणेने सुंदरी जाखे, सप कोइ न राखे
 रे ॥ काज करवा कारण आवा, सोइ कारज दाखे
 रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ गिरि वैताळ्ये नगरी निरोपम, गध्र
 स्मृद्धि सोहावेरे ॥ गुणनो सागर अधिक उजागर, रा
 य गधार कहावेरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ प्रथवी राणी रजा
 जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे ॥ नाम प्रसिद्धि प्रजाव
 ति हु, सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ मानस वे
 ग तणे घर गइथी, स्वर्णसुप्रन्नपुर माहीरे ॥ मात अ
 गारवति सतीयामे, सती सीरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ॥
 ४ ॥ वेगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आ
 णेरे ॥ मे पुढी सा कयां गइठे, खवर कोइ न जाणेरे
 ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे
 काम सिधावीरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वर पासे पिण, पा
 पणि फिरी न आवीरे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ मानसवेग म
 हा मयमतो, मुजशुं अडीथो आवेरे ॥ भाय दबावे शी
 ल सुधर्मणी, पोहचो वानवीपावेरे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तु
 उपगारी सिरोमणि सात्री, माहरो कारज सारेरे ॥ स
 देसो साइ सघाते, कहिता जीव उवारेरे ॥ स्वा० ॥
 ८ ॥ आश वळे में ए दिन लिधा, आगे आशा बु
 टेरे ॥ जुरी जुरी पजरा हुइ, अब मुज हियडो फूटेरे ॥
 स्वा० ॥ ९ ॥ वेगे वार कीजीए माहरी, नहीतर बो
 डु प्राणेरे ॥ शीलनगथी नके जाणो, प्राण घणा घ
 ट आणेरे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ जीवन मरण, तणु शु

किणही कीधो मांनो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम चासोरे,
 हु जोशु एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मत्रवादियो आयो
 रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो
 रे, ए ठे राजसुता अन्निरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जा
 मोरे, धूर फेनीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी दे
 होरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीम
 ति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार प
 साइरे, न वाबित्त काम सराइ ॥ ९ ॥ जम रूपीया ज
 ण ध्यायारे, राजाना रोश जराया ॥ उपकार कोई न
 जाण्योरे, प्रचु राजग्रहि में आय्यो ॥ १० ॥ पुठता
 उत्तर नाखेरे, ते कोई न ठानो राखे ॥ ए केतुमतिने
 वापेरे, वर एक निमित्तिए आपे ॥ ११ ॥ ए पुठयोथी पे-
 हलु वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुळ हता आ
 प्यवता विरेरे, तु नाख्य जावि जलीपेरे ॥ १२ ॥ तव
 जाणे नर सहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि ॥
 तुम पुत्री सारी कस्येरे, तस नंदनथी तुम रस्ये ॥
 ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमे सुविशे
 ष ॥ वरतता तु अब लाघोरे, सुर इष्ट जणी आराधो
 ॥ १४ ॥ अब वध जूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां
 केइ ॥ ए सुदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आ
 पी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला हो
 स्या जारी ॥ एह सुणता वातोरे, प्रचुनो मन अकुला
 तो ॥ १६ ॥ चिंताए चाप्यो जामोरे, एक खेचर आय्यो

मुऊ दौजेरे ॥ बंधन ठोडी साला साथे, परिघल प्रीति
कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रनु पहिरावी,
साथे हुवो खग सोयरे ॥ वेसी विमाने महापुरी आ
या, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ वीस अ
ने पटमी ए ढाले, दिन जाना न जणाइरे ॥ श्री गुण
सागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे ॥ स्वा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥
रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उ
चो जाता अवर, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल मा
ही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गंगाजलधी नी
कल्यो, तापस वन आवत ॥ अवसर देखी अति घ
णो, गाढो सुख पावत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी र
मणी राइरे, सासु धन जाणे काइ ॥ विकल रुपणी, दी
सेरे, सा दात घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विद्वणी बा
लीरे, नर हारु धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धर
तीरे, नृप देखीने रग करती ॥ २ ॥ तव पूढीयो ता
पस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ ए जरासधनी जा
इरे, ए केतुमातिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेशर रा
णीरे, ए रूपे रजा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धा
रीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न बूटे
कोइरे, सुदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव
पुनरपि पूढे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वायु तणो वे जोरोरे,

रुडोने रलीआमणो ॥ तव घर घरवार वधामणो ॥
 ज० ॥ ४ ॥ सुख सागरमाही जीलेए, तव तन मन
 शु अति फूलेए ॥ तव नेम सुरति पूलिए, पाठो सघ
 लो हि नूलिए ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुर्पक आप विगोवतां,
 तव आणी पोहतो जोवतां ॥ अति निद्रावश होवतां,
 प्रचुलेइ चेल्यो सुखे सोवता ॥ ज० ॥ ६ ॥ अवर
 जातां जागीयो, तव काठो दोइ लागीयो ॥ गरदन
 मे गढदो वागीयो, तव वेंरीनो बल जागीयो ॥ ज० ॥
 ॥ ७ ॥ उमा पाणिमे पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो
 ॥ प्रचु वसति नणि अति दडवड्यो, तव कुंदनपुरी
 आवी चड्यो ॥ ज० ॥ ८ ॥ राजा राज करे जलो, ते
 पद्मप्रज ठे निर्मलो ॥ ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने
 त्यागे आगलो ॥ ज० ॥ ९ ॥ पद्मश्री नारी सती, त
 स पुत्री ठे गुणवति ॥ सा चाले चाले मलपती, सा
 कोमल वाणी नलपती ॥ ज० ॥ १० ॥ सा राग कला
 ए अति ताणे, अनिमानपणो मनमा आणे ॥ सा
 नली बुराइ न पीगणे, जग सगलो हि तृण करी जा
 णे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इम सुणी आयो चाली, जीती
 ने परणी सा वाली ॥ सा नारी मेली जे टाली, लही
 ए जो जिन आझा पाली ॥ ज० ॥ १२ ॥ रस रगे
 रमतो सचरे, तव निलकठजी अपहरे ॥ तव सीख दे
 ता करगरे, प्रचु पनीयो चंपा सरवरे ॥ ज० ॥ १३ ॥
 मत्रिनी पुत्री परणी, सा कचन वरणी सुख करणी ॥

तामो ॥ प्रचु लेइ चाल्यो गोडाडरे, ते सुनट रह्या मो
 हवाइ ॥ १७ ॥ आकाशे जाता जोडरे, खग साथे पु
 ठे सोइ ॥ तु कुण अठे सुखकारीरे, कहे वात विशेष
 विचारी ॥ १८ ॥ हु प्रजावतिनो वावोरे, माहरो ठे आ
 धिक असावो ॥ मुज जागीरथी अनीधानोरे, हं राया
 नो राजानो ॥ १९ ॥ अब पोतिने परणावारे, वैताळ्य
 गिरिरे वसावा ॥ तुज लेइ जाउठु विरारे, तुम साहस
 वत सधीरा ॥ २० ॥ ए दृष्टीरागनो साजोरे, ठे प्रजा
 वति शु जाजो ॥ ए सत्ताविशमी ढालोरे, गुणस
 रि कहे सुविशालो ॥ २१ ॥

दुहा ॥ नूमफुलने परहरी, गावो वीसहजार ॥ उधो
 जाता अबरे, दक्षिण श्रेणि उदार ॥ १ ॥ गधसमृद्धा
 पुरवरां, आइ गया तत्काल ॥ खबर जणावी सादरी,
 सह चणी सुविशाल ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तुं साजल हो जिनपति ॥ ए दे
 शी ॥ जग जाचो हो यदुपति, तस माथे दिपति रति
 ॥ सुर मानवने माटायति, अति किरति गावे गति ॥
 ज० ॥ १ ॥ साजन सनमुख आवीया, ते प्रचुजीने
 मन जावीया ॥ पुरमाहि सीधाविया, ते परम महा सु
 ख पाविया ॥ ज० ॥ २ ॥ मुहूर्त्तनो मढाणोजी, तव
 कीजे कोमकल्याणोजी ॥ तव मेल्या जोसी जाणोजी,
 दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रजाव
 तिने प्रचु तणो, तव कीधो व्याह सोहामणो ॥ वर

प्यो ॥ श्रेणीमांदि मुख्य करी गप्यो, सघलो तेहनो
दुःख काप्यो ॥ ज० ॥ २४ ॥ निलयशा आवी धरी,
हाथ जोडी विनति करी ॥ ए दोइ विनावर सहचरी,
ए सह सवहुं तेरे गुणचरी ॥ ज० ॥ २५ ॥ ए ढाल
आठावीशमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी ॥ ए नारी
सहु सरखी समी, श्री गुणसागर मनसारमी ॥ ज० ॥ २६ ॥

-दुहा ॥ शुद्धि सघली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमा
र ॥ मध्य खरुमे आवता, सुणीयो एह विचार ॥ १ ॥
श्री अरिष्ट पुरवर जलो, श्री हरी ब्रह्म नरेश ॥ पट
राणी पदुमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी ना
मे रोहिणी, अमरीनो सुविलास ॥ नख-शिख तांइ शो
चति, स्वयंवर मंडप तास ॥ ३ ॥ जरासध सुत बांधवा,
पाडव कौरव राय ॥ यादव खेचर नृप अवर, मिल्या
एकठा आय ॥ ४ ॥ बैठा वड वड आसणा, वडा-वडा
चूपाल ॥ चढी वनी शोचा करी, दिसे जाकजमाल ॥ ५ ॥

ढाल २९ मी ॥ धन प्रनु-रामजी, धन्य-परिणाम
जी ॥ ए देशी ॥ कुवर आयो श्री वसुदेववे ॥ रूप विरुप
करी कोलिको, जाइ न लहे नेववे ॥ कुं० ॥ १ ॥ रो
हिणी रजा सरस विराजे, साजी सवरो वेसवे ॥ मड
प आवी जगत सोहावी, फिन करी सुविशेषवे ॥ कुं०
॥ २ ॥ प्रतिहारणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नाम
वे ॥ जरासध त्रीखरु नरेश्वर, ए प्रनुजी अनिराम वे
॥ कुं० ॥ ३ ॥ अपराजीत वधन कुवरजी, कालयवन

सा रूपे रत्ना मनहरणी, सा इद्राणी उपम धरणी ॥
 ज० ॥ १४ ॥ सुखकारी सुधरे घणी, जाणे सुख पात्रु
 एहजणी ॥ पिण जेहनो रखवालो घणी, तिहा कीसी
 चले वैरि तणी ॥ ज० ॥ १५ ॥ तव अरि, आ खुण
 जाण्यो कीयो, प्रनु जल क्रिडा करतो लीयो ॥ तव
 मुष्टिशुं हणता हियो, ते अवरथी नाखी दियो ॥
 ज० ॥ १६ ॥ तव पढीयो गगाजल माहि, तव अट
 विमे फीरतो प्राहि ॥ प्रनुवन राजा उंठाहि, नगरीए
 आयो धरी वाहि ॥ ज० ॥ १७ ॥ कुमरी राज पर
 णावता, तव गीत घणेरा गावता ॥ तव अगलाच्यार
 करावता, तव सुदरीशु सुख पावता ॥ ज० ॥ १८ ॥
 तव नदत नीके जाइत, राजाने, आणी सुणाइयो ॥
 तव दाने दरिद्र गमाइत, तेजरथ कुमर मन जाइत ॥
 ज० ॥ १९ ॥ तव अयवति सुदरी करी, तव सुरसे
 न्याशु वरी ॥ सामा देवी तव आवे खरी, विनति के
 रे करधरी ॥ ज० ॥ २० ॥ जेसी विमान, प्रनु आवे,
 अशनीवेगने सोहावे ॥ सेन सकल लेइ जावे, आ
 ली अरिनीपुर पावे ॥ ज० ॥ २१ ॥ अगारक त्रिदी
 आयो, सुर्षक निलकठ बोलायो ॥ रणथन तीहारो पा
 यो, बहुविध युद्ध बणायो ॥ ज० ॥ २२ ॥ विद्याध
 र बहु थाठा, युद्ध करता अति, त्राठा ॥ जाण अ
 पुष्टा नाठा, प्रनुजीशु अति, गाठा ॥ ज० ॥ २३ ॥
 अशनीवेगने राज आप्यो, सह वदीतो, स्थिर स्था

॥ १४ ॥ कर्महिनने छेश किहांथी, कांइ करन चढा
 यवे ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठो, अण सरज्यां न
 लहायवे ॥ कु० ॥ १५ ॥ निर्जर्गर्या ते जरासंधशुं, वो
 ल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातग अठे मयमतो, हम
 सरखा शुंथायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कल
 कलीयो, वड वना सुनट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ
 थी उठी, रेणु रही नन गायवे ॥ कु० ॥ १७ ॥ श्री
 हरि ब्रह्म नरेश जाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो
 तरी रथ कुमनी वेसारी, अव तो तुंटली जायवे ॥ कु०
 ॥ १८ ॥ कुमर कडे सुसराजी एहवो, बोलन फेरी वो
 लवे ॥ एतो सग लाचार हमारी, था दढता मम डो
 लवे ॥ कु० ॥ १९ ॥ विद्या बलने मन वले वलीयो,
 बलीया ठे नूज दडवे ॥ तूण जीम सुनट उनाइ ना
 ख्या, प्रचुनी पवन प्रचडवे ॥ कु० ॥ २० ॥ बीजी फो
 ज बनी अति आवी, कुवर कुलीयो घेरवे ॥ काइ अ
 धरम करो सुर कहेतां, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कु०
 ॥ २१ ॥ सघकेतु नूपाल पधारयो, दल बल सबलो साज
 वे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे मृग जेम चाल्या जा
 जवे ॥ कु० ॥ २२ ॥ महावल राजा अति बलवतो, सन्मुख
 आयो चालवे ॥ उगता रवी आगे तम जीम, सोपिण
 गयो मुह टालवे ॥ कु० ॥ २३ ॥ उदधिविजय नृप
 वीडो पायो, ए तुम सरीखो काजवे ॥ जादव जोर
 विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कु० ॥ २४ ॥

कुलमांहिवे ॥ दाता जोक्ता दल दरिआको, नाम घरा
 वत प्राहिवे ॥ कु० ॥ ४ ॥ पाठव पच प्रतापवले अ
 ति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कहावे कल्पतरु जे,
 जे ए परतख पेखवे ॥ कु० ॥ ५ ॥ उदधिविजय आ
 दे नव जाइ, अधिकाइमें आणवे ॥ उग्रसेन अलेल
 करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कु० ॥ ६ ॥ खेचर नू
 चरं सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालबे ॥ कुमरी मुह म
 चकोडी चाली, हा आगेरे चालवे ॥ कु० ॥ ७ ॥ वड वड
 राणा वड वड राजा, परद्वीया सब दूरवे ॥ चतुरपणार्थी
 चोली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कु० ॥ ८ ॥ आप
 वजावे बाजा वारु, सुघमाइनो संचवे ॥ कुमरी देखे रु
 प मूलगो, नजरं न खचे रंचवे ॥ कु० ॥ ९ ॥ धौ धौ
 धंप पंम मुजवर, मादल शब्द करतवे ॥ धसी वरमा
 ला रलियात रोहिणी, कुवर कंठ धरतवे ॥ कु० ॥ १० ॥
 आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व संयाणवे ॥ म
 र्म अणल हेवे सजा सघला, हुया अधिक अधाणवे
 ॥ कु० ॥ ११ ॥ उधत कुवर कालयवनजी, कोप व
 शे उचरतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, ए वर न्या
 य वरतवे ॥ कु० ॥ १२ ॥ कुमरी नूली हम नहि नू
 ल्या, ल्यो वरमाल बिनायवे ॥ काग गले कचननी मा
 ला, एतो जेली न देखायवे ॥ कु० ॥ १३ ॥ चौकर
 आवी माला मागे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर
 कहे किम राज करेवे, करता एहवो न्यायवे ॥ कु० ॥ १४ ॥

सौरिपुर आवंतवे ॥ घर घर मंगलाचार वधाइ,
 साजन सुख पावतवे ॥ कु० ॥ ३५ ॥ साह सहु मिलि
 चरणे लाग्या, प्रभु दीधो सनमानवे ॥ रामचद्र जेम
 गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कु० ॥ ३६ ॥
 गज सायरने चद सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शु
 न वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलचद्र कुमारवे ॥ कु०
 ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष
 प्रधानवे ॥ गुणसागरे हरि वश तणेवे, दिन दिन च
 ढतो वानवे ॥ कु० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खढ खढ रस ठे नव नवा, सुणता मी
 ठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवश चरित्र जयजयो, प्र
 थम अधिकार ए पुरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
 वधे श्री हरिवश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्त ॥

॥ अथ हरिवश ढाल सागर ग्रथस्य द्वितीय खंड प्रारभ ॥
 दुहा ॥ श्रीमधर स्वामी तणो, चरणे नमु चित्त ला
 य ॥ अब बीजो अधिकार वर, य नणता सुख थाय
 ॥ १ ॥ जुजगविष्णु नरेंद्रजी, मनमे करे विचार ॥ अ
 व अवसर सजम तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥
 ॥ २ ॥ वय पलढ्या वाला पणो, वा ठे विविध प्रकार ॥
 विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लिगार ॥ ३ ॥
 उग्रसेन निज पुत्रने, राजचार आपंत ॥ धर्मघोष मु
 निवर कने, सजम लीयो तुरत ॥ ४ ॥ सजम पाल्यो

आनंददुंदुनी साहमो आयो, हाको हाक होवंतवे ॥
 अवरिज पामी अवरस्वामी, कौतुक अति जोवतवे
 ॥ कु० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए
 सोचवे ॥ किंज न धसे अरि उपर राजा. लोगा ए
 आलोचवे ॥ कु० ॥ २६ ॥ सिर लोचनने जुज पिण द
 क्षिण, राजाना फूरकतवे, ॥ करत विचारण ए स्थिर
 स्थापी, कोइक-इष्ट मिलतवे ॥ कु० ॥ २७ ॥ कुमर क
 हे लम्बो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे ॥ स्व
 अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे
 ॥ कु० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु भाइना, जीलो
 प्रनु प्रणामवे ॥ बहुतर सहस ए गुण राणी, जाणी
 आज सकामवे ॥ कु० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए
 सोतो, वास नलो केहेवायवे ॥ साजन मेला पाखे, व
 सवो, जंगल भाही गणायवे ॥ कु० ॥ ३० ॥ भाइ, धाइ
 सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायवे ॥ उठाइलियो, जे
 अघिकेरे, लीघो कठे लगायवे, ॥ कु० ॥ ३१ ॥ चाम
 रुधिरने मास हारुथी, नीजी नीतर जाइवे, ॥ पचहि
 पुट नेदाणी नारी, गाढी सीतलताइवे ॥ कु० ॥ ३२ ॥
 जरासध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारवे ॥ धन
 रोहणी कुमरी करमैति, पायो नल नरतारवे ॥ कु० ॥
 ॥ ३३ ॥ सो वर साने अतर आयो, अडबि घणोरी पाय
 वे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वर रा
 यवे ॥ कु० ॥ ३४ ॥ सषली रमणिशु प्रनु प्रगव्यो,

हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सौरीपुर व्यवहारीयोहो, शेठ सुन
 द्र उदार ॥ कांसाथी काढी लीयोहो, नामे कस कुमा
 रहो ॥ रा० ॥ ९ ॥ वालाने विहामणोहो, कस स्वजा
 वे आप ॥ शक न माने कोईनीहो, न ठपे तेज प्रता
 प्हो ॥ रा० ॥ १० ॥ शेठ कलेस विचारवेहो, कीधो राय
 हजूर ॥ श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिधो जाणी सनूरहो
 ॥ रा० ॥ ११ ॥ पासे रहे वसुदेवनेहो, सारे सेव अ
 पार ॥ कुमर न कृण अलगो करेहो, विनय वडो, सं
 सारहो ॥ रा० ॥ १२ ॥ ब्रह्मद्रथ वारु महाहो, हरिवं
 शी राजान ॥ राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधा
 नहो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जरासंध चढ राजत्रिहो, त्रिख
 ढ तणो नृपाल ॥ राजग्रहिमा राजतोहो, पिशुन न
 रानो काल्हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ अपराजित आदे क
 रीहो, बंधव केरी जोड ॥ कालयवत आदे घणाहो,
 कुमर मूढ मरोमहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ सिंहस्थ राजा
 बाधीयोहो, राय तणे आदेश ॥ श्री वसुदेव कुमरजी
 हो, सुजश लियो सुविशेषहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करत
 जमाइ आपणोहो, हरस्या लोक अशेष ॥ कुमरी जा
 णी कुलकृणीहो, कीधो कस नरेशहो ॥ रा० ॥ १७ ॥
 निश्चय लाधो वातनोहो, लोक वचनथी जाम ॥ मा
 स्यु रीस न उपजीहो, ज्ञान विचारत तामहो ॥ रा०
 ॥ १८ ॥ पतित पिताठे ठेगवोहो, माय न ठेडी जाय ॥
 गर्न धरेवे पोखवेहो, मा मोठी कहेवायहो ॥ रा० ॥

साचशुं, केवल कीधो प्रकाश ॥ जुजंगविष्णु महा
मुनि, साध्यो मोक्ष निवास ॥५॥ मथुरा पुरी राज करे
जलो, उग्रसेन राजान ॥ न्याय निति गुण धारणो,
शौचा गुण मणि खाण ॥ ६ ॥

ढाल ३० मी ॥ रामकी सुनश घणो ॥ ए देशी ॥
सजा गुणवतो, न्याय धर्म प्रतिपालहो ॥ रा० ॥ गुरु
ध गोत्र गोवलहो ॥ रा० ॥ ए टोक ॥ उग्रसेन राजा
जलोहो, पाले राज उदार ॥ प्रजा तणी प्रतिपालणा
हो, नहि अनित्य लिंगारहो ॥ रा० ॥ १ ॥ आप आ
पणो साचवेहो, सहुए कुल आचार ॥ जोर न जस्ती
करी सकेहो, को केहनी केण वारहो ॥ रा० ॥ २ ॥
नाम प्रणामे धारणीहो, पटराणी सुविशाल ॥ पति न
कि साची सतीहो, गजगति खाल रसालहो ॥ रा० ॥
॥ ३ ॥ आनन एहु विराजतोहो, वयण सुधारस सा
र ॥ मनसा धर्मज तत्वनीहो, रति देवि आकारहो ॥
रा० ॥ ४ ॥ स स्नेहि परिवारशुहो, देवा गुरुशु अेम
॥ पोसा षण्कमणा करेहो, पाले सुधा नेमहो ॥ रा०
॥ ५ ॥ प्रीतमशु अति प्रीतनीहो, जीव एक तनुदोय
॥ आनद रग विनोदमेहो, राजा राणी होयहो ॥
रा० ॥ ६ ॥ तापस एक निदानशुहो, राणी घर अवतार
॥ उपजावे ते मोहलाहो, पति कालेजानो हारहो ॥
रा० ॥ ७ ॥ मत्रि बुद्धि विशेषथीहो, बोहलो पुरो हो
य ॥ जयो जलहि प्रवाहितहो, जुंढा सगो नही कोय

नी ए वाणी ॥ ५० ॥ १ ॥ मथुरा नामे नगरी बोली,
 जाणी ए इद्रपुरी सम तोली ॥ जानु नामे शेठ उदार,
 कचन कोडी अठे तसुवार ॥ ५० ॥ २ ॥ जमुना नामे
 निरुपम नारी, साहने सुहाणीठे अति प्यारी ॥ पुत्रो
 सात जनी ते माता, जगमाहि ठे अधीक विख्याता ॥
 ५० ॥ ३ ॥ सुजानुने जानुकिरति, जानुखेण ए त्रि
 जो विरति ॥ चौथो सूरजने सूरदेवो, बठो मूरदत्त क
 हेवो ॥ ५० ॥ ४ ॥ सूरसेन ए साते जाइ, नारी साते
 ए परणाइ ॥ कालिंद्रि तीलकाने काता, श्री काता सुं
 दरी अति माता ॥ ५० ॥ ५ ॥ द्युति समुद्युति वेसे
 विशाली, चद्रसु काता रूप रसाली ॥ सात सहोदर
 साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ ५० ॥ ६ ॥
 शेठ अने शेठाणी दिक्का, लेइ पाले सुधी सिक्का ॥
 सथारो करी गोडी प्राणो, ततखिण पाम्या अमर वि
 मानो ॥ ५० ॥ ७ ॥ पाठे कुवर कुव्यसने पढीया, ध
 न उजाडीने रडवडीया ॥ आपद चुरधाने अति जा
 ग्या, तव ते चोरी करवा लाग्या ॥ ५० ॥ ८ ॥ उजे
 णी नगरे चाली आया, चोरी करवा काज सीधाया ॥
 लघु जाइने मूकी मसाणे, विजो चोरीनी मति ठाणे
 ॥ ५० ॥ ९ ॥ तिणे अवसर तिहा राजा निको, वृष
 ध्वजराय राया सिर टिको ॥ कमलाराणी मगी कुमरी,
 रुपे रुडी जेहवी अमरी ॥ ५० ॥ १० ॥ दृढ मुष्टिने
 सात विवाही, सासरडे आवीरे उमाहि ॥ सामु क्रोध

॥ १९ ॥ मांगी कर मेलावणेहो, मथुराकरण उपाव
 ॥ बाप दियो कठ पिजरेहो, वयर विलय नविजायहो
 ॥ रा० ॥ २० ॥ असमजस देखी घणोहो, श्री अ
 तिमुक्त कुमार ॥ पाले चारित्र साढरोहो, राग न रो
 स लिगारहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ कस वतसक सारीखो
 हो, वरते आण अखड ॥ मर्दन मान महावलीहो, पा
 ले राज प्रचरुहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ ढाल जली ए त्रि
 समीहो, निसुणे जे नरनार ॥ गुणसागर गर्जे महाहो,
 अन धनने अधीकारहो ॥ रा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ अनिकजस्या जस आगलो, अनत सेन
 दयाल ॥ अजीत सेन सुहामणो, अनहित रिपु सु
 कुमाल ॥ १ ॥ देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिधी
 र ॥ उपजशे हरी माहिरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥
 वीरा बरणे सामला, वीरा शोच निधान ॥ वीरा सध
 ला सारिखा, वीरा पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥ वीरा जोगी
 जमरला, जोगवशे जल जोग ॥ त्यागी तो त्रिजुवन
 सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ वीरा साधु सलुणढा,
 जोता सहस्र अढार ॥ होशे शिवपद साधणा, साचा
 सजम धार ॥ ५ ॥ ए षटहि वीरा तणा, पूर्व जवतर सार
 ॥ मुज कहेता तुमे साजलो, जविक जनो सुविचार ॥ ६ ॥

ढाल ३१ मी ॥ परजव वात सुणेवेरे स्वामी ॥ ए
 देशी ॥ षट जाइना पूर्व जवतर, देवकी नदन ठेरे सु
 इकर ॥ चरम शरीरी उत्तम प्राणी, नेम जिनेसरजी

ह्यो, ते साजलिण जे ठे जेहवो ॥ सूरसेन मसाणे वे
 सायो, ते मगीनो दृष्टि आयो ॥ ५० ॥ २१ ॥ रूप
 घणो ने योंवनवत्तो, तरुणी त्रियानो चित्त हरतो ॥
 मगी मोहि देखी तासो, पति करवानी माडी आसो
 ॥ ५० ॥ २२ ॥ वनिता वेली सरखी साची, पासे ल
 हे तस साथे राचि ॥ ते शु मगी घाले जाखो, सुख
 विलसणनि ठे अनिलापो ॥ ५० ॥ २३ ॥ चोर कहे
 तुज पतिथी सकु, मगी मुह कियु तव वकु ॥ पति मा
 री तुज साथे आवु, पिण जो थारी वाचा पाज ॥ ५०
 ॥ २४ ॥ कौतुक जोवा वाचा आलि, मगी पति तव
 आयो चालि ॥ खाडो मगीने पकडायो, ऋषि पग पू
 जणने चित्त लायो ॥ ५० ॥ २५ ॥ मगी चोट करति
 जाणि, मा कहि बोल्यो करुणा आणि, रढी चडीरेकु
 लजडी, शु चाहे नीजपति शीरखनी ॥ ५० ॥ २६ ॥
 प्रितम प्रेम वसे हसी जाखे, ए शुं सा तव उत्तर दा
 खे ॥ जाणे मारी मुज कर कंपे म्यान पढ्यो उटकी
 इम जपे ॥ ५० ॥ २७ ॥ चुमाने उपजे अति आइ,
 पेळी जिम यद्ध मूरति लाइ ॥ प्यारि थड प्रितमने
 जमाइ, तिम मगीए वान बणाइ ॥ ५० ॥ २८ ॥ जा
 ड चोरीनो धन लाया, वाटा साथे ताम कराया ॥ ल
 घु जाइ बाटो नवि इछे, सजम लेवो मनमा वठे ॥ ५०
 ॥ २९ ॥ जाइ पूठे ए किण कारण, मगी चरीत्त सु
 णायो तारण ॥ हलुकर्मा वैराने राता, धन सघलो ले

णी बहु वडवेति, नीत लमाइ सासु सेति ॥ ५० ॥ ११ ॥
 सासु हुय थाए बहु आगे, तो बहु सासुने पगे लागे
 ॥ जो सासु अति आप खेचावे, तो बहु सासुने वश
 नावे ॥ ५० ॥ १२ ॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो,
 घरमे वरते बहुनो वारो ॥ नारी नेहनो नाथ्यो पिउमो,
 माथी दूर त्रियाथी नैडो ॥ ५० ॥ १३ ॥ आयो
 मास वसत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी ॥ राय
 जमाइ वनमे आवे, खेल करी रलीयायत थावे ॥ ५०
 ॥ १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विपहर मोटो
 आणी सदाढो ॥ घटमे राखी कहे विकराला, बहु ला
 वो कुसुमकी माला ॥ ५० ॥ १५ ॥ विपहर दउम्नी सा
 ह्यो हाथो, सा, मुर्बाणी-मिलीयो सह साथो ॥ मुइ जा
 णी मसाणे मेली, परम महासुख पावि पेलि ॥ ५० ॥
 ॥ १६ ॥ राते घर आयो नरतारो, दुर्चितो देखि प
 रिवारो ॥ खबर-लहि समसाने आवे, एक ऋषि देखी
 सुख पावे ॥ ५० ॥ १७ ॥ पगे लागीने उजो होइ,
 नाखे आरतिवतो सोइ ॥ जो हु मगी नारी पाउ, तो
 तुम चरणे अति चित लाउ ॥ ५० ॥ १८ ॥ आगे
 जाता मगि पामी, साधु समीपे लायो स्वामी ॥ ऋषि
 तनुवाये फग्सी जामो, विपहर विष उतरीयो तामो
 ॥ ५० ॥ १९ ॥ मगी मूकी मुनिवर सगे, आपण घर आ
 यो मन रगे ॥ लेवा महिला साज सुचगे, आनूषण
 वख बहु जगे ॥ ५० ॥ २० ॥ एतले वितक वितो के

वह नामे वारु. नगर दसारण सोने अपारु. देवसे
 न राजा गुण जरीयो, बहु परिवारे अठे परवरियो ॥
 प० ॥ ४० ॥ धन देवि राणी सुखदाइ, नंदजस्या जी
 व उपजी आइ ॥ देवकि नामे कुमरी जाइ, रूप कला
 गुणनि अधीकाइ ॥ प० ॥ ४१ ॥ उहा पट बंधव लीयो
 अवतारो, किण विध तेनो सुणो अधीकारो ॥ ढाल एक
 त्रिसमी इम जाषे, श्री गुणसागर पुन्य प्रकाशे ॥ प० ४२ ॥

दुहा ॥ कस प्रशस करी घणी, श्री वसुदेव नरेश
 ॥ दीधी देवी देवकि, किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ ह
 य गय रथ कचन रयण, घणा तेम पटकल ॥ आप्या
 वरने दायजे, मणी माणिक बहु मूल ॥ २ ॥ एक स
 हस गोकल वली, नद गोकूलि साथ ॥ देवक राय पु
 त्री जणि, आपे बहुली आथ ॥ ३ ॥ कस नद साथे
 ग्रही, श्री वसुदेव नरिंद ॥ मथुरा नगरी आविया, म
 नमा घरी आणद ॥ ४ ॥ कस हिवे तिहा पिण करे,
 सहने जिमणवार ॥ विचमे जे वितक हुवो, ते सु
 णजो सुविचार ॥ ५ ॥

ढाल ३२ मी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥
 एक दिन बेठि गोखर्मे, जीवजस्या वरनाररे ॥ मुगधा
 मानजरी ॥ नणदि साथ कुतुहलि, सखियनके परी
 वाररे ॥ मु० ॥ १ ॥ करे पवन प्रतिचारणा, आपे के
 इ मुखवासरे ॥ मु० ॥ केइ अमृत जलथी जरी, दासी
 उनी पासरे ॥ मु० ॥ २ ॥ केइ विलेपन कर घरी,

इ वड भ्राता ॥ ५० ॥ ३० ॥ घर आयी वहु याने आ
 पी. आपण सजमनी मती थापी ॥ कारण जाणी स
 हु हुए वैरागी, चउढे माणस हुआ त्यागी ॥ ५० ॥
 ॥ ३१ ॥ दृढ मुष्टिने मगी मीलिया, सोले माणस सु
 रगति नलिया ॥ दो सागरनो पालि आयो, स्वर्ग सो
 धर्मे पुण्य प्रजावो ॥ ५० ॥ ३२ ॥ द्वाइ सडे नरत
 वखाणु, गिरी वैताह्य दक्षिण दिसी जाणु ॥ नित्या
 लोक नगरिनो नामो, चित्रचूड राजा अजिरामो ॥
 ५० ॥ ३३ ॥ नामे प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत
 उपना तस उदर ॥ एक निमतिज मोठो देख्यो सा
 त जने वैराग्या विशेष्यो ॥ ५० ॥ ३४ ॥ सजम पा
 लि सनतकुमारे, देव थया करणि अनुसारे ॥ सागर
 साते आयुज हुवो वड बधव उपजीयो जूवो ॥ ५०
 ॥ ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गगदेव ठे नूप
 नलेरो ॥ नदजसा राणि मन जावि षटहि सुत उपजी
 या आवी ॥ ५० ॥ ३६ ॥ गंग गग दत्त गग सुमित्रो
 नद सुनद नदिखेण पवित्रो ॥ ए षटहि बधवनि जो
 रु मात पिताना पुरे कोड ॥ ५० ॥ ३७ ॥ माता पु
 त्रो चारित्र लिधो मीनप जन्म क्रतारथ किधो ॥ अ
 णसण अवसर सुत मुख जोवे मात मोह तणे वस
 होवे ॥ ५० ॥ ३८ ॥ किधो एह नियाणो माइ आगे
 होज्यो एह सगाइ ॥ स्वर्ग सातमे तेइ सिधाया सो
 ले सागर आयु लहाया ॥ ५० ॥ ३९ ॥ देश मृगा

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० ॥ १३ ॥ नणदलनो सुत सा
 तमो, करसे सही सहाररे ॥ मु० ॥ तुज पिताने कत
 नो, नहि सदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
 तव सानलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
 मे जय अति उपन्यो, मुज कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु० ॥
 ॥ १५ ॥ आवि कतने विनवे, साधु कह्यो विरततरे ॥
 मु० ॥ नीसुणी कस मनमें धरे, साधु वचन एकत
 रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्या लगे, त्या पही
 लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्ज देवकी तणा, मागी
 स हु समजायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ माग्याजो मुज नाप
 से, सात गरज निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार वि
 जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
 चितवी निज चितमे, महुआ जनपरे कसरे ॥ मु० ॥
 आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वसरे ॥ मु० ॥
 ॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
 मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम धोले वसुदेवरे ॥
 मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
 वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुज चितत करु, ए मुज
 वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कस कहे करजोने,
 माणस ते मुज किंधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
 ने, सुजन पणे जस लींधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
 वे देवकी पुत्रना, सात गरज यदूरायरे ॥ मु० ॥ प्रसु
 ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

कुकुम बाँटे कैयरे ॥ मु० ॥ १ ॥ श्रेष्ठ लक्ष्मी सुख आगले,
 आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेचिर
 ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ जोवा नृप नारी त
 णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी
 वर मलपतो, ऐमतो ऋषीराजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ उच तीच
 मळम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥
 मुह मचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥
 एहवा रतन ते जननीया, धन्य माता तारो, जाग्यरे
 ॥ मु० ॥ ६ ॥ मद वाकि बोले इसु, जीवित्तस्या त
 जी लाजरे ॥ मु० ॥ जले आव्या ऋषिरायजी, उठ
 व दिन ठे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घमी धन्य आ
 जनी, मुळ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव
 रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि
 सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे उचो ते वाररे ॥ वेठी
 दिठि गोखने, वड वधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ
 समजस देखी थयो, रोमाकुल ऋषिरायरे ॥ मु० ॥ आ
 जो कीनी बापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥
 ज्ञानी तव बोले इस्यु, दूर करण अहकाररे ॥ मु० ॥
 मतकर अजस कारमा, जानी-मुगध गिमाररे ॥ मु० ॥
 ॥ ११ ॥ देखी जोवन धन आपणो, तु मन फुलेठे
 एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम वितिपातते, कुफल आखर
 तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने आकारणे, अहे
 किस्यो अजिमानरे ॥ मु० ॥ सखा ॥ रागा ॥ तशि परे,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० ॥ १३ ॥ नणदलनो सुत सा
 तमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुज पिताने कत
 नो, नहि सद्देह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
 तव सानलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
 मे जय अति उपन्यो, मुज कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु० ॥
 ॥ १५ ॥ आवि कतने वितवे, साधु कह्यो विरततरे ॥
 मु० ॥ नीसुणी कंस मनमे धरे, साधु वचन एकत
 रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्या लगे, त्या पही
 लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्ज देवकी तणा, मागी
 स हु समजायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ माग्याजो मुज नाप
 से, सात गरज निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार वि
 जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
 चितवी निज चितमे, महुआ जनपरे कसरे ॥ मु० ॥
 आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वसरे ॥ मु० ॥
 ॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
 मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम घोले वसुदेवरे ॥
 मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
 वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुज चितत करु, ए मुज
 वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कस कहे करजोडने,
 माणस ते मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
 ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
 वे देवकी पुत्रनां, सात गरज यदूरायरे ॥ मु० ॥ प्रसु
 ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

॥ २३ ॥ सरल चित्त नृप सांजली, कहे कंसने एमरे
 ॥ मु० ॥ अगीकार किधो अमे, वयण कह्यो ते तेमरे॥
 मु० ॥ २४ ॥ कंस वात अणजाणतां, कहे नृप वसु
 सुविचाररे ॥ मु० ॥ मुऊ सुत ते सुत ताहरा, इहा अत
 रमत विचाररे ॥ मु० ॥ २५ ॥ ते जे अम जोडी करी
 रे, तेणे तोसु अति प्याररे ॥ मु० ॥ तुमनो उणो
 मत हुवे, वालाजी तन आधाररे ॥ मु० ॥ २६ ॥ घ
 णो बोल्यो कारमो, लागे कहे दसाररे ॥ मु० ॥ सात ग
 र्ज देवकीतणा, देवरावे सुविचाररे ॥ मु० ॥ २७ ॥
 ढालजली बत्रीसमी, निपट रसिली वातरे ॥ मु० ॥
 श्रीगुणसागर एकही, हरीया गीतनी जातरे ॥ मु० ॥ २८ ॥
 दुहा ॥ महापसाउ लही करी, मद पर दुरगमाय ॥
 प्रिती करी वसुदेवशु, कंस हिवे घर जाय ॥ १ ॥ भ
 णिनी वात सुणी करी, सोचे हिवे दसार ॥ देखो कसे
 हु बल्यो, बचन ग्रही अविचार ॥ २ ॥ गरज धरे
 जब देवकी, तव तिहा कसराय ॥ चौकी राखी पा
 खयी, कपटे खेले दाय ॥ ३ ॥

ढाल ३३ मी ॥ कोमल वचनेरे कत प्रत्ये कहे ॥
 ए देशी ॥ जावी न मिटे जावियण साजलो, जाविनो घ
 नजोरोरे ॥ रचन आधीपाणी होइ सके, सिद्ध करोगे
 सोरोरे ॥ जा० ॥ १ ॥ बाधु कीयारे जतन अनेक
 जी आगे नायो कोइरे ॥ बाधव दोइ वावी मुवा स
 ही चंपक ग्रहपति होइरे ॥ जा० ॥ २ ॥ गरज धरेरे

राणी देवकी, चरम शरीरी जीवोरे ॥ केम मरे ते ठ
 ठे आवुषे, ए जिन वचन सदिवोरे ॥ जा० ॥ ३ ॥ ज
 हील पुरनीरे वासण श्राविका, सुलसा एहवो नामो
 रे ॥ सूर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहुने अनी
 रामोरे ॥ जा० ॥ ४ ॥ सूर जाखेरे पुण्य प्रजाविका, तुं
 मृत वढा नारोरे ॥ आणि आपु हु तुज पारका, देव
 कुमर अनुहारोरे ॥ जा० ॥ ५ ॥ बलतु वनिता इणी
 परें उचरे, साजल सुर सुख दायोरे ॥ हु स्यु जाणुं तुं
 लावे केहना, ते मुऊने न सुहायोरे ॥ जा० ॥ ६ ॥
 कसरायेरे मारण मागीया, देवकी तनया नदोरे ॥ आ
 णी आपीश तुऊने माननी, करीदेणुं आणदोरे ॥
 जा० ॥ ७ ॥ एक समेरे राणी श्राविका, गर्ज धरे ते
 दोयोरे ॥ सारयो फेरो सुर शक्ति करी, जावीने बल
 जोयोरे ॥ जा० ॥ ८ ॥ इम विजो ने त्रिजो चतुरथो,
 पचम ठो तेमोरे ॥ सुलसामंदिर होइ वधामणा, पु
 ण्य तणे बल एमोरे ॥ जा० ॥ ९ ॥ षट सुतनी जोडी
 विराजती, मातपिता आणदोरे ॥ बत्रीस बत्रीस नारी
 सुहामणी, परण्या सघला नदोरे ॥ जा० ॥ १० ॥ द
 स दस वार आवि दायजे, कचन केरी कोडीरे ॥ नेमनी
 वचने वैरागी थायशे, कामनि कंचन गोडीरे ॥ जा० ॥
 ११ ॥ करणीने बळे केवल पामशे, लेइसे मोहनो
 वासोरे ॥ एहवा मुनिवर केरा होइए, चरण कमलना दा
 सोरे ॥ जा० ॥ १२ ॥ मूवा बालक कसे पढाडीया,

रिस तणें वस जोयोरे ॥ तेह तणा फल आगे लाग
 शे, ते सुणज्यो सह, कोयोरे ॥ जा० ॥ १३ ॥ बडा ब
 केरी जगमा जाखण, स्यो जुठो अजिमानेरे ॥ चढ त
 णी तव लागे चांदणी, जब लग न उगे जाणारे ॥
 जा० ॥ १४ ॥ मीढक मातो मलपतो फारे, सर्प न
 जरेथी दूरोरे ॥ हरण हरिलो हरीने आगले, न सके
 आइ हजुरोरे ॥ जा० ॥ १५ ॥ ढाल तेत्रीसभीरे हो
 णहार होवे, न होवे बीजो कोइरे ॥ गुणसागर सम
 जावे वरतए, जलें जलाइ होइरे ॥ जा० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एक उगे एक आथमे, एक इरखे एक सोग ॥
 एक सकुचे एक विकसता, सहु सरखा नही लोग ॥
 ॥ १ ॥ जे जाखे बालक बता, जे जाखे अणगार ॥
 जे जाखे वरकामनी, ते निफल न हुवे लिगार ॥ २ ॥
 दृष्ट दैत्य निकदवा, करवा जग उदार ॥ दिण्णुदेव
 शिवमत्तमें, फिर फिर लीए अतार ॥ ३ ॥

ढाल ३४ मी ॥ विंदलीनी देशी ॥ हरीके गुण गा
 उ, हरिलीला कहीच सुहावो ॥ हरी रसते अधिक
 सुख पावोहो ॥ ह० ॥ हरी योगीमाहि योगी, हरी
 जोगीमाहि वड जोगीहो ॥ ह० ॥ १ ॥ हरी न्हाना मा
 हे नाहनो, हरी मोठो गगन समानोहो ॥ ह० ॥ हरी
 एकण रुपेही एक, हरी पसरो रुप अनेकहो ॥ ह० ॥
 ॥ २ ॥ हरी आपन बूढो चालो, हरी जग मेळावो
 चालोहो ॥ ह० ॥ हरी लोग लगतयोळारे, हरी जां

जे घने समारेहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम ध
 रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां
 धा जोडा लावे, हरी मांडोमांही जीडावेहो ॥ ह० ॥
 ॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ ह० ॥
 हरी नीतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो
 ॥ ह० ॥ ५ ॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट
 माहि समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवु तिहां तेह
 वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा
 व्यास वखाणयो, किणही तो अंत न जाणयोहो ॥ ह०
 ॥ सो हरी करण उपाया, हरी वसुदेवा घर आयाहो
 ॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना
 सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो,
 माय देखी प्राक्रम पुरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं
 ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं
 ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूमोहो ॥ ह० ॥ ९ ॥
 अग्नी सिखा दिपती, ते मगल गुण जीपतीहो ॥ ह०
 ॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह०
 ॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुन्नकारी वि
 स्वा विशेषो ॥ ह० ॥ देव विमाने बिराजे, तिहा धंप
 मप मादल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी,
 जरीयो अति शोभा वखाणीहो ॥ ह० ॥ १२ ॥ सुपना
 देखी माह, पियु पासें बंधाइ खाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥
 गर्ज वधतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

ह० ॥ तुम मुज पुत्र भराया, पिण मे गाढा दुख पा
 याहो ॥ ह० ॥ १३ ॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जा
 णे जगत अलुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पखीणी धन क
 हीए. जे पुत्र तणो सुख लहिए हो ॥ ह० ॥ १४ ॥
 थारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह०
 ॥ हु दुखीयारी कुरु, विण पुत्र आशा किम पुरुहो ॥
 ह० ॥ १५ ॥ जिणे कीधो ए कर्म अपार, तिणे फि
 री. करता सिवारहो ॥ ह० ॥ दूधे दाधा नर जेह, ग
 शे सि लावे तेहहो ॥ ह० ॥ १६ ॥ ए बालक किमही
 उगारो, इहा रहेशे नाम तुमारोहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
 ने अनुसारे, पिउडा तु क्युं न विच्यारेहो ॥ ह० ॥
 ॥ १७ ॥ नदत्तणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो
 ॥ ह० ॥ ते सहियर ठे भेरी, नपति जु नारी अनेरी
 हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ गर्ज वृद्धि जीम पावे, तिमतिम दो
 हला उपजावेहो ॥ ह० ॥ सिंहा साथ रमीए, माता ह
 स्तीने अति दमिएहो ॥ ह० ॥ १९ ॥ खरुगमाहि मु
 ख जोवे, तिम तिम रलियायत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रु
 शिरे पाद धरेवा, ए माय मनोरथ करेवाहो ॥ ह० ॥
 ॥ २० ॥ गर्ज सातमो जाणि, नृप कंस, तणा आगे
 वाणिहो ॥ ह० ॥ रखवालि कारण रहिया, तिहा क
 ष्ट महा दु ख सहियाहो ॥ ह० ॥ २१ ॥ उवेला नवि
 पामि, जिहा कारज सिजे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना
 बाब्या सिका, नवि तुटे, जे ठे निकाहो ॥ ह० ॥ २२ ॥

रखवाला सघला सूता, निद्रावसे होए विगुताहो ॥
 ह० ॥ को मति जलफल करजो, सहु सरजासु अनु
 सरज्योहो ॥ ह० ॥ २३ ॥ कस हंपेवा काजे, एहि
 उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सा
 त मासनो होइहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ शुभ वला सुत
 जायो, तनु तेजे तिमिर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन
 धरे उल्लासो, दुर्जन घर पडियो त्रासोहो ॥ ह० ॥ २५ ॥
 कोइ न विलव करायां, तव राणिये राय बुलायो ॥
 ह० ॥ उत्र सुरासुर जाल्यो, तव नृप सुत लेइ चा
 ल्योहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ दोइ पासे चामर ढाले, दि
 पकसु पथ दिखवालेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा,
 हरजीके सारे सेवाहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ दीधा ठे दर
 वाजा, ए आरति अधिकी राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पा
 य अगुठा अनीया, तव ताला तो ऊढ पनियाहो ॥
 ॥ ह० ॥ २८ ॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम बंधन ठोडसे
 सोहिहो ॥ ह० ॥ एइ सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सिधा
 वो जाइहो ॥ ह० ॥ २९ ॥ पुर बाहिर चालि आया,
 जमुनामे मारग पायाहो ॥ ह० ॥ सुत जाइ जसोदा
 दिधो, मनवठित कारज सिधोहो ॥ ह० ॥ ३० ॥ ज
 सोदा जाइ बाला, नृप लेइ आया ततकालाहो ॥ ह०
 ॥ कर्म जेहनो बलियो, स्यो किजे अमरख अलियो
 हो ॥ ह० ॥ ३१ ॥ नद घरे आणदा, तव वाजे मां
 इल बदाहो ॥ ह० ॥ गोकलाकि नारी हरखी, ते हर

जीको मुख निरखिहो ॥ ह० ॥ ३२ ॥ नाचि नाच रसालि,
ते हाथे बजावे तालिहो ॥ ह० ॥ उवाणी फेरी लिजे,
ए लाल सदा चिरजीवीजेहो ॥ ह० ॥ ३३ ॥ हरी कोड
पवाडा किधा, ए बालपणे जस लिधाहो ॥ ह० ॥ ए चो
त्रिसमि ढाल, गुणसागर अधिक रसालहो ॥ ह० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ जाग्या हिवे ते पोहरु, देखे कन्या तेह ॥
आणि कसनणी दिए, सेवक धरी मन नेह ॥ १ ॥
कन्या देखी कस हिवे, धारे मनमा एम ॥ मारण ए
तो महारे, थास्ये कन्या केम ॥ २ ॥ मारणनणी ग्रह
सातमो, मुनि मुज्ज नाख्या जेह ॥ पिण जाण्यो इण
जाण मति, कूमो हूवो तेह ॥ ३ ॥ तो मारु ए स्या
नणी, इम निज मनशु जोय ॥ नासापुट वेदीकरी, ब
हिननणी दिए सोय ॥ ४ ॥

ढाल ३५ मी ॥ मोरा साहिबहो श्री सितलनाथ
के, हूवुं सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ हिवे बालकहो का
लो ते देहके, कृष्णनाम सहू तिण कहे ॥ राखिजेहो
देवेनितु तेहके, बाधे नद थरे सुख लहे ॥ १ ॥ ने
हगेहलिहो गोवालनि नारके, हरी देखि हिअडु हसे
॥ हाथोहाथेहो सचरतो बालके, भमर ज्युं कर कमले
वसे ॥ २ ॥ आलिमनहो चुंबन लख कोडके, कोड क
मल कठे ठवे ॥ केह लावेहो रमकंडारिगके, मुक्ताफल
सीर सोहवे ॥ ३ ॥ ॥ हुसेलिहो हरखे लडे गोदके,
धवरावे पय-पानने ॥ आखे काजलहो घाले के ना

रके, करे चुबने मुख कानमे ॥ ४ ॥ सीर चूषितहो
 सीद्धा अनिरामके, जाल विराजीत चंदलो ॥ जग
 बल्लनहो नदन तुज मातके, लाल अनोपम बदलो
 ॥ ५ ॥ हिवे पूठेहो मास दुहरे मातके, श्री वसुदेव
 जणी कहे ॥ उत्कंठाहो देखण निज पुत्रके, जाइस
 गोकुल जिहा रहे ॥ ६ ॥ तब बोलेहो वसुदेव नरिंद
 के, रखे कम तुजने उलखे ॥ तिहां जाताहो नितप्र
 ते तुज पुत्रके, देखता कारण पखे ॥ ७ ॥ तेणे लेइहो
 दहू नारी साथके, गाय पुजंति शुभपरे ॥ तुहें पहूचो
 हो गोवालीइणे सचके, देवकि पिण तिमहिज करे ॥
 ॥ ८ ॥ नीलपणुहो दलसम तन कंठके, हियमे श्रीव
 व शोनतो ॥ चक्रादिकहो लक्षण पग हाथके, सह
 जनना मन मोहतो ॥ ९ ॥ एहंनो निजहो नंदन अ
 निरामके, गोद जसोदाने रह्यो ॥ देवकिहो देखि नी
 ज नयणके, मनसाहि बहु सुख लह्यो ॥ १० ॥ माता
 जीडीहो निज हियमा साथके, गोद धरयो हरी नान
 दो ॥ तुज विरहेहो चित्त क्लण क्लण मुजके, खटके ज्युं
 विंठी आकडो ॥ ११ ॥ सच्या पोढाहो पातिक अति
 जोरके, मे किधा कोइक पूर्वजवे ॥ तुज सरीखो हो नदन
 गुणवतके, पिण मुज चिंतीत नव हुवे ॥ १२ ॥ पुत्रजहो
 दीठा तुम दिदारके, धन बेला धन आजुनी ॥ निज अं
 गजहो देखी न जजे रागके, एतो दशा मुनिराजनी
 ॥ १३ ॥ धवराधीहो निज स्तन पियपानके, पालंणी

ए पोढावीयो ॥ मोह गातिहो कोइ मधुरे सादके, हे
त घणो हुलरावीयो ॥ १४ ॥

देवकीस गीत ॥ ऊरमरीयानी देखी ॥ पनणे राणी देव
कीहो, त्रिचुवन सिर टिको ॥ वाइ थारो वालुमो निको ॥
॥ तुजवढ वखत यशोमतिहो, थारे एकीको ॥ सुरनर
ना मन मोहतोहो, प्यारो हमजीको ॥ बा० ॥ १ ॥
अदचूत सुहामणोहो, मदन कीयो फिको ॥ रग र
मावे गोदभेहो, जाग्य ताहिको ॥ वा० ॥ २ ॥ मान
महा मद मारणोहो, देवि केरीको ॥ कुवर कनइयो सा
लसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ वा० ॥ ३ ॥ आननचद
विराजतोहां, वालो सब त्रियको ॥ ग्वाल ग्वालणी
जावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ वा० ॥ ४ ॥ सजन जन
जननी तणोहो, हार ज्यु गतिको ॥ दुरजन जन अ
सुहामणोहो, घाव ज्यु कातीको ॥ बा० ॥ ५ ॥ शो
जा गुण विस्तारहो, किरति कातिको ॥ देवादेवि खे
चराहो, रगे रातिको ॥ बा० ॥ ६ ॥ दहिअरु दुध ख
वाडजेहो, धेनु मातिको ॥ हम तुम कुल उजवालणो
हो, दिवो बातिको ॥ बा० ॥ ७ ॥ नखसीखताइ स
लुणमोहो, सुखसो नारागीको ॥ जोता तृपति न पाइ
एहो, धन जीवत माजीको ॥ बा० ॥ ८ ॥ दरस फ
रस कुपथमेहो, नाह इद्राणिको ॥ सो खेले तुज आ
गेणेहो, सारग पाणीको ॥ बा० ॥ ९ ॥ योग ध्यान
ध्यावे अतिहो, सुयश वधारीको ॥ पूत कहावे ताह

रोहो, अचरिजकारीको ॥ बा० ॥ १० ॥ नाम वल्लभ
जग जाणियोहो, गीरवरधारीको ॥ गुणसागर सुख पा
वहिहो, अमीय आहारीको ॥ वा० ॥ ११ ॥

ढाल तेहिज ॥ जे लेणोहो सो लिजए आजके, ए
ह मनमा निश्चे धरे ॥ मन मेलिहो निज सुतने पास
के, राणि आवि नाज घरे ॥ १५ ॥ जिण दिनथीहो
गोकुल हरी मातके, गोपूजा व्रत करी गइ ॥ तिण
दिनथीहो सगले जगमाहिके, गोपूजाव्रत तिथि थइ ॥
॥ १६ ॥ इम करताहो वितो एक वरसके, एहवे एक
वितक जयो ॥ सजा सजीहो बैठा कसरायके, एक
विवुद्ध तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेह्यो
निज पासके, पूठे ऋषि जाखीत सहि ॥ सो जाखेहो जवि
तव्य जेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप जा
खेहो केम जाणु तेहके, अनुग्रह करी मुजने कहो ॥
तुमनेहो मिलसे बहु द्रव्यके, मुज अरिनो होए निग्र
हो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पूरो ज्ञान
न अच्युसियो ॥ सहि नाणीहो तुज देउ बतायके,
जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुज मासिहो
पूतना ठे दौयके, निस्स्यदता चूसी करे ॥ जिम लुते
हो ग्रहि मद्धिका जाणके, प्राण दौयना तिम हरे ॥
॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणो नि सदेहके, इम काहि वि
बुद्ध गयो ॥ कसे तेढीहो काहि वैरीनी वातके, मासी
मन उत्कर्ष थयो ॥ २२ ॥ हिवे तिहाकणेहो निज वा

पनो वयरके, लेवाने अती उमही ॥ वसुदेवसुहो नवि
 लागे जोरके, सबलासुं बल को नही ॥ २३ ॥ इम खि
 तविहो मनमाहि विचारके, सुरपनखारी टिकरी ॥
 मदमातिहो आणे अहकारके, सकुनी पृतना खेचरी
 ॥ २४ ॥ कसे प्रेरीतहो गइ गोकुल माहीके, बालक
 ने मारण जणी ॥ गोवालणीहो सतामे निज बालके,
 जीती मन आणी घणी ॥ २५ ॥ नद सदनहो चा
 ली गइ तेहके, विप खरमी स्तनमे धरी ॥ धवरावती
 हो तव जसोदा देखके, मागे हरीने जोसे करी ॥ २६ ॥
 अश्रु पुरितहो थइ आप्यो जाणके, हरि मनमाहि
 विचारियो ॥ ए दिसेहो सहि कोइ विपद्के, एहथी
 जय अब धारियो ॥ २७ ॥ चूसि लीधोहो रुधिरने
 दूधके, अलि निम कुसुमनी वासने ॥ थइ निश्वास
 हो फाव्या तस नयणके, हरि गया मातने आसने
 ॥ २८ ॥ बोलाव्योहो नदने तेणिवारके, आव्यो अ
 ति उताबलो ॥ जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतातके, नि
 सुणी मनमा खलजल्यो ॥ २९ ॥ हु मुर्छियोहो मुख क
 हेतो नदके, कृष्ण जणी खोले धरि ॥ तिहा जोवेहो
 हरिनो ते अगके, वारमवार हेते करि ॥ ३० ॥ नि
 शा समेहो गोवालिया पासके, प्रेत वने सबने धरयो
 ॥ नदसहित आव्या निज गेहके, प्रचनपणे सहए क
 रयो ॥ ३१ ॥ इम विजीहो कंत पूतना नामके, सा पि
 ए थइ तिणहीजपरे ॥ कसे जाणीहो मासीनी वा

तके, प्रेत कार्य तेहना करे ॥ ३२ ॥ गोकुलमांहेहो क
 रे वारमवारके, उदघोसण जाणण ञणि ॥ नदे वरजी
 तहो न करे कोइ वातके, जिम घुक सूर्य तणी ॥ ३३ ॥
 गोवालियाहो पूढ्यो हिवे नदके, अमे एमरम न जा
 णियो ॥ किम मुइहो साइण सम एहके, एह अचं
 जो आणियो ॥ ३४ ॥ पाडोसणहो इण गीते जाण
 के, ढाल कहि पेत्रिसमी ॥ सारगेहो रागे मन लाय
 के, सूरि गुणसागर मनशु गर्मी ॥ ३५ ॥

दुहा ॥ गोप कहे हिवे नंदने, बाल एकेले एण ॥ खे
 चरीया बे मारीया, टाल्यो विघन बलेण ॥ १ ॥ एह
 वात नद साजली, दाखे उत्तर तिवार ॥ एहनी खब
 र मुजने नही, मानो प्रपचाचार ॥ २ ॥ कस सोचे
 निज हृदयमा, अहो अहो देव कुलद्ध ॥ मासी मूइ
 वैरीतणो, काइ न थयो प्रतद्ध ॥ ३ ॥ मत्रीने तेमी
 कहे, शो करवो हिवे उपाय ॥ विण उलरूया पोहोचे
 नही, मारा मननो दाय ॥ ४ ॥ सचिव कहे तुम बेहे
 नीने, पुत्री हुइ एकत ॥ ए सर्व प्रत्यद्ध निरखता,
 मूको एहनो तत ॥ ५ ॥ नद घरे आव्यो घसी, बो
 लावी निज नार ॥ करी शिखामण एहवी, मत जा
 ने कोइ ठार ॥ ६ ॥ कृष्ण एकेलो मूकिने, पडते पि
 ण घृत ठाम ॥ ते अनत्र न जाइवु, किणहि विजे का
 म ॥ ७ ॥ कान्ह ञणी शुनपरे रखे, हिवे जसोदा मा
 य ॥ तोपिण चचल बल करी, आघो पागे थाय ॥

॥ ८ ॥ तिणसुधी नधी विहतो, ढामणिसु हरी तेह ॥
 वाधी उखलसु जइ पाडोसण रही गेह ॥ ९ ॥ वयर
 पितामह साजली, सुर्षक सुत तिहा आय ॥ पिठवाडे
 श्री कृष्णने, जमलार्जुन तरु वाय ॥ १० ॥ द्विवे तेषो
 वेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप ॥ नाजी ते तरु हरी
 सूरु, मारे तेह विरुप ॥ ११ ॥ हरी कुजपर उखण्या,
 जमलार्जुन तरु जाण ॥ नद जसोढा गोपने, मुख
 थी ए सुणि वाण ॥ १२ ॥ नद जसोढा आवीने, नुज
 सु नीडे वाल ॥ दामोधर तिण दिन थीकी, नाम कहे
 गोपाल ॥ १३ ॥ सिवादेवि सिवकारीया, सुपना दे
 खी उदार ॥ प्रितम पासे विनवे, स्वामी कहो सुविच्या
 र ॥ १ ॥ नूपति नाखे नामनी, होस्ये कुवर सार ॥
 तिन नूवन सिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥ १२ ॥
 वाय अनुकुल वाइया, हरखित सहु परिवार ॥ श्रा
 वण सुदी पचमी दिने, जनम्या नेक कुमार ॥ १३ ॥
 ढाल ३६ मी ॥ कोइलो परवत धुधलोरे लाल ॥
 ए देशी ॥ शुन वेला सुत जाइयोरे लाल, वरत्यो ज
 य जय कार ॥ सुख दातारे ॥ सुरनर घरहि वधामणीरे
 लाल ॥ हरस्यो सहु ससार ॥ सु० ॥ १ ॥ मेरे मन
 जिनजी वस्यारे ॥ ला० ॥ श्री श्री नेमकुमार ॥ सु० ॥
 मुरति सुरति मोहनीरे ॥ ला० ॥ शोना गुण चमर
 ॥ सु० ॥ मे० ॥ २ ॥ आवी बप्पन कुवारीकारे ॥ ला० ॥ नि
 ज निज करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गति सुहामणा

रे ॥ ला० ॥ सफल गणेश दिन आज ॥ सु० ॥ मे० ॥
 ॥ ३ ॥ चउसठ इद्र पधारीयारे ॥ ला० ॥ मदिर गी
 रीने श्रृंग ॥ सु० ॥ जन्म महोत्सव करवा नणीरे ॥ ला०
 ॥ आणी अति उबरग ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४ ॥ पच रू
 प करे नलां रे ॥ ला० ॥ सोहम इद्र उदार ॥ सु० ॥
 हाये लिया एक रूपशुरे ॥ ला० ॥ त्रिचूवन तारणहा
 र ॥ सु० ॥ मे० ॥ ५ ॥ विजे बत्र धरे नलीरे ॥ ला० ॥
 घामरं ढाले दोय पास ॥ सु० ॥ वब लेइ आगे चले
 रे ॥ ला० ॥ करतो अरिअण नाश ॥ सु० ॥ मे० ॥
 ॥ ६ ॥ न्हावण केरी विधी साचवीरे ॥ ला० ॥ पहि
 रावे शिणगार ॥ सु० ॥ जावे नक्ति घणी करेरे ॥ ला० ॥
 नाटक नृत्य अपार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ७ ॥ धौ धौ धपमप
 वाजहिरे ॥ ला० ॥ मादल नव नव बढ ॥ सु० ॥ जा
 जर नाद उपागसोरे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो आनद ॥
 सु० ॥ मे० ॥ ८ ॥ इंद्राणी नाचे नलीरे लाल, ये ये शब्द उ
 चार ॥ सु० ॥ प्रचू उपर करे लुबणारे ॥ ला० ॥ जा
 इ हरी वलीहार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ९ ॥ माता पासे मे
 लीयारे ॥ ला० ॥ सुर पोहोता निज ठाम ॥ सु० ॥
 राये मोहोत्सव माडीयोरे ॥ ला० ॥ मिलीया साजन आ
 ण ॥ सु० ॥ मे० ॥ १० ॥ यादव जलधर उमह्योरे ॥
 ला० ॥ त्वरसे कचन धार ॥ सु० ॥ याचक जन सतो
 खीयारे ॥ ला० ॥ घर घर मगल च्यार ॥ सु० ॥ मे०
 ॥ ११ ॥ टोले टोले सामटीरे ॥ ला० ॥ आवे कामनी

चाल ॥ सु० ॥ धवल दिए नृप आगणारे ॥ ल० ॥
 रमती रंग रसाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ १२ ॥ वारसमो
 दिन आइयोरे ॥ ला० ॥ सुतिक कर्म नीवार ॥ सु० ॥
 नाम दियो वर नेमजीरे ॥ ला० ॥ थजण सहु परीवा
 र ॥ सु० ॥ मे० ॥ १३ ॥ चढकला जिम वाघतोरे ॥
 ला० ॥ देह कला गुण सार ॥ सु० ॥ रुप करे सुर
 तेहवारे ॥ ला० ॥ जेहवा प्रचुने प्यार ॥ सु० ॥ मे० ॥
 १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ ला० ॥ नृत्यने गा
 यन ग्यान ॥ सु० ॥ जलपने जन मन रजवेरे ॥ ला० ॥
 लाल ने लीला थान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १५ ॥ वनक्रि
 माने कारणेरे ॥ ला० ॥ राजा वनमे जाय ॥ सु० ॥
 अतेजर परीवारसुरे ॥ ला० ॥ साथे नेम सुहाय ॥
 सु० ॥ मे० ॥ १६ ॥ इण अवसर सोहमजीरे ॥ ला० ॥
 इद्र अनोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ क्रिडारग विनोदसुरे ॥
 ला० ॥ दिठा श्री जगवान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १७ ॥ जेह
 जेहना होय रागीयारे ॥ ला० ॥ तेह तेहना गुण गा
 य ॥ सु० ॥ अणरागी असुहामणारे ॥ ला० ॥ हुता
 पिण न कहाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ १८ ॥ इद्र प्रससाआ
 करीरे ॥ ला० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ वाल
 पणे बल आगलोरे ॥ ला० ॥ नही बीजो ससार ॥
 सु० ॥ मे० ॥ १९ ॥ एक आमी सहु लोकनोरे ॥ ला०
 ॥ एक आढी जिनराय ॥ सु० ॥ तोहि न होवे ब
 रावरीरे ॥ ला० ॥ जिन बल अधीक कहाय ॥ सु० ॥

मे० ॥ २० ॥ एह वचन सहि नाशक्योरे ॥ ला० ॥
 अमरख आणी अपार ॥ सु० ॥ सुर सुरलोकथी उत
 रयोरे ॥ ला० ॥ आयो विपन मजार ॥ सु० ॥ मे ॥
 ॥ २१ ॥ काका साथ कुतुहलीरे ॥ ला० ॥ होइ रह्या
 जिनराय ॥ सु० ॥ एक खेलावे गोदमेरे ॥ ला० ॥ ए
 कलीए कठ लगाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २२ ॥ एक आं
 गुलीया लेइ फिरेरे ॥ ला० ॥ एक खेलण खेलाय ॥
 सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ ला० ॥ तालि नाद सु
 णाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २३ ॥ घम घम वाजे घूगरीरे
 ॥ ला० ॥ ठम ठम ठमके चाल ॥ सु० ॥ मेरे ढगन
 मगनारे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो अति स्याल ॥ सु० ॥
 मे० ॥ २४ ॥ कबहु आख अंजावतोरे ॥ ला० ॥ प
 रहो बटकि जाय ॥ सु० ॥ बोलायो फिर नावहिरे ॥
 ला० ॥ माता प्रकडे धाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २५ ॥ तव
 प्रनुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ टबकि गाल कराय
 ॥ सु० ॥ विद्याधर सुर मानविरे ॥ ला० ॥ सबहु रहे
 रींजाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २६ ॥ गगने विलवि वाराग
 नारे ॥ ला० ॥ मोहनसु मन मेल ॥ सु० ॥ सूरज र
 थ थनी रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केल ॥ सु० ॥
 मे० ॥ २७ ॥ तृणचरा त्रण ढोडीयारे ॥ ला० ॥ पखी
 चूग न चुगाय ॥ सु० ॥ जंगम जीव जिके तिकेरे ॥ ला०
 ॥ प्रनुसु रहे लवलाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २८ ॥ अवगु
 णहारा देवतारे ॥ ला० ॥ गुणतो को न ग्रहाय ॥ सु० ॥

माखी चंदन नादरेरे ॥ ला० ॥ असुच तिहां चलि जा
 य ॥ सु० ॥ मे० ॥ २९ ॥ अमृत थान लगावतारे ॥
 ला० ॥ जोकन दूध पिवाय ॥ सु० ॥ रगतरेसे राचे
 घणुरे ॥ ला० ॥ धिजो हेत न कहाय ॥ सु० ॥ मे० ॥
 ॥ ३० ॥ सुवा शब्द सुहामणोरे ॥ ला० ॥ माननिनेन
 सुहाय ॥ सु० ॥ नाच निहालि मोरनुरे लात, पापीयोपल
 न तजाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३१ ॥ निहवारण वैरी कक्षारे
 ॥ ला० ॥ मृग मठ मारणहार ॥ सु० ॥ गुन वर्षता
 विण साधुनेरे ॥ ला० ॥ नीच दहत अपार ॥ सु० ॥
 मे० ॥ ३२ ॥ खेल करी प्रनु पालणेरे ॥ ला० ॥ सो
 षे सोवता लिध ॥ सु० ॥ गगने चढ्यो देवतारे ॥
 ॥ ला० ॥ जाणयो कारज सीध ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३३ ॥
 अवधि ज्ञानपर, जूहयोरे ॥ ला० ॥ जाणे नेद द
 याल ॥ सु० ॥ लेशमात्र बल फोरव्योरे ॥ ला० ॥ सुर
 चाप्यो पयाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३४ ॥ सूतो प्रसिहा ज
 गावियोरे ॥ ला० ॥ अहि मुख घाले हाथ ॥ सु० ॥
 किम सुख पावे त्रापडोरे ॥ ला० ॥ जे रोडे जगनाथ
 ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३५ ॥ एतले सुरपति आवियोरे ॥
 ला० ॥ सुर बोढावण काज ॥ सु० ॥ राख राख जग
 राजीयारे ॥ ला० ॥ तुमहिने सह लाज ॥ सु० ॥ मे०
 ॥ ३६ ॥ बोढाव्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ प्राम्यो तीज
 अपराध ॥ सु० ॥ आग्रज जिनो विनवेरे ॥ ला० ॥
 किधाते फल लाध ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३७ ॥ बोढाव्या

प्रनु पालणारे ॥ ला० ॥ पाखर सुरनी कोड ॥ सु० ॥
 सेवा कारण मूकियारे ॥ ला० ॥ इंद्र नमे करजोर
 ॥ सु० ॥ मे० ॥ ३८ ॥ खेलि ख्याल घर आवियारे ॥
 बाल गोपाल नरिंद ॥ सु० ॥ घर घर होवे वधामणारे
 ॥ ला० ॥ घर घर परमानद ॥ सु० ॥ मे० ॥ श्री ह
 री वसे विगजीयोरे ॥ ला० ॥ नेम जिनद दयाल ॥
 ॥ सु० ॥ प्रवल प्रताप महा बलिरे ॥ ला० ॥ हलधर कृष्ण
 कपाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४० ॥ ढाल जली वत्रीसमीरे ॥ ला०
 ॥ पढत गुणत सुख दाय ॥ सु० ॥ लीला, नेम जि
 णदनीरे ॥ ला० ॥ गुणसागर गुरुराय ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ आवण जावण होवता, रखे लखे कै वात
 ॥ इम जाणि पासे रहे, हलधर नामे भात ॥ १ ॥ आ
 क्रुरादिक कसने, नवि, बाना सुत एह ॥ मूक्यो कस
 अणजाणियो; तेणे रामगुण गेह ॥ २ ॥ दस धनुष्य
 उचा वेहू, गोकुल रमे कुमार ॥ काम तजी तिहा ग्वा
 लणी, देखे आवि अपार ॥ ३ ॥ कृष्ण ग्रहि सघलि
 कला, राम पासे सुखकार ॥ धनुष्य कला तिम बलि
 जणे, क्षत्रिनो आचार ॥ ४ ॥

१ ढाल ३७ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥
 ए देशी ॥ जीहो राम अने हरी-मीलि हिवे लाला,
 घरता अधीक सनेह ॥ जीहो एकजीव तनु जुजूआ ला
 ला, जाणी जइ न सदेह ॥ १ ॥ चतुर नर हरी रमे
 रसरग ॥ जीहो सुंदर रुप सुहामणा लाला चलणे जा

ए अंग ॥ च० ॥ ए टेक ॥ जीहो हिवे हरी बल
 ता बलदने लाला, पूठ ग्रहे जइ जाम ॥ जीहो कृष्ण
 जोर ते देखीने लाला, अचरिज पामे राम ॥ च० ॥
 ॥ २ ॥ जीहो जिम जिम हरी वाधे तिहां लाला, तिम
 तिम गोपिरे चित ॥ जीहो काम विकार लहे घणो
 लाला, घुमे लागी प्रीत ॥ च० ॥ ३ ॥ जीहो राधा सु
 ता ब्रखुजाननि लाला, कचन कोमल गात ॥ जीहो स्या
 ल लागी हरी आगले लाला, महि वेचण मीस जात
 ॥ च० ॥ ४ ॥ जीहो रोके तव आडो फिरी लाला,
 मोहन श्री नदलाल ॥ जीहो हठ नरी हरी आगले
 लाला, बोले राधा वाल ॥ च० ॥ ५ ॥ जीहो हम गो
 पीयनपर दाननी लाला, किण किधीरे आद ॥ जी
 हो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां जखवख वा
 द ॥ च० ॥ ६ ॥ जीहो आ ब्रजमा वसता थका ला
 ला, कदिय न दिधोरे दाण ॥ जीहो कुवर बाबा नंद
 ना लाला, जात नहि ब्रखुजान ॥ च० ॥ ७ ॥ जीहो
 जावाद्यो हठ किम करो लाला, मुऊ वेचण हनी मा
 ट ॥ जीहो वेला वनमें बहु थइ लाला, माता जोति
 हशे वाट ॥ च० ॥ ८ ॥ जीहो नीत नीत इम हरी रा
 धीका लाला, करे वचन रस केल ॥ जीहो नेह घेलि
 आवे तिहा लाला, काज सकल अवहेल ॥ च० ॥ ९ ॥
 जीहो सोलेसइस्स गोवालणि लाला, हरीने रजन का
 ज ॥ जीहो दाखे नव नव चातुरी लाला, हाव जाव करी

लाज ॥ च० ॥ १० ॥ जीहो गोपी हरी पावल
 मिली लाला, घुमर गावरे रास ॥ जीहो लुवधा
 नमरा जीम नमे लाला, कमल तणे नीत
 पास ॥ च० ॥ ११ ॥ जीहो हरीने जोती गो
 पिका लाला, नयण न मिचेरे केम ॥ जीहो कृष्ण कृष्ण
 इम बोलवे लाला, हो वनमेले तेम ॥ च० ॥ १२ ॥
 जीहो एकसमे गोपि तिहां लाला, गाय दुहे नूपिठ ॥
 जीहो टलि नजाणे दोहणा लाला, हरीसु लागी दिठ
 ॥ च० ॥ १३ ॥ जीहो विविध कुसुम गुथतिके लाला,
 माल करी जतकठ ॥ जीहो वरमाला-पेरे गोपीका लाला,
 घाले हरीने कठ ॥ च० ॥ १४ ॥ जीहो निमतिम वि
 ध करी हरीनणि लाला, गोप तणिते नार ॥ जीहो बो
 लावे फरसे मिले लाला, करति काम विकार ॥ च०
 ॥ १५ ॥ जीहो मोरपिच्च माथे धरी लाला, हरी गोवाल
 णि साथ ॥ जीहो गावे धूनि पूरेतिके लाला, जाली
 हरखे हाथ ॥ च० ॥ १६ ॥ जीहो निर अथाहे जील
 तो लाला, हसपरे हरी जाण ॥ जीहो पकज गोपी मा
 गीया लाला ॥ लिलाए दिए आण ॥ च० ॥ १७ ॥
 जीहो गोवालणीया रामने लाला, उलने एकवार ॥
 जीहो तुम बधव अम नेहरे लाला ॥ अण-दिठे बहुवा
 र ॥ च० ॥ १८ ॥ जीहो मधुर बजावे वासली लाला,
 गिरिकडणे आणद, जीहो-घणु; हसावे रामने लाला ॥
 नाचे नव नव वद ॥ च० ॥ १९ ॥ जीहो गोवालणी साथे

लालो, नाचे कृष्णकुमार, जीहो रगाचार, तणी परे
 लाला, तालिदिए हलधार ॥ व० ॥ २० ॥ जीहो इम
 रमता हरी रामने लाला, वोल्या वरस इग्यार ॥ जी
 हो गुण सागरसूरि ए कही लाला, ढाल साढत्रिस
 मी सार ॥ चतुर० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ कंसराय मथुरापुरी, सुखमे राज करत ॥
 वहिन तणे घर आवीयो, कन्या देखी हसत ॥ १ ॥
 वहिने गर्ज जे सातमो, किम मुळ मारण हार ॥ के
 ऋपि जाख्यो अन्यथा, के कोइ वात विचार ॥ २ ॥ नि
 मतियोने पूगीयो, ऋपिवर वचन विचार ॥ सो जाखे
 नृप नवी मीटे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ नृप जणे
 निमति सुणो, हु किम जाणु तास ॥ अण जाण्या अ
 णउलख्या, किम करु तस नास ॥ ४ ॥ निमतिए स
 ही नाणीका, राय बतावे ताम ॥ केसी हय खर मुख वृ
 प ॥ एहनो फोडण ठाम ॥ ५ ॥ धनुष्य चोहेमे जुजु ब
 ले, नाथे कालिनाग ॥ तुम युग हाथी पाटना, मारी
 मेलावे माग ॥ ६ ॥ मळ आखाडे मळने, जाली पढा
 व्ये जोर ॥ ते तुम वैरी जाणजो, एह हलावी डोर ॥ ७ ॥
 कस नृप अति खलजल्यो, अरिनो सुणी अधीकार ॥
 वृषज मेल्यो मोकलो, पुंठे घणा असवार ॥ ८ ॥
 ढाल ३८ मी ॥ मत कोइ रमज्यो हो साजन
 सोगटे ॥ ए देशी ॥ हिवे संजकाली हो कंसनरिदनी,
 अरिष्टवलद बलवत ॥ चतुरनेर ॥ ब्रजरावनमे हो

आवे आकृतो, करतो कोप अनत ॥ च० ॥ १ ॥ सु
 एजो साजन अचरिजनी कथा ॥ ए आंकणी ॥ सिं
 गे उपाडी पठाडे गायने, नदीय कडपपरे ताम ॥ च० ॥
 तिम बली कोप धरी पग पाठले, ढोले घृतना ठाम ॥
 च० ॥ सु० ॥ २ ॥ राम सहित गोविंद तव सानले,
 कोलाहल अति होय ॥ च० ॥ लेइ हथीयार धसी ह
 री आवीयो, अरिष्ट बलद तिहा जोय ॥ च० ॥ सु० ॥
 ॥ ३ ॥ वारे सहु इहा नद गोवालीया, नहो गो घृतनो
 काम ॥ च० ॥ विनये सहु पिण नवी रहे, बलद बो
 लावे ताम ॥ च० ॥ सु० ॥ ४ ॥ सोषिण आयो हो हरी
 ने उपरे, रिस जरयो विकराल ॥ च० ॥ मारे अपुठो
 हो हरी निज जुज बले, हरया बालगोपाल ॥ च०
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ हरी रमता बली आयो हो अन्यदा, केसी
 कंस किशोर ॥ च० ॥ मही तल गाजे हो पग खुड ता
 लसु, हय हिंसारव जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ ग्रहतो
 हो दत विचाले लोकने, खूरे हणतो गाय ॥ च० ॥ दे
 खिहो सोर मच्यो वन गोकुले, गोधन नाठो जाय ॥
 च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोक पुकार सुणी हरी आवीयो,
 तुरीने पासे जाय ॥ च० ॥ हरीने हो मारण धायो ह
 यवरु, लोक रह्या अकुलाय ॥ च० ॥ सु० ॥ ८ ॥ ना
 खीहो फाल केसी जब आवीयो, दोड करी हरी आ
 प ॥ च० ॥ मुखशु हो जाली ताम विदारीयो, टाल्यो
 सबल सताप ॥ च० ॥ सु० ॥ ९ ॥ कस तणा खरमे

ख तिमहिज वली, गोकुलमे समकाल ॥ च० ॥ फि
 रतां वनमे हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उगाल ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमे परिसरे,
 हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिंदुक उज्जलीने तत्र प
 ष्यो, कालिंद्रह मजार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले
 वाने हरी द्रहातर गया, सोधी लीयो गयट ॥ च० ॥
 पिठे फिरता तव पेखीयो, आवास तेजनो कद ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ नितरे दीठी एक गवाहिका, कौतुक
 अधिको पाम ॥ च० ॥ देइ फलाग माहि गया, निरी
 द्हाण करे काम ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ आगे जाता पलग
 पे जीलता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु
 तो सुख निंदमे, महीधर विखनो गग ॥ च० ॥ सु०
 ॥ १४ ॥ करे तिहा नागणी नागपतालनी, नव नव
 जात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी जणी,
 बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ काइ तु वाट विसारियोरे बाला,
 काइ तु मारण जुलियो ॥ काइ ते तारो कालघटियो,
 जे इणे मारण आवियो ॥ जल-कमल गडि जायरे
 बाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते
 वाट विसारियोरे नागण, नहि ते-मारण जुलियो ॥ न
 हि ते मारो काल घटियो, हु-एणे-मारण आवियो ॥
 जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहा तुमारो बेसणोरे बा
 ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण रायना जलण शाले,

स्यु ठे तुमारो नामरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कानवाच ॥ मथु
 रा हमारो बेसणारे नागण, गोकुल हमारो मामरे ॥
 कमरायना चलण चाले, गोवालीमो माहरू नामरे ॥
 ज० ॥ ४ ॥ नागण जगाडो तोरा नाहने, वली केसे
 जे विसासीयो ॥ कसरायथी जुवटे रमतां, नाह तुमा
 रो हारीयोरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधनवा
 च ॥ चरण चोली अग मोमी, नागणीए नाहो जगा
 वीयो ॥ उठोने बलवत बेठा थान, बालुमो हम घर
 आवीयोरे ॥ जल० ॥ ६ ॥

देशी तेहिज ॥ उठ्यो हो महिधर विष जरे लोच
 ने, कोप धरी- ततकाल ॥ च० ॥ आयोहो सन
 मुख हरीने उपरे, रोस जरयो विकराल ॥ च० ॥ सु०
 ॥ १३ ॥ नाथ्यो हो जाली बेल तणीपरे, पाम्यो अधि
 को त्रास ॥ च० ॥ उपरे बेशी हो ह्यपरे वाहियो, जोर
 कीसो हरी पास ॥ च० ॥ सु० ॥ १४ ॥ थाको हो नाग
 तजी अर्जीमानने, प्रणमे प्रचुना पाय ॥ च० ॥ हुं,
 तुम पायक लायक साहीवा, मेहेर करो महाराज ॥
 च० ॥ सु० ॥ १५ ॥ हिवे हु सेवक आजथी ताहरो, न
 जजु अवर नूपाल ॥ च० ॥ लेइ सतकार आयो ह
 री निज घरे, मिलीया बालगोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥
 ॥ १६ ॥ हिवे वृषनादिक हणीया साजली, वयरी जाण
 ण हार ॥ च० ॥ सारग धनुष्य पूजण थापीयो, परख
 दामे महाराज ॥ च० ॥ सु० ॥ १७ ॥ कसे करावीहो

ख तिमहिज वली, गोकुलमे समकाल ॥ च० ॥ फि
 रता वनमे हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उठाल ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमे परिसरे,
 हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिंदुक ऊठलीने तव प
 ष्यो, कालिंद्रह मजार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले
 वाने हरी द्रहातर गया, सोधी लीयो गयट ॥ च० ॥
 पिठे फिरता तव पेखीयो, आवास तेजनो कद ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ नितरे दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक
 अधिको पाम ॥ च० ॥ देइ फलाग माहि गया, निरी
 द्दण करे काम ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ आगे जाता पलग
 पे जीलता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु
 तो सुख निंदमे, महीधर विखनो ठाग ॥ च० ॥ सु०
 ॥ १४ ॥ करे तिहा नागणी नागपतालनी, नव नव
 जात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी जणी,
 बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ काइ तु वाट विसारियोरे वाला,
 काइ तु मारग चुलियो ॥ काइ ते तारो कालघटियो,
 जे इणे मारग आवियो ॥ जल-कमल गडि जायरे
 वाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते
 वाट विसारियोरे नागण, नहि ते-मारग चुलियो ॥ न
 हि ते मारो काल घटियो, हु एणे-मारग आवियो ॥
 जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहा तुमारो, बेसणोरे बा
 ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण सयना चलण चाले,

लडथक्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो जूमी आ
 य ॥ च० ॥ हासो करताहो देखि सजा सह, तव उ
 ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे
 हो जीम निज वचने, सारगपति पिण तेम ॥ च० ॥
 चोहडी धनुष्यने टकारव कियो, हरी बल अधीको ए
 म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ वरमालाहो हरी कंठे
 धरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आनत्रिसमी
 गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च० ॥ सु० ॥ २९ ॥
 दुहा ॥ कसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥
 करवा कारण तेनिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व
 सुदेवने तेडीया, सघला आपणा जाय ॥ अक्रुरादिक
 पुत्रसु, कस हिवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा
 डीया, कसे ते सहु कोह ॥ उचे माचे दिपता, पामे सो
 जा सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे साजलि, कृष्ण राम
 ने एम ॥ कहे मथुरा जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥
 ॥ ४ ॥ मानी वचन बलजद्रजी, एम जसोदा पास ॥
 न्हावण कर अम्हे जावसा, मथुरा चित्त उलास ॥ ५ ॥
 देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कस ह
 एयो हरी बधवा, वात कर सुज टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु
 णो स्यु विसरयो, तुजने दासी जाउ ॥ जिन न कि
 यो कारज तुरत, वचन गणयो अम्ह वाउ ॥ ७ ॥ एह
 सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो
 बोले नहि, तव चिते इलघार ॥ ८ ॥

तिहां उदगोपणा, जामा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सा
 रग धनुष्य चढावे जे भज वले, परणे तेह उवाह ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १८ ॥ एम नीसुर्णाहा आवे तिहा कणि, अ
 लगायी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चढावी पिण को न
 वी सके, सारग जे अजीधान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥
 एहवे नदन श्री वसुदेवनो, शूर मुनट गुणभीर ॥ च०
 ॥ उलाकि रथ उपर वेसीने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च०
 ॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जाताहो गोकुल गाममें, वास
 रह्यो सुनटेव ॥ च० ॥ मथुरा वाट देखारण तव लि
 या, साथे हरी बलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उ
 नमे लियो हरी मारग करे, हररुयो बल महि राण
 ॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरिज लह्यो, रये
 तेने राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जमुना
 तट जल उतरी, पईसे मथुरा माहि ॥ च० ॥ धनुष्य
 सजाइमे आया रगसु, वेठा धरी उवाहि ॥ च० ॥ सु०
 ॥ २३ ॥ जामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी
 नु रूप ॥ च० ॥ सारग धनुष्य खेचण तव उठिया, हु
 स धरी वड चूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनु
 ष्यहो पाण उंसरे, महिपति मोठा राय ॥ च० ॥ हो
 इ अपुठाहो नव परणीत परे, उजा मुख विंपाय ॥
 च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, होइ
 सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चडवनी चाल्योहो जय मन
 आवगुणि, चांप ग्रही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो जूमी आ
 य ॥ च० ॥ हासो करताहो देखि सजा सहु, तव उ
 ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे
 हो जीम निज वब्बने, सारगपति पिण तेम ॥ च० ॥
 चोहडी धनुष्यने टकारव कियो, हरी बल अधीको ए
 म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ वरमालाहो हरी कंठे
 घरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आनत्रिसमी
 गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च० ॥ सु० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ कसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥
 करवा कारण तेनिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व
 सुदेवने तेडीया, सघला आपणा जाय ॥ अक्रुरादिक
 पुत्रसु, कस हिवे चित लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा
 डीया, कसे ते सहु कोह ॥ उचे माचे दिपता, पामे सो
 ना सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे साजलि, कृष्ण राम
 ने एम ॥ कहे मथुरां जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥
 ॥ ४ ॥ मानी वचन बलजद्रनी, एम जसोदा पास ॥
 न्हावण कर अम्हे जावसा, मथुरा चित्त उलास ॥ ५ ॥
 देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कस ह
 एयो हरी वधवा, वात कर सुन्न टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु
 णो स्यु विसरयो, तुजने दासी जाठ ॥ जिन न कि
 यो कारज तुरत, वचन गणयो अम्ह वाठ ॥ ७ ॥ एह
 सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो
 बोले नहि, तव चिते बलधार ॥ ८ ॥

तिहां उदगोपणा, नामा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सा
 रंग धनुष्य चढावे जे भुज बले, परणे तेह उवाह ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १८ ॥ एम नीतुर्णाहा आवे तिहा कणे, अ
 लगाथी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चढावी विण को न
 वी सके, सारंग जे अजीघान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥
 एहवे नदन श्री वसुदेवनो, शूर मुनट गुणधीर ॥ च०
 ॥ जलाकि रथ उपर वेसीने, अनाधृष्ट वटवीर ॥ च०
 ॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जाताहो गोकुल गाममें, वास
 रह्यो सुनटेव ॥ च० ॥ मथुरा वाट देखारण तव लि
 या, साथे हरी बलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उ
 नमे लियो हरी मारग करे, हरख्यो बल महि राण
 ॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरिज लह्यो, रये
 तेमे राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जमुना
 तट जल उतरी, पइसे मथुरा माहि ॥ च० ॥ धनुष्य
 सनाइमे आया रगसु, वेठा धरी उवाहि ॥ च० ॥ सु०
 ॥ २३ ॥ नामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी
 नु रूप ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य खेचण तव उठिया, हु
 स धरी वड चूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनु
 ष्यहो पाण उंसरे, महिपाति मोठा राय ॥ च० ॥ हो
 इ अपुठाहो नव परणीत परे, उजा मुख विपाय ॥
 च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, हीइ
 सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चढवनी घाल्योहो नय मन
 अवगुणि, चांप अही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

खे ए, वात न को लखे ए ॥१३॥ बांधव दसे देसार,
जादवनो परिवार ॥ तुज सीर राजतो ए, जग जस
गाजतो ए ॥ १४ ॥ हुं वड बंधव सार, गुपतपणे सु
विच्यार ॥ रहु मन नेहथी ए, प्रेम विसेषथी ए ॥
॥ १५ ॥ दासी जणी करी रीस, तिण कारण तुम इ
स ॥ अलेक गुनो कहेए, वड वीरच्यो सहिए ॥१६॥
ढाल नवत्रिसमी सार, पाम्यो जेद मूरार ॥ फिरी पू
ढे इंसुंए, गुणसागर कीसुंए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ हिवे पूढे बलजद्रने, किम मूक्यो मुज ता
त ॥ कारण विण इहां कणे, तेम जणो सहु वात ॥
॥ १ ॥ बलतु बलजद्र कहे, वात सविविस्तार ॥ कसे
तुज बाधव हणया, कोप धरी तिण वार ॥ २ ॥ तात
मात मयुरा रहे ॥ कस तणे हठ जोर ॥ सोल वरसतो
वही गयां, कोय न आवे नोर ॥ ३ ॥ जरासधना प
रुथी, चसकी न शके कोय ॥ मोटा साथे बाधवी, घ
णी विमांसण सोय ॥ ४ ॥ आज कंस वड राजीयो,
पाले राज अखरु ॥ आवीते केइ नम्या, पुहवी पाल
प्रचढ ॥ ५ ॥ वड आपण सुत पाषति, वरते ए विर
तंत ॥ तो एम जाणी सीधनो, खाज सीयांल जखत
॥ ६ ॥ बाधव मरण सुणी करी, कोप्यो कृष्ण मूरार ॥
चरीत करे जे आगले, ते सुणजो सुविच्यार ॥ ७ ॥

ढाल-४० मी ॥ राणापूरो रळीयांमणोरे लाल ॥ ए
देशी ॥ आज पवाडो कसनोरे लाल ॥ इम करी

ढाल ३९ मी ॥ मेलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ ह
 लधर साहि हाथ, बोलावे नरनाथ ॥ जाइ किम अण
 मणो ए, वचन दयामणो ए ॥ १ ॥ वाढल ठायो ब
 द, दुरवल दिसे मद ॥ तिम तुम मुख इसो ए, क
 हो कारण किस्यो ए ॥ २ ॥ इणवाते गुणगेह, त्रुटो
 दिसे नेह ॥ बधव तुम तणो ए, साचो मुऊ जणो ए
 ॥ ३ ॥ हरी जाखे इम वाय, तु मोटो महाराय ॥ हु
 मन जाणतो ए, हठ नवि ताणतो ए ॥ ४ ॥ पिण तु
 म अधीक गुमान, दिसेठेरे राजन ॥ मुऊ जननी व
 डि ए, कही तुम दासनी ए ॥ ५ ॥ इण वाते तुम ला
 ज, नवि आवि माहाराज ॥ विण वेधे वह्यो ए, अणघ
 टतू कह्यो ए ॥ ६ ॥ पामी अतर जेय, हासि बोले ब
 लदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा स्वामनि ए ॥
 ॥ ७ ॥ तुमारी देवकि माय, देवक सुता सुखदाय ॥
 वन्न तुम मावडी ए, वसुधामां वल्ली ए ॥ ८ ॥ नद स
 दन सुख हेत, माता धरीय सकेत ॥ मूक्यो तुम ज
 णि ए, आरति मन घणि ए ॥ ९ ॥ पिण न करे तु
 ऊ गोर, कस तणो जय जोर ॥ तुऊ विरहातुरीए रहे
 मथुरा पुरी ए ॥ १० ॥ मास मासने ठेह, माता धरि
 मन नेह ॥ आवे विलखती ए, तुम मुख निरखती ए
 ॥ ११ ॥ नद जसोदा नार, सखीयपणे सुविच्यार ॥
 राखे हेत धरी ए, हेजघणे करीए ॥ १२ ॥ वसुदेव
 आपणो तात, मुऊ मूक्यो विख्यात ॥ कस कारण प

ला० ॥ रामकृष्ण रठियालरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ कं
 स विना परीवारसुरे ॥ ला० ॥ बेसे हरीहलधाररे ॥
 सो० ॥ मोठा एक माचा थकीरे ॥ ला० ॥ सुनट सब
 उताररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १० ॥ राम देखावे कृष्णनेरे
 ॥ ला० ॥ कस नणी तेवाररे ॥ सो० ॥ समुद्रविजय
 आदे करीरे ॥ ला० ॥ ए आपणडो परिवाररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ११ ॥ हिवे तिहां मल्ल जुळतारे ॥ ला० ॥
 जोवे राणो राणरे ॥ सो० ॥ कस आदेसे उठियोरे ॥
 ला० ॥ चाणुरमल्ल बलवानरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १२ ॥
 मेहतणी परे गाजतारे ॥ ला० ॥ थापोटे निज हाथरे
 ॥ सो० ॥ उचे स्वरे इम बोलतारे ॥ ला० ॥ सकल न
 रेसर साथरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १३ ॥ वीर जननी जे
 जाइयारे ॥ ला० ॥ राजपुत्र मल्लरालरे ॥ सो० ॥ आ
 वि अढो मुळ आगलेरे ॥ ला० ॥ अढो मोठा नूपाल
 रे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १४ ॥ अणसहेतो हरी उठियो
 रे ॥ ला० ॥ न्हानो पिण मन मोटरे ॥ सो० ॥ माचेथी
 आयो उतररीरे ॥ ला० ॥ नृजा आप थापोटरे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ १५ ॥ कृष्ण थापोटे बाहनेरे ॥ ला० ॥ गयण
 धरा कंपायरे ॥ सो० ॥ देखी गयण घन उमह्योरे ॥
 ला० ॥ अष्टापद अकुलायरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १६ ॥
 दूधमुखे ए बालडोरे ॥ ला० ॥ सेवे सदा वनवासरे ॥
 सो० ॥ तिण बढवो जुगतो नहिरे ॥ ला० ॥ एक हाण
 ने बलि हासरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १७ ॥ मलकि दामो

पण रीसालरे ॥ सोजागी ॥ हरी हलधर बेहु चाल्म
 यारे ॥ लाल ॥ साथे घणा गोपालरे ॥ सो० ॥ आ०
 ॥ १ ॥ हरी हलधरने कानर्जारे ॥ ला० ॥ बेहु गुणे
 अमोलरे ॥ सो० ॥ मथुरा दिसे चालतारे ॥ ला० ॥
 पामे पुरनी पोलरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २ ॥ पद्मोतर च
 पक जलारे ॥ ला० ॥ कस तणा गज दोयरे ॥ सो० ॥
 पुर प्रवेश करता थकारे ॥ ला० ॥ साहमा आव्या
 सोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ दात उखेनी मारीयोरे
 ॥ ला० ॥ हरी पदमोतर तेहरे ॥ सो० ॥ तिम बलज
 द्रे मारीयोरे ॥ ला० ॥ चपक गज तिहा जेहरे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ राम कृष्ण बेहु देखीनेरे ॥ ला० ॥ कहे
 लोक सहू कोयरे ॥ सो० ॥ अरिष्ट प्रमुखइणे हण्यारे
 ॥ ला० ॥ नदपुत्र ए दोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ५ ॥
 लुटे बाजार दयामणारे ॥ ला० ॥ गोवालीया तेणीवा
 ररे ॥ सो० ॥ वख चुपनने सुखमीरे ॥ ला० ॥ कोइ
 न वर्जनहाररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ व्यापारी मिली
 एकठारे ॥ ला० ॥ कंस जणी कहे तामरे ॥ सो० ॥
 गोवालीए पुर लुटीयोरे ॥ ला० ॥ न राखी कोइनी
 मामरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ कस कहे धीरा रहोरे
 ॥ ला० ॥ आवणद्यो इण ठामरे ॥ सो० ॥ कुटी क
 रशु पाधरारे ॥ ला० ॥ पोचामीस जम घामरे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ निले पीले फूलडेरे ॥ ला० ॥ कठे
 धरी वरमालरे ॥ सो० ॥ मळ अखामे आवियारे ॥

सुरे ॥ ला० ॥ किण हरी जोर खमायरे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ २६ ॥ मुहडे लोहि नाखतोरे ॥ ला० ॥ फा
 टि देखि आखरे ॥ सो० ॥ प्राण गंड्यो पापीएरे ॥
 ला० ॥ हरी पिण दिधो नाखरे ॥ सो० ॥ आ० ॥
 ॥ २७ ॥ ढाल नली चालिसमीरे ॥ ला० ॥ युद्ध क
 री बहु जातरे ॥ सो० ॥ गुणसागर हिवे कसनीरे ॥ ला० ॥
 आगे निसुणो वातरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ कस हिवे जय कोपथी, बोले कपित देह ॥
 आलस तजी गोवालीयो, मारो उजो एह ॥ १ ॥ जे
 णे ए पापि पोसीया, ते पिण मारो नद ॥ ग्रथ ग्रहो
 सहू तेहनो, काढी घरनो कद ॥ २ ॥ चीड करे जो वो
 चको, तेहने राखण काज ॥ ते हणवो मुज आणथी,
 नीश्वे सुतजी लाज ॥ ३ ॥

ढाल ४१मी ॥ नूपति आइ मिल्या ए देशी ॥ ईम सुणी
 हरी कोपीयोरे, कस नणी कहे एम ॥ चाणुर मारया
 तु जीवावरे, मूरख वंठे केम ॥ १ ॥ सो अवसर आ
 य मिल्यो, ऋषिवर नाख्यो जेह ॥ सो० ॥ ए आक
 णी ॥ राख्य जीव तु ताह्यरोरे, जबलग हणु तुज ॥
 पठी नद हणवा जायजेरे, देखी पराक्रम मुज ॥ सो०
 ॥ २ ॥ इम कहि कूदि आवियोरे, माचापर हरीराय ॥
 कस पामी जय आकरोरे, नाठो मुख विलखाय ॥
 ॥ सो० ॥ ३ ॥ सासजरयो आव्यो धसीरे, अतेजरमें
 चाल ॥ जीवजस्या रहि बारणेरे, मान जरी मठरालरे

धर घोलीयोरे ॥ ला० ॥ वचन वदे तव गोररे ॥ सो० ॥
 आव्य चाणुर उतावलोरे ॥ ला० ॥ लोउ थारो जोररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ १८ ॥ नद गोपनो पुत्रवुरे ॥ ला० ॥ दू
 ध तणी मुज देहरे ॥ सो० ॥ तो हु हरी गजनी परेरे ॥
 ला० ॥ उतारु बल एहरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १९ ॥
 वचन चातुरी कृष्णनीरे ॥ ला० ॥ देखी बीजो मल्लरे
 ॥ सो० ॥ कस आदेसे उठियोरे ॥ ला० ॥ मूष्ठीक ना
 मे मुगल्लरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २० ॥ उठि बीजा म
 ल्लनेरे ॥ ला० ॥ साये अमो हलधाररे ॥ सो० ॥ थापटी नु
 ज तिम आवियोरे ॥ ला० ॥ चाणुर हरीनी लाररे ॥
 सो० ॥ आ० ॥ २१ ॥ राम अने मूष्ठीक लडरे ॥
 ला० ॥ तिम हरीने चाणुररे ॥ सो० ॥ विंदाचल गज
 नी परेरे ॥ ला० ॥ लाग्या रोस आतुररे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ २२ ॥ कंपे धरा पगला तसुरे ॥ ला० ॥ उमे
 रज अतिपूररे ॥ सो० ॥ उठि सजा अलगी थइरे ॥
 ला० ॥ निरखे उजा दूररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २३ ॥
 केशव मूठे चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ नास्व्यो धरति उंठरे
 ॥ सो० ॥ वज्र जिम सक्रेसनोरे ॥ ला० ॥ पढीयो अ
 हे कृण चोठरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २४ ॥ सात धनुष्य
 पाठो पड्योरे ॥ ला० ॥ तिण घाते चाणुररे ॥ सो० ॥
 सासलहि चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ कृष्ण हकारे सुररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ २५ ॥ केरु जाली नीज जानसुरे ॥ ला०
 ॥ बाहे सीस न मायरे ॥ सो० ॥ हियडे हणीयो मूठ

जी, जमुनाने तट जाय ॥ सो० ॥ १५ ॥ कसनि मा
 त तिम नारीएजी, जलतणी अजली दीध ॥ जीवज
 स्या निज पति तणोरे, प्रेत कारज नवी कीध ॥ सो०
 ॥ १६ ॥ राम अने कृष्ण तणोजी, प्रेत कारज करी
 तेम ॥ कारज करी सहु नाहनोरे, कोप धरी कहे एम
 ॥ सो० ॥ १७ ॥ एकनालीसमी ढालमेरे, प्रगढ्यो श्री
 हरी आप ॥ गुणसागर जादव तणोजी, प्रबल पुण्य
 प्रताप ॥ सो० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ सतजामा पुत्री जणी, परषावे त्या नूप ॥
 उग्रसेन हरी रायने, अजीनव रंजा रूप ॥ १ ॥ नित
 नित नवला आजणी, नित्य नित्य नवला वेश ॥ नित्य
 नित्य नवली रतिकला, करे हरी सुविसेश ॥ २ ॥ सोरिपुर
 आव्या हिवे, जादव सकल विख्यात ॥ श्रोता साज
 लजो तुमे, जीवजस्यानी वात ॥ ३ ॥ विलखी जीव
 जस्या हिवे, जरासधने गेह ॥ पाहोती परतद्ध चालती,
 अस्त्री रूपे एह ॥ ४ ॥ जरासध पूढे थके, रोति जपे वा
 ता ॥ जादव कुमर हरी हलधरु, करी मुज प्रितम घात ॥ ५ ॥

ढाल ४२ मी ॥ सोवन सिंघासण रेवति ॥ ए दे
 शी ॥ आसुडाने लुह्या निज हाथसुं, चापी चापी हि
 यमाने वाररे ॥ गहेवरयो मन अति वापनो, पूढयो पू
 ढयो सकल विच्याररे ॥ १ ॥ आवीरे पनोति जरास
 धने, कतनो करीय सहाररे ॥ वाप तणो करवा जणी,
 बंधव काली कुमाररे ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमसुजट तव

॥ सो० ॥ ४ ॥ रामे तव मूठीक जणिरे, पोहोचाव्यो ज
 म पास ॥ लोक नाठा सहु वेगलारे, पामीने अति
 त्रास ॥ सो० ॥ ५ ॥ एटले सुजट कसनारे, धाया ले
 इ हथीयार ॥ हरी हलधर हणवा जणिरे, सुजट मो
 ठा सिरदार ॥ सो० ॥ ६ ॥ इस एक माचा तणिरे,
 राम लेइ निजदाय ॥ मधुपर मांखिनी परेरे, नासी
 सुजट सहु जाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जिवजस्या आढी
 फिरिरे, वोले गोडी जाल ॥ मामि अब अलगा रहो
 रे, मामो मिलवो आज ॥ सो० ॥ ८ ॥ इम कहि तल
 पि आवियारे, लाते नागी किवाड ॥ जाणे कंस दर
 बारमेरे, पढीउ चिंति घाड ॥ सो० ॥ ९ ॥ अतेउर स
 हू अवगणिरे, रोस जरयो हरीराय ॥ केशग्रहि कस
 रायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० ॥ १० ॥ मुगट
 पढ्यो हार गीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण ॥ मरण
 दशा आवि कसनेरे, कान्हू वदे इम वयण ॥ सो० ॥
 ॥ ११ ॥ जीव तव राखेवा कारणेरे, बालक हणिया
 जेह ॥ हमणा फल ते पामीयोरे, परतख पापी एह
 ॥ सो० ॥ १२ ॥ कस शिर दाते मारतारे, वरजे तव द
 सार ॥ देखि हरी निज तातनेरे, गोड चल्या सुवि
 च्यार ॥ सो० ॥ १३ ॥ रामकृष्णने नीज रथमारे, अ
 नादृष्टी बेसाण ॥ समुद्रविजय आदेसथीरे, मुके नी
 ज घर आण ॥ सो० ॥ १४ ॥ उग्रसेन साथे मिलि
 जी, समुद्रविजय नरराय ॥ कसनो प्रेत कारज करे

णी निज नुज बले, त्रिखड धणी होसे स्वामरे॥आ०
 ॥ १३ ॥ नेमने हलधर कृष्णजी, जेहना वशमां होय
 रे ॥ दैवजो आप कोपे घणु, पोहची शके नही कोय
 रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ एह स्थानक तुमे परीहरो, इहा
 सुख नहि लिगारेरे ॥ तात तळाहि जाणके, खाइ खा
 इ गारी निगारेरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ पश्चिमदिश तुम्हे
 गीद करो, सायर तट अनिरामरे ॥ सतजामा सुत
 जनमस्ये, जानु जमरतसु नामरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ ति
 हारे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे मनाणरे ॥ अन्न
 धन चिरकपुस्सु, पामशो कोड कल्याणरे ॥ आ० ॥
 ॥ १७ ॥ अष्टारेदश कुल कोरुस्यु, चालीयो जादवरा
 यरे ॥ मुररे व्यापे घणो पावलो, तेहथी निकल्या जा
 यरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ चोमिने मत कोइ ऊरज्यो, जो
 मी तजी किम जायरे ॥ चोमीतजी जल जादवा, अ
 वरतणी कुण वातरे ॥ आ० ॥ १९ ॥ नूपति चलीपरे जा
 खही, कोयठे वावनवीररे ॥ जादव साथेरे लागणी, जे
 करे साहसधीररे ॥ आ० ॥ २० ॥ काल कुवर ग्रहो
 बिडलो, हु जाउ यादवाळाररे ॥ जिहारे जाय तिहा के
 डले, जइ लावु परीवाररे ॥ आ० ॥ २१ ॥ यवन अ
 नुज राजा पाचसे, हय गय पायक तेमरे ॥ काल को
 पे करी घड हड्यो, दडवड्यो जादवा केडरे ॥ आ०
 ॥ २२ ॥ जेहनो पुणय सखाइयो, तेहना वड रखवाल
 रे ॥ तिहारे न चाले बल दैवनो, केतलो ए कुवर का

मोकल्यो, समुद्रविजे नृप पासरे ॥ कसना मारणहारने.
 मोकलो गिख दिवो तासरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र
 विजय कहे सोमजी, ए हमकुल गिणगाररे ॥ रामनेक
 ण दो चाडला, थनण सहु परीवाररे ॥ आ० ॥ ४ ॥
 नाम तु सीसके धनुष्यने, मुक्य त मानके बाणरे ॥ अर शी
 र आपके टोपने, वहाला जोयठे प्राणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥
 पुत्र तो प्रनु नही रयाभीजी, जो प्रनु तो नहि पुत्ररे
 ॥ दोइभे एरुज होयशे, तिम करो जीम रहे सुतरे ॥
 आ० ॥ ६ ॥ पुत्र तो आपयी उपजे, प्रनु करे आ
 धनो ठेदरे ॥ जड विना खालतो सुकडो, थाशेथाशे व
 स विठेदरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ एह सुणी हरी कोपीयो,
 उठियो खडग सनालरे ॥ सोमने राहु हु सज्मलो, वे
 गे देज आमलो टालरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ नृप नत्रिज
 शु विनवे, मारवो नही अवसिठरे ॥ स्वामीने वले ब
 लियो महा, शेवक होवे अति द्विठरे ॥ आ० ॥ ९ ॥
 सोम सुनट तव चालीयो, पोहोतो नृपति सगरे ॥ वा
 त सुणी अति परजल्यो, अग्नी ज्यु घृत प्रसगरे ॥
 आ० ॥ १० ॥ समुद्रविजय सहु लेडिया, किधो कि
 धो वात विच्याररे ॥ हिवेरे इहा रहेवो नही, रह्या होवे
 असुख अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कोष्टक एक नीमाति
 यो, पूठयो पूठयो यादव नाथरे ॥ किहारे गया हम
 उगरा, विगडीठे मोटका साथरे ॥ आ० ॥ १२ ॥ सोरे
 कहे नृप साजलो, आरति काइ न ठामरे ॥ नृप ह

दुःकरथि दुःकर महत्, जे जग दस काम ॥ ते तप
 करी आराधीए, इम चिते नप ताम ॥ ४ ॥ निम
 तिए दिन आपियो, स्नान कियो बलि कर्म ॥ सायर
 पूजा साचवि, साधेवा सुख शर्म ॥ ५ ॥

— ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस लकापति ॥ ए देशी
 ॥ कृष्ण करे उपदासजी, त्रण महा बलासजी, वा
 सजी वास करेवा कारणे ए ॥ त्रिजा दिननी जामनि,
 जाणे के प्रगटि दामनी, श्यामनी जाय ते सुर उवा
 रणे ए ॥ १ ॥ हरीके शंख पचायण, दियो रोहिणि
 नदन, नंदन शख सुघोष सुहामणो ए ॥ वर वस्त्र
 पहिरामणि, किधी सायरने घणी, अति घणी न
 क्ति करी जाखे घणो ए ॥ २ ॥ कहे हूं किम आरा
 धियो, तप बले आयो साथीयो, मुजने ते दियो
 कारज आदेशडो ए ॥ हरी जाखे सुर साजलो, आ
 पो थानक निरमलो, अतिजलो थानक अमारो पड
 पडो ए ॥ ३ ॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन
 हरखित थयो, हरखित थयो धनदने कारज सों
 न्यो सहु ए ॥ धनद समारे अति जली, पुरी द्वारी
 का मन रलि, मन रलि पुगी आस फलि बहु ए ॥
 ४ ॥ नव जोयण वीस्तारजी, लावपणें ते बारजी,
 सारजी सुवर्ण कोट-बाइ जलि ए ॥ हाथ अढार उचा
 पणे, नव धरणी पायो खणे, पोलापणे हाथ बार
 रागु चलि ए ॥ ५ ॥ स्तन तणा वर कारुरा, देखी

छरे ॥ आ० ॥ २३ ॥ लगवग आया ए आशना, त
 व सूरि करेहि विचाररे ॥ तेम पग्पच उठाइयो, क
 ल कियो तव कालरे ॥ आ० ॥ २४ ॥ यवन कुंजर स
 हु राजवी, पाग वली चालीया तेहरे ॥ नूपती सुख
 दुख पाभीयो, वात गुणी धुरेहेरे ॥ आ० ॥ २५ ॥
 वीर सहारीयो पापाणी, लाग्यो लाग्यो पाप अपाररे
 ॥ बलतीरे जिहा जाइ गाढरी, तिहा तिहां बालण ए
 हाररे ॥ आ० ॥ २६ ॥ जादव विघन सहुए टल्योरे, सहु ट
 ल्यो रु ततलेवरे ॥ दान ने पुन्य किया घणा, किधी
 गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० ॥ २७ ॥ सल्प प्रीयाणने
 आवीया, सोरठ देशमजाररे ॥ दूरधी दीठो अति रु
 यमो, विमल पणे गीरनाररे ॥ आ० ॥ २८ ॥ साय
 रने तट आसना, आवीया जादवरायरे ॥ सतनामा
 सुत जनमीया, तिहा कियो कटक पढावरे ॥ आ० ॥
 २९ ॥ ढाल नली बेंतालीसमी, जय हरणी अनी
 रामरे ॥ श्रीगुणसागर पूरवे, मन तणा वबित
 कामरे ॥ आवीरे० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत
 ताम ॥ विण सुरवर आराधीया, सरे न मोटो काम ॥
 १ ॥ जिहा जबुक वासो वसे, ते तो बहुला ठाम ॥ ते
 तरुवर जग थोमला, जिहा ले गजवीश्राम ॥ २ ॥ त
 प विन सानिधी नवि करे, देव महा सुखदाय ॥ तप
 विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय ॥ ३ ॥

विशालहो, विशालहो कल्पवृक्ष घर वारणे ए ॥ वा
 विनो विस्तारहो, नीरपूरीत सारहो, सारहो नारी
 मजण कारणे ए ॥ १३ ॥ एकखना द्वारिका कही, त्रिखना
 सतखंडा लही, गह गह्या साठ कोडी वस्ती खरी
 ए ॥ नाम जुजूआ धारिए, ऋद्धी घणी विस्तारीए, वि
 स्तारीए अन धनसु मेल्या नरी ए ॥ १४ ॥ दिपंती
 घर उलहो, बणति बणति पोलहो, पोलथीहो पोलु
 तो उचि कहिए ॥ कलस कांति अपारहो, उगंतो
 दिनकारहो, कारहो कांतिकरणे मिलराहिए ॥ १५ ॥ हाट
 तणि वर सोहहो, सोहनो सदोहहो, दीहनहो सोह गुणे
 धन गाजीयो ए ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालहो, तिन लोक र
 सालहो, रसालहो सार सोधीने आणियो ए ॥ १६ ॥
 कुवा वाव सरोवरु, वन वाडी अति मनोहरु, हरी
 पुर हरीपुर सरस कहावियो ए ॥ एसघली विस्तार ए,
 गढमढ पोल प्राकार ए, वारुहो अहोरात्रि माहि
 कियोए ॥ १७ ॥ पितांबर अति निर्मलो, नक्षत्रमाला अ
 ति नलो, कौस्तुभहो गरुडध्वज रथआपियो ए ॥ कामुदि
 गदावर, सारग धनुष्य नला सर, नंदकहो खड्ग मुगुट ह
 रिने दियो ए ॥ १८ ॥ वनमाला मुसल हल, वमन ता
 ल ध्वजरथ नल, हूलधरहो पुजो तृण धनुष्य दे
 इ ए ॥ श्रीवा आनरण वेहेरखा, हारसु कुडल नवल
 खा, जिनजीनेहो आये नूपण सुर केइ ए ॥ १९ ॥
 गग तरग विराजता, वसन समुजल राजता, पुन

मोहे सुरनरा, किधा एकोठा नवरंग ऊलकंता ए ॥
 एकसो अडसठ पोलहो, दिसे सरखि उलहो, उल
 हो सात जोमी ध्वज लहकता ए ॥ ६ ॥ वृत्तत्रस
 चउरसहो, देव करे परसस हो, किधी मदिरनि अ
 ति माफणी ए ॥ दस जोमी रत्ने जमी, सहे सबहुं
 तेरे परवडी, वसुदेवना मेहेल तणी शोना घणी ए ॥
 ७ ॥ मध्य एकविसे जोमियो, थन हजारे शोनीयो,
 शोनीयो मणि माणीकज लुमीयो ए ॥ धनद करे
 हरी हेतयो, नव नव घाट विगेथी, रंगनुवन करी
 थापीयो ए ॥ ८ ॥ इद्राणी अनुहारना, सहेस वत्री
 से नारना, नारना मेहेल तणि शोना घणी ए ॥ बां
 ध्या सोवन घाटहो, माहि हिंडोला खाटहो, विविध प्रकारे
 कोरणी ए ॥ ९ ॥ मेहेल सोल हजारहो, उचीजोमी अठारहो,
 दिपे श्री बलदेवना ए ॥ गोल त्रस चउकुणिया
 मोल विविध सुहाविया, सुहाविया दस जोमी द
 सारना ए ॥ १० ॥ सना सुधर्मी मन रलि, किधि
 शोना ऊलमलि, ऊलमलि रामकृष्ण घर आगले
 ए ॥ वना श्री गजराजहो, मद ऊरत सकाजहो, का
 जहो हाथी साडा पाचसे ए ॥ ११ ॥ मोटा वि
 वीध जातहो, मोल जोमीया सातहो, सातहो उ
 प्पन क्रौंन परीवारने ए ॥ राजमार्गने पासहो, सोव
 न जडीता वासहो, वासहो राय उग्रसेन कारणे
 ए ॥ १२ ॥ घर घर घोम सांलहो, उत्तम बाग

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसग ॥ २ ॥
 कमला ब्राह्मण वाणीयां, कमला अवर अशेष ॥ क
 मलापतिना राजमा, कमला तणो विशेष ॥ ३ ॥ यादव
 जंगमे जंगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी
 साहेबि, चंद्र कला विस्तार ॥ ४ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 ढाल ४४ मी ॥ बंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए दे
 शी ॥ चंद्र कला जिम बाधे श्री हरी तेज अपार, का
 रन लोपे सुरनर मानव एक लिंगार ॥ श्री हरी वंस
 वतस कहस प्रसस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीज
 न दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतल ताइ
 के तेजे तपत दिणद, मेरु ज्यु धीर गंजिरके गुणे गिरु
 उ गोविंद ॥ सिंह अविह सुलिहके सुरमे सुर सनूर,
 इद्रकि प्रचुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दा
 ता दिल दरीयाको नाम धरत अनंत, पिण ए तिनुं
 त्याग तणे मन नम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधी
 वीरीने पूठ, यच्चिकने नाकारो न किधो साहमो ॥ ऊठ
 ॥ ३ ॥ सब विधि सुंदर राज करत कलेस न कोइ,
 नामे सुजामा नामनी गुण अनिरामा जोइ ॥ चंद्र
 सुखी अदुखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूप
 के उपमनारे सदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणैरे घडीयो विधी
 ना घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मथ्यो विधी
 फोगट माट ॥ रूप सोहांगणी रांगणी राजा राग अ
 सेष, पंचेद्रि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥

रपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए ॥ समुद्रविजयने वर
 जी, दिव्य सुररथ शस्त्रजी, खाडुहो चंद्रहास्य नामे
 खरुए ॥ २० ॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सहूए स
 नमानीया, मानीयाहो राजा राज कुमार तदाए ॥ इद्रतणे
 आदेसए, ए सघलो विसेपए, किधोहो देव क्वेरे धरी
 मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सिघारथी, हरीने टारुक
 सारथी, परवारथि वेसी रथ उपर जला ए ॥ पेसारां
 पुरमा कियो, सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सु
 दर नगरी जलामलाए ॥ २२ ॥ सुरपति साथे मिलि,
 करता मोहोच्चव मन रलि, मन रलि पद्वराव्या द्वा
 रामतिए ॥ रत्न कनक धनधानसु, वरमावे मन खां
 तसु, खातसु त्रण दिवस लगे गतिए ॥ २३ ॥ नर सु
 र असुर विद्याधरु, धनददेव अग्रेसरु, अग्रेसरु मग
 ल चार किया जला ए ॥ किधो नृपपद अजीपेक, ह
 री हलधर सुविशेष, तेज पुज्य गुण आगला ए ॥ २४ ॥
 नुचर खेचर राजीया, सेवकरे अति साजीया, गाजी
 या नगर द्वारका यदुपति ए ॥ लोक जोगवे जोग ए,
 सुपनातर नहि सोग ऐ, लोक ने आरति चिंता नहि
 रति ए ॥ २५ ॥ आप्र आपणो आचार, सहू पाले
 सुविच्यार, अविच्यारको नसके तिहा करोए ॥ ढाल
 ए त्रैतालिसमी, गुणसागर गुरु मनरमी, मनरमी
 कमला केल करे खरीए ॥ २६ ॥

दुहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरधंग

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसग ॥ २ ॥
 कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर अशेष ॥ क
 मलापतिना राजमा, कमला तणो विशेष ॥ ३ ॥ यादव
 जंगमे जंगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी
 साहेबि, चद कला विस्तार ॥ ४ ॥
 ढाल ४४ मी ॥ वंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए दे
 शी ॥ चद कला जिम वाधे श्री हरी तेज अपार, का
 रन लोपे सुरेनर मानव एक लिंगार ॥ श्री हरी वंस
 वतस कहस प्रसस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीज
 न दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतल ताइ
 के तेजे तपत दिणद, मेरु ज्युं धीर गंजिरके गुणे गिरु
 उ गोविंद ॥ सिंह अविह सुलिहके सुरमे सुर संनूर,
 इद्रकि प्रनुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दा
 ता दिल दरीयाको नाम धरंत अनत, पिण ए तिनुं
 त्याग तणे मन नेम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधी
 वीरीने पूठ, याचिकने नाकारो न किंधो साहमी ऊठ
 ॥ ३ ॥ सब विधि सुंदर राज करंत कलेस न कोइ,
 नामे सुजामा नामनी गुण अजिरामा जोइ ॥ चंद
 मुखी अदुखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूप
 के उपमनारे सदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणारे घडीयो विधी
 ना घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मध्यो विधी
 फोगट माट ॥ रूप सोहांगणी रांगणी राजा रांग अ
 सेष, पंचेद्रि सुखे माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥

एक दिवस नारायण परखदा पूरी जाम, समुद्रविज
 य राजादिक राजा वेठा ताम ॥ गगनयी उतरतो
 दीठो एक सतेज, अग्नी पुज्यको को कहे सूरज तेज
 सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते यति नेमो आयो जाणयो
 जेवार, तिम ऋषिश्चर दिठो के नारद नाम उदार ॥
 नारायण पगे लाम्यो के जाग्यो चरम अपार, हरी
 ऋषिश्चरने आप पूठे सुख वारवार ॥ ७ ॥ नारद ना
 रायणने पूठे प्रित प्रकार, तुम्ह पटराणि सुणि मे अ
 मरीनु अवतार ॥ सो हु देखण चाहु बधव तुम आदे
 श, कृष्ण कहे धन स्थानक जिहा तुम्हे करो परवेश
 ॥ ८ ॥ मुनि जाणयोथो जामा नामनि लागशे पाय,
 जाविने वस रहि कठु उपजी इहा आय ॥ दैवने दु
 खण दिजे कह्यो नर एक लिंगार, होवणहार होवे स
 हि निश्चे एह विचार ॥ ९ ॥ सतजामा तव आगले
 मांडी दरपण सार, मनगमता रस आण्या तनुपरे
 शिणगार ॥ प्रिति रूपे मोहि सोहि करे हांस विलास,
 आप सराहण करति के धरति अग उलास ॥ १० ॥
 पाठल उजो आइ रह्यो तिहा महा मुनिराय, अंग
 वचुत जटा शिर, रूप विरूप देखाय ॥ मुलकि मुख
 कि सतजामा जाखे मनुसु-ताम ॥ एक रूप ए एक
 ए जोजो विधीको काम ॥ ११ ॥ मेरोतो वदन् चद
 के जाणी सुधारस वास, ए कोइ मुखको राहु चद
 आयो पास ॥ मुह मचकोडी ऋषीनी मुजामा किधी हा

स, चाल्यो तव पिबताय नारद मन हुज उदास ॥
 ॥ १२ ॥ वानरहो अति चचल पिधो मदिरा पान,
 विठुडे चटकायो के लाग्यो नूत अयान ॥ आगे ना
 रदने हरीनारी खिजायो जोइ, खिजावणना फल
 लागे ते सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणदीवाज्या जे
 नर नाचे नाच अपार, वाजा वाजे ते नर केमन ना
 चणहार ॥ अण ठेढ्योहि अनर्थ कारी नारद होय,
 ठेढ्यो क्यु क्यु न करे विमाशी जोय ॥ १४ ॥ ना
 रद चिंते काहु आयो इस घर आज, जे घर मान न
 पाइए के तिहा नही जावानो काज ॥ जइ वेठो कैला
 सगिरे समुदोष प्रणाम, जो ए खुणसु न काढु तो स्यो
 मुऊ नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करावु तो दु
 ख पावे मित्त, जोरे कलंक चढाउ तो ए चिंता चित्त
 ॥ सति शिरोमणी द्वीज तणे बले साची थाय, आगे
 हि मुज वचन न माने को हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिं
 तवता उपजी ए ऋषिने मनमाहि, शोक्य तणो दु ख
 गाढो के नारीने अति प्राही ॥ चमालीसमी ढाल न
 ली-नारद सुविलास, श्रीगुणसागर पुण्य तणे बले
 पूरे आस ॥ १७ ॥

दुहा ॥ दुसमण दाव न चूकही, वैरी न तजे वा
 ण ॥ वैरी वाघथकी बुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥
 सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समजाव ॥ पूरो प
 डवो दोहिलो, जल अध विचे नाव ॥ २ ॥ जामा नमे

झूली घणु, मुऊ सम नारी न कोय ॥ पिण एतो जा
 एयो नही, वडा वडेरी होय ॥ ३ ॥ नारद ए निधे
 धरयो, शोक्य तणो वड साल ॥ नारीने साथे घणु,
 विजो सहु जजाल ॥ ४ ॥

ढाल ४५ मी ॥ राम रसेरे राची घणु ॥ ए देशी ॥
 सोक्य तणो दु ख अति घणो, सोक्य दहे मनमाहिरे
 ॥ सोक्य साल साले खरो, जावधु जीवाहि प्राहिरे ॥
 ॥ सो० ॥ १ ॥ सोकने सुली सारखी, सुलीकाठ ज्यु ए
 कोरे ॥ सोक्य काठ दिसे घणो, विधे हाड अनेकोरे ॥
 ॥ सो० ॥ २ ॥ सोक्यने आग समी कही, सोक्य तणे
 अधिकाइरे ॥ आग वली वुजे सही, सोक्य न सीली था
 इरे ॥ सो० ॥ ३ ॥ सोकने घाव वरावरी, घाव तो
 रुजी जाइरे ॥ सोक्य घाव रुजे नही, खटके कालजा
 माहिरे ॥ सो० ॥ ४ ॥ सोक शस्त्र सरीखो नही, शस्त्र
 एक अग व्यापेरे ॥ सोक्य शस्त्र वहे आकरो, अ
 गोअंगथी कोपेरे ॥ सो० ॥ ५ ॥ सोक्य सोहाग्य वि
 लोकता, सोक्य लहे दुख केतोरे ॥ जीन न एक क
 ही शके, मोटी अबर जेतोरे ॥ सो० ॥ ६ ॥ सोक्य
 प्रियु सम लेखवे, आधा सुख वटाविरे ॥ नाम न जावे
 सोक्यनो, परतक केम सुहावेरे ॥ सो० ॥ ७ ॥ मवा
 ही पाठे वली, आणी दहत अपाररे ॥ जाणी अशा
 ता आकरी कठ वडति विच्यारिरे ॥ सो० ॥ ८ ॥ क
 रजोमी किरतारने, नारी पुकारी जाइरे ॥ नारी मतक

रजे जो करे, मत्तकरे एह सगाइरे ॥ सो० ॥ ९ ॥ वर
 दालीद्र गोरडी, वाऊपणे अचीमानोरे ॥ वर पखणी व
 र टोरडी, पिण नही सोक्यही नामोरे ॥ सो० ॥ १० ॥
 ए दुःख जाणी सोक्यनो, नारद निश्रे किधोरे ॥ जा
 मा उपर सोक्यनो, जाणे के विडो लिधोरे ॥ सो० ॥
 ॥ ११ ॥ अढी द्वीप माहे फिरू, जिहा तिहाथी आणी
 रे ॥ जामा उपर जामाने, थापु हरी पटराणीरे ॥
 सो० ॥ १२ ॥ श्रेणी दोय वइताढ्यनी, सोधि तिहां
 अचीरामोरे ॥ नारी न-निरखी एहवी, जेहवी ए-स
 तजामोरे ॥ सो० ॥ १३ ॥ उत्तर दक्षण चरतमा, फि
 र फिर नारी जोइरे ॥ जामा पग अगुठडे, फहुची न
 शके कोइरे ॥ सो० ॥ १४ ॥ उलजो दिए देवने, रे
 पापीशु किधोरे ॥ रूप हतो जे नारीनो, जामाने संहू दि
 धोरे ॥ सो० ॥ १५ ॥ ह्यारा फोडा पेटना, फूटता न
 देखायरे ॥ इम चितवतो आवीयो, श्री कुडनपुर मा
 ह्यरे ॥ सो० ॥ १६ ॥ कुडन पुरना पाणीथी, उपजे आ
 ठि बालरे ॥ श्वेत सजावे सुदरी, दिसे जाकजमालरे ॥
 सो० ॥ १७ ॥ जीषम जुपनी परखदा, आयो नारद
 चालरे ॥ उचो आसण माडीयो, किधी नक्ति रसाल
 रे ॥ सो० ॥ १८ ॥ एतले आयो रुकमीयो, कुमर कु
 ल शिणगारोरे ॥ रूप कला गुण निरखता, नारद हर
 ख अपारोरे ॥ सो० ॥ १९ ॥ नारद पूवे रायने, ए
 तुह्य कुण कहावेरे ॥ प्राणथकी अति पीयारनो, नद

न नाम धरावेरे ॥ सो० ॥ २० ॥ अतर हराखि पुठि
 यो, एहने वहिनड कोइरे ॥ पुज्य प्रसाद तुम्हारडे,
 वहिन जलेरी होइरे ॥ सो० ॥ २१ ॥ परणावि के कुं
 वारीका, राजा उत्तर दिघोरे ॥ आजलगी तो कुवारी
 का, ऋपिनो कारज सिधोरे ॥ सो० ॥ २२ ॥ ऋपिने
 लागी चटपटी, अतेउरमे आवेरे ॥ रलियायतमे रु
 खमणी, जुवा आणि वटावेरे ॥ सो० ॥ २३ ॥ ऋपि
 जी दिवी आशिसका, कृष्णा घरे पटराणिरे ॥ होजे
 जाग्य विशेषथी, जूठ नहि अम वाणीरे ॥ सो० ॥ २४ ॥
 नाम सुणी हरजी तणो, रुखमणिनो मन राच्योरे ॥
 गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाच्योरे ॥ सो०
 ॥ २५ ॥ पिसतालिसमी ढालमे, नारद वठित फलसेरे ॥
 गुणसागर गुरुइम जणे, रुढे रुढो मिलशेरे ॥ सो० ॥ २६ ॥
 दुहा ॥ रुखमणि जाखे सुण जुवा, किसी कहे ऋ
 षि वात ॥ कवण कृष्ण नरेशरू, कवण पुरी विख्यात
 ॥ १ ॥ कवण सदेसा देसढो, कवण वस विलास ॥ क
 वण ऋद्धि रुपे कवण, कवण तास परीवार ॥ २ ॥ कवण
 नाम माता पिता, कवण शु वधव जोड ॥ वधवने प
 रसादडे, पोहोचें सघला कोरू ॥ ३ ॥ कवण वहिन सु
 हामणि, विक्रम तणो विच्यार ॥ जुवा जणे ऋषिरा
 यजी, कहो सहु विस्तार ॥ ४ ॥ नारद बोल्यो गह ग
 ह्यो, सुणो वडबाइ वात ॥ सजलावुं धुर वेहथी, कृ
 ष्णतणा अवदात ॥ ५ ॥

ढाल ४६ मी ॥ इडर आंवा आंवल्लिरे, इडर
 दारुम द्राख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति न
 लि हो, द्वारीका कृष्ण नरेश ॥ द्वारीकां सह
 मन जावति हो, द्वारीकां पुण्य विशेष हो ॥ हरजी
 द्वारीका केरो राय, जेहना सेवे सुरनर पाय हो ॥ ह० ॥
 ॥ १ ॥ देश सोरठ देशडो हो, देसांनो शिणगार ॥
 रत्न पांचसु राजतो हो, शोना अधीक उदार हो
 ॥ ह० ॥ २ ॥ जल तंबोल रेवत नलो हो, द्वारीकां
 अधीक उदार ॥ वश श्री हरीवशजी हो, सह वसा
 शिरदार हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वय जोवन जेहाने अठे
 हो, वठे जे वर नार ॥ ऋद्धि कुबेर सारखिहो, लाख
 वसे घरवार हो ॥ ह० ॥ ४ ॥ रुप अनूप सुहामणो
 हो, मदन तणो अवतार ॥ दश दशार आदे करी
 हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह० ॥ ५ ॥ माता नामे
 देवकि हो, करमेति कहेवाय ॥ बाप नलो वसुदेवजी
 हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह० ॥ ६ ॥ बधव
 श्री बलदेवजी हो, दिसे केइ हजार ॥ वहिन सुनद्रा
 शोचति हो, अर्जुन तस नरतार हो ॥ ह० ॥ ७ ॥
 विक्रम शक्र तणो वहे हो, जे नहि केहने मान ॥ रिपु
 कुल काल कहावियो हो, गुण मणि केरी खाण हो
 ॥ ह० ॥ ८ ॥ बालपणे उपामीयो हो, गोवरधन गी
 री तेण ॥ दुष्ट व्यतरी पुतना हो, नार करी हरी ते
 ण हो ॥ ह० ॥ ९ ॥ जमना जलमे जीलता हो, ना

ध्यो कालि नाग ॥ गज जेठि मामो हएयो हो, पा
 म्यो जंग सोनाग हो ॥ ह० ॥ १० ॥ सायर तिरे
 सांधीयो हो, सायर पति सुरराज ॥ घन देवजीए सा
 रिया हो, हरिना सघला काज हो ॥ ह० ॥ ११ ॥ लो
 क त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ जगदिश ॥ जेहने
 पासे' गोजता हो, अतिशय वत अधिश ॥ ह० ॥ १२ ॥
 एक जीने केम वरणवु हो, हरीगुण पार न कोय ॥
 सुर गुरु आप वखाणता हो, अत न पामे सोयहो ॥
 ॥ ह० ॥ १३ ॥ नारद वचन सुणिकरी हो, चुवा न
 तिजी दोइ ॥ परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जा
 णे सोइहो ॥ ह० ॥ १४ ॥ चुवा नतिजीसु कहे हो,
 साधि ऋषीनी वणि ॥ किम साची रुख
 मणि कहे हो, हु दिधी वर आपि हो ॥ ह० ॥ १५ ॥
 चुवा कहे इमहि कह्यो हो, अयमतो ऋषिराज ॥ मुज
 सुणता वर पूठियो हो, श्री निषम तुज काज हो ॥ ह० ॥
 ॥ १६ ॥ साधु सीरोमणी गुणनिलो हो, अयमतो अणगा
 र ॥ एह वचन नहि अन्यथा हो, सासो मत कर लिगा
 र हो ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारद अयमतो मुनि हो, सा
 चा दोनु प्रकार ॥ हु वर मागी शिसुपालने हो, ए मु
 ज सोच अपार हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ तुं राजा शिसुपा
 लने हो, दिधी वधव देख्य ॥ मात पीता दिधी नथी
 हो, ए ठनीसु विसेष हो ॥ ह० ॥ १९ ॥ मात पिता
 बेठा थका हो, बधव कियो न होय ॥ एह बाल

माधरी हो, सोच न किजे कोइ हो ॥ ह० ॥ २० ॥
 नुवातणो तो मानजे हो, साचो वचन विलास ॥ क
 री कृष्णनि कामनि हो, पहुचावु सहु आसहो ॥ ह०
 ॥ २१ ॥ मन वचन कामणासुध हो, रुखमणि केरो प्रे
 म ॥ कृष्ण बानी अवरा नराहो, कवण करावण नेम
 हो ॥ ह० ॥ २२ ॥ कल्पतरु तजी केरमेहो, हाथ न धा
 ले कोय ॥ चिंतामणी तजी काकरो हो, लियो न चा
 हे लोय हो ॥ ह० ॥ २३ ॥ गयवर तेजी अति गा
 जता हो, कुण गहाडो लेत ॥ कामधेनु तजी दुजपि
 हो, कुण गाडर चित देतहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ कण नां
 खी कुण कुसका हो, ग्रहे मुढ गिमार ॥ सीतल अमृ
 त जल तजि हो, कोण पिये जल खार हो ॥ ह० ॥
 ॥ २५ ॥ आवो तजी कुण आबलिहो, खाइ मुख
 लोग ॥ हरख तजी हियडा तणो हो, कुणसु बडे लो
 गहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ कृष्णकत तजी रुखमणि हो,
 किम बडे शीसुपाल ॥ कृष्ण कधालो केसरि हो, उ
 सीसुपाल सियालहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ रुखमणि राग
 मजिठ ज्यु हो, कृष्ण साथ सुविलास ॥ नारद उपजो
 जाणके हो, आयो गीरी कैलासहो ॥ ह० ॥ २८ ॥ ढाल
 ए सेतालिसमि हो, प्रिती उपजावण नाम ॥ गुणसागर
 जे साजले हो, सरे अचिंता काम हो ॥ ह० ॥ २९ ॥
 दुहा ॥ रुखमणि रुप अवलोकियो, नख सिख लगी
 अनिशाम ॥ गुपतषणे पट राखियो, प्रगट न सिजे

ध्यो कालि नाग ॥ गज जेठि मामो हएयो हो, पा
 म्यो जग सोजाग हो ॥ ह० ॥ १० ॥ सायर तिरे
 साधीयो हो, सायर पति सुरराज ॥ धन देवजीए सा
 रिया हो, हरिना सघला काज हो ॥ ह० ॥ ११ ॥ ल्रे
 क त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ जगदिश ॥ जेहने
 पासे' गोचता हो, अतिशय वत अधिश ॥ ह० ॥ १२ ॥
 एक जीजे केम वरणवु हो, हरीगुण पार न कोय ॥
 सुर गुरु आप वखाणता हो, अत न पामे सोयहो ॥
 ॥ ह० ॥ १३ ॥ नारद वचन सुणिकरी हो, जुवा न
 तिजी दोइ ॥ परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जा
 णे सोइहो ॥ ह० ॥ १४ ॥ जुवा नतिजीसु कहे हो,
 साचि ऋषीनी वणि ॥ किम साची रुख
 मणि कहे हो, हु दिधी वर आणि हो ॥ ह० ॥ १५ ॥
 जुवा कहे इमहि कह्यो हो, अयमतो ऋषिराज ॥ मुज
 सुणता वर पूढियो हो, श्री निषम तुऊ काज हो ॥ ह० ॥
 ॥ १६ ॥ साधु सीरोमणी गुणनिलो हो, अयमतो अणगा
 र ॥ एह वचन नहि अन्यथा हो, सासो मत कर लिगा
 र हो ॥ ह० ॥ १७ ॥ नारद अयमतो मुनि हो, सा
 चा दोनु प्रकार ॥ हु वर मागी शिसुपालने हो, ए मु
 ऊ सोच अपार हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ तुं राजा शिसुपा
 लने हो, दिधी बधव देख्ये ॥ मात पीता दिधी नथी
 हो, ए बनीसुं विसेष हो ॥ ह० ॥ १९ ॥ मात पिता
 बेठा यका हो, बधव कियो न होय ॥ एह बात सह

सुदर कटिनो जाग विराजे लकथि होलाल ॥ वि० ॥
 मावे करतल माग जलो मध अकथि होलाल ॥ न०
 ॥ सुडा चाच समान मोहावे नासीका होलाल ॥ सो०
 ॥ मणि ठरपण उपमान कपोले जोमिका होलाल ॥
 क० ॥ ४ ॥ काने कुडल जोरु सोहे त्रिणगारथी हो०
 ॥ सो० ॥ रति पतिने घर एहवि न दिठि आकारथी
 होलाल ॥ न० ॥ देखि कृष्ण मुरार यथो मदनाकु
 लो होलाल ॥ थ० ॥ वाध्यो विरह विशेष अलेख उ
 पापलो होलाल ॥ अ० ॥ अहो अहो रूप निहाल च
 तुर गुण धारीका होलाल ॥ च० ॥ ५ ॥ परणिते ए वा
 ल के हजी कुवारिका होलाल ॥ ह० ॥ कवण अठे ए
 जात रहे किहा बली होलाल ॥ र० ॥ नाम कवण कु
 ण तात विचारे महा बलि होलाल ॥ वि० ॥ ६ ॥ क
 हे कहे नारद एह सरुप तु सादरो होलाल ॥ स० ॥
 युक्तु आणि सनेह मथाडस निरादरो होलाल ॥ म०
 ॥ देग कुडलपुर तणि महिमा ठति होलाल ॥ त० ॥
 राय जीपम घरे पटराणि श्रीमति होलाल ॥ प० ॥ ते
 हनि जाइ नामे रुखनाणि गुणवति होलाल ॥ रु० ॥
 रूपे रजा समान कहु उपमा ठति होलाल ॥ क० ॥
 नभियो जोमी अपार जीहा रवि सचरे होलाल ॥ जी०
 ॥ विजी कोइ न नार जे एहनि सरीकरे होलाल ॥ जे०
 ॥ ८ ॥ ए परणी के कुवारि हो नारद ते कही होलाल ॥
 ना० ॥ तुरत कुमारी मूरारि ए साचु सरदे होलाल ॥ ए०

काम ॥ १ ॥ राजसजा आयो धसी, कृष्ण टियो बहु
 मान ॥ कुशल वात पूठि खगी, नयण बतावी सान
 ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक जड, हरी ऋषी वेठा जाम
 ॥ पट पसारि दिखादियो, नारी रूप चित्राम ॥ ३ ॥ रु
 खमणि रूप विलोकता, विस्मय पाम्यो नृप ॥ नारद
 ने पूठे तदा, कवण नारीनु रूप ॥ ४ ॥ आप विद्या
 ता निरमद, नारी निरोपम प्राहि ॥ एहवि हृद न हू
 वसे, कृष्ण चिते मनमाहि ॥ ५ ॥

ढाल ४७ मी ॥ ताहरा मेहला उपर मेह, ज्वुके
 विजलिहो लाल ॥ ज्वुके विजलि ॥ ए देशी ॥ गीरधर
 रुखमणि रूपे, निहाले फिरी फिरी होलाल ॥ निहाले फि
 री फिरी ॥ ए कुण नवलि नार, अपठरा फिन्नरी होला
 ल ॥ अ० ॥ निरखि सुदर अग, वखाणे तेहनो होला
 ल ॥ व० ॥ फूल्या ज्यु सुरग, चरण तल एहना होलाल
 ॥ च० ॥ १ ॥ मस्तक वेणि शाम के जैसि नागणी हो
 लाल ॥ के० ॥ मुख उदय पूनम चद, के रूप सोहाग
 णि होलाल ॥ के० ॥ नव पल्लव केसुवान, अधर रग
 रातडो होलाल ॥ अ० ॥ लटके लोडावे वाहके, मो
 ह्यो जग वापमो होलाल ॥ मो० ॥ २ ॥ कठण कचु
 कि जाग, निलावर खेचियो होलाल ॥ नि० ॥ देइ त
 वु काम, आवि जग वचियो होलाल ॥ आ० ॥ जेहवु
 पोयण पान, उदर तस पातलु होलाल ॥ उ० ॥ ऊल
 के सोवन वान, सोहे जेम माडलु होलाल ॥ सो० ॥ ३ ॥

घृत वरी होलाल ॥ खा० ॥ १४ ॥ अणदिठा अनुरा
 ग ए उपज्यो अति घणो होलाल ॥ ए० ॥ जो जो
 अति सोजाग के जग रुखमणि तणो होलाल ॥ के०
 ॥ चित्ततो पद्मनि पास वस्यो हरी रायनो होलाल ॥
 व० ॥ श्रवण सुणत उल्हास सकल सुखदायनो होला
 ल ॥ स० ॥ १५ ॥ रुखमणी रुखमणी नाम जपे जी
 हा जापथी होलाल ॥ ज० ॥ तन्फडे तनु अकुलाय
 के मिलवा आपथी होलाल ॥ के० ॥ ढाल चालीसने
 सात जली सरसि तिहा होलाल ॥ न० ॥ गुणसागर
 वरबाल वेहु मिलशे इहा होलाल ॥ वे० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एह अवसर शिसुपाल नृप, लग्न गणायो
 जोइ ॥ मनगमता कारज जणी, ढिल करे नही कोइ
 ॥ १ ॥ रुडाने चाहे सहु, ए जगनो व्यवहार ॥ पिण
 रुडे रुमो मिले, इहा नही कोइ विच्यार ॥ २ ॥ रुख
 मणि मनमा खलजली, कहे चुवासु जाय ॥ चदेरी
 पति आवियो, कहावे जादवराय ॥ ३ ॥ मुऊ मन ए
 निश्चे सहि, वरु तो देवमुगर ॥ कनक कुसमनी उप
 मा, मन माहरा मजार ॥ ४ ॥ चुवा जतीजीसु कहे,
 चिंता मतकर लिगार ॥ आपणा इतने आसनो, गरु
 ड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, र
 खे न आवे स्वाम ॥ नयणे आसुडा जरे, मोह त
 णो ए धाम ॥ ६ ॥

रुखमणीना कागलनी ढाल ॥ तट जमनानोरे अति

मांगी नृप शिमुपालने मेए सुणि खरी होलाल॥ मे०॥
 पिण तुम्ह स्या नृपालने योग्य ए कुमरी होलाल॥ यो०
 ॥ ९ ॥ नारद रठ लगाइ गयो तव सचरि होलाल ॥
 ग० ॥ मूरवाणोहरी राय सचेत थयो फिरी होलाल ॥
 स० ॥ एहवे कुमरी लेख लिखी जेज्यो जले होलाल
 ॥ लि० ॥ हेत जणवाण काज हरीने आगले होलाल॥ इ०
 ॥ १० ॥ माधवे सकल उदत चतुरपणे वाचियो हो
 लाल॥ च० ॥ पढ पद अग अनत हरख रोमाचियो
 होलाल॥ ह० ॥ तुम विरहे मुऊ काय रहि ए खलबलि
 होलाल ॥ र० ॥ जेट ढेइ महाराय करो हिवे सिय
 लि होलाल ॥ क० ॥ ११ ॥ वाचि इम विरतत हरी
 मन वेधीयो होलाल ॥ ह० ॥ नेह निवडने तत बेहु
 मन सधीउ होलाल ॥ वे० ॥ हरी लिर्यु सुण बाल,
 करो धिंता किसी होलाल ॥ क० ॥ कर्वा तुम सजा
 ल आवि सहु उलसी होलाल ॥ आ० ॥ १२ ॥ ला
 गी चटपट चित्त चद्रानन उपरे होलाल ॥ च० ॥ जीम
 तनु खुत्यो साल कह्यो इम सूनरे होलाल ॥ क० ॥ हलध
 रे जाणयो एम हरी उदासीयो होलाल ॥ ह० ॥ मरम
 लहि सुख हेत वचन प्रकाशीयो होलाल ॥ व० ॥
 ॥ १३ ॥ रुखमणी लेसु जाव देसु शिसुपालने होला
 ल ॥ दे० ॥ हुधो निसुणि वातके सुख गोपालने होला
 ल ॥ के० ॥ जामा थइ निकाम रुखमणिरूपे
 करी होलाल ॥ रु० ॥ तेल न लागे मीठ खाधो जीणे

एति अवधारजोरे, राची हु तुमचेरे राग ॥ आपण
 डी करिनेरे राखो दिलनरीरे, आपीजे मुऊ एह सो
 हाग ॥ च० ॥ ९ ॥ जाइ रुखनियोरे एहेनी वातमा
 रे, जाणे जेका एह जगदीश ॥ माहरा मनथीरे भेंतो
 एम आदर्घोरे, जीम गौरीधर इश ॥ चद्र० ॥ १० ॥
 अतरजामीरे दुर दु ख त करेरे, जाणिये आपणी ला
 ज ॥ हिचे गोरी किजेरे निज साचापणेरे, किर्यु घणु
 गरीव निवाज ॥ चं० ॥ ११ ॥ कागलीयो तो नीनोरे लि
 खता आसुएरे, तेहजो ज वीटीने दिध ॥ पूरव लिख्यार्थी
 रे सवध जे हुयोरे, वली मुख वचने इम किध ॥ च० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ कुमरी काज समारवा लेख लिखी अनी
 राम ॥ दूत चलाव्यो द्वारीका, करह चढावी ताम ॥ १ ॥

ढाल ४८ मी ॥ करहला तु वेगो चालेरे, तुने
 चारिश अमृतवेल ॥ क० ॥ तु जाजे मारग ठल ॥
 क० ॥ ए आकणी ॥ शुन सुकने प्रेरघो घणु, दूत कु
 शल अनिधान ॥ आयो नगरी द्वारीका हो, देख्यो
 बहु मडाण ॥ क० ॥ १ ॥ अनुक्रमें आयो चालके,
 देवतणे दरवार ॥ प्रतिहार आगे धरीहो, किधोराय
 जूहार ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पूढे कवण तु, कहे विदेशी
 दूत ॥ वेठो नृप आदेशथी हो, चतुराइ अढनूत ॥
 क० ॥ ३ ॥ रामकृष्णने दूतए, वेठा जइ एकत ॥ ले
 ख धरयो आगे मुदा हो, वाचे कृष्ण तुरत ॥ क० ॥
 ॥ ४ ॥ कागल माळ्यो वाचवा, वरणन दिसे काइ ॥

रलीयामणोरे ॥ ए देर्शा ॥ रुखमणीना मनमारे चिना
 वली उपनीरे, हजीय न आव्यो दिनारे नाथ ॥ आ
 तुर थइ वेठीरे लिखवा लेखनेरे, कुपरी मन हुडके अ
 नाथ ॥ १ ॥ चद्रगढ घेरोरे वेलेग पधारजोरे, करो मु
 ज अवलानी मार ॥ हुतो मानी वेठीरे आशा तुम
 उपरेरे, अहो प्रनु प्राणनारे आधार ॥ च० ॥ २ ॥
 नरनिद्रामा सुतारे आज मऊ मर्दारे रे, टिठो काइ
 सुपनोरे रसाल ॥ जाण्यु मे साजलीयोरे आव्यो मुऊ
 परणवारे, साथे लेइ वधवतो परीवार ॥ च० ॥ ३ ॥
 चौरी विचे वेठारे नाथ माहरा एकठारे, हाये बाधी
 सीफलनोरे आचार ॥ आनी नजरे जाखुरे फिरी फि
 री साहिवोरे, परो करी घुघटपट उदार ॥ च० ॥ ४ ॥
 इन सुपनामारे आवे पोहोर माहेरारे, जायठे काइ
 निलवानी आश ॥ पिउजी उवेखिरे अलग्ग केम रहोरे ॥
 नाखी मुने प्रेमनो पास ॥ च० ॥ ५ ॥ आज उदयथी
 रे दिवस सातमेरे, शुक्ल अष्टमी भ्रगुवार ॥ जान लेइ
 जोरे रे दावल राजीयोरे, आवशे काइ नयरी मोजार
 ॥ च० ॥ ६ ॥ मुऊ अतरनीरे साहिव मारा जाणजोरे,
 तुऊथी काइ बाध्या ए प्राण ॥ तुम नवि आव्यारे मुज
 मरणो सहिरें, नावे एम जाणमजाण ॥ च० ॥ ७ ॥
 करुणा किजेरे हिवे मूऊ वाल्हारे, हे जे धरी लिजेरे
 हाथ ॥ ते आपवसुरे किधो जग जोवतारे, वसनहि
 तु केहनेरे नाथ ॥ च० ॥ ८ ॥ आसना अवलबनरे

हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर दिध ॥ क० ॥
 ॥ १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष तणो ए धर्म
 ॥ एम विमासी पूढीयो हो, मिलवा केरो मर्म ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यानमे, कामदेवनो ठाम ॥
 वृद्ध अशोक सुहामणो हो, उपर ध्वज अनीराम
 ॥ क० ॥ १८ ॥ ए सहि नाणी कर धरीने, गमन जा
 एवा काम ॥ वेग करी पाउ धारजो हो, गुप्तपणे सु
 ण स्वाम ॥ क० ॥ १९ ॥ चतुर शिरोमणी रुखमणि,
 पूजानो मिस ठाण ॥ ओहि थानक चली आवशे हो,
 चोरी सकलके काण ॥ क० ॥ २० ॥ जो प्रजु वयणे
 निरखशे हो, तो होसे सुख प्रित ॥ अण दिठी आ
 तुर थइ हो, करसे अति विप्रित ॥ क० ॥ २१ ॥ ह
 मै जणावी वात ए, कारज तो प्रजु हाथ ॥ देइ दा
 न नवि सरजे हो, दूत तदा जगनाथ ॥ क० ॥ २२ ॥
 दूत चलयो ते वेगसु हो, आयो रुखमणी पास ॥ का
 ज सरयो दु ख विसरयो हो, उपज्यो अति उल्लास
 ॥ क० ॥ २३ ॥ हरजी हलधर हरखसुरे, जोतरीया रथ
 टोय ॥ शस्त्रतणो करी सग्रहो हो, सधनबध अति
 होय ॥ क० ॥ २४ ॥ नामा जय नारे धरीरे, गुप्तप
 णे निसी प्राही ॥ चाली आया उतावला हो, कुमन
 पुर वनमाहि ॥ क० ॥ २५ ॥ रथ गोमी हय वार्धीया,
 जोवे रुखमणी वाट ॥ फूल्या अगन मावहि हो, र
 चन करे उचाट ॥ क० ॥ २६ ॥ ए ढाल आठेचालीस

जिहा तिहा टवका आसुडा तणा हो, ममऊयो मनम
 माहि ॥ क० ॥ ५ ॥ आसुमा आटे न लिखी सकिरे,
 माहरे विरहे एम ॥ हु न गया ए चामनि हो, दिवस
 निगमशे केम ॥ क० ॥ ६ ॥ मुख बचने कहे दूतजी,
 साजल देव विच्यार ॥ श्री कुडनपुर राजीयो हो, जी
 पम नाम उदार ॥ क० ॥ ७ ॥ पटराणी तस श्रीमतिहो,
 तस उदरे उतपन्न ॥ सर्व सुलक्षण गुणवति हो, रुख
 मणि कुमरी रतन ॥ क० ॥ ८ ॥ सुरलोका सोधी घणु, मा
 एस लोक मजार ॥ पाताला पामि नहि हो, रुखम
 णिनि अनुहार ॥ क० ॥ ९ ॥ मागी नृप शिसुपालने,
 बधव लहि बहु मान ॥ एतले नारद जाखियो हो,
 वरतो श्री जगवान ॥ क० ॥ १० ॥ माघ शुक्ल अ
 ष्टमि दिने, लग्न लियो राजान ॥ कातो थाउं प्रचु वा
 हरू हो, कातो तुटे प्राण ॥ क० ॥ ११ ॥ प्रचुने उ
 पनि सोचना, ए मोटो जजाल ॥ न गया मरणो रु
 खमणि, गया मरे सीसुपाल ॥ क० ॥ १२ ॥ मार्ग
 न मेले मानविरे, ना नाहीए न्याय ॥ नारी प्रतिज्ञा
 नवि तजेहो, कहो किसी परे थाय ॥ क० ॥ १३ ॥
 कुशल कहे तुम्हाहि अबो, अतरजामी आप ॥ सोइ
 करो जीम एहि मिटेहो, रुखमणीनो सताप ॥ क० ॥ १४ ॥
 सिखे ते तुमहि थकीरे, तुम्ह किहा शिखण जाउ ॥
 सोच्यो सल बेसे नहीहो, एम मतो ठहराउ ॥ क० ॥
 ॥ १५ ॥ हलधरने हरी पूगीयोरि, दुत कहो शु किध ॥

म हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ६ ॥ एम कही ऋषी पागख्यो
 रंगमाहि करी जग हो ॥ ना० ॥ जगत माहि अति पर
 गटो, ए कु सेहेजो अग हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥
 शिमुपाल हिवे जाननी, करे सजाइ जोर हो ॥ ना० ॥
 बद् टकोरा गडगडे, गुहिर निसाणे घोर हो ॥ ना० ॥
 च० ॥ ८ ॥ साथे सबला राजवी, जोर जुगति जूजा
 र हो ॥ ना० ॥ ह्यगय रथ पयदल तणा, कहेतां ना
 वे पार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ९ ॥ को कवाण आगे कि
 या, तोफारो नहि हो पार ॥ ना० ॥ जूजाला साथेलिया,
 साथीडा सिरदार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १० ॥ सलकर
 मिलीउ सामटु, पचहोणी परमाण हो ॥ ना० ॥ ह्य
 दल पयदल गज घणा, मिलीया आप समान हो ॥ ना०
 ॥ च० ॥ ११ ॥ सकल सनाह सजी करी, ह्यगय र
 थ परीवार हो ॥ ना० ॥ राजा रुमे रावणे, आयो हो
 इ हुमीयार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १२ ॥ कुमनपुर विं
 टी रह्यो, तारा जिम गिरि मेर हो ॥ ना० ॥ अहि जिम
 चदन तरुवरा, विंटाणा चौंफेर हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥
 राजाना बेसी गया, दरवाजे दरवान हो ॥ ना० ॥ आवाग
 मन न होइ सके, कुमरी दु ख असमान हो ॥ ना०
 ॥ च० ॥ १४ ॥ नुवा नलीपरे मेलवे, पूजा तणा प्र
 कार हो ॥ ना० ॥ मगल गीत सुउदसु वाजे नाद
 अपार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाच सात साहे
 लीया, अलबेलीया उदार हो ॥ ना० ॥ चाली जाये

मी, हरी आयो त्रिय हेत ॥ गुणसागर गुरु इम ज
णे हो, शुभ वगीत फल देत ॥ क० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ नारद नाम प्रणामर्था, नारद सोचन को
इ ॥ साजो जाजन फोडके, फेर घडतो जोइ ॥ १ ॥
अणमिलते मेलो करे, मिलते करे विकार ॥ ज्ञान विना
नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ २ ॥ रुखमणी म
न हरी आणीयो, हरी मन रुखमणी नार ॥ चदेरी
पतिसु जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल ४९ मी ॥ नणदलनी देगी ॥ हो नारद, च
देरी पतिसु कहे, में सुणयो तुमरो विवाह हो ॥ ना० ॥
घर घर रग वधामणा, तुज मन अर्धाक उठाह हो
॥ ना० ॥ च० ॥ १ ॥ कलहकारी जनमारणो, मन वच
न योग समपाप हो ॥ ना० ॥ साधा जोडा मेलवे, करे
अधिक सताप हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २ ॥ हसी बो
ल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ॥ ना० ॥
रग व्याह हम ए हुसे, बिजा व्याह सोवाद हो ॥ ना०
॥ च० ॥ ३ ॥ कवणपुरी किणकी सुता, किस्वो कुमरी
को रूप हो ॥ ना० ॥ कुम्नपुर जीषम सुता, रुखमणी
रूप अनूप हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ कवण लग्न ते
व्याहको, लग्न देखायो राय हो ॥ ना० ॥ ऋषि जा
खे दूषण घणा, इहा उपद्रव थाय हो ॥ ना० ॥ च०
॥ ५ ॥ हम निसप्रही दरवेसनी, नही ग्रह चित्या काम हो
॥ ना० ॥ प्रिती जणी तुमसु कहं, हुसीयारीको का

ख हो ॥ ना० ॥ एकाते आराधता, आपे देव विशेष
 हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २६ ॥ जा पुत्रि उतावलि, पूरे
 मनोरथ कोम हो ॥ ना० ॥ सेव घणि नीज स्वामीनि,
 करजे बे करजोड हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २७ ॥ स्वामी
 सेव्यने पाइए, अणसेव्यो अति दूर हो ॥ ना० ॥ एह
 सिख मनमे धरी, रहेजे स्वामी हजूर हो ॥ ना० ॥
 च० ॥ २८ ॥ एम सुणि वनमे चलि, नय अति हि
 यना मजार हो ॥ ना० ॥ युग्म अष्ट जिम हरणली,
 जोधे दृष्टि पसार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २९ ॥ दृढ था
 ने आवि साते, तरु अतर नरी नयण हो ॥ ना० ॥
 निरखता प्रनु पाइयो, अधीक महा सुख चयन हो
 ॥ ना० ॥ च० ॥ ३० ॥ ए गुणपचासमि ढालमे, मि
 लियो तंतोतंत हो ॥ ना० ॥ गुणसागर कुण लिखी शके,
 हरिके चरीत अनत हो ॥ ना० ॥ च० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ रुखमणि वचन प्रकाशियो, हो त्रिचुवनना
 नाथ ॥ अतरजामी आसना, आइ ग्रहो मुज हाथ
 ॥ १ ॥ एटले हरी परगट थयो, श्री बलदेव नरेस ॥
 लळा पामी रुखमणी, मनमा हरख विशेष ॥ २ ॥
 बाहे धरी सा सुदरी, वेसारी रथ माहि ॥ आपजणा
 वण कारणे, इम बोल्यो हरी प्राहि ॥ ३ ॥

ढाल ५० मी ॥ कढखानि देशी ॥ सुण हो शिसु
 पाल नृप जीषम सुत रुखमीया, जाणवा तुमने सु
 णावा ॥ द्वारिकानाथ श्री कृष्ण हलधर हमे, रुखम

रंगमें, रोकानी दरवार हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १६ ॥
 चाकर ठाकर विनवे, कुमरी वनमे जाय हो ॥ ना० ॥ जा
 ए न पावे इम कहे, चदेरीनो राय हो ॥ ना० ॥ च०
 ॥ १७ ॥ जुवा जणे जाइ सुणो, कहे रायने जाय
 हो ॥ ना० ॥ तुम्ह तनमन सुख कारणे, एह अजि
 ग्रह थाय हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १८ ॥ चदेरी पति व
 रणो, जइ देसे तु देव हो ॥ ना० ॥ लग्न तणे दिन
 आयके, करस्यु थारी सेव हो ॥ ना० ॥ च० ॥ १९ ॥
 कामदेव मुरति तणी, पूजा करवा जाय हो ॥ ना० ॥
 अणपूज्या नही परणवो, जइ सुणावो राय हो ॥ ना०
 ॥ च० ॥ २० ॥ कपटतणो बल अति घणो, कपटे व
 छीत थायहो ॥ ना० ॥ विष्णुरूप कौलिक सुत, राय कुम
 री वरे जाय हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥ एह वचने रा
 जा कह्यो, काम करो ततकाल हो ॥ ना० ॥ प्रबल जो
 र जावी तणो, किस्यु करे सिसुपाल हो ॥ ना० ॥ च०
 ॥ २२ ॥ नृप आदेस लेइ करि, सेवक लाग्या लार
 हो ॥ ना० ॥ वनद्वारे उजा करी, बाइ कहे सुविच्या
 र हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ २३ ॥ आपण सह्य इहां रहो,
 कुमरी वनमें जाय हो ॥ ना० ॥ एकाकी निज स्वाम
 नी, सेव करे मनमाय हो ॥ ना० ॥ च० ॥ २४ ॥ पहे
 लो वर एह वातनो, बिजो पिउनो मान हो ॥ ना० ॥
 त्रिजो सोकन परजवे ॥ चौथो पुत्र प्रधान हो ॥ ना०
 ॥ च० ॥ २५ ॥ नारि मनना वालदा, एच्यारे वर दे

॥ सु० ॥ ९ ॥ उदधी किलोल दल पसरीयो चिहु दि
 से, रे रे गोपाल किहा जाय जाग्यो ॥ नूप गिमुपाल
 कुवर वर रुखमीयो, इम कहेतो प्रनु पुठे लाग्यो ॥
 सु० ॥ १० ॥ आवता दल हरि हलधरे रोकिया,
 नदिउना पुर जिम उदधी रोके ॥ फोज बाधी गह्या
 सुनट अति गहगह्या, पिण कहो सिहने कुण रोके ॥
 सु० ॥ ११ ॥ देखि दल पूर घटिनूर रुखमणि हुइ, आर
 ति उपजि एह अपारो ॥ एह घणो रावणो अधीक
 विहामणो, एह तो बधव दोइ सारो ॥ सु० ॥ १२ ॥
 कठिन घन लोह तन लोक माहि जणयो, पिण बहु
 मिले जो लीहाला ॥ गालवे लोहने एह अचरिज वडो, एम
 जाणी थरहरी एहि बाला ॥ सु० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोले हम
 कोण तोले अठे, घणी थोना तणो स्यो पयारो ॥ रातनो
 सचियो अति घन माचियो, उगंते सूर नासे अधा
 रो ॥ सु० ॥ १४ ॥ तोइ पिण शक जाइ नहि रुखम
 णी मुद्रहि वज्र हरी तामचूरे ॥ करी अति चून पडी
 पुन चिपाटि करी, साथीयो हाथ माहेज पूरे ॥ सु० ॥ १५ ॥
 एक बाणे करी विंधीया तव हरी, ताड साते त्रियाने
 दिखावे ॥ तव अति खलजलि एह अतुलि बलि, मा
 रसे साहि मुऊ बाप जाइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्ण बो
 ल्यो हसी एह चिंता कीसी, ताहरो बाप जाइ नवि
 मारू ॥ अवगुण सा सहु अवर केति कहू, वूरो न म
 नावसु देवि थारू ॥ सु० ॥ १७ ॥ हलधर इम क

णि कुवरि लेह सिधावा ॥ सु० ॥ १ ॥ अवर जे सु
 नट अति विकट बल धारके, जोध जे जगतमे रह
 तदावे ॥ आव्रियो धाव्रियो वेग करि पागले, माग
 धारि हम साध्य आवे ॥ सु० ॥ २ ॥ एम सुणता तिसु
 पाल नृप परजल्यो, अग्नी जाणे घृत होम पायो ॥ सेग
 दल सवल अतिप्रवल प्रतापसु, आप बल प्रवल लेह
 धायो ॥ सु० ॥ ३ ॥ निपम राय अति लाज पाम्यो घ
 णि, रुखभियो कुवर जिम काल कोप्यो ॥ उठियो व
 समसी धरणि तव कसमसी, दसमसी आगले आणि
 रोप्यो ॥ सु० ॥ ४ ॥ गडगडे गयवर हिंसता हयवर,
 वीर रथ गौज अधकेरो पावे ॥ पायक लायक काज स
 हायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ढा
 ल नेजा वरा फरहरे फरहरा, वगतर तोफ तब तेज
 ऊलके ॥ आयुधकारका जे ठत्रिस स्वयवरा, ऊलहले
 खरुग अतिसय चलके ॥ सु० ॥ ६ ॥ ढोल निसाण स
 रणाइ वर काहला, ऊऊको राग सिंधु सुणावे, काय
 र थरहरे जीव-आशा धरे, परहरी स्वामि परहापुलावे
 ॥ सु० ॥ ७ ॥ रेणु बढी घणी गयण रवि-वाइयो,
 आपणो पर नवि जाय जाण्यो ॥ देव देवी घणी च
 उसठ जोगणी ॥ अबरे, आप सुख आज मान्यो ॥
 ॥ सु० ॥ ८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रगमे, अग
 मे आनद अधीक पावे ॥ खिणक सिसुपाल नृप खि
 णक हरी हलधरा, बाप म्हारा-इम-काहि सुणावे ॥

दैन नगवानजी, साधुपरे त्राण ए व्रीदलिको ॥ श्री
गुणसागर अधीक उजागर, नागर नवलजस सुजस
टिको ॥ सु० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रुखमणी रिंजी अति घणी, देखी जेठ प
ति काम ॥ एह अदनुत पराक्रमी, अवर पुरुष रच्यो
नाम ॥ १ ॥ करजोमीने वितवे, पिउजी केरे पसाथ ॥
बधव वत्रज बोडीए, माहरे मन ए जाय ॥ २ ॥ बं
धन ठोरुघो हाथसु, कृपा करी जगनाथ ॥ तुजन पणे
अति राखज्यो, प्रिती जाव हम साथ ॥ ३ ॥

ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ ए देशी ॥ य
दुपति जीत्योरे, जीत्यो जीत्यो श्री वसुडेव कुमार ॥
॥ यदु० ॥ जीत्यो जीत्यो रुखमणीनो चरतार ॥ य० ॥
जीत्यो जीत्यो बाइ सुजद्रानो वीर ॥ य० ॥ जीत्यो जी
त्यो साहसवत सवीर ॥ य० ॥ जयजयकार करे घ
णो, आकाशे सुरनार ॥ देइ ददामा जीतनाहो, चा
ल्यो देवमुरार ॥ य० ॥ १ ॥ श्रीगीरनारे आधीना,
मनने अति उवाह ॥ आरण कारण साचविचो हो,
कियो रुखमणी व्याह ॥ य० ॥ २ ॥ व्याह हुज जेह
यानके, रुखमणी वन तस नाम ॥ लगति मोटा मा
णसा हो, सबहीपरे अजीराम ॥ य० ॥ ३ ॥ खबर हुइ
द्वारानति, परणी आशे नाथ ॥ सजन सुजटजन सामटा
हो, आइ गिल्पा सहु साज ॥ य० ॥ ४ ॥ नगरीनी शोना
करी, आवी जात अनूप ॥ घरघर वार वधामणा

हे कुण मृऊ बल सहे, पिण सिसुपाल नृप माग्घो न जा
 य ॥ अवरने आगसु रग रणमे रमु, अति दमु सा
 हमो तु जेह थाय ॥ सु० ॥ १८ ॥ कहे हरी केसरी
 खात्र उचो करी, कुण सिसुपाल सियाल साचो ॥ र
 ण माहि रोळवु पवन तृण डोलवुं, तो जाणजो पित्तु
 दुव काचो ॥ सु० ॥ १९ ॥ इम रुखमणि मूकि वेरी
 नणि आविया, दोइ वधव रण माहि सनूरा ॥ कृष्ण
 सिसुपाल असराल क्रोधे चढ्या, नटनिढ्या आप आप
 माहि सूरा ॥ सु० ॥ २० ॥ श्री बलदेव ततखिण रण रोसे
 चढ्यो, वरु वडा राय जाइ पुलाणा, सिंहकि दोरु गजरा
 ज गिर गिर पने, आकतां प्राण ठेके खलाणा ॥ सु० ॥
 ॥ २१ ॥ सेन दल नग रणतरग देखि करी, रुखमीये ब
 लनद्रप्रति वाण साध्यो ॥ वज्र काया नणि बाण लाग्यो
 नहि, नागपासे करी सोइ बाध्यो ॥ सु० ॥ २२ ॥ न
 खशीखे जखडीयो गाढो करी, पकडियो, अकडीयो अंग
 मिट गयो दावो ॥ आणि रथमे धरयो वयण इम उचरयो,
 कुल वहु जाइ माखि उभावो ॥ सु० ॥ २३ ॥ कृष्ण सि
 सुपाल चिरकाल रण साचव्यो, अस्त्र शस्त्राकरी माहो
 माहि ॥ जितीयो इस-जगदिस-जग जल्पना, पुण्य प्र
 सादे जय हुवो प्राही ॥ सु० ॥ २४ ॥ दोय वरु विर
 अति धीर गनिररण करी, रुखमणि तणे पास आया
 ॥ ढाल करुखातनी सुणत सुहामणी, तिस अरु वि
 समी हरष पाया ॥ सु० ॥ २५ ॥ पिसुन मद मान म

नव खणो, अधीक अनोपल सार ॥ रुखमणिने हरि
 आपियो हो, अन धल नरित अपार ॥ य० ॥ १७ ॥
 हय गय रथ वर वाहाणि, आयुध विविध प्रकार ॥ ह
 रि आनुपल अति घणा हो, ते घर नाहि उदार ॥
 य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस प
 रीवार ॥ रगमी मयाथी सह्यु हुवे हो, ए सुधो व्यवहारे
 ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने नोजनपणे आसन सय
 न विचार ॥ हसन विलोकन नांखणो हो, रुखमणिनो
 अवीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसाने वाचाये करी, का
 या केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री
 हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणाश्रेणि जवु
 पुरी, जावु पुत्रि जाण ॥ जवुवति रुपि वाक्यथि हो,
 आशि श्री जगवान ॥ य० ॥ २२ ॥ ततक्षण रोमज
 सजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुवरी
 हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन
 रायजी, सोरठ केरो हस ॥ सुस्तिमा पुत्रि वरि हो, वधव
 हणी जगदिश ॥ य० ॥ २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामी
 जी, मेरु जून वड राय ॥ पुत्रि गौरी गुणनरी हो, गी
 रदरने मुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो माभोज
 लो, हिरण्य नाभ नरेश ॥ पुत्रि लोपद्मावति हो, स्वय
 वर वरीय विशेष ॥ य० ॥ २६ ॥ देश महा गधारजी,
 क्षत्रगीरी पति तास ॥ पुत्र मागी पुत्रि वरी हो, गधा
 री सोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटशागणि, ए

हो, हरख्या यादव जूप ॥ य० ॥ ५ ॥ कोइ हटाले
 उगडे, कोइ आगणे धरपार ॥ गोखे चमी कोइ गोर
 मीहो, को चातुरी चौवार ॥ य० ॥ ६ ॥ को गलीए जो
 चोतरे, चाचर उनी कोइ ॥ लाजन गुसरा जेठकिहो,
 कौतुक मीठो होइ ॥ य० ॥ ७ ॥ विंद विटणी देख
 वा, लालच लागी नार ॥ होइ रही बेफूमताहो, तन
 मन सुधन विसार ॥ य० ॥ ८ ॥ अचरैज किधा ए
 तला, चुनावध उदार ॥ केडे पेहेरयो कटीमेखलाहो,
 माथे करत सिणगार ॥ य० ॥ ९ ॥ कुकुम लाया लोच
 ना, काजल दियो कपोल ॥ उघाडे माथे फिरेहो, नि
 र्लङ्ग थइ निटोल ॥ य० ॥ १० ॥ पुत परायो लेचली,
 आपरो वतो मेल ॥ अलजा लगे आयी धसेहो, एक
 एकने टेल ॥ य० ॥ ११ ॥ कोइ वधावे फूलडे, कोइ
 हिरालाल, मणी माणिकने मोतीया हो, अरुत धान
 रसाल ॥ य० ॥ १२ ॥ कोइ वदे वरकामनी हो, धन
 रुखमणी अवतार ॥ सब विव सुदर सामलो हो, जे
 ह पाम्यो जरतार ॥ य० ॥ १३ ॥ अवर अनेरी जा
 मनि हो, जाखे वारवार ॥ वडवखता श्री कृष्णजी हो,
 पामि नार उदार ॥ य० ॥ १४ ॥ विविध विनोद वि
 चारनि, वात सुणता स्वाणी ॥ सोहासण कृत मगले
 हो, मदिर आया ताम ॥ १५ ॥ धन्य धन्य माता दे
 वकि, वर बहु लाग्या पाय ॥ दिये आसिस सहामणि
 हो, फूलि अग न माय ॥ य० ॥ १६ ॥ मदिर उंचो

नव खणो, अधीक अनोपम सार ॥ रुखमणिने हरि
 आपियो हो, अन धन नरित अपार ॥ य० ॥ १७ ॥
 ह्य गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार ॥ ह
 रि आनुपम अति घणा हो, ते घर नाहि उदार ॥
 य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस प
 रीगर ॥ स्वामी मयाथी सह्य हुवे हो, ए सुधो व्यवहारि
 ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने नोजनपणे आसन सय
 न विचार ॥ हसन विलोकन नांखणो हो, रुखमणिनो
 अवीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसाने वाचाये करी, का
 या केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री
 हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणश्रेणि जवु
 पुरी, जावु पुत्रि जाण ॥ जवुवति रुपि वाक्यथि हो,
 आणि श्री नगवान ॥ य० ॥ २२ ॥ ततक्षण रोमज
 सजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुवरी
 हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन
 रायजी, सोरठ केरो इसासुसिमा पुत्रि वरि हो, वधव
 हणी जगदिश ॥ य० ॥ २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामी
 जी, नेरु चूत्र वढ राय ॥ पुत्रि गौरी गुणजरी हो, गी
 रदरने सुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो मामोज
 लो, दिरण्य नाज नरेशापुत्रि लोपद्यावति हो, स्वध
 वर वरीय विशेष ॥ य० ॥ २६ ॥ देश महा गधारजी,
 क्षत्रीरी पति तास ॥ पुत्र मारी पुत्रि वरी हो, गधा
 री सोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटशमणि, ए

आठे समतोल ॥ ए आठे मित्र नामनि हो, प आठे
निरमोल ॥ च० ॥ २८ ॥ ए ए ज्ञानमी डालमे, वरि
त फलि जगान्न ॥ श्री गुणसागर सृजिजी हो, पुण्य क
रो निजदिश ॥ च० ॥ २९ ॥

चोपाइ ॥ खड खड रस ठे नवनवा, मुणना मीठा
साकर जेवा ॥ श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, बीजो
खड ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति द्विती खडसमाप्त ॥

॥ श्री हरी वंस ढाळसागर प्रववे त्रीतीय खंड प्रारभ ॥

दुहा ॥ अरि हणवे अरिहतजी, तात करी परणाम
॥ अत्र त्रिजा अधीकारनो, उद्यम करु सकाम ॥ १ ॥
रुखमणी रागे राचियो, सुख माने हरी राय ॥ तिम
तिम नामा आवटे, ते दु ख कह्यो न जाय ॥ २ ॥
नारद आवि बोलियो, नामामु ततखेव ॥ वाळो मुख
किया तणो, ए फल भोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिम
सा गाढि बळे, आरति घणि मन माहि ॥ सोक्य सा
ळ हियडे धळ्यो, ते उत्तरे नहि प्राहि ॥ ४ ॥ उत्तम
उत्तमता जजे, न करे ताणो ताण ॥ रुखमणी हरिसु
विनये, नामा आरति जाण ॥ ५ ॥

ढाल ५२ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहिब मोरा ॥ ए
देशी ॥ एक दिवस रुखमणी हरि साथे, किधी ए अ
रदासोरे ॥ नामा घर प्रीतम पाव धारो, सहुने पिउ
नि आसोरे ॥ ए० ॥ १ ॥ कृष्ण कहे ए सा अहकार

णि, तेहथी न लहे मानोरे ॥ ते सोनो सुं कखो लुं
 दरी, जेहथी त्रुटे कानोरे ॥ ए० ॥ २ ॥ रुखमणी वो
 ले अमृत तोले, यद्यपी जो त्रुटे कानोरे ॥ तोपिण रौ
 नोकोई न नाखे, ए प्रगट उखाणोरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ आ
 पण आदरीयु केम अलगु, किधु जाइ कतोरे ॥ दिष
 अने विषधर दुखदाइ, शकर संग वसतोरे ॥ ए० ॥
 जोगवणो जग खाटु खारु, जेतो लाग्यु लारोरे ॥ उ
 भा आगे नहि नहि नाखे, शिव साता दातारोरे ॥
 ॥ ए० ॥ ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो, नोतन नारी
 निरखिरे ॥ जोरे पुरातनने परहरीये तो ए नहि घर
 सरखीरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आग यकि अधिको अति उ
 न्हो नारीनो निसासोरे ॥ नाह नीपटनी तेह पण त्रि
 य, तजवी नही नीरासोरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ वेगे सिवावो
 वार म लावो, पोखो परीघल प्रेमोरे ॥ जो न
 गया तो तुम्हसु बोलण, आज थकी मुज ने
 मोरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ रुखमणी वचने राय विच्यारी,
 वात सकलहि वारुरे ॥ निर नरेसरे न्याय क
 हाणा, फेरणहारा सारुरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ रुखमणि
 मुखनो सुरजी सुगधो, लेइ तबोल नरिंदोरे ॥ नामा
 नामनिने घरआयो, नामा मन आणदोरे ॥ ए० ॥
 ॥ १० ॥ वक्र वचनसु नामा नाखे, ए तुम्ह गेह न
 होवेरे ॥ नूलें पधारया प्रथविपति तुम्हे, रुखमणि
 मारग जोवेरे ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे हो उ घर नोहि, पि

ए आयो सो आयोरे ॥ नर्मसु गर्म वघन केलवता,
 चाना अति सुख पायोरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे
 जुळ निद्रा आवे, एतो मे धूर जाणारे ॥ सोवा कारण
 हम घर आया, उ नव पराणत राणारे ॥ ए० ॥ १३ ॥
 जिम जिम आवो नीत नीत आवो, सुख निद्रा प्रचु
 किजेरे ॥ हमे पुरातन उतो नोनन, नव नव लाहा
 टिजेरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ कृष्ण कहेरे तु इम शुं बोले,
 नवि घणेरी नारारे ॥ तु महारे धुरकी पटराणी, आ
 दि लगे सुविचारीरे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कपट निदमे
 प्रचुजी पोळ्यो, अचल गाठ निहाळीरे ॥ खोलीलियो
 तबोल तेवारे, भ्रमे जुली सा बोलीरे ॥ ए० ॥ १६ ॥ उर
 सीए मूकी चदन साथे, घसी लियो सतनामारे ॥ क
 रे विलेपन वदन शरीरे, वशीकरण अजीरामारे ॥ ए०
 ॥ १७ ॥ एतले जागी उठ्या जगपति, रे जोली जर
 माणीरे ॥ रुखमणी मुख तबोल शरीरे, तु दिसे लप
 टाणीरे ॥ ए० ॥ १८ ॥ हांसो कृष्ण तणो न समावे,
 हाथे वजावे तालीरे ॥ होइ खिसाणी हरी पटराणी,
 बोले उत्तर वालीरे ॥ ए० ॥ १९ ॥ थारो सेहज न ग
 योरे गोवालीया, स्यु वक्राय कहायोरे ॥ श्रीती पनो
 ती काजे आज, ए जाणी बुजी तनलायोरे ॥ ए० ॥
 ॥ २० ॥ कृष्ण कहे हा तो तुं साची, पुवरंपी जागा
 जाखेरे ॥ रुखमणी मिलवा तणो उमाह्यो, पिउमा जो
 दिन दाखेरे ॥ ए० ॥ २१ ॥ नूप नणे हू तुळ न पति

ज्यु, के साची के जुठीरे ॥ जुठ कहे जुठाना जाया, जाणी
 के अधिको उठीरे ॥ ए० ॥ २० ॥ सुलकत सुलकत ताम सु
 रारी, माननीनु मन मोहेरे ॥ ए नव हीथि रीस करे
 वि, सुदरी शु सति सोहेरे ॥ ए० ॥ २३ ॥ सुस करे
 जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे ॥ खिरनिर जिम
 मांहोमाहे, मिलस्या बहेनड दोइरे ॥ ए० ॥ २४ ॥ तो
 हु तऊने रुखमणी मेलु, जामा कहे ए नीकीरे ॥ खिसा
 णी पिण हुइ अयाणी, न पिठांणी प्रचुकीकिरे ॥
 ॥ ए० ॥ २५ ॥ कृष्ण देव रुखमणी घर आया, जा
 मा पाय लगावारे ॥ कुण उपाय करे करमे तो, लागो
 चाय सुणावारे ॥ ए० ॥ २६ ॥ स्वेत साटीकारक का
 थली, जल जुषण पहिरायोरे ॥ वृद्ध अशोक तले
 जाना वन, पद्मासन पूरायोरे ॥ ए० ॥ २७ ॥ जामा
 शु जाखे जल जावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे ॥
 क्रपानाथ क्रपा जो करगे, दूधे साकर जलसेरे ॥ ए०
 ॥ २८ ॥ आप गुल्ममें गुप्तपणे रही, कौतुक जोत्रे
 जाओरे ॥ सतजामा एकाकी रामा, वनमें आवि तामोरे
 ॥ ए० ॥ २९ ॥ पद्ममाला उपर सा बइठी, दिठी रूप
 रत्नालीरे ॥ सतजामा जाणी वनदेवी, लागी तनमन
 तालीरे ॥ ए० ॥ ३० ॥ के अमरी के किन्नरी सारदा,
 रोहीणी रति जगजाचीरे ॥ कमला नाग तणी वरकु
 मरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ कोइ हो
 ज्यो ए देवि परतद्ध, पुण्य जोगे प्रगटाणीरे ॥ से

वा फल देसे इम जांणी, लावी पाती पाणीरे ॥
 ॥ ए० ॥ ॥ ३२ ॥ पूजी प्रणमीने वर मागे, माधव
 मो वश आवेरे ॥ मात मया करशो परकिजे, रुखम
 णीना मन जावेरे ॥ ए० ॥ ३३ ॥ नाथ्या बेलतणी
 परे चाल्यो, हरी आवे मुऊ पासेरे, तो तुम सेवा
 जाणु साची, उनथी अलंगो नासेरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥
 एम कही पगे लागी जामा, करती लालच लखोरे
 ॥ अरथी दोस न, देखे कोइ, सहुने सुख अजि ला
 खोरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥ ए वावतमी ढाले चाख्यो, पगे
 लागण अधिकारोरे ॥ गुणसागर कहे माही सोहागण,
 जेहने वश नरथारोरे ॥ ॥ ए० ॥ ३६ ॥

दुहा ॥ जामा नरमपडी घणु, जाखे वारवार ॥
 देवि वरदे वेगशु, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आ
 ख नरे आतुर थई, देवी न आपे वाच ॥ एतले हरी
 परगट थयो, माग माग वर साच ॥ २ ॥

ढाल ५३ मी ॥ सीयल सुर तरुवर सेविए ॥ ए
 देशी ॥ माग्य माग्य वर माननी, अवर न एहवी दे
 वि हो ॥ जो चाहे सुख सपदा, सुधी एहने सेवि हो
 ॥ गा० ॥ १ ॥ इरी हरणाक्षी शु कहे, तजी विजो ज
 जाल हो ॥ रुखमणी रागे राचतां, सघळी वात रसा
 ल हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उठी ततक्षण तारणी, रुठी मार
 णहार हो ॥ अन्नर न देवी एहवी, जेहवी एह वरनार
 हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ क्रोध न किजे, कामनी, क्रोधे होय

विणास हो ॥ क्रोध तजी एधावता, पूरेम
 ननि आश हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ चामाचरी
 वढवने, उठी अति वरढाय हो ॥ रे रे धूरतसि
 रोमणी, वाढे हस्या शु थायहो ॥ मा० ॥ ५ ॥ ए पर
 देशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय हो ॥ जो हुं मन
 खेची रहु, फाटी हियो मरी जाय हो ॥ मा० ॥ ६ ॥
 ते माटे पगे लागीने, मे दिधो सनमान हो ॥ नंद नं
 दन तु मोहशुं, मेलण लागो तान हो ॥ मा० ॥ ७ ॥
 जे नर बाहिर सामला, मनमा मइला सोइ हो ॥ दुमुहा
 माणस माणसा, माहि गणे नहिकोइहो ॥ मा० ॥ ८ ॥
 उदर वस्यो जत्र मायने, तबहीथी परपच हो ॥ उप
 जीपार्थी अति घणा, आजलगेउ सच हो ॥ मा० ॥ ९ ॥
 वाध्या जइ घर ग्वावालने, ग्वालतणा गुण जोडहो ॥
 नाच्यो राच्यो रगशुं, करत कुतुहल कोरुहो ॥ मा० ॥
 ॥ १० ॥ रित न जाणी राजनी, जाणी गाय चराय
 हो ॥ किसो पलेखो किजीए, देवा अवलो न्याय हो ॥
 मा० ॥ ११ ॥ जिषमनि ठोनि हरि, करि घणा सहा
 र हो ॥ जोगीनि वाहे वाहि, लागी तो नटलारहो ॥ मा०
 ॥ १२ ॥ जेति मनमा उपजे, तेति मुहडे मतआण हो
 ॥ लोहिने लरुवे करी, चमालि चित आण हो ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ कृष्ण कुतुहल केलवि, आयो पुर मजार
 हो ॥ लेहणो लाजे आपणो ए दोइ वढनार हो ॥ मा०
 ॥ १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि लागी चामा पाय

हो ॥ नामाये जल जावसु लिधी कंठ लगाय हो ॥
 मा० ॥ १५ ॥ कुशल वात पृष्ठि घणि, नामा धरी
 अति प्रेम हो ॥ वारी देवि कृपा थकि, महारे नित
 हि खेम हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसु,
 चालि लहिय पसाया हो ॥ आवो पाक्यो उपरे, माहि
 न जाय कसाय हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवर अनेरी
 वातनो, थोरो धरे गुमान हो ॥ नामाने पगे लागणो,
 साले साल समान हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जलण जल
 तो जाणिये, जलसु रहिए लाग हो ॥ जो जल अप
 णहि जले, तो किहा जाय जगाय हो ॥ मा० ॥ १९ ॥
 जो पिउ पाडे आतरो, लोगासुं स्यो रोस हो ॥ नामा
 मन समजावसि, कर्म आपणो दोश हो ॥ मा० ॥ २० ॥
 ए त्रेपनमी ढालमे, रग विनोद विलास हो ॥ गुणसा
 गर शुभ कर्मथी, पोहोचें मननि आश हो ॥ मा० ॥ २१ ॥
 हुहा ॥ रवि उगे शशी आथमे, शशी उगे रवि
 तेम ॥ रवि शशी होवे एकठा, एक अकाशे केम ॥ १ ॥
 वासुदेव वसुधा विपे, आण मनावे ताम ॥ प्रतिमल
 मद मारवे, सुजस लहे अजिराम ॥ २ ॥

ढाल ५४ मी ॥ बे बे मुनिवर वोहरण पागरघारे
 ॥ ए देशी ॥ होवे हो कृष्ण सकल जगनो धणि, जोवो
 हो नवमां प्रतिमल्लने हाणरे ॥ ए आकणी ॥ पवनद्वी
 पथी आवियारे, बेपारी वड नामोरे ॥ रत्न कावल रु
 यडारे, मूल घणे अजीरामोरे ॥ हो० ॥ १ ॥ लान वि

च्यारी अति घणोरे, राजग्रहि आवतोरे ॥ जीवज
 स्याने आगलेरे, वरतु चलि लावतोरे ॥ हो० ॥ २ ॥
 घटी मोल जब साजल्योरे, विणजारा बोलतोरे ॥ गो
 मी नगरी द्वारिकारे, न्याय हमे मोलतोरे ॥ हो० ॥ ३ ॥
 चमकि जीवजस्या खरारे, सुणि नवलो अजीधानोरे
 ॥ कवण देश पर केवडोरे, केहेनि वर्ते आणोरे ॥
 हो० ॥ ४ ॥ सोरठ देश सुहामणोरे, सायरदत्त नि
 वासोरे ॥ नव बारी नगरी जलीरे, कृष्ण नरेसर ता
 सो रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ आदि विगोह व्यतरिरे, नाथ्यो
 कालि नागोरे ॥ गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अ
 विषल पागोरे ॥ हो० ॥ ६ ॥ दात उखालण गय
 वरो, मल्ल पगडण हारोरे ॥ कंस कद निकदणोरे, उ
 ग्रसेन आधारोरे ॥ हो० ॥ ७ ॥ चदेरि पति मद मा
 रणोरे, अरि कुल केरो कालोरे ॥ कृष्ण कहावे के हरीरे,
 नामे दुर्जन सालोरे ॥ हो० ॥ ८ ॥ विरुद सुण्या अ
 ति आकरोरे, अगुठायि जालोरे ॥ नथी आवि मस्त
 केरे, आनुर थइ असरालोरे ॥ हो० ॥ ९ ॥ हइइचो
 हटा आण केरे, कत अने जलाजाइरे ॥ विरहे विठो
 हि विलविलेरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० ॥ १० ॥ य
 दुपतिनी पदमणारे, पोखे पियसु प्रेमोरे ॥ हु रमापो जो
 गवुरे, अब मुज जीवण नेमोरे ॥ हो० ॥ ११ ॥ ज
 रासध पासे जइरे, पापणि मरणो मागेरे ॥ कत अ
 ने जाइ तणोरे, अरि फिरे मुज आगेरे ॥ हो० ॥ १२ ॥

चूप नणे मत रोवहिरे, रोसे तुळ रिपु राणिर ॥ अरितो
 वरतो जीवतोरे, पिण भे ग्ववर न जाणिर ॥ हो० ॥ १३ ॥
 स्वामी द्रोहना पातकिरे, रे मत्रि तु दिसेरे ॥ वयरी किम
 वधवा दियोरे, होठ डसे नृप रीसेरे ॥ हां० ॥ १४ ॥

ढाल तेहीज ॥ राग कडखो ॥ कोपियो राज
 ग्रहि पति राजवि, वयरी निसुणि पुत्रि तणा बोल
 नारी ॥ कहे राजा जरासध सुण पुत्रिका, पूरवु आ
 ज आशा तुमारी ॥ को० ॥ १ ॥ मूलथी वस उनम
 लसुं यदु तणो, कोपियो मगधेश कहे एम वाणि ॥
 चढतरी वात सेना नणि, आदिसे मत्र विवारीयो
 पिण राय गुमानि ॥ को० ॥ २ ॥ थयो परजात करी
 शिणगार शौजा धरी, नजासाले ताम नचावजावे ॥
 राय राणाजीको हाथ लोढो धरे, नाना मोटा कोइ रे
 ण न पावे ॥ को० ॥ ३ ॥ निसुणि प्रवल ढल सबल
 जेला हुवा, केरु कशीया तणा देइ तशीया ॥ थापने
 कध एक एक हयवर तणा, मूठ बल घाल सग्राम
 रसिया ॥ को० ॥ ४ ॥ रज चाढि गयण रणथन जि
 म उपच्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी ॥ स्वामि त
 णि वात अखियात करवा नणि, सुनटानि नयन ब्र
 ह्माड लागी ॥ को० ॥ ५ ॥ सब लढि चाल सीशुपा
 ल मुगल तिम, सकल सिमाडिया चूप आया ॥ पु
 श्र सहदेव आदिक वना राजवि, शस्त्र बत्रिस धरी
 वेग धाया ॥ को० ॥ ६ ॥ तेम दुर्योधनादिक वडा रा

जवि, राण राजा नरा उतर ढाला ॥ सहस्र गमे ति
हा नृप आवी मिल्या, केइ गजरथ तुरगम केइ
पाला ॥ को० ॥ ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसथी गीर
पड्यो, त्रटकी निज हाथशु हार जुड्यो ॥ वाम तसु
आख फूरके घणु उपरे, लोक सघला कहे पुण्य खुड्यो
॥ को० ॥ ८ ॥ गृध्र अंधरे फिरे ठिक आगल करे, वा
यरो ते प्रतिकुल वाजे ॥ बहूल अपसुकन वारी जतो
राजीयो, खिजतो आपणा बोल काजे ॥ को० ॥ ९ ॥
पारविण पायदल तुरीय गयवरतणो, कलकलाट श
ब्दे बधीर लोक थायो ॥ अश्व शूरा आहणी सबल
रज साधणी, बल नणी जाय आकाश गयो ॥ को०
॥ १० ॥ घडहडे धरणीतल सबल सेनाजरे, जलधी
जल उठले अति जोरे ॥ सघसले पनग जारे करी
सकतो, खलनल्या देव कटक घणघोरे ॥ को० ॥ ११ ॥
मगध देशाधीपति मदे जरयो मलपतो, गध हस्ती चढे
गर्व गेहलो ॥ सामुहो द्वारकां नगरी सीमा नणी, चाल्यो
सेन्या लेइ राय वहेलो ॥ को० ॥ १२ ॥ एहवे आवीयो
नारद मुनी कौतुकी, जरासधशु हसी इम जाखे आज
हरी हलधर प्रबल प्रताप धर, नवी चाले एहथी घणु
शु जाखे ॥ को० ॥ १३ ॥ राय सुजट तव कोपी नारद
नणी, देइ चबेटा चरण लात कुड्यो ॥ फोनी कमंडलु
कोपिन खेंचो घणो, हा हा नहि नहि करी मारुड्यो
॥ को० ॥ १४ ॥ राग आशा अने सिंधण ए सुणी, जरा

सिंधु चढतरी वार ए ठामे ॥ जात कमखे कही ढाल
लावण जणि, सुणता सूरमा सूर पामे ॥ को० ॥ १५॥

ढाल तेहीज ॥ राग मलगां ॥ जना वजावी ततखी
णैरे, किधो राय प्रयानारे ॥ वेलापुगी आण केरे, दूर
गयो सयाणारे ॥ हो० ॥ १५ ॥ साहण वाहण साम
टारे, साथे सह राजानारे ॥ धसमस धाया आवही
रे, दलवलने प्रमाणारे ॥ हो० ॥ १६ ॥ ए चोपनमी
ढालमेरे, जावी लीधे जातारे ॥ गुणसागर नवी शु क
रेरे, होवे होनहाररी वातारे ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सेन लेइ जरासध ते, आयो रणनी सीम ॥
चक्र व्युह आकारमे, सप साजथी नीम ॥ १ ॥ आ
रा महस्र किया जला, लगकर मेली थाट ॥ एक आ
रे राय सहस्रवे, रोके आडा घाट ॥ २ ॥ रथ बे सह
स्र माहे जला, गज एक सहस्र वखाण ॥ पाच सह
स्र तेजी तपे, पाय सोल प्रमाण ॥ ३ ॥ आठ सह
स्र जोधा जला, सुरामें सीरदार ॥ चक्र मुखे कौरव
घणा, कहेता नावे पार ॥ ४ ॥ मध्य जाग पोते रहे,
आरा सहस्रने माहि ॥ बल अरि चाली नवी सके, अ
तुली बलवे त्याही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो,
अवगुणीयो मुऊ आज ॥ गुमानी माने चढ्यो, रा
खी नही मुज लजि ॥ ६ ॥ उत्पत्यो अंबर मारगे, क
लुप जरयो ऋषी ताम ॥ आयो नगरी द्वारीका, हरी
ने जणावण काम ॥ ७ ॥ तव नारद कृष्णने कहे आ

व्यो नृप जरासध ॥ कृष्णे जना वजाडीने, करी क
टकनोबध ॥ ८ ॥

गाथा ॥ हरी सुतो थड सधीर, आव्यो जगसिं
धु नडवीर ॥ मुऊ दीठे सही करी मानो, कीम अरी
अणराखस्ये बनो ॥ १ ॥

ढाल ५५ मी ॥ थारा मेहेला उपर मेह, ऊवुके
वीजली हो लाल ॥ ऊवु० ॥ ए देशी ॥ मिल्या तिहा
दशे दगार, जाणे दुर्धर केशरी हो लाल ॥ जा० ॥
समुद्रविजय अति सूर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो
लाल ॥ जी० ॥ १ ॥ माहानेमी सत्यनेमी द्रढ, नेमीसुं
नेमी लह्यो हो ॥ ला० ॥ नेमी० ॥ रयनेमी श्री अरि
ष्ट नेमी, जिनवर जग गुरु ते जयो हो ॥ ला० ॥ जि०
॥ २ ॥ माहाजयने जयशेन गौतम, चित्रा स्वठे
गुणि हो ॥ ला० ॥ चि० ॥ सुकल्क तेजशेन, मूग
माहि जे शिरोमणि हो ॥ ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ जय
मेघ अने सिवनद, विश्वकसेनादि बळे पुराहो ॥ ला०
॥ वि० ॥ समुद्र विजयना ए पुत्र, एकरथी ठे अधी
क सूर हो ॥ ला० ॥ ठे अधिक० ॥ ४ ॥ विजो दगा
र अक्षोज, आठ पुत्र तेहना जाणिए हो ॥ ला० ॥
ते० ॥ उद्धव अक्षुजित, वामदेव द्रढव्रत वखाणिए हो
॥ ला० ॥ द्र० ॥ ५ ॥ महो अनोजलने आगल्ये, नि
धी शब्द जिहारे जोणिए हो ॥ ला० ॥ जिहा० ॥ हो
जी थाए तिहारे त्रिणे ताम, सूत्रने किम अवखोमीए

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
 चते पुत्र तेहने अठे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ श्रुर्मिमान
 ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युवे गेठे हो ॥ ला० ॥
 यु० ॥ ७ ॥ सागर चौथो दसार, पट पुत्र तेहना वा
 ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ रूपन निरुप लक्षिमवा
 न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
 पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
 हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रजने माल्यवान, गध
 मादन गण्या अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
 ल ठो दशार, सात पुत्र तेहनां समजि लिया हो ॥
 ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग बले
 कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
 नामे सातमो दशार, पच पुत्र तेहना पूढ्यो हो ॥ ला०
 ॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
 ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
 मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
 ॥ कर्मख कर्कर क पुर, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
 ॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अनीचद्र, पट पुत्र ते
 हना जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र च
 द्राज शशाक, सोम अमृतप्रज सुदरा हो ॥ ला० ॥
 अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
 ठे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर- अकुर, ज्वलनप्र
 ज ॥ अशनीवेग वायुवेग नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेद्रगती सिद्धार्थ, अभितगती वली सादरयो हो ॥
 ला०॥वली०॥सुदारुकं दारुक अनादृष्टी, रेंममुष्टी सिला
 युद्ध करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कु
 मारने वाहलीक, गधार पिगल आदे घणा हो ॥ ला०
 ॥पिंगल० ॥ राम विहुरने शारणां, रोहीणीना पुत्र त्रणे
 हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकं
 ष, जग विख्यात जाणो जेह हो ॥ ला०॥जाणो० ॥शू
 रीर कोटीर, अधिक तेजे चाण जो हो ॥ ला० ॥ ते
 ० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्लुक पीठ, मारुदत्त
 कंदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, ना
 जमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥
 र गनीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला०
 ॥ उद० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चंद्रमारु कण्ठक आ
 मीली हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ उग्रसेन आदि
 यादव वशी ना गरया हो ॥ ला०॥ वशी० ॥ अ
 व जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गरया हो
 ० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाह फूझ्याइ अनेक,
 पद्धना जाणजो हो ॥ ला०॥ पद्ध०॥ एतो ढाल
 उदय करी मनसा आणजो ॥ हो ॥ ला०॥ म० ॥ २१ ॥
 ॥ कोष्टकेथकी तसु सुहुरते, गरुडध्वज रथारु
 ण यथा तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रीढ ॥
 चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ ॥
 कुने इगान दिशामां, चालया श्री यदुनाथ ॥ २ ॥

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ रतमिन त्रिजो दशार, पा
 चते पुत्र तेहने अठे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ श्रुर्धिममान
 ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युत्रे गेठे हो ॥ ला० ॥
 यु० ॥ ७ ॥ सागर चौथो दसार, पट पुत्र तेहना वा
 ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ रूपन नि कप लक्ष्मिवा
 न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
 पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
 हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रचने माल्यवान, गंध
 मादन गण्या अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अष
 ल बठो दशार, सात पुत्र तेहना समजि लिया हो ॥
 ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग बळे
 कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरष
 नामे सातमो दशार, पच पुत्र तेहना पूवयो हो ॥ ला०
 ॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
 ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
 मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
 ॥ कर्मुख कर्कर क पुर, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
 ॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अजीचद्र, पट पुत्र ते
 हना खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र चं
 द्राज शशिक, अमृतप्रन सुदरा हो ॥ ला० ॥
 अमृ० ॥ १३ ॥ दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
 ठे घणा हो ॥ ला० ॥ पु० ॥ कर अकुर ज्वलनप्र
 न ॥ अशनीवेग वायुवेग न ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादर्यो हो ॥
 ला०॥वली०॥सुदारुकं दारुक अनादृष्टी, रेमनुष्ठी सिला
 युद्ध करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कु
 मारने वाहलीक, गधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला०
 ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणे
 ए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृं
 ण, जग विख्यात जाणो जेह हो ॥ ला०॥जाणो० ॥शू
 रवीर कोटीर, अधिक तेजे चाण जो हो ॥ ला० ॥ ते
 जे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्लुक पीठ, मारुदत्त
 शक्रदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, जा
 नु जमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥
 धीर गजीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला०
 ॥ उद० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चद्रमारु कण्णक आ
 ता मीली हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ उग्रसेन आदि
 नरैस, यादव वशी ना गरया हो ॥ ला० ॥ वशी० ॥ अं
 ग जात्र जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गरया हो
 ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाह फूड्याइ अनेक,
 स्वशुर पकना जाणजो हो ॥ ला० ॥ पक० ॥ एतो ढाल
 रसाल, उदय करी मनया आणजो ॥ हो ॥ ला० ॥ म० ॥ २१ ॥
 दुहां ॥ कोटुकैथकी तसु सुहुरते, गरुडध्वज रथारु
 ढ ॥ कृष्ण थया तव दारुकै, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥
 ॥ १ ॥ चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ ॥
 शुभ्र शकुने इगान दिशामां, चारया श्री यदुनाथ ॥ २ ॥

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
 चते पुत्र तेहने अठे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ श्रुर्मिमान
 ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युधे गेठे हो ॥ ला० ॥
 यु० ॥ ७ ॥ सागर चौथो दशार, षट् पुत्र तेहना वा
 ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ कंपन नि कप लक्ष्मिवा
 न, श्रीमान युगातने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
 पाचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहना जाणजो तुमे
 हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रजने माल्यवान, गध
 मादन गण्या अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अष
 ल बठो दशार, सात पुत्र तेहना समजि लिया हो ॥
 ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग बळे
 कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
 नामे सातमो दशार, पच पुत्र तेहनां पूढयो हो ॥ ला०
 ॥ ते० ॥ विश्वरुप धनजय कर्कट, श्वेतमुख वासुकि
 ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
 मो दशार, सुत चार तेहने सुदरु हो ॥ ला० ॥ ते०
 ॥ कर्मुख कर्कर क पुर, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
 ॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अजीचद्र, षट् पुत्र ते
 हना जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चद्र चं
 द्राज शशाक, सोम अमृतप्रज सुदरा हो ॥ ला० ॥
 अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
 ठे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर अकुर ज्वलनप्र
 ज ॥ अशनीवेग वायुवेग नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

माहेद्रगती सिद्धार्थ, अमितगती वली सादरचो हो ॥
 ला० ॥ वली० ॥ सुदारुकें दारुक अनादृष्टी, रेंमसुष्टी सिला
 युद्ध करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कु
 मारने वाहलीक, गधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला०
 ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणे
 ए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृ
 ण्ण, जग विख्यात जाणो जेहू हो ॥ ला० ॥ जाणो० ॥ शू
 रवीर कोटीर, अधिक तेजे चाण जो हो ॥ ला० ॥ ते
 जे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्लुक पीठ, मारुदत्त
 शक्रंदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र० ॥ कृष्णनो पुत्र एक, चा
 नु जमर आगे सुणो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥
 धीर गनीर गौतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला०
 ॥ उद० ॥ धर्मप्रशेन जिन सूर्य, चंद्रमारु कण्णक भ्रा
 ता मीली हो ॥ ला० ॥ भ्रा० ॥ १९ ॥ उग्रसेन आदि
 नरेंस, यादव वशी ना गण्या हो ॥ ला० ॥ वशी० ॥ अ
 गं जात्र जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्या हो
 ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाह फूड्याइ अनेक,
 स्वशुर पद्धना जाणजो हो ॥ ला० ॥ पद्ध० ॥ एतो ढाल
 रसाल, उदय करी मनमा आणजो ॥ हो ॥ ला० ॥ म० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ कोष्टकेथकी तसु सुदुरते, गरुडध्वज रथारु
 ढ ॥ कृष्ण थया तव दारुकें, अश्व ते जोड्यो प्रीढ ॥
 ॥ १ ॥ चतुरगी सेनासजी, लिया सहु जादव साथ ॥
 श्रुन शकुने इशान दिशामा, चाल्या श्री यदुनाथ ॥ २ ॥

जादवने पांरुव तणा, कटक तणो नही पार ॥ चालं
 ता अचलाचले, फूलाचल जाएया तीणीवार ॥ ३ ॥
 पेटालीस जोजन अरहा, आवी करयो पडाव ॥ ४ ॥
 त्रपालि गामनि सिममा, बहुविध करिय वनाव ॥ ४ ॥
 एहवे तिहा कृष्ण सैन्यमा, वैताढ्य वाशि अनेक ॥ वि
 द्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ५ ॥ कहे
 स्वामि तुज बाधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अ
 म थापिया, उपकार किया अठेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय
 जाणि करि, आव्योवु तुम पास ॥ सेवक अमने ले
 खवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिने हर
 खिया, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा,
 आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहा,
 खंचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखिया, पूठि कु
 शलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण
 समजात ॥ जगमा कोइ लाजे नहि, जरासिंधु कुण
 मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आ
 देश ॥ वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अठे सुविशेष
 ॥ ११ ॥ जरासिंधुना पद्धती, तुमने न माने जेहाते
 हने जीतवा कारणे, जाइए अमें गुण गेह ॥ १२ ॥

ढाल तथादेशी तेहिजासुणी नारद वषण वेधाला,
 धाजे गुहीर त्रबालु गुजाला ॥ सिंहनाद हरी तव मूके, स
 ज यादव थइने धूके ॥ १ ॥ दस सेने दसार्थ चाल्या,
 जुजुआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोइ पुत्र परवरीया,

पेहेरी सनाह खड्ग वेगे धरीया ॥ २ ॥ उग्रसेन कटक
 पोतानो, लेह चाल्यो देइने तानो ॥ माहसेन राजा यु
 द्ध रागी, बलतेग चीहु खुटवागी ॥ ३ ॥ माहे पांच
 पाडव बड जोध, रण करतां न आवे बोध ॥ तीम सु
 खरा साला बहु मिलीया, कायराचीस माही खलजली
 या ॥ ५ ॥ सर्व कटक मिल्यु शुभ शुभने कुण चूकेए
 जाणी तकने ॥ रण वार्जिन्नचना वाजे, रथ वेठा श्रीकृ
 ष्ण विराजे ॥ ५ ॥ वली निखट कुमर सीरदार, धरयो
 महानेमी सेननो नार ॥ आवी खेच्यारणने तीर, मे
 रा देइने उतराधीर ॥ ६ ॥ गरुड व्युह आकारे कही
 ए, चचु अग्रे बलनद्र लहीए ॥ एहवे इद्रपुरीमे बैठो,
 अवधे सौधर्मे इद्रे दीठो ॥ ७ ॥ प्रभु युद्ध कार
 ण परवरीया, बालपणे कौतुक रस नरीया ॥ मूकयो
 सारथी मातुल सार, रथ पोताने तैयार ॥ ९ ॥ बत्री
 से आयुद्ध धरीया, नेट मूर्काने सचरीया ॥ कचन स
 नाह पहेरी सयणे, चाल्यो सारथी नेमने वयणे ॥
 १० ॥ प्रभु वेशी रथ सोजाव्यो, सवी जोता से
 न्यमे लाव्यो ॥ केह सूर सूजट सऊ थावे, अष्टापद
 ज्यु उपमा पावे ॥ ११ ॥ माहे नीम गदानो रसियो,
 परसेन देखीने हसीयो ॥ एम सुनढनी कोडा कोडी, रण
 करवाने होनाहोमी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइन चो
 खाल्युं, सेन आप आपणु वाल्यु ॥ रणथन ती
 हा आरोप्यो, धज दडे करी वहु ठप्यो ॥ १३ ॥ वी

जादवने पांरुव तणा, कटक तणो नही पार ॥ चाखं
ता अचलाचले, फूलाचल जाण्या तीणीवार ॥ ३ ॥
पेतालीस जोजन अरहा, आवी करयो पडाव ॥ ४ ॥
त्रपालि गामनि सिममा, बहुविध करिय वनाव ॥ ५ ॥
एहवे तिहां कृष्ण सैन्यमां, वेताढ्य वाशि अनेक ॥ वि
द्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ६ ॥ कहे
स्वामि तुज वाधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अ
म थापिया, उपकार किया अठेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय
जाणि करि, आव्योतु तुम पास ॥ सेवक अमने ले
खवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिते हर
खिया, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा,
आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहा,
खेंचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखिया, पूठि कु
शलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण
समजात ॥ जगमा कोइ लाजे नहि, जरासिंधु कुण
मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आ
देश ॥ वेताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अठे सुविशेष
॥ ११ ॥ जरासिंधुना पद्वयी, तुमने न माने जेहाते
हने जीतवा कारणे, जाइए अमें गुण गेह ॥ १२ ॥
ढाल तथादेशी तेहिजा ॥ सुणी नारद वषण वेधाला,
वाजे गुहीर त्रबालु गुजाला ॥ सिहनाद हरी तव मूके, स
ज यादव थइने घूके ॥ १ ॥ दस सेने दसारथ चाल्या,
जुजूआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोढ पुत्र परवरीया,

गे खमेडाट सुच नेतेगे ॥ खलके लोही वहे जीम वारी,
 पमीया हय गय पाय पसारी ॥ २४ ॥ योगणी पत्र
 पुरेरे असखी, त्रपत हुया घणा ग्रध पखी ॥ महाने
 मी तणा तिर बूटे, रुखमीया रथनी साव वठुटे ॥
 ॥ २५ ॥ रुखमायो ने दुर्योधन नूपाल, कोपे चढीया
 आ असराल ॥ वेणुदाली प्रमुख सरोखी, खटरा
 व आव्या वल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ
 घेरी, आठे राय रह्या चहु फेरी ॥ जाइ सजारो इष्ट
 तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रेरे
 सोर करे स्यो गिमार, आव्य सनमुख था हुसीयार ॥
 इम कही त्रोडे सरधारा, धनुष आठे तणा तिणीवारा
 ॥ २८ ॥ सक्ति पुरण दाव अरिने, मूके रुखमइयो री
 स जरीने ॥ तरु तड नाद करत जोर, देखी सुचट
 करे अति सोर ॥ २९ ॥ नाखे शस्त्र घणा सुरचगा,
 जाणे अग्नी माहि वले पतगा ॥ एहवे अरिष्ट नेमी
 सर स्वामी ॥ सूर मातली कहे शिरनामी ॥ ३० ॥ बली
 इद्र थकी इणे पामी, एह शक्ति महा तप कामी ॥
 पामी प्रचुतणोरे आदेश, सुर सानीध्य करे सुविशे
 ष ॥ ३१ ॥ तिणे वज्रशरे अति त्राडी, लेइ शक्ति जणी
 नूए पाडी ॥ जयजयकार करे नरदेव, जादव विवन
 टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ साजने वित्यो सत्राम,
 आव्या आप आपणे मुक्काम ॥ गुणसागर कहे अ
 नीराम, ढाल पचावनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥

र विद्याधर बहु मिलीया, सघवटे सह आगे चली
 या ॥ कोद्र कोतुक जोवा आवे, नट देखीने नय पा
 वे ॥ १४ ॥ गजसुठे साकलनां खलका, मोरचा बाधी
 करे वलका ॥ हयवर पाखरीया पलाणे, जाता वल
 गाढ्या चरी वाणे ॥ १५ ॥ वीर रसे चढ्या रजपूत,
 रणखेत मच्यो अदचूत ॥ दल पसरीया चीहु उर, का
 लीखाम घटा घनघोर ॥ १६ ॥ वरवीए करत जुहा
 रा, बीजली जेम वहे खगधारा ॥ मनीया अति जो
 ध अखाडा, गीर वीना धम करे रमाडा ॥ १७ ॥
 आव्यो तुर सहो असिधारी, जो हय होस अपठरा
 नारी ॥ बोले बोल सुनट एम हाडा, एक कापर धरे
 हाथ आमा ॥ १८ ॥ जादव सुनट चढ्या रसपूग, करे
 सिंधु सेना खरचूर ॥ दल जग देखीने राय, आव्या
 धसमसर्ता अति धाय ॥ १९ ॥ प्रियगद धुमकेतु नरिं
 द, जादव सेनने पाडता मद ॥ वही एक धारी करपा
 ण, इरी कटकमा पड्यु जगाण ॥ २० ॥ उढ्यो म
 हानेमी तीणीवार, अनादष्टी निखट कुमार ॥ चाल्या
 रथ वेशी गुणवत, आवता रीपू दल शोक्त ॥ २१ ॥
 रोसे नरयो रुखमीयो राय, दुर्योधन साथे सहाय ॥
 साते नृप आव्या रण खेत, एक एकने पाठल लेत
 ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप होडे, नरमुठी अने सर
 गोडे ॥ महानेमी सुनटने आगे, रुखमीया साथे अ
 ङ्ग्यो मध्य जागे ॥ २३ ॥ सणण वाण वडे अति वेगे, वा

चली, उपाढी गदारे आयो अमीर ॥ १० ॥ २ ॥ से
 नानी रथ उपरे, मेली गदा बलपूर ॥ सेनानी पावो
 खस्यो, रथ जागीरे हुवो चकचूर ॥ १० ॥ ३ ॥ आ
 व्यो केसरी जेम गाजतो, नीम उपर धरी छाग ॥
 तिह्ण बाण वरसावतो, काइ नवीपामेरे रेहवालाग
 ॥ १० ॥ ४ ॥ जयसेन कुमार माहा बलि, समुद्रविजेनो
 नद ॥ आवि आमो आतरयो, खेचि धनुष्य उन्नो सो
 नद ॥ १० ॥ ५ ॥ राय हसी इम बोलिउ, तु का मरे
 जाणेज ॥ इम केहेता तस सारथी, हणियोरे जयसेन
 सहेज ॥ १० ॥ ६ ॥ खेचि बाण अति आकरो, सेना
 नी सरदार ॥ तस सारथी जेदी करी, काइ मारयोरे
 जयसेन कुमार ॥ १० ॥ ७ ॥ महाजय आयो वेगसु,
 बधव मारयो देख ॥ ते पिण मारयो सेनानीए देखि
 कोप्योरे अनादृष्टी विशेष ॥ १० ॥ ८ ॥ हिरणनाजी
 राजा तणो, ठेदे धनुष मनरग ॥ नीम अर्जुन थाद
 व अवर, काइ जुजेरे बीजा नृप सग ॥ १० ॥ ९ ॥
 अनादृष्टीने मारवा, रथथि उतरीउ वेग ॥ होठ पीसे
 रीसे जरयो, हिरणनाजीरे आव्यो धरी तेग ॥ १० ॥
 ॥ १० ॥ आनदृष्टी पिण रथ थकिरे, उतरीयो ले तर
 वार ॥ आमो खेडो देइने, काइ वदेरे तसु बहुवार
 ॥ १० ॥ ११ ॥ आनदृष्टि ठल पामीने, लवध लिखि
 करवाल ॥ हिरणनाजीने हणि करी, काइ नास्योरे शिर
 उगल ॥ १० ॥ १२ ॥ अष्ट विस पुत्र रायना, पोहोचाह्या

दुहा ॥ नित्य प्रते युद्ध होवे घणा, फहेता नावे पा
 र ॥ जरा मूकी एहवे, ते सुणजो अनीकार ॥ १ ॥
 नालधनुके नवनवी, रजमं ठायो जाण ॥ मुरा रणमें
 आथने, रथ जूत्या केकाण ॥ २ ॥ तमलीम करता
 थका, एक एक ने ग्रही बाह ॥ जस जगमें करो
 जय करशे जगनाह ॥ ३ ॥ सुकलीनी माता तणा, धा
 व्या हशे जे दूध ॥ ते पग पाठ नही टिए, घणा कि
 यावे युद्ध ॥ ४ ॥ इम हुकाहुक करी रह्या, जाणे हनु
 मत वीर ॥ जइ आमा रण थनने, वडा वडा रण धीर
 ॥ ५ ॥ बाणधार वरशे घणी, धरणी न धरे धीर ॥ का
 यर नर ठाना ठपे, साहसीक शाम सधीर ॥ ६ ॥ यु
 द्वारंज थयो घणो, नवीको हारे ताम ॥ एहवे सेना
 नी सिंधु तणो, हिरण्य नाची अनीराम ॥ ७ ॥ कहे
 एम नीज स्वामी जणी, सुणजो जादव रंक ॥ द्यो
 आदेश सग्रामनो, टालु एहनो वक ॥ ८ ॥ राय पसा
 य लेइ करी, रथ बेशी तिणीवार ॥ चढीयो आडवर
 घणे, दल बलनो नही पार ॥ ९ ॥

ढाल ५६ मी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनानी निग्र
 थ ॥ ए देशी ॥ सेनानी रोसे भरयो, आवेहि दल ठे
 ल ॥ घसरयो, दल सिंधु-तणो, जीम साअरनि बेल
 ॥ १ ॥ रंगीला राय, आवी मिल्या रणखेत, काइ पा
 ठीरे पुठान देत ॥ २० ॥ ए आकर्णी ॥ आरजुन से
 नानी तणो, आवता-वेदे, तिर ॥ एहवे जीम नूजा

॥ २३ ॥ कृष्ण पूछे प्रभु नेमने, स्वामी अब किम हा
 य ॥ ठिक आया सुर साहमो, हुग धरीरे जोवे सेवे
 सहु कोय ॥ २० ॥ २४ ॥ हरी आरति देखि करी, मा
 तुलि कहे इम वात ॥ प्रभु न्हवण जल गटता, कांइ
 रेहेशेरे वक्रनो उपघात ॥ २० ॥ २५ ॥ प्रभु पूजी प्र
 णमी करी, नवण गटे तिणीवार ॥ जरा नाठि लोटि
 गठिया, काइ सुरारे सुजट शिरदार ॥ २० ॥ ३६ ॥
 प्रभु रथ रेणु फरमी जेहने, अगे अडे तिल मात ॥
 तेहना उपद्रव्य सर्वे टले, अकथ कथानि ठे वात ॥
 ॥ २० ॥ २७ ॥ ढाल ए षट पचासमी, प्रभु महिमा
 नि वात ॥ ब्रह्मचारी जिन बाविममो, गुणसागर गु
 ण गात ॥ २० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ हिवे जरासिंधु आपणा, मत्रि तेड्या ताम
 ॥ नामे हान्पोहिशके, उजा करी जणाम ॥ १ ॥ याद
 व सेन जिहा अठे, जह आवो करी गुळ ॥ सेना साह
 मा आवजो, वहिला करजो जूळ ॥ २ ॥ नृप जुना
 जाणे पाहि, पूरण प्राक्रम मोय ॥ समुद्ररायने विनवि,
 वृद्धपत्नी शरै तोय ॥ ३ ॥ पपु टोले गोवालियो,
 आपो नृजने पाज ॥ हलधर जुग प्राडव वलि, आ
 रज सररो काज ॥ ४ ॥ हान्पो आव्पो तिहा थकि,
 प्रणने समुद्रना पाय ॥ विनति रशानी जकनी, करवा
 झाडी ठाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय तटाके कहे, रे साज
 ल मत्रिश ॥ मागवा कृष्ण तु आवियो, हिन बुद्धी

परलोक ॥ नीम अर्जुन कर्गी आकरी, देखिरे गत्र हंगो
 निशोक ॥ गंग ॥ १३ ॥ कुमार वद्य देखि कर्गी, गेन्या नागी
 ताम ॥ जगभिधु चित चितवी, तिणे अचमर कुलदेवी
 अग्निगम ॥ २० ॥ १४ ॥ जरादेवी कुलमं वनी, समग्या
 आत्रो आज ॥ अरी अटारां रणम मिल्यो, काइ ग
 खोरे कुलनि लाज ॥ २० ॥ १५ ॥ देवि कोपि ततखि
 णे, आधि यादव सेन ॥ जरा विकुर्वि अति घणि, जाणे
 प्रगट्योरे अचानक पेन ॥ २० ॥ १६ ॥ उठकोढी उ
 ज्जल करघा, मुख चूवे बहु लाल ॥ मध्यनिसाने सुकिने,
 गइ देखिरे अवर ततकाल ॥ २० ॥ १७ ॥ प्रसरी जरा
 जादव सैनमा, व्याकुल थया नरराय, नेम हरी
 हलधर विना, शेष जरामय सहु थाय ॥ २० ॥ १८ ॥
 ऊरे हलधर एकलो, निसुणि कृष्ण एह वात ॥ सुर
 सुजट विण किम थायशे, उपनोरे सूरि तणो उतपा
 त ॥ २० ॥ १९ ॥ एहवे मातुल सारथी, प्रजुने क
 हे वारवार ॥ हणिए प्रति विष्णु आपणे, तो काइ प
 मे हार अपार ॥ २० ॥ २० ॥ देव वयणे प्रजु इम
 कहे, विष्णु हणे प्रति वीष्ण ॥ ए नित परपरा ठे नलि,
 होलेरे त्रिखडाधीप कृष्ण ॥ २० ॥ २१ ॥ इम काहे चा
 ल्यो रथ चूतले, करतो नाद गजीर ॥ क्षिरोदधीमा
 जीम नावडि, काइ तरतिरे दिसे तिर ॥ २० ॥ २२ ॥
 जंजा काप्या जोरसु, विर्य अनत जगवत ॥ सिधु से
 न भागी गयो, जिम सिंह देखिरे अजाना सत ॥ २० ॥

वी चैरो थयो उमाइ, मुसडी सल हाथमा साई ॥
 ॥६॥ रणथन आवीने रोप्यो, करण जादव उपर को
 प्यो ॥ देखे करण केरी अधीकारी, नांठा सुनट हता
 जे जारी ॥ ७ ॥ त्रास पामी आव्या हरी पासे, पा
 ए लागीने वचन प्रकाशे ॥ आव्या करणने नीषम
 ढोइ, प्रनु अमथी तो काये न होइ ॥ ८ ॥ निम गदा
 लेइने सनूर, अरजुण उनो वाषावरी सुर ॥ सज थया
 रण रमवाने काज, तव वरजे जुधीष्टर माहाराज ॥९॥
 नीपम पितामहने करणवे जाइ, इणथी बढता न होए
 वढाइ ॥ मारीए मरीए तो नरके जइए, ते माटे सा
 मा नवि थइए ॥ १० ॥ तव वसुदेव चढीया आप, द
 सार हाथ गृही रणयाप ॥ उग्रसेन केरी अधीकाइ,
 चाल्या बढवाने दसे जाइ ॥ ११ ॥ हलधर तव हेत
 ज जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी ॥ लेओ गदा
 अमारी पास, इणथी वेरी पामशे त्रास ॥ १२ ॥ ग
 दा लेइ प्रनु रणमाआवे, देखी करण प्रते वोलावे ॥
 आवो साभा सुरजनानद, आपणे लमशु दीए आन
 द ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए, वढे हुश न राखे
 कोए ॥ एकवीजाने करे प्रहार, वदे कोप चढ्या अ
 सराल ॥ १४ ॥ उग्रसेन गागेयज साथ, जूजे बिजा
 घणा नरनाथ ॥ उमाया अति रण रसीया, एकवीजा
 ने मारण धशीया ॥ १५ ॥ नीपम नढमोडे अति चा
 र, करे चोट हुइ हुशीयार ॥ नीषम विद्याधरीनो वे

तुऊ इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुल
 में उतपात ॥ उग्रसेनने पांचसे, मारंतो कसा घात
 ॥ ७ ॥ इम निसुणि पाठो बल्यो, वीनव्यो निज नरे
 श ॥ अरु केटलवो नलो, जादव जोर विसेप ॥ ८ ॥
 थयो प्रजात उग्यो तपत, कर्ण राजा तेणीवार ॥
 सेनापतीने तेडीने, चाखे वात विचार ॥ ९ ॥ सेना
 सऊ करो सहु, जासु जादव लार ॥ सग्राम करवा का
 रणे, मत लगावो वार ॥ १० ॥ इम सुणी सेनापती,
 कीधु कटक तैयार ॥ हय गय रथ पायक घणा, ते क
 हेतां नावे पार ॥ ११ ॥

ढाल ५७ मी ॥ चीत्रोना राजानी ॥ ए देगी ॥ क
 रण सऊ थयो हिवे जाम, बढवाने अती अजीराम ॥
 आयो जरासिंधुने आगे, पाए लागीने अनुमति मा
 गे ॥ १ ॥ प्रभु किरपा करो तुमे नाथ, आज जइ दे
 खाडु हाथ ॥ इम बोलै मधुरी वाणी, जरासिंधु कहे
 गुणखाणी ॥ २ ॥ जावो वेगे मतलावो वार, रणमद्रि
 रहेजे हुशीयार ॥ इम सुणी राजी थयो मनसा, पहेग्यो
 संनाह कठोटो तनमा ॥ ३ ॥ करण किरण समठे तेज,
 जग देखता उपजे हेज ॥ रथे वेठो करवा काज, हा
 थ सुदगल लेई माहाराज ॥ ४ ॥ नाग ससरो सानी
 ध्यकारी, आवीरथे वेठो अधीकारी ॥ अोर देव घणा
 तस लार, करण आव्यो थइ हुशीयार ॥ ५ ॥ गांगेय
 गुरुवो गुणखाणी, करण रण चह्यो इम जाणी ॥ आ

खीने अतिशे नारे नाग सामो आव्यो तस लारे ॥
 जल लेइने अगन ओलावे, बाण देव ते नागी जावे
 ॥ २७ ॥ करण बाणावरी केवाए, एथी जोध जीव्यो
 नवि जाए ॥ वली नाग साह्य जो पामी, वढता काये
 न राखे खामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणा नट जेह, ते तो
 नासी गया ततखेव ॥ देखी हियडे रह्या विचारी, कर
 ण मोटो ए अधिकारी ॥ २९ ॥ वसुदेव विचारे मन,
 करण मोटो ए राजन ॥ तेज प्रताप करीए पूरो, जो
 ध लफवामा अति सूरु ॥ ३० ॥ जोधे जीव्यो ए नवी
 जाए, वली पावु पिण न खसाए सापे ग्रही ठलुदर वे
 ह, ए उखाणु मिलीउ एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदऋषीस
 र आवे, वासुदेव प्रते वोलावे ॥ शु राय जखाणोढो
 आज, आव्या रण रमवाने काज ॥ ३२ ॥ वसुदेव कहे
 ऋषीदेव, पाए लागीने करी शेव ॥ मे नवी दीठो ज
 गतमा कोइ, जेवो करण लडेढे सोइ ॥ ३३ ॥ नारद
 कहे मत विमासो, करण रथे वेठो देव खासो ॥ वाण
 तुमतणा सरवे जागे ॥ करणरायने एक नवि लागे ॥
 ॥ ३४ ॥ हिवे एहनो उपाव करशु, राए चिंत्या सघ
 ली हरशु ॥ एम कहिने ऋषी सर जाए, प्रनु देखीने व
 हु सुख पाए ॥ ३५ ॥ मातोली प्रते कहे ऋषीराज,
 चालो सग्राम देखण काज ॥ देवमा पिण एवो न दे
 र्यो, वसुदेव करण लमे ते पेखो ॥ ३६ ॥ एम कहिने
 ऋषी तेमी आवे, वसुदेव तणे रथ वेठावे ॥ नाग देखत

टो, जीपम उग्रसेन राघने जेटो ॥ १६ ॥ उग्रसेन त
 णु ढल मोमे, वली धनुष्य राघना तोडे ॥ रिसे दप्ते मु
 सदी प्रहार, राघ नूगठी पड्यो तेणीवार ॥ १७ ॥ जी
 पम वृद्धअणे पिण गानो, जीपमरणमा न रहे बानो
 ॥ जीपम नारे हाक नजावे, जीपम सुर सृजट नवी
 सारे ॥ १८ ॥ सारपी जोवे नजर पत्तार, राघ मूर
 ठी पड्यो दुखकागी ॥ हाहा जीपमे अनरव कीधो, रा
 घने प्रहारज दीधो ॥ १९ ॥ रथवारी वाहेर लीधो, व
 ली जलसिची सावध कीधो ॥ एम कीधा घणा उपचार.
 राघ सुसता थया तेणीधार ॥ २० ॥ करण वल्लुदेव स
 ग्राम नार, जोवा देव आव्या तेणीवार ॥ जोवो मा
 णस पिण देव जेवा, सा बढता दीठा तेवा ॥ २१ ॥
 करण कोप करी करसाइ, ग्रही मुदगर मूके धाइ ॥
 वाणवरी अर्धीके जोरे, मूके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥ २२ ॥
 मुदगर आबतो दीठो जाम, हलधरे, गदा दीधी ते
 ताम ॥ गदा उपाडी ते ताके, मुदगरने ते चूए पाडे
 ॥ २३ ॥ वसुदेव कहे सुणाराय, कर्ण उजोरे पग ठाय
 ॥ अगन वाण थकी तुलने वारु, सेन सघलीनु का
 रज सारु ॥ २४ ॥ डुगर उपर देवथी पामी, हाथ ली
 वु वसुदेवे स्वामी ॥ मूके करण राजानी लार, अगन
 जार वहे असराल ॥ २५ ॥ अगन देखीने देवज ख
 शीया, सहु आघा पाग धशीया ॥ नाग नेरा हता
 जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ वाण दे

ए बेहु सबला जाणीने, पाफव सेवा काजजी ॥ गरव न
 जी गुण मनमे आणी, जोरावर शौर ताजजी ॥ ए०
 ॥७॥ जाणे विजा हरिनेहलधर, महा नेमि नीखट कुमा
 रजी ॥ अथवा जमनेजोर जयकर, जोम अर्जुन अवता
 रजी ॥ ए० ॥८॥ किस्सुं अनेरा सुनट वखाणे, एकलो ने
 म तुमारजी ॥ लीलाए करी करे चुजावली, धराणे उत्रा
 कारजी ॥ ए० ॥ ९ ॥ दमघोष अंगज रुक्मीयो बेज,
 तुज कटकमे बल धीरजी; एणे बल दिठो बलचंद्र रण
 मे, रुखमणीने अपहारजी ॥ ए० ॥ १० ॥ दुर्योधनने
 सकुनि नरेशर, आपणे कटके एहजी ॥ न गणे केइ सुन
 ट एयारी, सूरवीरमे रेहजी ॥ ए० ११ ॥ अंगाधिपती ति
 म करण कहीजे, आपणे कटके दुठजी ॥ तेतो कृष्ण कट
 क सागर विच, जेणे सोतु मुठजी ॥ ए० ॥ १२ ॥ जेह
 नि अच्युतादिक सघला, सेव करे सुरनाथजी ॥ जुद्ध न
 णी कडो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए० ॥ १३ ॥
 दिसे गिरवर कटक सनुरो, जोता सघली वातजी ॥ इणे
 उणे कटके घणो घणो अंतर, जाणे दिनने रातजी ॥ ए०
 ॥ १४ ॥ कृष्णपद्म आदरीने देवी, मारयो तुज सुत का
 लजी ॥ तेणे मरवे प्रतिकुल दिहाडो, दिसे तुज नृपाल
 जो ॥ ए० ॥ १५ ॥ तृण तणि परे तुजने गणता, जोराव
 र असमानजी ॥ मथुरावाडी गया द्वारापुरी, दे सुरपति
 सत्मानजी ॥ ए० ॥ १६ ॥ गिरीकदर मांहे ते सूतो,
 कोइ जगावे सिंहजी, उबलतो बलवंत हिवे केम, गणशे

त्रासो मन्न, खडनमीउ अति घणु तत्र ॥ ३७ ॥ इत्ते
 अद्रतणो देव मोटो, कदीए नवी थाए खोटो ॥ जो
 जीवित राखवी आशा, तो एथा जावो नाशा ॥ ३८ ॥ देव
 नाशी गयो निज नृवन, सुरज आधम्यो हुवो तम ॥
 दोइ राजा रथ वाली वरीयां, सज्जन जनमा सहु गिली
 या ॥ ३९ ॥ एतो ढाल जली रसाल ॥ पुण्ये फले म
 नोरथ माल ॥ गुणसागर कहेसार ॥ सत्तावनमी राग
 रसाल ॥ ४० ॥

ढाल ५८ मी ॥ गियल मुदरमी खरीरे प्यारी, जे
 पाले नर नारजी ॥ ए देशो ॥ एहवे राजग्रहि पति
 आगे, बिजा मुहता सगजी ॥ वचन कहे इम हासो
 मुहतो, करी आलोच अजगजी ॥ ए० ॥ १ ॥ पहिलु
 पिण अविमासु कीधु, कस मूवो अकालजी ॥ विण आ
 लोच कीया दुख थाये, निश्चे उतर कालजी ॥ ए० ॥
 ॥ २ ॥ अरि सबलो निबलो जो एहवो, लेवो जेहनो
 गुजजी ॥ ए सबलो-गोपाल बले करी, तेशु इणशुं ऊ
 जजी ॥ ३ ॥ सयवरा मडप रोहिणी, श्री वसुदेव दसा
 रजी ॥ तुऊ नृपति-सघला जाज्या, ए आगे तिणवा
 रजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ जुवटे जीति कोडी इणे तुऊ, सुता
 जीवाडी जावीजी ॥ इण अहिनाणे मराव्यो न मूवो,
 ए वसुदेव सजाविजी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीणथी हुआ रा
 म अने हरी, नंदन अति बलवतजी ॥ ज्याने का
 जे धनदे-किधी, पुरी द्वारका-कतजी ॥ ए० ॥ ६ ॥

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुठे रहे गज गाहजी ॥
 मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
 ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहां तरपति, कटक
 व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या बीजाहि पिण, पु
 रेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए त
 व थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले
 वलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणताँ
 मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर
 इणिपरे पन्नपो, वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा वलि सक्क थया, पाडवादिक्
 परीवार ॥ यादव कुमर चढिया जला, सेन विद्याध
 र सार ॥ १ ॥ रथ चूरे सुठे करी, हय नाखे परति
 छ ॥ गज उगले गयणमे, जाजे सुनटा चीड ॥ २ ॥
 युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा
 उपर जइ अंख्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसु
 पाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरा
 सिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए
 देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे
 ॥ हुकारब करी उठियो, मेरुपरे अनीरामरे ॥ १ ॥ राजद
 आयो जरासिंधुजी, वाजे ननारथ तूररे ॥ जेहवि वादल
 नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ २ ॥ ॥ २ ॥ मेघाडव
 र शिर जलकता, पाखरे जकीया हेमरे ॥ पवन पता

ताहरी लीहजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ साजली वचन कौप्यो न
 प बोले, जरासिंधु धरी खेदजी ॥ सहि सुध तु यादव
 फेरयो, तिणे देखावे नेदजी ॥ ए० ॥ १८ ॥ गत्रुतणा गु
 ण कहि माने, विहामे इण वारजी ॥ पिणरं दुरमति
 सिंह अच्यामु, स्याल तणे फेकारजी ॥ ए० ॥ १९ ॥
 फिट तोने जे रणयी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥
 वालगोपाल गोवाल तियाने, हु माधीश करी ठारजी
 ॥ ए० ॥ २० ॥ हिवे बोले डनक मत्रिसर, गमतो नृप
 ने एमजी ॥ अवसर आव्या रणतो कारज, ठामे क
 व्री केमजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ सामेपाइ रणमे जडता, म
 रण तिको जस कामजी ॥ जाग्यारो जीवत अकारथ,
 होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥ २२ ॥ चक्रव्युह करी
 निज कटके, हणस्यु ए शत्रु निकजी ॥ जलो कश्यो
 मत्रिसर मुजने, तु मत्रि निरनिकजी ॥ ए० ॥ २३ ॥ ए
 हवे हिंसक रुनक बेहु सुहता, बिजा वीरा जानजी ॥
 चक्रव्युह करे नृपने वचने, रीपु पिण असमानजी ॥
 ए० ॥ २४ ॥ सदस आराने ठामे सेहेस नृप, तेहनो ब
 हु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडे, सेहेस पांच अ
 सवारजी ॥ ए० ॥ २५ ॥ दोय-सहस रथ तिमहि गय
 वर, पायक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस व तटक नृ
 पति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥ २६ ॥ पाच सेहेस
 मारगने माधे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिहा कौ
 रव सो ब्रधव, नृपने द्रक्षण-देशजी ॥ ए० ॥ २७ ॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुठे रहे गज गाहजी ॥
 मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
 ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहा तरपति, कटक
 व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या बीजाहि पिण, पु
 रेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए त
 व थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले
 बलियो, शिसुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतो
 मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर
 इणिपरे पन्नो, वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा बलि सऊ थया, पाडवादिक
 परीवार ॥ यादव कुमर चढिया जला, सेन विद्याध
 र सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे परति
 ड ॥ गज जगले गयणमे, जाजे सुनटा चीड ॥ २ ॥
 युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा
 उपर जइ अह्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसु
 पाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरा
 सिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए
 देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे
 ॥ हुकारव करी उठियो, मेरुपरे अनीरामरे ॥ १ ॥ राजद
 आयो जरासिंधुजी, वाजे जना रण तूररे ॥ जेहवि वादल
 नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडव
 र शिर जलकता, पाखरे जमीया हेमरे ॥ पवन पता

ताहरी लीहजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ सांनली वचन कौप्यो न
 प बोले, जरासिंधु धर्षी खेदजी ॥ सहि मुध तु यादव
 फेरयो, तिणे देखावे नेदजी ॥ ए० ॥ १८ ॥ शत्रुतणा गु
 ण कहि माने, विहाणे इण वारजी ॥ पिणरे दुग्मति
 सिंह अज्यामु, स्याल तणो फेकारजी ॥ ए० ॥ १९ ॥
 फिट तोने जे रणयी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥
 बालगोपाल गोवाल तिचाने, हु माघीश करी वारजी
 ॥ ए० ॥ २० ॥ हिवे, बोले डन्नक मत्रिसर, गमतो नृप
 ने एखजी ॥ अत्रसर आव्या रणनो कारज, ठामे क
 त्री केमजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ सभेपाइ रणमे नदता, म
 रण तिको जस कामजी ॥ जाग्यारो जीवत अकारय,
 होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥ २२ ॥ चक्रव्युह करी
 निज कटके, हणस्यु ए शत्रु निकजी ॥ नलो कह्यो
 मत्रिसर मुऊने, तु मत्रि निरञ्जिकजी ॥ ए० ॥ २३ ॥ ए
 हवे हिंसक रुन्नक बेहु मुहता, बिजा वीरा जानजी ॥
 चक्रव्युह करे नृपने वचने, शीपु पिण असमानजी ॥
 ए० ॥ २४ ॥ सहस आराने ठामे सेहेस नृप, तेहनो ब
 हु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडे, सहेस पाच अ
 सवरजी ॥ ए० ॥ २५ ॥ दोय सहस रथ तिमहि गय
 वर, पाचक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस उ तटक नृ
 पति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥ २६ ॥ पाच सहेस
 मारगने माधे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिहा कौ
 रव सो बंधव, नृपने द्रुहण देशजी ॥ ए० ॥ २७ ॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुठे रहे गज गाहजी ॥
 मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
 ए० ॥ २८ ॥ साधी साधी रहे तिहा तरपति, कटक
 व्युह पचासजी ॥ विच विचमे रह्या बीजाहि पिण, पु
 रेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरार्सीधुए त
 व थाप्यो, सेनानीने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले
 बलियो, शिसुपाल द्वण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतो
 मिठी गोडी रागे, ए सत्तावनमी ढालजी ॥ गुणसागर
 द्वणिपरे पन्नणे, वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा वलि सऊ थया, पाडवादिक
 परीवार ॥ यादव कुमर चढिया जला, सेन विद्याध
 र सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, ह्य नाखे परति
 ड ॥ गज उगले गयणमे, जाजे सुनटा चीड ॥ २ ॥
 युद्ध करता थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा
 उपर जइ अह्या, जरार्सीधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसु
 पाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरा
 सिंधुनो, कप्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ चेतन ग्यान अजुवालिये ॥ ए
 देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरार्सीधु तामरे
 ॥ हुकारव करी उठियो, मेरुपरे अनीरामरे ॥ १ ॥ राजद
 आयो जरार्सीधुजी, वाजे नना रण तूररे ॥ जेहवि वादल
 नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडव
 शिर जलकता, पाखरे जमीया हेमरे ॥ पवन पता

का ते फरहरे, उमे वग पक्ति जेमरे ॥ रा० ॥ ३ ॥
 शीरपर मुगट धरयो वाकडो, आंरुडे जीडो सनाहरे
 ॥ केमे कटारो रतन जफयो, आवी बेठो रये उठाहरे
 ॥ रा० ॥ ४ ॥ हय साजे करी साजतो, पाखरीया घ
 मरोलरे ॥ अपराजीत आदे करी, सुरा सुनटनी को
 डरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ सिंहनाद अति मूकतो, घुकतो
 आयो रण शिमरे ॥ जाटव पग पाठा खसे, अधिक देखी
 वल इमरे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मगध नरिंद इम उच्चरे,
 इणे कटक उजमालरे ॥ कहे हिंसक मुऊ आगले, कु
 ण सुनट नूजालरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ एहवे हिंसक कर
 उचो करी, देखावे सुण नूपालरे ॥ कमोत घोडा जे
 रथ तणा, ते अनादृष्टी रसालरे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नि
 ला अश्वरथी जे हुवे, ते धर्म पुत्र पिढाणरे ॥ धवल अ
 श्वे अर्जुनजी, धनुर विद्यानो जाणरे ॥ रा० ॥ ९ ॥
 निलुतपल अश्व ठे जीमना, उना कोपे विकरालरे ॥
 सोवन वर्णे अश्व ठे सहि, समुदविजय टयालरे ॥
 रा० ॥ १० ॥ हसले घोमे उनी कटकमा, गरुडध्वजे
 गोविंदरे ॥ दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे न
 ट चदरे ॥ रा० ॥ ११ ॥ इम देखावे सुनटने, पार
 विगर अनेकरे ॥ मगधेश सुणी धनुष्य आफले, कोप
 धरी अविवेकरे ॥ रा० ॥ १२ ॥ युवराय मगध नरिंद
 नो, जवन नामे कहायरे ॥ वसुदेव सुत अक्रादिक
 जणी, हणण काजे धायरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ अपरा

सेनानी शिसुपाल द्विवे, हसतो जप वाणर, गोकुल
 न हुवे कान्ह ए, क्कत्रिमोरण जाणरे ॥ रा० ॥ २५ ॥
 कृष्ण कहे हिवे नाशतु, नाश पठे अयाणरे ॥ रुक्मीया
 ने रण तु मिल्यो, चिता नावे प्राणरे ॥ रा० ॥ २६ ॥
 मरम वचन शर विधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥
 शर वेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥
 २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, वेदे हरी ततकालरे ॥
 खड्ग काढीने आहणयो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥
 ॥ रा० ॥ २८ ॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिं
 धु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने
 कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ निज नरपति सुतशु मीली,
 माने सबलो जुजरे ॥ उचे स्वरे कहे यादवा, काड म
 रोरे अवूजरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे काइ नवी ग
 यो, आपो वेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम साजली, या
 दव कोपे करालरे ॥ रा० ॥ ३१ ॥ हणो हणो करता धा
 इया, गोडता बहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति,
 युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सै
 न्य दीसोदिशे, जाजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि न
 वी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाय मुखे जिम तुलरे ॥ रा० ॥
 ॥ ३३ ॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अष्टावीसरे ॥
 गुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णजणी शुं जगीसरे ॥ रा०
 ॥ ३४ ॥ घोर जूज थयो तिहा, रामदले द्विवे खेचीरे
 अष्टावीस ए कुमारने, पिसे सुसल सीचिरे ॥ रा० ॥ ३५ ॥

मगधेश कहे गोवालिया, तुमहारे मुऊ नदरे ॥ इम
 कहीने मारी गदा, राम पाड आक्रदरे ॥ रा० ॥ ३६ ॥
 गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे ॥ हाहारव
 सूरकरे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥ रा० ॥ ३७ ॥ ते
 हवे देखी रामने, कोपियो श्रीगोपालरे ॥ गुणहत्तरी
 ये कुमारने, हणे सबल ततकालरे ॥ रा० ॥ ३८ ॥
 जरासिंधु चित चितवे, मरसे वलिइण ध्यायरे ॥ अ
 र्जुन मारयो शु हवे, कृष्ण हणु इम धायरे ॥ रा० ॥
 ॥३९॥ कृष्ण हणयो इम कटकमे, पसरी सघले वा
 तरे ॥ तेहवे मातलिने मने, विनति करे विरूयातरे
 ॥ रा० ॥ ४० ॥ साह्यज आपो प्रनु एहने, हरीनो
 सशय जायरे ॥ स्वढ करे यादव चमुरे, धरणी गग
 न शोनायरे ॥ रा० ॥ ४१ ॥ सूरि गुणसागर एक
 हि, वादु, अट्टावनमो ढालरे ॥ हिवे नवी तुझे
 साजलो, प्रनुलीला मुण मालरे ॥ रा० ॥ ४२ ॥
 दुहा ॥ नेम कथने मातुली हिवे, रथ फेरे रण मा
 ह ॥ तिर वाह सबलि करे, सामी सहेज उगाह ॥ १ ॥
 एकले पिण सामीये, जाज्या लाख नरिंद ॥ जरासिंधुने
 नवि हणयो, हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ कृष्ण हणे
 प्रति कृष्णने, राखे प्रनुनो मान ॥ रथ स्यु रोक्या स्वा
 मीये ॥ शत्रु तणा राजान ॥ ३ ॥ ताम उगोहा वुटिया,
 यादव नृप नय गेह ॥ अनुज हणियो पाडवे, लडतां
 रणमें जेह ॥४॥ सुख थयो बलदेव पुण, उपाडी निज

सेनानी शिसुपाल हिवे, हसतो जप वाणर, गोकुल
 न हुवे कान्ह ए, द्वात्रिंशो रण जाणरे ॥ रा० ॥ २५ ॥
 कृष्ण कहे हिवे नाशतु, नाश पवे अयाणरे ॥ लक्ष्मीया
 ने रण तु मिल्यो, चिंता नावे प्राणरे ॥ रा० ॥ २६ ॥
 मरम वचन शर विधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥
 शर वेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥
 २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, वेदे हरी ततकालरे ॥
 खड्ग काढीने आहणयो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥
 ॥ रा० ॥ २८ ॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिं
 धु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने
 कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ निज नरपति सुतशु मीली,
 माने सबळो जुजरे ॥ उचे स्वरे कहे यादवा, काइ म
 रोरे अवूजरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे काइ नवी ग
 यो, आपो वेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम साजली, या
 दव कोपे करालरे ॥ रा० ॥ ३१ ॥ हणो हणो करता धा
 इया, ढोढता बहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति,
 युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सै
 न्य दीसोदिशे, जाजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि न
 वी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाय मुखे जिम तुलरे ॥ रा० ॥
 ॥ ३३ ॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अडावीसरे ॥
 गुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णजणी शुं जगीसरे ॥ रा०
 ॥ ३४ ॥ घोर जूज थयो तिहा, रामदले हिवे खेंचीरे
 अडावीस ए कुमारने, पिसे मुसल सींचिरे ॥ रा० ॥ ३५ ॥

बल लेवा ए, उजा आकाशे बलदेवा ए, गयणे दे-
 वा ए जोवा मीलिया कौतकी ए ॥ हरीये तव सजा-
 री ए, ऊऊ मच्यो अति नारी ए, आज अटारीए
 देखी नाठा जोतकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे
 ए, फेरता ठल हेरे ए, बहु तेरे ए शस्त्रे ऊऊ करे स-
 हि ए ॥ नृप मागधीने काजे ए सबलपणे हरी राजे
 ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमही ए ॥ ८ ॥ म
 न विलखो अती थावे ए, जरासिंधु रीसावे ए, स
 वाइ ए चक्र सजारे एहवे ए ॥ चक्र हाथे आवे ए,
 गगधेश मन जावे ए, सजावे ए वचन कहे इम तेह
 वे ए ॥ ९ ॥ मथुरा माहि जारक ए, रहेतो करी घ-
 णी ठारक ए, कस मारकए आव्योतुं इहा एकलो
 ए ॥ देर पूर्वतु मातो ए, तिणे घणी मुज वातो ए,
 रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥ १० ॥ हिवे न
 मु कुलआरो ए, करवा टिपणो तारो ए, कहेवु सा
 रो ए रण साधेठे थइने जलो ए ॥ इम घणु ललकारी
 ए चक्र जमाडी नारी ए, नजचारी ए नाखे राखी
 आमलो ए ॥ ११ ॥ खेचर देखि त्रासे ए, सेना
 जन सहु नासे ए, तसु पासे ये सूरु पग माडी
 रह्यो ए ॥ चक्र उपद्रव टाले ए, पांम्व उजा निहा
 ले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥
 ॥ १२ ॥ गयणा गण गाजे ए, चक्र तणे आवाजे ए,
 विराजे ए आवी उजो हरी आगले ए ॥ बध्न परे

रीस ॥ जग करते आहण्यो, रणवोरी रीपु इम ॥ ५ ॥
 ढाल ५९ मी ॥ देखी दुरगध दुरथी, मुह मच-
 कोडे माणरे ॥ ए देशी ॥ हिवे मगधेठा नरिंदो ए, क
 हे सुण गोविंदोए, आनदो ए ताहरी मायाये वणो ए ॥
 हणियो कस जुजालो ए, हणियो तिमज कालो ए, ए
 जालो ए सघलोवे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिर्वायो र
 ण नाहि ए, उले सूर कहाहि ए, हिवे वाहिण जो जो
 हम खत्रि तणो ए ॥ तुज प्राण सेति ए, वे पाया जे
 ति ए सवि तेति ए, तिने मेलु तु धणी ए ॥ २ ॥ उ
 त्री तणी वाचा ए, पुराउ मन साचा ए ॥ ते काज ए
 जाण्या मानु गोवालिया ए ॥ हशी माधव इम जे-
 लेए, शु नूपति तु बोले ए, किण तोले ए साचा
 बोल सजालिया ए ॥ ३ ॥ हुतो माया जालो ए, नहि कूजो
 नूपालो ए, सजालो ए येतो रजवट आपणीये ॥ आप
 ण अधीकाई ए, ते परने न कहाई ए, पिण जा-
 इ ए तु जोले वडाइ हमतणी ए ॥ ४ ॥ तुज आग-
 ल ऊपावु ए, तो हु कान कहावु ए, सराहु ए तुम
 पुत्री वाता खरी ए ॥ इम मरमनी घाणी ए ॥ हरी मु-
 खयी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रो
 से करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मिली सर गेडे ए, रणने हो-
 डा होडे ए, तिम त्रीने ए तिर घनुप्य एक एकना ए ॥
 बेहु सबल बिहावे ए, जल रासि खोजावे ए, कपा-
 वे ए गीरी खंचर नामना ए ॥ ६ ॥ देव व्यतर

ए ध्यान रुद्र नरेशमो ए ॥ १९ ॥ जय जय शब्द
 करत ए, सुरनर मिला हरखत ए, करतत ए फूल व
 र्णा हरी उपरे ए ॥ यादव कुल विशाल ए, उपना ए
 ह नूपाल ए, महिमाल ए जिणे दिठां दिलडु ठरे ए ॥
 ॥ २० ॥ समुद्रविजे सहु राय ए, करे दिलासा जाय
 ए, करे राय ए प्रेत कार्य जरासीधुनो ए ॥ ए गुण
 सठमी ढाल ए, हरी हलधर जस माल ए उजाल ए,
 गुणसागर गुण एहनो ए ॥ २१ ॥

दुहा ॥ नूप विणास्यो नूजवले, किधो जारे का
 म ॥ सुरनर जय जय उचरे, वाजे सुजस ददाम ॥ १ ॥
 घर घर वार वधामणा, घर घर मंगल चार ॥ गीत
 घणा हरजी तणा, गावे गुणी अपार ॥ २ ॥

ढाल ६० मी ॥ जुमखडानी देशी ॥ रगीला खेलणा
 ॥ ए देशी ॥ नरेश्वर जीत्यारे, जीत्यो जल मडाणा ॥ न० ॥
 राय सकल आधी नम्यारे, दिधा बहु सनमान ॥ न० ॥ १ ॥
 पूज्यो मातली सारथीरे, स्वर्गे पोहत्यो जाय ॥ न० ॥
 स्वामि प्रशसा साजलीरे, सुरपतिने सुख थाव ॥
 न० ॥ २ ॥ सहदेवादिक सुत जलारे, राजग्रही था
 पत ॥ न० ॥ महानेमी कुमर जणीरे, सौरीपुर आपत
 ॥ न० ॥ ३ ॥ पाडव राघ परगडारे, दिधा वठित देस
 न० ॥ अचरा सहुने सामीजीरे, आपे देश विशेष ॥
 न० ॥ ४ ॥ चक्र वले चित चावशुरे, तीने खड अ
 खड ॥ न० ॥ साधीने प्रनु आवियारे, कोटी सिलाए प्र

सुहावे ए, देखि हरी मन जावे ए, लेद वधावे ए च
 क्र जणि मुक्ताफले ए ॥ १३ ॥ यादव कटक तेवारो
 ए, हरख्यो सह ससारो ए, नरनारी ए मिलिओव
 करे घणो ए ॥ सूर मिलिगुण गावे ए, फूल पगर
 वरसावे ए, जल जावे ए करे महिमा हरजी तणी ए
 ॥ १४ ॥ गगन तले इम वाणी ए, कहे प्रगट्यो गु
 ण खाणी ए, महिराणी ए वासुदेव नमो सहि ए ॥
 हरख्या यादव रायो ए, पढ्या निशाणे घाठ ए, म
 नराठ ए जरासिंधु चिता लहि ए ॥ १५ ॥ हरी क
 हे करो राज ए, में गइ किनी आज ए सुण रा
 ज ए, आण वहे तुहारी ए ॥ हठ अधीक मति
 ताण ए, जीव तणा कल्याण ए, इम वाण एवी
 सुणी कोप्यो प्रतिहरी ए ॥ १६ ॥ रे मूरख स्यु जा
 खेए, अणघटतु इम जाखे ए, दिन जाखे ए किम
 खत्री रण, आवियो ए ॥ पुण्य वित्या इणि वार ए,
 तो कुण राखण हार ए, निरधार ए टेक न मुके
 राजीयो ए ॥ १७ ॥ चक्र मेले हरी रायए, रिपु ज
 णी मन लाय ए, ते जावेए लेवा शीर वैरीतणो ए ॥
 मोटाने शिर आइ ए, पुण्य खुटा इम ध्याइये, सु
 णो जाइ ये शस्त्र परायो आपणो ए ॥ १८ ॥ चक्र
 आयो जिहा राज ए, करतो अधिक अवाजा ए,
 तजी माजायो शिर वेदे मगधेशनो ए ॥ पामी मर
 ण अकाम ए, उपन्यो चौथे ठाम ए, जाणो ताम

नारे, पति शेव्यानो लोज ॥ न० ॥ १६ ॥ ए च्यारे
 आदे करीरे, रमणी रूप अपार ॥ न० ॥ श्री वल्लभ
 द्रजी तणीरे, नारी आठ हजार ॥ न० ॥ १७ ॥ इद्र
 त्रणा सुख जोगवेरे, पूरव पुण्य प्रकार ॥ न० ॥ आ
 नद रग विनोदमारे, पाले राज मुरार ॥ न० ॥ १८ ॥
 दुर्योधन नामे जलोरे, कुरु जगलनो राय ॥ न० ॥ दू
 त तेहनो आवीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय ॥ न० ॥ १९ ॥
 कागद दुर्योधन तणारे, माहे एह विच्यार ॥ न० ॥
 म्हारे तुम ठाकुर धणीरे, थासु प्रेम अपार ॥ न० ॥
 ॥ २० ॥ प्रेम वधामण कारणेरे, मुजने उपजी एह ॥
 न० ॥ गोरुना सबधधीरे, निश्चे किजे नेह ॥ न० ॥
 ॥ २१ ॥ थारे पटराणी तणारे, पूत पनोतो होय ॥ न०
 ॥ मुऊ नारी कुमरी जणेरे, व्याह करेवो सोय ॥ न० ॥
 ॥ २२ ॥ दैवजोगे एहवो हुवेरे, मुऊ त्रिय जणे कु
 मार ॥ न० ॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपिण व्याह
 विच्यार ॥ न० ॥ २३ ॥ हरी हरखी बोल्यो सहिरे, ए
 वारु विधी वात ॥ न० ॥ दोय घरा वधामणारे, आ
 नदमे दिन जात ॥ न० ॥ २४ ॥ ए साठमी ढालमेरे
 श्रीहरीजी सुख राज ॥ न० ॥ श्रीगुणसागर सूरिजीरे,
 सबही विधी सुज साज ॥ न० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ दोगधक सुर निपरे, विलसे जोग अपार ॥
 रुखमणी नरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥ १ ॥ जा
 माने मन जावतो, जानु जलो गुण जाण ॥ एहनो पि

चढ ॥ न० ॥ ५ ॥ उचि जोजन एकर्मारे, लात्री चौ
 डी जाण ॥ न० ॥ च्यार आगुल धरती वकीरे, उपाडी
 वल प्रमाण ॥ न० ॥ ६ ॥ वरस आठ लगे सहीरे,
 करता दिगजय देख ॥ न० ॥ खेम कुशल घरे आवि
 यारे, तेज प्रताप विशेष ॥ न० ॥ ७ ॥ द्रु सुनद
 धनुष्य जलोरे, चक्र सुशक्तिसु चग ॥ न० ॥ शख गदा
 हरजी तणारे, साते रत्न शुचग ॥ न० ॥ ८ ॥ सहस
 सहस वर देवतारे, रत्न तणा रखवाल ॥ न० ॥ ए आठे
 हजारशुरे, सेवीजे गोपाल ॥ न० ॥ ९ ॥ रत्नशु मा
 ल गदा जलीरे, हलमुसल वर रत्न ॥ न० ॥ हलधरना
 ए जाणीएरे, च्यार रत्न सुयत्न ॥ न० ॥ १० ॥ य
 द्द हजारे शेवीएरे, च्यारे श्री बलदेव ॥ न० ॥ महीय
 ल महीमा महमहेरे, सारे सुरनर शिव ॥ न० ॥ ११ ॥
 हयवर गयवर रथवरुरे, सख्या लाख बयाल ॥ न० ॥
 पायक पौढ प्रतापशुरे, कोडी कह्या अडताल ॥
 न० ॥ १२ ॥ सोल सहस सोहामणारे, देश महा
 अजीराम ॥ न० ॥ राजाठे पिण तेतलारे, शेवक रूप स
 काम ॥ न० ॥ १३ ॥ सत्यनामाने रुकमणीने, जाबु
 वती गुण जाण ॥ न० ॥ गौरी गधारी जलीरे, पदमा
 वती प्रधान ॥ न० ॥ १३ ॥ सुसीमा लखमणा कही
 रे, आठे नारी उदार ॥ न० ॥ सोल सहस रमणी तणारे,
 माधवजी जरतार ॥ न० ॥ १५ ॥ बधुमतीने रेव
 तीरे, सीता सुंदर शोज ॥ न० ॥ वर राजीव सुलोच

क स्वर जणी, आवा केरो मोर हो ॥ जा० ॥ ९ ॥ क
 हगे ते सहसे सही, आपा अलगी एह हो ॥ जा० ॥
 रुखमणी तो रस रगमे, वचन वदे ससनेह हो ॥ जा०
 ॥ १० ॥ माहरे तो जामा वडी, जामा जेह सुहाय
 हो ॥ जा० ॥ सो में करवो सहि करी, कहे जामासु जाय
 हो ॥ जा० ॥ ११ ॥ हरी हलधर साखी दिया, सो का पा
 डी होड हो ॥ जा० ॥ दीन न पिगाएयो आपणो, किम
 पोहोचे मन कोड हो ॥ जा० ॥ १२ ॥ कोमल सेजे सो
 वता, रजनीने अवनान हो ॥ जा० ॥ रुखमणी सुपन
 विलोकीयो, पेहेले देव विमान हो ॥ जा० ॥ १३ ॥ वि
 जो कुजर इद्रनो, देखी सुपन ए सार हो ॥ जा० ॥ आ
 नदि मन आपणे, विनवियो जरतार हो ॥ जा० ॥
 ॥ १४ ॥ कृष्ण कहे कामनी सुणो, सुपन तणो प्रमाण
 हो ॥ जा० ॥ होशे कुवर कुलतिलो, कोटि कला गुण
 जाण हो ॥ जा० ॥ १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विशे, आ
 इ उपजे जेम हो ॥ जा० ॥ कामदेव माता उदरे, आ
 वी उपनो तेह हो ॥ जा० ॥ १६ ॥ मधु नूपतिनो जी
 व जे, जणनीने सुखकार हो ॥ जा० ॥ स्वर्ग वारमां
 वीचथी, आवी लीयो अवतार हो ॥ जा० ॥ १७ ॥
 जामाही सुपना जला, देख्या पुण्य प्रकार हो ॥ जा० ॥
 नूपतिने जाइ कह्यो, नूपति कह्यो सुविचार हो ॥
 ॥ जा० ॥ १८ ॥ स्वर्ग थकी चवी आवियो, ए पिण
 जीव उदार हो ॥ जा० ॥ होड जीतवा कारणे, आशा

ए सवधवर, साञ्जवो धरी कान ॥ २ ॥ नामाने आ
रति घणी, नामा करे उपाय ॥ अमरख आपणम प
रु ए जग प्रकट कहेवाय ॥ ३ ॥

ढाल ६१ मी ॥ हमीरानी देशी ॥ नामा ठल ता
के घणा, रुखमणीना नीसदिश हो ॥ नामा० ॥ वा
ल न वाकी करी शके, जो सवलो जगदीश हो ॥
॥ नामा० ॥ १ ॥ दुर्योधननी वातनो, नामा जेद लहाय
हो ॥ नामा० ॥ रुखमणी दु ख देवा जणी, जाण्यो एह
उपाय हो ॥ नामा० ॥ २ ॥ जेहनो कुवर परणशे, सो
क्य तणा शिर केश हो ॥ नामा० ॥ तेहना पग तले
माडवा, ए दु ख ठाम विशेष हो ॥ नामा० ॥ ३ ॥ वये
करी तनु करी हु वनी, माहरे होशे नद हो ॥ नामा० ॥
रुखमणीने होशे नहि, आनदे आनद हो ॥ नामा० ॥
॥ ४ ॥ इम जाणी रुखमणी कन्हे, वेगे मोकली दासि
हो ॥ नामा० ॥ वात जणावी रुखमणी, दीधी अति सावा
श हो ॥ नामा० ॥ ५ ॥ मे अनुमाने बिचारीयो, नामा जोली प्रा
हि हो ॥ नामा० ॥ खल खावानो मोहलो, शाह सुदर नाम
हो ॥ ६ ॥ उचा उची वाठना, नीचा नीची जाण हो
॥ नामा० ॥ उचा नीची मति जजे, तो होइ उच्चिंति हा
ण्हो ॥ नामा० ॥ ७ ॥ सुकना माहि शिरोमणी, वाणी
सुकन सुहाय हो ॥ नामा० ॥ सुख दुखना अनुसारची,
वाणी उपजे आय हो ॥ नामा० ॥ ८ ॥ हाम अठे जो
होरनी, का नवी पाडे उर हो ॥ नामा० ॥ का नखे पि

एटले जगंपति जागीयो, उठि बेठो होय हो ॥
 जा० ॥ चिरजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सो
 य हो ॥ जा० ॥ ३० ॥ देव वधाइ पाइये, रुखमणी जा
 यो नद हो ॥ जा० ॥ नदन निरखण सारीखो, दरशन
 परमानद हो ॥ जा० ॥ ३१ ॥ राजचिन्ह गानी करी,
 अवर अनोपम वस्तु हो ॥ जा० ॥ पुत्र वधाइआं जणी,
 आपी राय समस्तु हो ॥ जा० ॥ ३२ ॥ जाणी सचल पाठ
 ले, वाकि ग्रीवे जोय हो ॥ जा० ॥ नामा सुत जाया तणी,
 लीये वधाइ सोइ हो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ एतो एकसठमी
 कही, ढाल जलेरी ह्येय हो ॥ जा० ॥ कहे गुणसागर दो
 य घरां, आनंद बरत्यो जोय हो ॥ जा० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कृष्ण नरेशर इम जणे, शेवक सुणो वि
 चार ॥ मत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मतलावो वार ॥ १ ॥
 मत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश ॥ पुत्र
 महोत्तव पुर तणी, शोभा करों सुविशेश ॥ २ ॥

ढाल ६२मी ॥ राजा दसरथ दिपतो ॥ ए देशी ॥ पुत्र
 महोत्तव किम्पिण, मिलीयो सहु परीवारोरे ॥ रुखमणी
 सतनाभा तणे, मदीर हर्ष अपारोरे ॥ पु० ॥ याचक
 जन जुगतशुं, दिजे वगीत दानोरे ॥ करुणा जावे कृ
 ष्णजी, मूक्या वधीवानोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ तोरणनी र
 चन. जलौ, उपर कलस उदारोरे ॥ लहलहति ध्व
 ज आति घणी ॥ दिसे घर घर वारोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥
 ठोके रचना केलिनी, नारी जणे गुण गाथोरे ॥ आरु

धरे अपार हो ॥ जा० ॥ १९ ॥ पुण्य प्रमाणे डोहला,
 गुरु वादे पोशाल हो ॥ जा० ॥ दान शीयल तप जात
 ना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ जा० ॥ २० ॥ श्री जि
 न मेवा साचने, सत्रर साये प्रित हो ॥ जा० ॥ आश्र
 वा अलगी रहे, एतो मोठी रीत हो ॥ जा० ॥ २१ ॥
 उदर वसता गर्ज ए, रुखमणी मन उल्हास हो ॥ जा० ॥
 आरीसा प्रतीविवज्यु, पेट न पीडा तास हो ॥ जा० ॥
 ॥ २२ ॥ गर्ज ववे दीन दीन प्रत्ये, उदर न वावे र
 च हो ॥ जा० ॥ त्रवलि पेटे विलोकता, शोक लिरुयो
 परपच हो ॥ जा० ॥ २३ ॥ एठे जूठा पट पटा, नहि
 गर्ज अहिनाण हो ॥ जा० ॥ पिण तो माथो मुक्ता,
 जास सयल सयाण हो ॥ जा० ॥ २४ ॥ साचाने सो
 च नहि, जूठा सोच अनेक हो ॥ जा० ॥ साचा सर
 ल सजावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ जा० ॥ २५ ॥
 दिन पूरे सुत बनमीयो, शुच वेला शुच वार हो ॥
 ॥ जा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइयो, परीयण हरख
 अपार हो ॥ जा० ॥ २६ ॥ पुरुष वधाउ आविया,
 नृपति पासे जाम हो ॥ जा० ॥ प्रजुजी पोढ्यो पे
 खियो, पग तले बेठा ताम हो ॥ जा० ॥ २७ ॥ जामाना
 पिण आविया, मोठा पुरुष प्रधान हो ॥ जा० ॥ शीराणे
 ते जह क्रीयो, बेसणनो मडाण हो ॥ जा० ॥ जेहना ठा
 कुर जेहवा, तेहवा चाकर होय हो ॥ जा० ॥ जो नृपति
 जो मानवी, एतो परतह जोय हो ॥ जा० ॥ २९ ॥

एँ ॥१॥ जली रीत ए पारको, दु ख देख्यो नवी जाय ॥
होइ तो जलपण करे, नहीतर अलगो थाय ॥ २ ॥

ढाल ६३ मी ॥ कदीए भिलशेरे मुनिवर एहवा
॥ ए देशी ॥ कर्म आगे बलीयो कोइ नही, रावें रं
क एक साथेरे ॥ रुखमणी सुतसुं सुख निद्रा जजे,
किशुं करे जगनायोरे ॥ क० ॥ १ ॥ रमणी रंगेराती
ज गावही, गावे गीत उदारोरे ॥ वाजे मादल धौधौं का
रशुं, नाचे पात्र अपारोरे ॥ क० ॥ २ ॥ सुजट घणा घ
र पासे मूक्या, रखवालीने काजोरे ॥ विविध प्रकारे
आयुं धरिने, सूर रह्या सजी साजोरे ॥ क० ॥ ३ ॥
करी हुशीयासी कृष्ण नेश्वरु, सुख निद्रावसे थाइरे ॥
अन्य कथातर एतले कितीयो, रुखमणीने दुख दाइरे
॥ क० ॥ ४ ॥ हेमरथ राजा आगे जे हुतो, इहुप्रजा
तस राणीरे ॥ मंधु राजाए जोर करी घणु, सो राणी घ
र आणीरे ॥ क० ॥ ५ ॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो, ता
पसना व्रत धारीरे ॥ सूरगति पदवी लाधी रुअमी,
करणी तो फन कारीरे ॥ क० ॥ ६ ॥ बेशी विमाने सो
सूर एकदा, निज लीलाए जायोरे ॥ रुखमणी मंदीर
उपर आवीयो, एतले विमान थजायोरे ॥ क० ॥ ७ ॥ दे
व विशेषे चिंतातर थयो, किम मुळ गतीनो जंगोरे ॥
का को हेठेरे दुखीयो जीवअठे ॥ केको शत्रु विरंगोरे ॥
क० ॥ ८ ॥ केको भित्रज कपे पूरीयो, चेंरम शरीरी दे
होरे ॥ मोटा मुनिवर सुरगती जगनो, कारण जाख्या

ए कारण साचवे, कुरुमना दिष्टे वाटेरे ॥ पु० ॥ १ ॥
 गुहीर स्मरे तत्र गौरमी, गावे भगल अगारे ॥ घ
 ल दिष्टे तस प्रागणे, वरते जय जय कारेरे ॥ पु० ॥
 ॥ ५ ॥ सह सुहागण सामटी, नागे आरुघाणो लावे
 रे ॥ दोय घरा अति पूरतो, ते तो आदर पावेरे ॥
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ डोल ददामा डडवडे, सरणाड मुख का
 रोरे ॥ वाजा वाजे अति घणा, नाचे पात्र अपारारे
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ दिजे सोना सावटु, वागा वेस विशेषेरे ॥
 दिजे हयवर हायीया, मांही माहि आदिखेरे ॥ पु० ॥
 ॥ ८ ॥ चुवा नतीजी जाणेजी, बेटी बहुने बोलावेरे ॥ रित
 चात अने प्रितशु, आप आपणी पावेरे ॥ पु० ॥ ९ ॥
 सक्कन सह सतोपीया, सतोप्या सह जाइरे ॥ यथा यो
 ग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु० ॥ १० ॥
 पुज्य पुरुष ते पूजीया, सह गुरु सेवा साधीरे ॥ सा
 हामी वडल मन मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥ पु० ॥
 ॥ ११ ॥ हुस मनावी अति घणी, खाति न राखे का
 इरे ॥ पिण तो देवा उपहरया, कोण सके न रहाइरे
 ॥ पु० ॥ १२ ॥ एहवे रग विनोदमा, करता कोडी प्रकारेरे
 ॥ पाच दिहामा बोलीया, ठीनो अधीकारेरे ॥ पु० ॥ १३ ॥
 एतो वासठमी नली, ढाल कहावे सारोरे ॥ गुणसागर
 कहे साजलो, केम होवे अपहारोरे ॥ पु० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ रुखमणी नदन अपहरण, महा वडो दु ख
 ज्ञण ॥ सूर्ज आप आथमी गयो, पसरयो जूग तम अ

दृष्टा ॥ पुण्य सवाई जेहनो, तेहनो पुरो आय ॥
 बाल न बाकी करी शके, जइ रुसे जमराय ॥ १ ॥ जा
 वे को जल पण ग्रहो, ग्रहो बुराषण कोय ॥ सरज्याना
 अनुसारीथी, जलो बुरो जग होय ॥ २ ॥ जात मात ज
 लवाहिया, कस कर्ण नीज माय ॥ पिण ते शुच कर्मा
 थकी, हुआ बडेरा राय ॥ ३ ॥ जीवामे तो सिलातले,
 मारे प्रभु ते जोय ॥ मदन सगरना नंद ज्यु, करता
 करे सो होय ॥ ४ ॥ रुपाचल दक्षिण दिशि, मेघकुट पु
 र नाम ॥ जमसवर राजा जलो, राज करे गुणधाम
 ॥ ५ ॥ तेहने घर जल नामनी, कनकमाला सुकुमाल
 ॥ वैसी विमाने दपति आय गया ततकाल ॥ ६ ॥
 बालक मुखने वायरे, उची नीची थाय ॥ प्रौढि शिला
 ते परगडी, ताम विलोकी राय ॥ ७ ॥ उपाडी अल
 गी करी, दीठो देव कुमार ॥ सब विध सुदर मनोहरु,
 करतो हास्य अपार ॥ ८ ॥

ढाल ६४ मी ॥ पवडीयाकी देशी ॥ मो मन मो
 ह्यो मोहना, मोहन रूप रसाल हो ॥ खेवर खेचरणी
 सु कहे, लाल सबे विधी लाल हो ॥ मो० ॥ १ ॥ को
 मल कुनल वाकना, शाम महा सुकुमाल हो ॥ आठ
 मकेरो चदलो, जाल जलो सुविसाल हो ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ चूह जमरकी वपमा, कर्ण सुवर्णाकार हो ॥
 नयन कमल दल पाखडी, सुक नाशा सुविचार हो ॥
 मो० ॥ ३ ॥ मुख जाणे पुरो शशी, आवे लाल कपो

एहोरे ॥ क० ॥ ९ ॥ ज्ञान करी तव देखे देवता, मधु
 राजानो जीवोरे ॥ रुखमणी पासे बालक पेखायो, जाग्यो
 धेख अतिवोरे ॥ क० ॥ १ ॥ इण पापीडे मदमाते घणु,
 मुज्जु कियो जोरोरे ॥ एहने ते फंन आज दुखामु,
 कियो पाप अघोरोरे ॥ क० ॥ ११ ॥ तवं तो ए नृप
 हुतो समर्थ, हु असमर्थ ते वारोरे ॥ अत्र तो हुवु सम
 र्थ अति घणु, ए असमर्थ अपारोरे ॥ क० ॥
 ॥ १२ ॥ एम जाणीने वेपे द्वेषुं, लिगे बाल कुमारोरे
 ॥ रुखमणीनी गती आगेथी ॥ किणहि न जाणी
 सारोरे ॥ क० ॥ १३ ॥ किउ किजेरे साजन सुजठमु, आ
 डमर उगहोरे ॥ सहु तारागण अवर देखना, चद्रप्रशी
 जे राहुरे ॥ क० ॥ १४ ॥ आशा को केहनी मति करो,
 आशा प्रचुने हायोरे ॥ रुखमणी सुति कुण मनोरथे,
 जाग्या आथन साथोरे ॥ क० ॥ १५ ॥ सू आकाशे
 जाइ चितवे, कुण कुण जाणस्ये मारुरे ॥ चरम शरी
 री पूरो आउखो, ए जिन वचने वारुरे ॥ क० ॥ १६ ॥
 तक्कक पर्वत खदीराअठवीमे, आयो ते ततकालोरे ॥
 बावन हात मोटी शीला तले, सर चाप्यो ते बालोरे
 ॥ क० ॥ १७ ॥ निज कून कर्मनो फल नोगवे, एम
 कही गयो तेहोरे ॥ पुण्य विशेषे नख शिख लगे सहि,
 आलन आवी देहोरे ॥ क० ॥ १८ ॥ एतो त्रेसठमी
 ढाले जाणीयो, मदन हरण अवीकारोरे ॥ श्री गुण
 सागर ए उपदेश अठे, पुण्य वडो ससारोरे ॥ क० ॥ १९ ॥

मुह अने शीर चुवता, राजा अति सुख थय हो ॥
 मो० ॥ १५ ॥ राजा राणीसु कहे, तुऊ तूठो कीरतार
 हो ॥ सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीधो एह कुमार हो
 ॥ मो० ॥ १६ ॥ राणी राजासु कहे, थारे बहुला पूत
 हो ॥ सघलामे ए नान्हडो, किसो वधे घरमूत हो ॥
 मो० ॥ १७ ॥ राजा मुख तबोलशु, तिलक कीयो शिर
 ताम हो ॥ युाराजा प्रद थापियो, राणी जाणी उल्ला
 स हो ॥ मो० ॥ १८ ॥ दुर्जन रुठो स्यु करे, जेहना शुन
 अकुर हो ॥ मयगल जिहा जिहा सचरे, तिहा तिहां
 वाधे नूर हो ॥ मो० ॥ १९ ॥ राणी बालक फीलीधो,
 जाणी जाचो रयण हो ॥ प्राण थकी म्यारो खरो, पा
 मी अथीको चयन हो ॥ मो० ॥ २० ॥ राजा मदिर
 आवीयो, मिलियो सहु परीवार हो ॥ राणी नदन जा
 इयो, वरत्यो जय जयकार हो ॥ मो० ॥ २१ ॥ महा
 महोवत्र माडीयो, वाजे ढोल निसाण हो ॥ मगल गा
 वे गोरमी, दीजे वठित दान हो ॥ मो० ॥ २२ ॥
 कीधी शोजा पुर तणी, मिलीया सहु साज हो ॥ व
 दीखाना बोडीया, कीधा सीधा काज हो ॥ मो० ॥
 ॥ २३ ॥ वारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार
 हो ॥ पर दमवनि कारणे, श्रीप्रद्युम्न कुमार हो
 ॥ मो० ॥ २४ ॥ जिम जिम वाधे वधे करी, तिम ति
 म वाधे जर हो ॥ हयवर गयवर साहेवी, क
 ण कचन जरपूर हो ॥ मो० ॥ २५ ॥ कमल कमल

ल हो ॥ दात कली दाडम तणी, अधर प्रवाल अमो
 ल हो ॥ मो० ॥ ४ ॥ ग्रीवा कन्धु सारखी, उनत अंम
 उदार हो ॥ कमलनाली अनिहारडे, वाह तणो वि
 स्तार हो ॥ मो० ॥ ५ ॥ उदर अनोपम शोचतो, क
 टि केहरीको लरु हो ॥ जघा गयगर सुनसी, तनभे
 को न कलरु हो ॥ मो० ॥ ६ ॥ सोवन वान सुहाम
 णो, चचल पाणी ज्यु पाय हो ॥ कामदेव ए उपज्यो,
 शोना कहि न जाय हो ॥ मो० ॥ ७ ॥ राता
 सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अत हो ॥ अधर
 होठ नख तालुठ, जिहा एनो ए कत हो ॥ मो० ॥ ८ ॥
 जनन ए खट वे सहि, कक्षा कुख लजाट हो ॥ खाग
 जाक उचो हियो, घडीयो देवे सुघाट हो ॥ मो० ॥ ९ ॥
 दिव्य पचे देखीए, नयणा सरने वाह हो ॥ नास्या थ
 माने हडवची, लात्रि न नमे वाह हो ॥ मो० ॥ १० ॥
 सोद्धम पच प्रशसीए, पर्वतरने केश हो ॥ नह देह
 दशन वली, सुद्धम मृदु सुविशेष हो ॥ मो० ॥ ११ ॥
 लघु ग्रीवा जघा, नलि, लघुहि पुरुषाकार हो ॥ स्वर
 गजीर सराहीए, नाजी सत्व सुखकार हो ॥ मो० ॥ १२ ॥
 जाल विशाल वखाणियो, पोहले माये इश हो ॥ पोह
 लि वाती वे घणी, लुद्धण ए बत्रिस हो ॥ मो० ॥ १३ ॥
 सर्व गुणाकर साचलो, सर्वहि शोच नीध्यान हो ॥
 दैत्य महा रिपुजी तणी, दर्शन अमृत पान हो ॥ मो० ॥
 ॥ १४ ॥ हेज घणे उठाइयो, लीधो कठ लगाय हो ॥

नौं विण बाधवा, घर सुनो विण पूत ॥ पूत
 पनोता बाहीरो, कुण राखे घर सुन ॥ वि० ॥ ६ ॥
 बहुले मिलीए साजने, होत घर्णा गुणग्राम ॥ पूत
 पनोता बाहीरो, कुण लेवावे नाम ॥ वि० ॥ ७ ॥ न
 छी सपूती पखणी, इडा पालणहार ॥ चुंगन लावे
 रंजी चांचमी, उलीए मुख पसार ॥ वि० ॥ ८ ॥ हुं
 का सरजी मनुष्यणी, रे कूना किरतार ॥ गर्ज मा
 हि गाली नही, आपी आरति अपार ॥ वि० ॥ ९ ॥
 जन्म समे मुइ नही, जोलीं न पडी तूट ॥ रोग
 तेणो कारण लही, न मुइ हिर्यना फूट ॥ वि० ॥ १० ॥
 बाल रगना ख्यालमें, पाती लेवा जात ॥ हु कानड
 शी एह रुये ॥ मरी जाती विललात ॥ वि० ॥ ११ ॥
 तो का हु आवीं हरी घरे, का पाम्यो बहु मान ॥ सो
 क सालथी सहेजाहि, बूटी जाता प्राण ॥ वि० ॥ १२ ॥
 तो का सपना देखिया, का जायो वरनदा ॥ नद तो
 आनद करी गयो, किशुं करु मतिमद ॥ वि० ॥ १३ ॥
 का हुं अवीकी बजवजी, का में पाडी होन ॥ मु
 ऊ दुखिपारीना सखी, कोइ न पुगी कोड ॥ वि० ॥
 ॥ १४ ॥ बहडी तो हु गीरवरा, नाखे तोरे पयाल ॥ आ
 वी वावि आगणे, तबही लियो उलाल ॥ वि०
 ॥ १५ ॥ रे पापिष्ट अनिष्ट तु, रे दुष्टनिठोर ॥ देव द
 या नाहे तुजकने, राक साये शो जोर ॥ वि० ॥ १६ ॥
 हुं जाणीयी माहरे, सहु वाता सुधिसाल ॥ खार धरी

जिम सचरे, जमरो जोगी नाम हो ॥ हाथोहाथे म
चरे, तिम ए कुंजर काम हो ॥ मो० ॥ २६ ॥ स्वघा
आदर पामीए, एतो सुधी बात हो ॥ पिण जे पर
घर सादरो, ए अधिकी अखीयात हो ॥ मो० ॥ २७ ॥
ढाल न नी चोसठमी, खेचर घर जल्दास हो गुणसागर
दिपठ जिहा, तिहा तिहा करे प्रकाश हो ॥ मो० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ श्री पद्मम् हरया पिठे, त्रितक नित्यो जे
ह ॥ मक्षेने तुमे साजलो, मुज कहता जवि तेद ॥
॥ १ ॥ ततक्षण जागी रुखमणी, बाल न देखे पाम् ॥
हियडे जाल उठी घणी, आवी मूर्छा तास ॥ २ ॥ स
चेतन किधी सति, फिरी फिरी मूरगाय ॥ कुमर न सो
ध्यो प्राइयो, करुणापणे विललाय ॥ ३ ॥

ढाल ६५ मो ॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ ए
देशी ॥ हाताशु हियडे हणे, कुरलेसा असराल, दि
न वचन जाखे घणा, किधु किस्पुरे दयाल ॥ १ ॥
विलवे राणी रुखमणी ॥ ए आकणी ॥ रे सुदर सुकुमाल
किहा गयो मुजने तजी, ए दुख जालकराल ॥ वि०
॥ २ ॥ उडी उठे कुर करी, वेदन सहि न जाय ॥
जाया नुज सम को नही, जे देख्या सुख थाय ॥ वि०
॥ ३ ॥ गुडथी मीठी खाडि ए, खांडा साकर जोय ॥ साक
रथी अमृत जलो, पूत न पुगे कोय ॥ वि० ॥ ४ ॥ पू
त पनोतीमा गणे, पूत सपूति नाम ॥ ए मेरे अजतणी
जूनतणी ॥ विण पूताए, काम ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ दिश स

॥ वि० ॥ २८ ॥ रुखमणीने दुखे सहु दुखी, कृष्णे सु
 एयो तव सोर ॥ धर्मी आव्यो उतावलो, ग्रहो ग्रहो
 सुत चोर ॥ वि० ॥ २९ ॥ कृष्ण हिये दु ख सर्वरी, त्रि
 यसु कहे सुविचार ॥ नदन मीलशे ताहरो, करशुं
 सोइ प्रकार ॥ वि० ॥ ३० ॥ जे पाखरीया परगडा शो
 धन काजे सोय ॥ मोकलीया फीरी आवीया, काज
 न सरीयो कोय ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सुसति किधी सुदरी,
 वारु वचन कही वाण ॥ एतले चाली आवीयो, ना
 रद पुण्य प्रमाण ॥ वि० ॥ ३२ ॥ ढाल एतो पासठ
 मी, विजोगणीए नाम ॥ गुणसागर सुज कर्मथी, स
 रसें सघळा काम ॥ वि० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नारद जाखे सुण सुता, आरती मं कर ली
 गार ॥ तेहने आरती शु करे, जेहनो हरी नरतार
 ॥ १ ॥ जे तुऊ कुखे उपज्यो जेहनो माधव तात ॥
 न मरे उठे आउषे, एनिश्चे विधी वात ॥ २ ॥ पूर्व नवा
 तर वैरीए, किधोठे अपहार ॥ दिन थोमे शोधो करी,
 मेलु आणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं.
 तोशु माहरो नाम ॥ जामाना मन जावता,
 जाणे सरया सब काम ॥ ४ ॥ ज्ञान विना निश्चे न
 ही, ऊलफलीया शु याय ॥ श्रीमधीर स्वामी कने,
 चाली गयो ऋषीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी,
 प्रचुना प्रणमी पाय ॥ जीड जाणी नाणस तणी, रह्यो
 तखते तेले जाय ॥ ६ ॥ लघु काया करमे करी, जाणीने

छेदी सही, वैव मनोरथं माल ॥ वि० ॥ १७ ॥ पुढी
 वेदन जेदना, में किथी बहुवार ॥ सर फोड्या इह
 सोसव्या, अणगल निर अपार ॥ वि० ॥ १८ ॥ आ
 ग उरुहावी निरशु, दव दीधा वननाहि ॥ वाय
 कराव्या विजणे, मनाव्या सढ प्रांही ॥ वि० ॥ १९ ॥
 फुलण मसली फवशु, चाप्या नव अकुर ॥ फननो
 लेगा काणें, बेठी होइ सुर ॥ वि० ॥ २० ॥ वेद्री
 ना वध किया, मारी जून लिख ॥ किडी नगरा वाहि
 या, ते मुज लागी शिख ॥ वि० ॥ २१ ॥ ढाणे
 विंठी चापीया, लोक वताया सांप ॥ माला तोड्या वि
 रुकना, लाग्या मोटा पाप ॥ वि० ॥ २२ ॥ पशु पं
 खणी मनुष्यणी, बाल विछोहो दिव ॥ उन्हो ज
 ल दर पूरीया, प्रोढा पातिक किध ॥ वि० ॥ २३ ॥
 मठी जाल पसारीया, हरण पाड्या पास ॥ कर्म
 कसाइना किया, गो बकरा विणास ॥ वि० ॥ २४ ॥
 मोसानभं प्रकाशीया, नारुया कूडा अपराव ॥ प
 रने मोड्या करकमा, ते में ए फल लोध ॥ वि० ॥ २५ ॥
 चोरी कियो परतणी, लीधा हिरा लाल ॥ लाल निरो
 पन निगम्यौ, हें ई रही बेहाल ॥ वि० ॥ २६ ॥
 साच न राख्यो शिलनु, जेहथी लहीए लील ॥ ज
 गमांही अपजर्म लियो, शेकी शेकी कुशील ॥ वि० ॥
 ॥ २७ ॥ क्लि० लोटे उटे जइ, क्लि०में चढे चोवारा
 कदीए देखुं मुज नान्हडो, प्यारो प्राण आधार ॥

ध्या द्योय ॥ मिलशे माय वापनेरे, वरस सोलमे सोख
 ॥ श्री० ॥ ११ ॥ मिलणतणी सहि नाणकारे, जणावी
 ए सारि ॥ पान्हो चडशे पदमनीरे, उपजशे अति
 प्यार ॥ श्री० ॥ १२ ॥ होस्ये सुकि वावडीरे, जलशु
 नरीत अपार ॥ विकशीत पंकज पाखडीरे, नमर
 करे गुजार ॥ श्री० ॥ १३ ॥ सुका वृद्ध अशोकजीरे,
 फलसे विविध प्रकार ॥ ऋतु विण फल फूले नरघारे,
 तरुवर अवर अपार ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कोइल नाट हू
 कनारे, मोरा केरा नाच ॥ थाशे दिविध वधामणारे,
 सुदर भेली साच ॥ श्री० ॥ १५ ॥ मुगा वचन प्रका
 सशेरे, वाका सरला होय ॥ अवा लहेस्ये आखडीरे,
 रुप कुरुपा जोय ॥ श्री० ॥ १६ ॥ इण लक्षणे मा जा
 णसेरे, नदन आगम वात ॥ मानल नूप सुलक्षणा
 रे, वयरीना अवदात ॥ श्री० ॥ १७ ॥ देश मगध
 सुहामणारे, सालीसुग्राम प्रधान ॥ सोमदत्त नाभे न
 लारे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥ श्री० ॥ १८ ॥ तस अ
 ग्रेली कामनीरे, नदनवर अजीवान ॥ अग्नीचूती
 गुण आगलोरे, वायचूती सुजाण ॥ श्री० ॥ १९ ॥
 श्री नदीवर्धन गुरु नलारे, आया विपन मजार ॥ क
 रवा वाद पधारीयारे, वधव द्योय ते वार ॥ श्री० ॥
 ॥ २० ॥ विच मिल्यो मुनी सत्यकीरे, चाखे वचन वि
 लास ॥ विप्र किहा तुम्हे चालीयारे, करवा वाद उ
 ल्हास ॥ श्री० ॥ २१ ॥ होरु किसी हारया तणीरे, विप्र क

आकार ॥ चक्री चतुराई करी, पुत्रे सकल विचार ॥ ७ ॥
 ढाल ६६ मी ॥ वहेनी जेहनो जेहशु रग ॥ ए देगी
 ॥ श्रीभिंधर कहोने एह विचार, स्वामी कहे सुण रा
 जीघारे ॥ चरित तणो नही पार ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्री
 ल शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार ॥ ज
 त खेत्रथी आवीघारे, काइक पृणहार ॥ श्री० ॥
 ॥ २ ॥ द्वारामती नगरी जलीरे, कृष्ण नरेशर तास ॥
 पटराणी वर रुखमणीरे, शील तणो सहवास ॥ श्री०
 ॥ ३ ॥ तेहनो नदन अपहरघोरे, ठठी रात्रमजार ॥
 वैरी वैर न विसरेरे, ए जगनो व्यवहार ॥ श्री० ॥ ४ ॥
 गाम नगर गीरी कदरारे, सोधाव्या ते राय ॥ शुद्ध
 न लाधी तेहनीरे, अति दु ख आणे माय ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 निश्चे करवा कारणेरे, ए ऋषी आव्यो जोइ ॥ पद
 करे जे जेहनोरे, तेही दुखे दुखियो होइ ॥ श्री० ॥ ६ ॥
 पट खड नायक विनवेरे, स्वामी प्रकासो एह ॥ कुण
 वैरी जेह अपहरघोरे, बाल किहाठे तेह ॥ श्री० ॥ ७ ॥
 काल केतले आवशेरे, कुवर कुल शीणगार ॥ मात पिता
 मन जावसेरे, निसुणे परखदा वार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मा
 त कन्हैथी बालुनोरे, दैते लिधो जाम ॥ तद्धक पर्व
 त शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 दिन दिन वाधे वये करीरे, चद कला जिम जोय ॥
 अरि त्रिय मित्रहि गतीघारे, साल सरीखो सोय ॥
 ॥ श्री० ॥ १० ॥ षोडस लान लही नलारे, वारु वि

मेरे, निर्द्वारण मीथ्यात ॥ गुणसागर आगे कहेरे, ए
तो वारु वात ॥ श्री० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ मुनी जाखे जवियण सुणो, धरी परतीत
अपार ॥ प्रवर विप्रनी आगले, चरित कहु सुविचार
॥ १ ॥ हिंस्या कर्म समाचरी, काल कियो तिही वार
॥ मोह वशे आवी लियो, नदन घर अवतार ॥ २ ॥
देखी मदीर मालिया, जाति समरण लाध ॥ पुत्र पिता
जननि बहु, केम कहु अपराध ॥ ३ ॥ एम जाणी मौ
ने रह्यो, लोगा मुगो नाम ॥ मुनि जापित साचु वदे,
आगे उचो ताम ॥ ४ ॥

ढाल ६७ मी ॥ सुग्रीव नगरी सुहामणीजी ॥ ए
देशो ॥ चक्री जाखे देवशुजी, तेह मुनीवर केम ॥ वो
लाव्यो जाण्या जलीजी, सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥
जिनेश्वर धन धन थारो ज्ञान ॥ सशय तिमर निवार
वाजी, जाणे उम्यो जाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मुगाशु मुनि
वर कहेजी, ए जगनो व्यवहार ॥ माता जाये दीकरी
जी, पुत्र पिता अवतार ॥ जि० ॥ ३ ॥ वहिन फीरी
होय सोकडीजी, बधव वैरी थाय ॥ विज्ञ लहे मुखप
णोजी, मूरख विज्ञ कहाय ॥ जी० ॥ ४ ॥ ठाकर ते चा
कर होवेजी, चाकर ठाकर होय ॥ निर्धन ते धने आ
गलाजी, सधन निर्धन होय ॥ जी० ॥ ५ ॥ ए व्यवहारे
वरतताजी, दोष न एक लिगार ॥ मुगो जापा बोलि
योजी, लीधो सजमचार ॥ जी० ॥ ६ ॥ हारया वाद्

ह ल्यु दिख्य ॥ याप्यो वाद विशेषीरे, विप्र न माने
 शीख ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मुनी नाखे पूगे तुम्हेरे, सश
 य होवे जेह ॥ हमने संशय कोइ नहीरे, तुम्हे पूगे
 सदेह ॥ श्री० ॥ २३ ॥ तुम्हे किहावी आवीयारे, ना
 खो विप्र विच्यार ॥ हम आया निज घर वकीरे, ए
 स्यो प्रश्न प्रकार ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए आगम पूतु न
 हीरे, पूतु परजव वात ॥ परजव कुण कही सत्तेरे, होइ
 साणस मात ॥ श्री० ॥ २५ ॥ विप्र सुणो परजव त
 णोरे, नाखु एह विच्यार ॥ इणही ग्रामे विप्र हुतोरे,
 नामे प्रवर उदार ॥ श्री० ॥ २६ ॥ सो खेति करतो
 धणीरे, हल खेडावा जाय ॥ आयो जलहर उमहिरे,
 सो घर मुखो थाय ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सात दि
 हाडा वरशीयोरे, जल हलधार अखड ॥ उवराड्यो
 दिन आठमेरे, व्यापी जूख प्रचड ॥ श्री० ॥ २८ ॥
 जवुक युग तिहा आवियारे, खाधी नामी
 तोड ॥ पेट आफरीउ ढोल ज्युरे, चाल्या दशहि
 ठोड ॥ श्री० ॥ २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह उपनारे,
 नहि संदेह लिगार ॥ प्रत्यय कारण साजल्योरे, आगे
 एह अवीकार ॥ श्री० ॥ ३० ॥ खेत धणी तिहा आ
 वियोरे, खीज्यो देखी जाम ॥ जंबुकनी करी जाधनीरे,
 मेली उपर वान ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जो न पति जो ब्राह्म
 णोरे, जाइ देखो सोय ॥ लोक गया तिहा देखवारे, वी
 ध खीसाणो होय ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ ए वासठमी ढाल

वीयाजी, साधु दया प्रतीपाल ॥ बंदन जाता वाटनेजी,
 मिलियो एक चडाल ॥ जी० ॥ १८ ॥ तेहने साये कुव
 शीजी, दोइ साये प्रेम ॥ दुष्ट जातीसु उपनीजी, हे
 त जणाव्यो केम ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्रुनि अने चडाल
 नेजी, हेज हिये न समाय ॥ नयण जणावे नेहलोजी,
 अचण्जि कह्यो न जाय ॥ जी० ॥ २० ॥ च्यारे आया
 चालकेजी, श्री मुनिवरके पास ॥ सशय हरवा मुनि
 कहेजी, पूर्व नवातर तास ॥ जी० ॥ २१ ॥ एह थकि
 नवाते सरिजी, मात पिता तुह्य जेह ॥ समकिन धर्म
 वीराधीयोजी, तेहनो फल बे एह ॥ जी० ॥ २२ ॥ ब्रा
 ह्मण नव पहिले हुवोजी, जीतशत्रु राय उदार ॥ ब्रा
 ह्मणी होइ रुखमणजी, राजा कीधो प्यार ॥ जी० ॥ २३ ॥
 वरस सहस सुख जोगवीजी, नरके पोहतो नूप ॥ मृग
 हुइ मानस हुवोजी, हुठ गजराज अनूप ॥ जी० ॥ २४ ॥
 जाति समरण ज्ञानसुजी, अणसण दिवस अडार ॥ सु
 र गतिना सुख जोगवेजी, एह चडाल विचार ॥
 जी० ॥ २५ ॥ ब्राम्हणीं नव नमी स्वाननिजी,
 पामी गती विपरीत ॥ पुरवला सबधधीजी, माहो मा
 हे प्रीत ॥ जी० ॥ २६ ॥ समकीत वर्म अहावियो
 जी, श्रावकना व्रत वार ॥ अणसण मास ज्यु एकनो
 जी, आराधी अती सार ॥ जी० ॥ २७ ॥ पहिले सु
 रलोके गयोजी, ते चंमाल ते वार ॥ पच पल्योपम
 आउखोजी, नित्य जिहा जयकार ॥ जी० ॥ २८ ॥

विशेषथीजी, होई र्खीसाणा दोई ॥ घर आव्या पिता मा
 यजी, अति खीजाव्या सोई ॥ जी० ॥ ७ ॥ साधु उ
 पद्रव कारणेजी, राति आव्या चाल ॥ यद्दु उपद्रव
 टालियोजी, यच्या ते ततकाल ॥ जी० ॥ ८ ॥ करु
 णा आणी अति घणीजी, गोडाव्या ते राय ॥ दोई व
 धव माय वापसुजी, हर्ष्या समकित पाय ॥ जी० ॥
 ॥ ९ ॥ माय वाप ते मुलगेजी, मारग लाग्या जाण ॥
 देश व्रति होई वाधवाजी, आराधन प्रमाण ॥ जी० ॥
 ॥ १० ॥ पेहेले स्वर्ग सुलक्षणाजी, पच पल्योपम
 आय ॥ दोई वधव देवताजी, विलशे पुण्य प्रनाव ॥
 जि० ॥ ११ ॥ नाम अयोध्या ठे चलीजी, नगरी अ
 ति अर्जीराम ॥ जयशत्रु नामे चलोजी, राजा गुणनो
 धाम ॥ जी० ॥ १२ ॥ शेठ सह माहे वटोजी, सागर
 दत्त सुजाण ॥ नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहत
 आण ॥ जी० ॥ १३ ॥ देव चविने उपनाजी, शेठ
 घरे सतान ॥ माणिचद्र मनोहरुजी, पूरणचन्द्र प्रवा
 न ॥ जी० ॥ १४ ॥ प्रज्ञा बळे पढिया घणाजी, जोव
 ननि वय पाय ॥ परणी सुदर सुदरीजी, सुखमे सह
 दिन जाय ॥ जी० ॥ १५ ॥ श्री महेंद्र मुनीश्वरुजी, वन
 में आया जाण ॥ राजा शेठ सिधावियाजी, सुणवा
 श्री गुरु वाण ॥ जी० ॥ १६ ॥ वाणी सुणी वैरागी
 याजी, हुवा सजमधार ॥ श्रावकना व्रत आदरेजी,
 तव ते शेठ कुमार ॥ जी० ॥ १७ ॥ काल केतले आ

लुम गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवरा
 जा जयवत ॥ सूरी चदनी जोड, पूरे मन केरा कोड
 ॥ १ ॥ सारे परजाना काज, जगमाही जस गाज, श
 त्रु कद कुदाल, मोटा जेह नूपाल ॥ २ ॥ एक दिन सु
 एषो कोलाहल, नृप पूठे ए स्यु कल कल ॥ प्रतिहारीयो
 चापे, स्वामी देश विणाशे ॥ ३ ॥ नीमसेन नामे नूपाल,
 दुर्ग बले सुविसाल ॥ पशु माणस लेइ जाय, उज्ज
 ड देश ए थाय ॥ ४ ॥ नूपति लाग्यो जइ चाहे, दु
 र्ग तणो बल साहे ॥ फोज फीरी तव आवे, पाठो सौ
 र मचावे ॥ ५ ॥ पुर वाहीरथी जे पावे, तेतो लेइ सि
 धावे, तेथी ए सहु लोक, पामेठे प्रनु पोक ॥ ६ ॥ ए
 म सुणता ते राव, देइ ढदामे घाव ॥ हयवर गयवस
 गाजी, दलबल अति घणो साजी ॥ ७ ॥ चढीयो वा
 र न लाइ, रेणु रही नज ठाइ ॥ वाटे सूर वधाए ॥
 कायर धूजणी थाए ॥ ८ ॥ आया वटपुर चाली, जा
 वी सके कुण टाली ॥ हेमरथ सामो आयो, राय त
 णे मन जायो ॥ ९ ॥ हेमरथ हायाशु खोवे, आपे
 आप विगोवे ॥ नृपने मदिर लावे, जाणे नारी गमा
 वे ॥ १० ॥ आदर अति घणा किधा, जिमवा वेसण
 दिधा ॥ इद्रप्रजा पट नारी माये कहे अविच्यारी ॥
 ॥ ११ ॥ नामनी जाजग फलीयो आज दिहाडो ए
 वलीयो ॥ आपण पिरसणो ए किजे, राय तणो मन
 रिजे ॥ १२ ॥ कामनी कतशु बोले, नृपनु का डनडो

श्रुति पिण दिन सातनोजी, अणसण पाल्यो जाय ॥
 काल करी नृप कुवरीजी, तिणीह नगरी होय ॥ जी०
 ॥ २९ ॥ स्वयंवर मडप मामीयोजी, आया राय अ
 नेक ॥ देव करे समजावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥
 जी० ॥ ३० ॥ चारित्र पाली निरमलोजी, पाम्या सु
 र अतारा ॥ एह प्रसंगे जाखीयोजी, काम जणी वि
 स्तार ॥ जी० ॥ ३१ ॥ ए जीव दोई थायस्येजी, वट
 पुर केरा नाय ॥ कचनरयने चद्रप्रजाजी, राजा राणी
 साय ॥ जी० ॥ ३२ ॥ अणसण आराधी खरोजा,
 बधव दोयसु जाण ॥ स्वर्ग सुधर्मे देवताजी, पाच प
 ल्योपम मान ॥ जी० ॥ ३३ ॥ ए सडसठमी ढालमेजी,
 समकीत शुद्धी देख ॥ गुणसागर अराधीयाजी, पा
 मे फल सु विशेष ॥ जी० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कुशल घणोठे कोसला, नगरी अति मना
 ण ॥ पद्मनाभ जग परगडी ॥ राज करे राजान ॥ १ ॥
 नाम प्रणामे धारणी, तास धारणी नार ॥ शिलवति
 साची सती, सत्यवति ससार ॥ २ ॥ सुरलोके सुख
 जोगवी, बधव दोइ उदार ॥ राणी उरे उपना, युगल
 पणे अवतार ॥ ३ ॥ वडा तणी मधु नाम वर, लघुनो
 कैटन नाम ॥ थापियो महा मोहोत्सवे, कुमर दोइ सका
 म ॥ ४ ॥ परणावि यौवन पणे, मधुने दीधो राज ॥ युव
 राज पदवि लघु जणि, नृप सारघा निज काज ॥ ५ ॥
ढाल ६८ मी ॥ शांति जिणंद सोजागी, हुतो थयो

ल समान ॥ ४ ॥ सस्नेहा तो दुख लहे, निस्नेहा सुख
 होय ॥ तिल सरसव जग पिळीए, रेतन पीले कोय ॥
 ॥ ५ ॥ रागे वाह्यो उकले, वैरागी समजाय ॥ चोल
 मजीठा रस लीए, वाकस नवि मिसलाय ॥ ६ ॥

ढाल ६९ मी ॥ नेमीश्वर विनती मानीएजी ॥ ए
 देशी ॥ राजेसर कहीयो मानीएजी, कहे मत्रीस सुजाण
 ॥ रा० ॥ ए टेक ॥ कुव्यसन केरो सग न किजे, कुविस
 न दुख दातार ॥ तिण माही ए अति मोहोटो, परत्री
 य केरो प्यार ॥ रा० ॥ १ ॥ विण दोरे ए वधन क
 हीए, विण व्याधे असमाध ॥ विण काजल ए काली
 मा कहावे, विण मदिरा असमाध ॥ रा० ॥ २ ॥ आं
 ख उमी दो निंद तणोक्षय, क्षिण क्षिण दाऊ देह ॥
 तेहने नित्य चद्र वारमोरे जेहनो परघर नेह ॥ रा०
 ॥ ३ ॥ वरस सात साढानो जारूयो, थावरनो अति
 लाग ॥ जाव जीव लगे ए अति पीडे, पर रमणीनो
 राग ॥ रा० ॥ ४ ॥ जगमाहे अपजसनो पडहो, आ
 पदनोरे सकेत ॥ शिवपुर धारक पाट कहावे, पर र
 मणीनो हेत ॥ रा० ॥ ५ ॥ परनारी मुख जोता पलटे,
 पलक पलक जेतीवार ॥ तेताहि वर्ष पचेवो, कुर्नी
 नरक मजार ॥ रा० ॥ ६ ॥ पररामासु राग करता,
 देवा द्रव्य विणास ॥ साभसा सातमो गडी अनेरो,
 ठामन दिसे तास ॥ रा० ॥ ७ ॥ राजा जाखे सुण म
 त्रिश्वर, ए सब साची वात ॥ पिण माहरे मन तो रढ लागी,

ले ॥ नूप नुयंगम कालो, तेहवीं दिजे टालो ॥ १३ ॥
 नटकी बोलीयो इस, मन आणी अति रीस ॥ एवढो
 स्यो अर्जीमान, तुतो दासी समान ॥ १४ ॥ राणी
 पीरसवा आवी, रायतणे मन चावी ॥ राजा रीजीयो
 जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उठी सी
 धायो, ततक्षण मत्री बुलायो ॥ ए राणी घर लावो,
 हमशु प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मत्री राय सकेत, चा
 ल्या कटक समेत ॥ आई जीमशु अनीयो, सूर महारण
 लनीयो ॥ १७ ॥ ऊगमो अति घणो लाग्यो, नूपति जी
 मजी जाग्यो, वाधीने जव लीधो, कारज रायनो सीधो
 ॥ १८ ॥ राजा पागे ए वलोयी, मनमथ नुने ए वली
 यो ॥ तन मन रागसुराच्यो, राणीशु मन माच्यो ॥
 १९ ॥ वडा पयाणेए आवे, वटपुर वाट नुलावे ॥
 मत्री मत्र उपायो, राय अयोध्याये आयो ॥ २० ॥ ए
 अडसठमी ढाल, जीती आयो नूपाल ॥ श्रीगुणसाग
 र राय, राजाजी वयर वसाय ॥ २१ ॥

दुहा ॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उ
 चाट ॥ खीजी कहे केम नुलीयो, वटपुर केरी वाट ॥ १ ॥
 वाचा पालतु आपणी, अहो मोटा प्ररधान ॥ सो वाता
 की वात ए, जो चाहे मुऊ प्राण ॥ २ ॥ कळीमळ अरती
 असुख अती, सूता निंद म जोय ॥ अन्न न पाणी ना
 वही, सोक्यो जाइ सोष ॥ ३ ॥ रायकुमरी नवयौवनी,
 साथे गमन राजान ॥ इदुप्रना राणी हीवे, साले सा

खिण आगणं खिण सेज ॥ खिण गोखे चउ वारे डे
 खे, फाटे हियडो हेज ॥ रा० ॥ १९ ॥ वख विहुणो वि
 कल रूपे, धुले धूसरी अग ॥ प्रीया प्रीया मुख अधी
 क पूकारे, सबहि वात विरंग ॥ रा० ॥ २० ॥ पुरी अ
 ज्योध्या बालि आयो, जर्म पाड्यो नूपाल ॥ नारी नि
 रखणतो अजीलापी, साये फिरे बहु बाल ॥ रा० ॥ २१ ॥
 सोर सुणता गोखे चढिने, नारी निहाल्यो नाथ ॥
 धाय भोकली लीयो बुलाइ, दूर करी सब साथ ॥
 रा० ॥ २२ ॥ का तु एहवो पूठे पदमनी, पूरव प्रेम प्र
 कार ॥ नारी विगोहो महा दुखदाइ, कवण अठे तुऊ
 नार ॥ रा० ॥ २३ ॥ तु प्यारी हु प्रितम थारो, राख
 ले माहरा प्राण ॥ पहिलि शीख न मानी पापी, जल
 बहि गयो मुलतान ॥ रा० ॥ २४ ॥ जोरे जाके जाण
 लहिने, राजा करशे जाड ॥ जाड पुरुपनु कोइ न था
 शी, जाड थइ तु राऊ ॥ रा० ॥ २५ ॥ को हिरा बने मां
 हि कसारी, पडिया निपट निकाम ॥ वैयर जातिने वा
 हिर हींडी, न लहे एरुहि दाम ॥ रा० ॥ २६ ॥ चित
 डा नींतर चिटपट लग्गी, साल सरिखो बोल ॥ सा
 चो शिल सलुणो जाण्यो, विखीया विख सम तोल ॥
 रा० ॥ २७ ॥ मधु राजा माननीसु मोह्यो, माने मेरु
 समान ॥ आपणा पोज एतले आयो, मोह तणो अव
 सान ॥ रा० ॥ २८ ॥ परनारी लपट दढ बाध्यो, आय्यो
 राजा पास, राजा जाखे वेग विणासो, इहा नहीं अरदास

कल्प समा दिन जात ॥ रा०॥८॥ पति पतिने दिवसे
 न सुजे, राते न सुजे काग ॥ मुऊने तो दिन रात न
 सुजे, केहेण तणो नहि लाग ॥ रा०॥९॥ ढोल बजावे दो
 लियारे, पिण वाहरे नवि जाय ॥ हेतवता तो हेत व
 तावे, जोर न कोइ आय ॥ रा०॥१०॥ एतले ऋतु राजा
 चलि आयो, नामे वसत वसत ॥ वनराजी फल फूल
 वीराजी, लोक हसत रमत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ठाम ठा
 मना राय बोलाया, खेलणको मीस ठाण ॥ इद्र प्र
 नासु राजा तेड्यो, हेमरथ प्रीत प्रमाण ॥ रा० ॥
 १२ ॥ रमणीए राजा समजाव्यो, ए मुऊ उपर खे
 ल ॥ मधु नृप माड्यो मूरख शिउडा, मकर मकर म
 न मेल ॥ रा० ॥ १३ ॥ रावण पर त्रिधा दोष न जा
 एयो, राम हेम मृग जेम ॥ जोया दूपण राय युवीष्ट
 र, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० ॥ १४ ॥ वात अ
 नेक कहि समजावे, राय न माने एक ॥ होण हार
 साथे कुण बलियो, ए नर आण विवेक ॥ रा०॥१५॥
 राणी लेइ आयो राजा, मधु राजा सुख पाय ॥ खे
 लि वसत ज्यु लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा०
 ॥ १६ ॥ पढराणी करी थापी सुदरी, मधु राजा मन
 रग ॥ सुख माने ते विविध प्रकारे, इद्र इद्राणी सग
 ॥ रा० ॥१७॥ हेमरथ राजा वात सुणी जब, विव्हल
 थयो अपार ॥ बलिया साथे जोर न चाले, अइ अइ क
 र्म विचार ॥ रा०॥१८॥ खिण रोवे खिण जोवे दह दिशि,

स्वर्ग तणा सुख जोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री
 परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी
 वशमे, माचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटज सुर सुख जोग
 वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जावुवती उरे सही, होस्ये
 साव कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर
 ति अपार ॥ काल करी जवमें जमी, कोप तणे प्रकार
 ॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुओ, असुरां केरो राय ॥ ते
 ए बालक अपहरयो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रगमो ए देशी ॥ जि
 नवाणी श्रवणे सुणी, जवि पाम्या प्रतिबोध ललना ॥
 करे आपणमे खामणा, टाले वैर विरोध ललना ॥ १ ॥
 धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे जाजे सदेह ललना ॥ ध
 न चक्री जिणे पुढीयो, पूर्व जवातर एह ललना ॥ ध० ॥
 ॥ २ ॥ नारद ऋषी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥
 ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥
 ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसवर
 घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी जक्तीथी, ऋषी रली
 आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥ ४ ॥ गूढ गर्जणी तु सुणी,
 जायो सुदर नद ॥ ल० ॥ ऋषीजी तुम प्रासादथी, न
 दन आनद कद ॥ ल० ॥ ध० ॥ ५ ॥ देखु थारो नानमो,
 परखु लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋषी आगे लोटावीयो
 दिए आशीश तेवार ॥ ल० ॥ ध० ॥ ६ ॥ चिरजीवो चिं
 रनदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋषी आदेशे उ

रा० ॥ २९ ॥ राणी पृथे कामरिजे, स्वामी ए नर आन
 ॥ राजा बोले एणे किधो, मोटो आज अकाज ॥ रा०
 ॥ ३० ॥ ए काडी ए सतरे पातिक, तोले घाली जोय
 ॥ ए कामी परनारी गमननो, पातिक जारी होय ॥
 रा० ॥ ३१ ॥ परनारीना दूपण ए तो, आप तुम्हे
 शु किध ॥ हु परनारी किधो प्यारी, जगमे अपजस
 लिध ॥ रा० ॥ ३२ ॥ कहेणी तो जगमाही बहुली, क
 रणी विरला जोय ॥ मोटा जाडा गेत न लागे, राऊ ह
 एया सु होय ॥ रा० ॥ ३३ ॥ एह वचने राजा वरा
 ग्यो, मनमे करे विचार ॥ कुजने एह कलक चढायो,
 धीग धीग मुक अवतार ॥ रा० ॥ ३४ ॥ नवजोवनमे
 बाध्यो जे नर, नृप ठोडावे ताम ॥ वोहरो तेनी शीखज
 आपी, ए हम करजे काम ॥ रा० ॥ ३५ ॥ इण अव
 सर मुनिराज पधारया, वोहरण केरे काज ॥ नृप आ
 हार सुजतो दिधो, सफल गणयो दिन आज ॥ रा०
 ॥ ३६ ॥ जेष्ठ पत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटन नृप
 सोय ॥ सजम लेई स्वर्ग बारमे, देव हुआ ते दोय ॥
 रा० ॥ ३७ ॥ इद्रप्रजा दिक्ता व्रत पाली, राजा साथे
 सहाय ॥ कनकमाला ए आय उपनी, नेह ठप्यो न र
 हाय ॥ रा० ॥ ३८ ॥ एगुणसत्तरमी ढाल जलेरी, पूर्व न
 वांतर जेद ॥ गुणसागर जिनवरने वचने, टलीयो
 सघलो खेद ॥ रा० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मधु नृपतीनो जीव जे, चारित्रने सकेत ॥

स्वर्ग तणा सुख जोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री
 परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी
 वशमे, साचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटज सुर सुख जोग
 वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जाबुवती उरे सही, होस्ये
 साब कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर
 ति अपार ॥ काल करी नवमें नमी, कोप तणे प्रकार
 ॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुआ, असुरां केरो राय ॥ ते
 ए बालक अपहरयो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रगमो ए देगी ॥ जि
 नवाणी श्रवणे सुणी, नवि पाम्या प्रतिबोध ललना ॥
 करे आपणमे खामणा, टाले वैर विरोध ललना ॥ १ ॥
 धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे नाजे सदेह ललना ॥ ध
 न चक्री जिणे पुढीयो, पूर्व नवातर एह ललना ॥ ध० ॥
 ॥ २ ॥ नारद ऋषी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥
 ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥
 ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसवर
 घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी नक्कीयी, ऋषी रली
 आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥ ४ ॥ गूढ गर्जणी तु सुणी,
 जायो सुदर नद ॥ ल० ॥ ऋषीजी तुम प्रासादथी, न
 दन आनद कद ॥ ल० ॥ ध० ॥ ५ ॥ देखु थारो नानमो,
 परखु लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋषी आगे लोटावीयो
 दिए आशीश तेवार ॥ ल० ॥ ध० ॥ ६ ॥ चिरजीवो चि
 रनदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋषी आदेशे उ

ठाड्यो, हियडे धरयो उल्हास ॥ ल० ॥ ध० ॥ ७ ॥ गान
 मुखो अरि सनमुखो, लक्षण गूण गरीठ ॥ ल० ॥ म
 व वि३ मुदर देखता, लोचन अमीय पडठ ॥ ल० ॥ व०
 ॥ ८ ॥ नारद आव्या द्वारीका, हरी रुखमणीके पाम
 ॥ ल० ॥ जिनवर वचन सुणावीया, धूरठे हालगे ता
 स ॥ ल० ॥ ध० ॥ ९ ॥ हीरा चुनी लालडा, मोती मा
 णिक जोय ॥ ल० ॥ जिहा जाये तिहा सादरा, तिम
 करमे तो होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १० ॥ हरी रुखमणी आ
 नदीया, सुणी सुतना अवदात ॥ ल० ॥ परम महा
 सुख पामीयो, आनदमे दिन जात ॥ ल० ॥ ध० ॥ ११ ॥
 आशा सब जग बालही, आशा अमर अपार ॥ ल०
 ॥ ध० ॥ क० ॥ आशा नली, आश मगनी लिंगार ॥ ल०
 ध० ॥ १२ ॥ आशाए धन सपजे, आशाए सतान
 ॥ ल० ॥ आशाए रण जीतिए, आशाए सनमान ॥
 ल० ॥ ध० ॥ १३ ॥ एक न हुती पाधरी, नदीषणनी
 नार ॥ ल० ॥ सहे सबहु तेरे परगदी, आशाने अवी
 कार ॥ ल० ॥ ध० ॥ १४ ॥ आशाए हरीचद्रजी, उ
 असेन नृप देख ॥ ल० ॥ आपद काढी आकरी, पुन
 रपी राय विशेष ॥ ल० ॥ ध० ॥ १५ ॥ शवण सीता
 अपहरी, पनीयो राम विबोह ॥ ल० ॥ सा जीवी आ
 शा थकी, फिरी पामी अति सोह ॥ ल० ॥ ध० ॥ १६ ॥
 पवनराय घरे अजना, पतिनो अति अपमान ॥ ल०
 आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ॥ ध० ॥

॥ १७ ॥ रामचंद्र नल पान्वा, आशा तणे वल जो
 य ॥ ल० ॥ फिरी बहोडावि आपणी, आश करे सो
 होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १८ ॥ वरस जाशे आशा बनी, फल
 शे मननी आश ॥ ल० ॥ आश बले रुखमणी तणो,
 होसे लिल विलास ॥ ल० ॥ ध० ॥ १९ ॥ मदिर सं
 वर कालने, वाधे वाल कुमार ॥ ल० ॥ हाथोहाथे
 सचरे, उपजावे अति प्यार ॥ ल० ॥ ध० ॥ २० ॥
 जिम जिम वाधे वए करी, तिम तिम वाधे एह ॥
 ल० ॥ ऋद्धी वृद्धी सुख सपदा, अरु वाधे धन नेह
 ॥ ल० ॥ ध० ॥ २१ ॥ प्राण थकी प्यारो घणो, मा
 ताजीने सोइ ॥ ल० ॥ पिता परम सुख दायकु, परी
 अण प्रितो जोइ ॥ ल० ॥ ध० ॥ २२ ॥ पढीगुणी
 पमित थयो, निर्मल बुद्धि उदार ॥ ल० ॥ शस्त्र शास्त्र
 आदेकला, बहोत्तरना नणनार ॥ ल० ॥ ध० ॥ २३ ॥
 बालपणो बोली करी, यौवननी वय पाय ॥ ल० ॥ धि
 र विरने साहसिक, सूर शीरे कहेवाय ॥ ल० ॥ ध०
 ॥ २४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी अपार
 ॥ ल० ॥ सीमामा सहु सार्धीया, साध्या जेह ऊजार ॥
 ॥ ल० ॥ ध० ॥ २५ ॥ देश जीती घर आवीयो, ला
 वीयो वर वस्त ॥ ल० ॥ नूचर खेचर मानवी, माने
 आण समस्त ॥ ल० ॥ ध० ॥ २६ ॥ ए शीत्तरमी
 ढालने, आण मनावण नाम ॥ ल० ॥ गुणसागर गुरु
 आपणे, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ॥ ध० ॥ २७ ॥

चोपइ ॥ खरु खड रसवे नवनवा, सुणता मिठी साक
र जेवा ॥ श्रीहरी वश चरित्र जय जयो, त्रिजो ख
रु ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री हरी वस विस्तार
प्रवधे ढाल सागर तृतीय खरु समाप्त ॥

॥ श्री ढालसागर हरीवस प्रवध चतुर्थ खड प्रारभ. ॥
दुहा ॥ कर्म हणी केवल लह्यो, मुगति पहोता स्वा
मि ॥ त्रिविध त्रिविध त्रिहु कालना, सिद्ध नमु शिर
नामि ॥ १ ॥ अब चोथा अधीकारना, नवियण सुणो
सुविचार ॥ गुणवताना गुण ए, साजलता सुख अपार
॥ २ ॥ मात पिता सुख पामिया, देखी कुमरना काम
॥ लोक प्रसिद्धो आपियो, युवराज पद ताम ॥ ३ ॥
प्रचुर वित्तनु व्यय करी, सतोख्यो ससार ॥ याचक
जन मुख उच्चरे, मदन सुयश विरतार ॥ ४ ॥ नूप
तिने चल नामनी, पचसया परीवार ॥ नदन पिण त
स तेतला, महा कला गुण जाण ॥ ५ ॥ प्रचुता पेखी
कामनी, दुमनी पड़ी दुमात ॥ आप आपणा पुत्रसु,
एह जणावी वात ॥ ६ ॥ सिंहणी एकज सुत जणी,
निर्जय थाए अपार ॥ खरी खरी दश पुत्रणी, वहे गा
रको चार ॥ ७ ॥ मदन बलि महिमा निलो, तुमतो सघ
ला रक ॥ दिन थोडामा देखज्यो, राजा हुन निसक ॥ ८ ॥
ढाल ७१ मी ॥ इण पुर कवल कोइ न लेशी ॥
ए देशी ॥ वचन सुणी निज माता केरा, कोपे चरुया

ने पुत्र घणेर। ॥ मारा मदनने यार न लावा, तो तुम
 आगे हम फिरी आवा ॥ १ ॥ मदनसु माडे प्रिति
 अपार ॥ माहरे तुं ठाकोर अधार ॥ कूड केलवे कप
 टि केता, साजलजो मुज कहेता तेता ॥ २ ॥ जोजन
 आसन शयनमजारी, खान पानमे दिए विष जारी ॥
 अमृत होई प्रणमे सोई, पहुची शके उपावन कोइ ॥ ३ ॥
 डाकणी शाकणी न सके लागी, जूत पिशाचणी जा
 ए जागी ॥ वाको ते फिरी सुधो थाय, दिन दिन महि
 मा अधिक दिवाय ॥ ४ ॥ गिरी वैताळ्य गया एकवार,
 सहेस शिखरनो जुवन उदार ॥ सहुको आवी बेठा जा
 म, वात वहे आपसमें ताम ॥ ५ ॥ गिरी शिखरे एक
 गोपुर देखि, वज्र मुखे तव वात विशेषी ॥ जो जाए
 कोइ गोपुर माहि, मन वळित फल पावे सोहि ॥ ६ ॥
 मदन गयो तिहा हाली चाली, जाग्यो देव वजावी
 ताली ॥ मदन साथे कियो सग्राम, हारि दियो सिंघा
 सण ताम ॥ ७ ॥ मत्र तणो गण दिधो वारू, अवर
 दियो जडार अपारू ॥ मुकट दियो रलाको निको ॥
 आभ्रण सहितसु दीधो टीको ॥ ८ ॥ गूफा दुसरी मां
 हि सीधावे, उत्र जलो युग चामर पावे ॥ खड्ग मनो
 हर वख विशालु, कुसुम वासन अधिक रसालु ॥ ९ ॥
 गूफा तिसरी माहि आवे, नाग सेज वर वेण लहावे
 ॥ पाय पिढ सिंघासण कोमल, वख विजूपण पावे सो
 जल ॥ १० ॥ मदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी र

खवाली सीधी ॥ ए दोए विद्या आपी देवा, करजारी
 ने मागे सेवा ॥ ११ ॥ चउथीवारे सो अत्रगाहे, ज
 ल वाधीने पनीयो हलावे ॥ मकरध्वज वर वारु लहि
 यो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥ १२ ॥ अर्नीकुरुमा
 हे पग ठावे, वार पचमीसु शोना पावे ॥ कनक व
 स्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्या ते पुण्य पसाए ॥ १३ ॥
 मेपाकारे पर्वत दोई, गठिवार गयो तिहा सोइ ॥ मि
 लता कोपर साये खडे, कुडल युग्म लहि अती तडे
 ॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन
 कुमार ॥ ऊजोडी फल पाडी नाखे, वानर रूप तदा
 सुर नाखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, वो
 ल्यो देव प्रजु वरुजागी ॥ गगन गतिनी पावडी वि
 शाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥ १६ ॥ वार आ
 ठमी कपीठ तपो वन, चाल्यो मदन महा निर्जय म
 न ॥ तरु उपर चढियो ततकाल, गज रूपि सूर अ
 ती विकराल ॥ १७ ॥ युद्ध करी प्रजुने वश होइ, मन
 गमतो वर आपे सोइ ॥ गज रूपी सूर हु बु स्वामी,
 समय समरवो अवरस पामी ॥ १८ ॥ नवमी वारे पर
 वत उपर, चाल्यो कामदेव साहस धर ॥ जुजगासुर
 मेहेला तव जाइ, उठियो करी सग्राम सजाइ ॥ १९ ॥
 जाती जणी दीधो ह्यरत्न, काठो कवच जीवनो यत्न
 ॥ मुद्गीका मन मोहन आपी, चाल्यो तास तिहा थीर
 थापी ॥ २० ॥ दशमी वार सराव मुखे गिरी, हरी

अगज आयो जिम निज घरी, अगद कठीका वर
 लाधी, कदोरो लायो सूर साधी ॥ २१ ॥ एकादशमी
 वार मनोजव, बराह तणे आकारी गयो तव ॥ धनु
 ष्य पुष्प जय पाम्यो पूरो, जय नामा वर शख सनू
 रो ॥ २२ ॥ वारसमी वारे बलवतो, पकज वनमे जा
 य रमतो ॥ विद्याधर बाध्यो ठोमावे, कन्या काम ज
 णि परणावे ॥ २३ ॥ विद्या दोड् अनेरी दिधी, इद्र
 शु जाल करी प्रसिद्धी ॥ हार हरख शु आप्यो
 रुडो, मान्यो गुण नवि ए कूडो ॥ २४ ॥ तेरसमि
 वारे अति तडन, काल वने आयो कुल मरुन ॥ जी
 त्यो दैत्य न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष्य उदार
 ॥ २५ ॥ मदन मोहन तायन सोषण कर, उन्मादन
 ए पच वाण वर ॥ जन मोहन युवति उन्मादन, मद
 न नाम तिहाथी हरीनदन ॥ २६ ॥ चउदशमी वारे
 सु उपचारे, नीम गूफा माहे पाव धारे, उत्र पुष्पको
 फूलकि सेज, आपे असुर धरी अती हेज ॥ २७ ॥
 भाइ मरवा कारण मेल्यो, आपणमे चतुराइ खेल्यो ॥ पु
 ण्य वले रुखमणीको जायो, तिम तिम वधतो जाय
 सवायो ॥ २८ ॥ वने रणे अरीधे रणमाहि, अग्नी नी
 र सागरमें प्राही ॥ सोवन जागत विच विचालो ॥
 पुण्य एक मोटो रखवालो ॥ २९ ॥ एकाहत्तरमी ढाल
 वखाणी, वक्ता श्रोता ने मन मानी ॥ श्री गुणसागर
 पण्य करीजे, मदन कथा मन माहि धरीजे ॥ ३० ॥

दुहा ॥ लाज देखी नव नव परे, आणे रीस अ
 पार ॥ जोर न चाले जवरस, पिण न तजे अविचार ॥ १ ॥
 खेदि काढे नित्यको, सूरज जग हितकार ॥
 तिमर न व्याप्या विण रहे, ए दुर्जन अविचार ॥ २ ॥

ढाल ७२ मी ॥ निमजी ज्ञान वरसोनी ॥ ए टेठी ॥
 वज्रमुखो कहे जाइजी ॥ मन मोहना ॥ तुम्ह सम अवर
 न कोइ ॥ लाल मन मोहना ॥ जिहा जिहा जाई स
 चरो ॥ म० ॥ लाज घणोरो होय ॥ ला० ॥ १ ॥ पनरस
 मी वारे हिवे ॥ म० ॥ विपुल वन पाउधार ॥ ला० ॥ ग
 ज जिम आयो गाजतो ॥ म० ॥ तव ते विपन मजार
 ॥ ला० ॥ २ ॥ नाग जयतक ठे तिहा ॥ म० ॥ वाहनी
 एक विसाल ॥ ला० ॥ तेहने काठे तरु तले ॥ म० ॥
 पद्म शिला सुवीशाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ रुपशु यौवन गु
 णवती ॥ म० ॥ पद्मासन, आकार ॥ ला० ॥ स्फटिक
 तणी जप मालिका ॥ म० ॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥
 ला० ॥ ४ ॥ श्वेत वसन विराजता ॥ म० ॥ मस्तक
 बुटा केस ॥ ला० ॥ शोभा पोखे सुदरी ॥ म० ॥ वर्णे
 गौर विशेष ॥ ला० ॥ ५ ॥ चद्रमुखी मृगलोचनी ॥
 म० ॥ वाकी नमुह कमाण ॥ ला० ॥ तिन लोकनी
 नारीनो ॥ म० ॥ वेठी लेइ गुमान ॥ ला० ॥ ६ ॥ स
 र्व अवेवा सोहनी ॥ म० ॥ रमणी रुप रसाल ॥ ला०
 ॥ मदन तणे मन मोहनी ॥ म० ॥ लागीए ततकाल
 ॥ ला० ॥ ७ ॥ पच बाण लागी खरा ॥ म० ॥ म

दन थयो बेफाम ॥ ला० ॥ हम न जावा पावही ॥ म०
 ॥ जेसु जीनकी रहाम ॥ ला० ॥ टि ॥ विवुधवत शक आ
 वीयो ॥ म० ॥ उन्नो करीय जुहार ॥ ला० ॥ कुवर पू
 ठे देवसु ॥ म० ॥ कुमरीनो सुविचार ॥ ला० ॥ ९ ॥
 देव जणे कुवर सुणी ॥ म० ॥ खेचर प्रनजन नाम ॥
 ला० ॥ वाग देवी दिपती नली ॥ म० ॥ जाइ कुमरी
 सकाम ॥ ला० ॥ १० ॥ रती नामे गुण आगली ॥ म०
 ॥ नव यौवनमे एह ॥ ला० ॥ कुञ्जर कहे कष्टे करी ॥
 म० ॥ का खीजावे देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ रायतणे घर
 आवियो ॥ म० ॥ योगी लेवण आहार ॥ ला० ॥ कु
 मरी वर पूगीयो ॥ म० ॥ नारुयो मदन कुमार ॥ ला० ॥
 ॥ १२ ॥ योग मिले तेहनो किहां ॥ म० ॥ इणही वन
 अर्निराम ॥ ला० ॥ ते माटे तप ध्यानशुं ॥ म० ॥ ए
 वठे वर काम ॥ ला० ॥ १३ ॥ लक्षण गुण आकार
 शु ॥ म० ॥ सो प्रनु तुही सकाज ॥ ला० ॥ कृपा
 करी कन्या तणा ॥ म० ॥ पूरो मनोरथ आज ॥ ला० ॥
 ॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण करावीयो ॥ म० ॥ पूग्या मन
 ना कोड ॥ ला० ॥ कामदेव रती कामनी ॥ म० ॥ ए
 दोई अविहड जोड ॥ ला० ॥ १५ ॥ लाज सोलमो
 तीणे वने ॥ म० ॥ सकटा सुरथी होय ॥ ला० ॥ का
 मधेनु पामी नली ॥ म० ॥ पुष्प तणो रथ जोय ॥ ला० ॥
 ॥ १६ ॥ एव सोलह लाजशु ॥ म० ॥ मदन महा म
 यमत ॥ ला० ॥ पामी शोना पुण्यथी ॥ म० ॥ पुण्य

वडो एकत ॥ ला० ॥ १७ ॥ जोतरी र ५ पुण्या तणो
 ॥ म० ॥ काम अने रतीनार ॥ ला० ॥ वेशी आवे
 लिलशु ॥ म० ॥ माये वत्र सुधार ॥ ला० ॥ १८ ॥
 चामर ढोले खेचरी ॥ म० ॥ आगे बहु परिवार ॥
 ला० ॥ दीन मुखा जाइ सहु ॥ म० ॥ सेवक रूपी अपा
 र ॥ ला० ॥ १९ ॥ सोले लाने शोभतो ॥ म० ॥ आ
 वे काम कुमार ॥ ला० ॥ नगरी तणी शोभा करी ॥ म०
 ॥ मुख मुख जय जयकार ॥ ला० ॥ २० ॥ कामनी
 कौतकने मिली ॥ म० ॥ तरुणी वुढी वाल ॥ ला० ॥
 रती रतीपतीने देखवा ॥ म० ॥ करे कुतुहल स्याल
 ॥ ला० ॥ २१ ॥ खबर नही अवर तणी ॥ म० ॥ या
 नवीपर्यय थाय ॥ ला० ॥ तुज्यो हार न जाणही ॥
 ॥ म० ॥ मोती खीर खीर जाय ॥ ला० ॥ ककण का
 ने पहेरीयो ॥ म० ॥ गले कटी सूत्र उदार ॥ ला० ॥
 माथे पहेरी मेखला ॥ म० ॥ कटी पेहेस्यो वरहार ॥
 ला० ॥ २३ ॥ आखे कुकुम आजीयो ॥ म० ॥ काज
 ल लगायो गाल ॥ ला० ॥ आडवरी अलते करी ॥
 म० ॥ आई तमासे चाल ॥ ला० ॥ २४ ॥ एक जणे
 जल नामनी ॥ म० ॥ ए कर्म तो कत ॥ ला० ॥ पा
 मी परतक पद्मनी ॥ म० ॥ रती राणी गुणवत ॥
 ला० ॥ २५ ॥ एक वदे वनीतावली ॥ म० ॥ ए धन
 नारी उदार ॥ ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुणनिलो ॥
 म० ॥ पामी जल नरतार ॥ ला० ॥ २६ ॥ हयवर ग

यवर वाहनी ॥ म० ॥ लोक तणो नही पार ॥ ला० ॥
 दाने जलहल वरसतो ॥ म० ॥ आया राज दुवार ॥
 ला० ॥ २७ ॥ राय तणे पाय प्रणमीयो ॥ म० ॥ रा
 य दियो बहु मान ॥ ला० ॥ प्रचुता पेखी पुत्रनी ॥
 म० ॥ जाणयो जन्म प्रमाण ॥ ला० ॥ २८ ॥ मा मि
 लवाने अलजीयो ॥ म० ॥ आवी लागो पाय ॥ ला० ॥
 उठाइ उचो लीयो ॥ म० ॥ चुव्यो कठ लगाय ॥ ला०
 ॥ २९ ॥ विनय करी विधीशु तदा ॥ म० ॥ आगे
 वेठो काम ॥ ला० ॥ वारवार अवलोकही ॥ म० ॥
 रूप अनोपम ताम ॥ ला० ॥ ३० ॥ कृष्ण श्वेतने रा
 तडा ॥ म० ॥ लोचण निला धाम ॥ ला० ॥ कबु कं
 ठसु कोमलु ॥ म० ॥ चद्र वदन अनीरामी ॥ ला०
 दत पक्ति मुक्तामणि ॥ म० ॥ राति जिहा जास ॥ ला०
 ॥ नाक शिखा दिवा तणी ॥ म० ॥ अधर प्रवाला ता
 स ॥ ला० ॥ ३२ ॥ कोमल कुतल शामळा ॥ म० ॥
 जाडी जघा जाण ॥ ला० ॥ चूजा ललित लावि घणी
 ॥ म० ॥ पोहला पाय वखाण ॥ ला० ॥ ३३ ॥ वद्ध
 स्थल बनतो महा ॥ म० ॥ मेरु न्त्रित आकार ॥ ला० ॥
 मृत्पतिनी कटि उपमा ॥ म० ॥ वर्षो सुवर्ण अपार
 ॥ ला० ॥ ३४ ॥ माता देखी मनोहरु ॥ म० ॥ सुत
 नी सुदर शोच ॥ ला० ॥ रमण हसण सजोगनो ॥ म०
 ॥ लाग्यो मनमे लोच ॥ ला० ॥ ३५ ॥ वेधी मनमथ
 बाणसु ॥ म० ॥ दीन मुखी ततकाल ॥ ला० ॥ पाले

मारी पोयणी ॥ म० ॥ तेहवी थइ सा वाल ॥ ला० ॥
 ॥ ३६ ॥ हाथ कपोला थापियो ॥ म० ॥ आतुर अ
 धीक उदास ॥ ला० ॥ टसक उसक रोवे खरी ॥ म०
 ॥ लावा लिये निसास ॥ ला० ॥ ३७ ॥ एह विथी
 देखी खेचरी ॥ म० ॥ उठि चल्या मयण ॥ ला० ॥
 आव्यो मदिर आपणे ॥ म० ॥ मनमाहे सुख चयन ॥
 ला० ॥ ३८ ॥ ए वोहोत्तरमी ढालमे ॥ म० ॥ रति सा
 थे घरवास ॥ ला० ॥ गुणसागर कही को शके ॥ म० ॥
 कोड पवाना तास ॥ ला० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मदीर चली, माननी मनहि म
 जार ॥ अरति हिलुर वाधी महा, सो जाणे किरतार
 ॥ १ ॥ रूप नहि ए पासवे, हिए विमासी जोय ॥ दिवे
 पने पतगीयो, शोच करे नहि कोय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ एकवार घर आवे हो मोहना ॥ ए
 देशी ॥ मोहन नावे जब लगे तव लगे चयन न होय
 ॥ उन्हालाकी वेलु ज्यु हो, सुकी जाये सोय ॥ मो० ॥
 ॥ १ ॥ रात न आवे निंदडी, लेता सास उसास ॥ दि
 वस न लागे चूखनी हो, नाहीं पाणीकी प्यास ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ सुणि न जावे वातडी, आपणपे न कहाय ॥ उ
 ची नजरे आवलोकवो हो, माथे सोर न थाय ॥ मो० ॥
 ॥ ३ ॥ ए असहणी वेदना, मुऊ किम सहेणी जाय ॥
 सर्व शरीरे साल ज्यु हो, आज घणो अकुलाय ॥ मो०
 ॥ ४ ॥ लाज गइ निर्लज्ज थइ, विविध प्रकारे विकार ॥

॥ वर वह्नीज विलोकहि हो, नहि जनाइ पार ॥ मो०
 ॥ ५ ॥ आचूषण उतारीया, उचाटे न सुहाय ॥ जाणे
 अहरु काटणा हो, सो दुख माहि गिणाय ॥ मो० ॥
 ॥ ६ ॥ का सरजी हु कामनी, का सरज्यो वर रूप ॥
 रूप विरूप हमारडो हो, विण रति कत अनूप ॥ मो०
 ॥ ७ ॥ मदन ताप तपे खरी, कदली केरो वाय ॥ वा
 वना चदन लेपणो हो, शितलता न लहाय ॥ मो० ॥ ८ ॥
 चद्र तणे कीरणे करी, हार अने घन सार ॥ तनकी
 तपति मिटे नहि हो, विण श्री काम कुमार ॥ मो० ॥ ९ ॥
 बेद विचक्षण आवियो, देखे नाडी जाम ॥ हाथ न
 आवे रोगहि हो, नृप चिंता तुर नाम ॥ मो० ॥ १० ॥
 एक दिवस कवर जणि, बोले खेचर राय ॥ माय दुहे
 लि ताहरी हो, रयाणि ठ मासी जाय ॥ मो० ॥ ११ ॥
 तु सुखमे रमतो फिरे, न लहे मानि सार ॥ गोरु नीगेरु
 होवे घणा हो, माने आश अपार ॥ मो० ॥ १२ ॥ कुम
 र कहे सुण तातजी, हु नवि जाणु एह ॥ रोग दुसा
 ध्य जे उपनो हो, माताजीने देह ॥ मो० ॥ १३ ॥ मा
 ता तीरथ सारखी, माता मोटी होय ॥ गर्ज धरे वे पो
 खवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० ॥ १४ ॥ अडस
 ठ तीरथ जे किया, तेतीसे सुर कोरु ॥ सहस आठ्या
 सी मानिया हो, मा मान्या करजोरु ॥ मो० ॥ १५ ॥
 आयो मदन उतावलो, माताजीनी पास ॥ देखी मा
 जिम साजली हो, आरती माही उटास ॥ मो० ॥ १६ ॥

उपर पडीयो अडवडी, माय माय पोकार ॥ दे देवा उ
 लजमो हो, करे किशु किरतार ॥ मो० ॥ १७ ॥ महा
 रे ए दो आखडी, ह्यारे अवर न कोय ॥ एम जाणी
 विधीसो करे हो, माय समार्धा होय ॥ मो० ॥ १८ ॥
 डाहापणे नाडी ग्रहे, वेदक सहुनो जाण ॥ विविध प्र
 कारे विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥ मो० ॥ १९ ॥
 ताव नहीं सिस को नहीं, नहीं त्रिदोपो दोष ॥ काटी
 नहीं नहीं कुरु करी हो, कवण रोगनो पोख ॥ मो०
 ॥ २० ॥ रोग न जाण्यो जाय ए, वेदन तो असरा
 ल ॥ माय दुखे दुखीयो महा हो, कामदेव नूपाल ॥
 मो० ॥ २१ ॥ एतो तिहुत्तरमी कही, ढाले सघन स
 नेह ॥ गुणसागर सूरी जोयज्यो हो, विषय विभवन
 एह ॥ मो० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ लोग सह अलगा किया गुलाम अलगा कीया
 ॥ ठडी ठोकरी ठडके, अलगा राख्या ताम ॥ १ ॥ लाज
 खोली लालच नणी, विकलाइनि वात ॥ करवा लागी
 कामनी, नाम धरावी मात ॥ २ ॥ फिट फिट फिटकार
 तु, फिटकारो सो वार ॥ विषिया माये ताहरे, ए तुऊ
 चरित्र अपार ॥ ३ ॥

ढाल ७४ मी ॥ नाथ तेरे साथ चलुगीरे ॥ ए देशी ॥
 लालन लिल करुगीरे, आगे नेह धरुगीरे ॥ तेरे सग रहु
 गीरे ॥ ला० ॥ १ ॥ पूर्व नवतर केरो प्यारो, नयणे नेह
 जणायो ॥ यौवन मद मदिरा मतवाली, मन हाथी

विफरायो ॥ ला० ॥ २ ॥ न आले देवाले माले, लारे
 चित्त लगायो ॥ रोम रोमथी जाली सिलगी, युहिमत
 रु न रहायो ॥ ला० ॥ ३ ॥ काइ सुद्धी न बुद्धि विवु
 जे, आधाहिथी आधी ॥ जुह कमान गुमान घणेर,
 रहि नयणा सर सार्धी ॥ ला० ॥ ४ ॥ वाप न जाइ
 घेटो जाणे, विरह करालि बालि ॥ आप विगुति जु
 डणी, चहुटे चनी चमालि ॥ ला० ॥ ५ ॥ न कटोल
 आले मूके, पासे पड्यो जे पावे ॥ वनिता देलि विल
 गी आवे, वेगे वार न लावे ॥ ला० ॥ ६ ॥ निरतणी ग
 ति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी ॥ काम अका
 म करत न लाजे, आदि लगे अविच्यारी ॥ ला० ॥
 ७ ॥ पकजणी नारी दो सरखी, अतर नहिय लि
 गार ॥ हस नमरने सम करी जाणे, नाणेकिमपि वि
 च्यार ॥ ला० ॥ ८ ॥ अवर रमे अवरासु जासे, अव
 रा साहमु जोवे ॥ चिते अवर अवर शीर दूषण, दे
 इ आप विगोवे ॥ ला० ॥ ९ ॥ दिने डर आणे दोरे
 दिठे, राति अहि फण मोडे ॥ उवर अडवडती अ
 णीआले, डूगर चढवो लोडे ॥ ला० ॥ १० ॥ उदर
 थी डर माने अधीको, केसरी काने साहे ॥ नारी च
 रीत्र लिखे ब्रह्माजो, जाखे घणेउमाहे ॥ ला० ॥ ११ ॥
 चुलनि रुलनि कुविसन वाटे, सूरि कता साची ॥ उतो
 सुत उतो पति हणेवा, परतद्ध यइ पै साचि ॥ ला०
 ॥ १२ ॥ काम कटकमे नारी नायका, ए दल पुठे ला

ग्या ॥ मारी लीया जे साहमा आया, वृद्ध्या जे न
 जाग्या ॥ ला० ॥ १३ ॥ हुतो सुदरी सामा सार्ची,
 यौवन मदमातो ॥ वय विलसि जे लाहो लिजे, फि
 नावे दीन जातो ॥ ला० ॥ १४ ॥ बुढो वयल ने कु
 घोडो, बुढो हाथी हासो ॥ बुढो मानव मान न पा
 तरुणी साये तमासो ॥ ला० ॥ १५ ॥ मायो धूणे
 र कपावे, मुहडे लाल खरति ॥ अति असुहावो नाह
 जावो, नारी नेह धरती ॥ ला० ॥ १६ ॥ विण सर
 हण वखाण करेवो, देवि हाथ गहेवि ॥ बुढापणे त
 णी परणवी, ए पर काजे कहेवि ॥ ला० ॥ १७ ॥ म
 मन हाथी इठाचारि, फीरे महा मतवालो ॥ होइ
 हावत जोग अकुसे, वहतो पागो वालो ॥ ला०
 ॥ १८ ॥ मुदि कान मिचि युग लोचन, मुहडे धीम
 धीग जापे ॥ रे पापणी शु पाप प्रकाशे, तुज पा
 जग नासे ॥ ला० ॥ १९ ॥ हु तुज नदनतु मुज माता
 इम किम कहेता आवे ॥ यद्यपि मास नखे नर ल
 ट, हाड गले नरहावे ॥ ला० ॥ २० ॥ खेचरी जाहे
 तु नहि नदन, हु नहि थारी माता ॥ पढीयो पाम्ये
 लेइ उठेरयो, हम तुम्ह विचे विधाता ॥ ला० ॥ २१ ॥
 आपण वावियो ब्रह्म विशेषे, को फल तास न खाय
 ॥ राखी निवाण आपे जल पिता, कहो शु दूषण
 थाय ॥ ला० ॥ २२ ॥ बोढी विचार विचार शिरे
 मणी, कयनी दीसे कोढी ॥ मान बोल मुजको तुम

माये, जासु काया ठोमी ॥ ला० ॥ २३ ॥ वात विरुव
 सो सुद्व विहुणी, एतो परवश नाखे ॥ पुरुष पनोता
 काज अकारज, जाणी आपु राखे ॥ ला० ॥ २४ ॥ उ
 त्तर आपे मात मयाकर, इम मुऊथी किम वूजे, निं
 द्यथकी अति निद्य काम ए, कुलवता नवी सूजे ॥
 ला० ॥ २५ ॥ हाथी वारो वाटे फिरतो, अकुशर्था फि
 री आवे ॥ पीहर सासरा केरी लाज, नारी आप रखा
 वे ॥ ला० ॥ २६ ॥ वारूवार विच्यार विशेषे, माता
 जी समजावी ॥ वात न माने मयणराय तव, वनमे
 बैठो आवी ॥ ला० ॥ २७ ॥ ढाल चमोत्तरमाही खरी
 ए, खेचरणी खलखाती ॥ श्रीगुणसागर मदन उवारी,
 विण पाणी वही जाती ॥ ला० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ उठी एकाकी आवीयो, साथे शील सुल
 तान ॥ कुमर कदर्थन देखीने, मन धरतो शुज ध्या
 न ॥ १ ॥ बाग नगरने बाहीरे, सुतो धरी मन धीर ॥
 कनक माताए शु कह्यु, चित चिते वडवीर ॥ २ ॥

ढाल ७५ मी ॥ मुनिश्वर माहरे व्रतशु काम ॥ ए
 देशी ॥ एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम ॥
 दिठा मुनिवर पाखतीजी, जाइ करे परणाम ॥ १ ॥ मुनि
 वर नाखे एह विच्यार ॥ ए आकणी ॥ माताने केम उप
 जीजी ॥ सुतसु काम विकार ॥ मु० ॥ २ ॥ चरित्र सु
 णावी पाठलाजी, ज्ञान तणे वल जोय ॥ इद्रप्रज्ञानो
 जीवडोजी, कनकमाला ए होय ॥ मु० ॥ ३ ॥ काम

रागनी व्यापनाजी, पोखाणीथी नूर ॥ तेही अच्यसे
 उपनीजी, ए तुऊ साथे चूर ॥ मु० ॥ ४ ॥ काम कहे
 करुणा करोजी, गुण मणीना सदेह ॥ जणणीए किम
 पामीयोजी, मुऊशु एह विगेह ॥ मु० ॥ ५ ॥ जवुदीपे जा
 णीएजी, खेत नरत गुण धाम ॥ मगधदेश माहे न
 लोजी, लक्ष्मीपुर अर्नाराम ॥ मु० ॥ ६ ॥ सोमशर्मा
 नामे वसेजी, ब्राह्मण विद्या पात्र ॥ कमला कमला
 सारखी जी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ॥ ७ ॥ पुत्री
 तो लक्ष्मीवतीजी, सा अहकारणी सोइ ॥ एक दिवस
 ऋषी आवीयाजी, वोहोरण काजे जोय ॥ मु० ॥ ८ ॥ रु
 प निहाले आपणोजी, आरीसामे ते जाम ॥ पावो ऋ
 पी उजो हुवोजी, किधी निंद्या ताम ॥ मु० ॥ ९ ॥ मु
 नी निंद्याना दोपथीजी, लही कोढनो रोग ॥ पामी सा
 दीन सातमेजी, मरण तणो सजोग ॥ मु० ॥ १० ॥
 खरोखरी दुखणी थडजी, मरी सुकरी होय ॥ कोटवा
 ले बाणे हणीजी, सनी कुकरी जोय ॥ मु० ॥ ११ ॥ अग्नी
 जालमाहे बलीजी, तव धीवरणी थाय ॥ पूर्व पाप प्र
 नावथीजी, देही घणु गधाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ गगा पा
 से कुटीकाजी, रहे स्वजनथी दूर ॥ वनफल नखी नी
 ऊर पिएजी, करे उदर नरपूर ॥ मु० ॥ १३ ॥ शित
 काले फिरतो थकोजी, सोइ ऋषीश्वर जाण ॥ ध्यान
 योग्यने ध्यावतोजी, दिठो पुण्य प्रमाण ॥ मु० ॥ १४ ॥
 सा अतिशेवा साचवेजी, शुन कर्माने योग ॥ पूरव न

व समजायीयोजी, ज्ञान तणे उपयोग ॥ मु० ॥ १५ ॥ प
 श्वाताप करे घणोजी, मुनी निद्याना पाप ॥ आलोइ
 शुच नावशुजी, शुद्ध कियो घट आप ॥ मु० ॥ १६ ॥
 समकीत धर्म समाचर्योजी, श्रावकना व्रतधार ॥ आ
 वी नगरी कौसलाजी, आतमने हितकार ॥ मु० ॥ १७ ॥
 साधवीया पासे रहेजी, तप नाना विध किध ॥ राज
 ग्रही आव्या वहीजी, उत्तम सगति लीध ॥ मु० ॥ १८ ॥
 गुफा माही साधवीजी, बार रही सा बाल ॥ विलुरी वा
 घे घणुजी, प्राण तज्या ततकाल ॥ मु० ॥ १९ ॥ पही
 ले सुर लोके उपनीजी, जोगवे सुख अपार ॥ नगरी
 कोसवीए थइजी, राय घरे पट नार ॥ मु० ॥ २० ॥
 रामत मिसे हाथे लियाजी, मोरली इडा जोय ॥ घनी
 सोलने आतरेजी, आदरीया फिरी सोय ॥ मु० ॥ २१ ॥
 विमलमती गुरुणी कन्हेजी, राणी सजम लीध ॥ अ
 णसण उत्तम मासनोजी, विणआलोयण किध ॥ मु० ॥
 ॥ २२ ॥ स्वर्ग वारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पा
 य ॥ हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुह्य माय ॥ मु०
 ॥ २३ ॥ किधा कर्म न बुटीएजी, वरस सोल लगी दे
 ख ॥ विरह तुह्यारो पामीयोजी, माताए सुविसेध ॥
 मु० ॥ २४ ॥ माता पासे जाइनेजी, लहो विद्या दोय ॥
 प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोय ॥ मु० ॥ २५ ॥
 साख ऋषी पच्योत्तरमीजी, ढाल जली कहेवाय ॥ गुणसा
 गर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय ॥ मु० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ मदन कृमर फीरो आबोयो, खेचरणाने स
ग ॥ विण प्रणाम वेठो सही, साची ते मन रग ॥१॥
रूपनाथने नावीयो, ए आयो हम पास ॥ वचन वि
शेषे मानशे, दिसेठे जल्हास ॥ २ ॥

ढाल ७६ मी ॥ मन नमरानी देशी ॥ तव बोले
सा सुदरी, सुण नोग पुरदर ॥ मान वचन मुज आ
ज, शुण सुण नोग पुरदर ॥ विविव प्रकारे ताहरा ॥
सु० ॥ सारु ववित काज ॥ शु० ॥ १ ॥ प्रज्ञापतिने रो
हिणी ॥ सु० ॥ मोटी विद्या एह ॥ शु० ॥ प्रित रीतशु
रिंजवी ॥ सु० ॥ आपु आणी सनेह ॥ शु० ॥ २ ॥ धु
तो धूतेवा नणी ॥ सु० ॥ बोले मीठा बोल ॥ शु० ॥
आज लगी लोप्या नहि ॥ सु० ॥ यारा बोल अमोल
॥ शु० ॥ ३ ॥ हु तु किंकर ताहरो ॥ सु० ॥ आज्ञाका
री जोय ॥ शु० ॥ ये विद्या परमेश्वरी ॥ सु० ॥ जे ते
नाखी दोय ॥ शु० ॥ ४ ॥ विपया वश आतुर थइ ॥ सु०
॥ धोलो जाण्यो दुध ॥ शु० ॥ दीधी विद्या वीधी क
ही ॥ सु० ॥ होय गइ अति शुत्र ॥ शु० ॥ ५ ॥ मत
वालीथी अती घणी ॥ सु० ॥ मतवाली ए जोय ॥ शु०
॥ उतो धन नवि दाखवे ॥ सु० ॥ ए रही विद्या खोय
॥ शु० ॥ ६ ॥ विद्या साधी सकु करी ॥ सु० ॥ पायो
बहु सतोष ॥ शु० ॥ खेचरणीशु खरखरा ॥ सु० ॥
बोले वचन सरोष ॥ शु० ॥ ७ ॥ मे नवि दीठो ता
तजी ॥ सु० ॥ नवि दिठि निज मात ॥ शु० ॥ तात

मात तुहि सहि ॥ सु० ॥ मत कहे बीजी वात ॥ शु० ॥
 ॥ ८ ॥ वाचा पाली विशेषथी ॥ सु० ॥ जगमे वाचा
 सार ॥ शु० ॥ वाचा विचली जेहनी ॥ सु० ॥ वादी
 गयो अवतार ॥ सु० ॥ ९ ॥ कहे रामजी नरतशु
 ॥ सु० ॥ बोल न बोले आण ॥ शु० ॥ हिन प्रतिज्ञा
 नो धणी ॥ सु० ॥ तजवो जेम मसाण ॥ शु० ॥ १० ॥
 किंवा को निंदा करे ॥ सु० ॥ कोइ करे गुण ग्यान
 ॥ शु० ॥ लक्ष्मी जात फीरी आत ॥ सु० ॥ न तज्यु
 न्याय निदान ॥ शु० ॥ ११ ॥ पहिलि तो तु माय
 जी ॥ सु० ॥ पालवाने काज ॥ शु० ॥ विद्या दान त
 पि दाता ॥ सु० ॥ गुरुणि हुइ आज ॥ शु० ॥ १२ ॥
 वज्रपात समानडा ॥ सु० ॥ साजलि वचन विचार ॥
 शु० ॥ उठि वाघणी बलगवा ॥ सु० ॥ चाल्यो करीय
 जुहार ॥ शु० ॥ १३ ॥ हाथ घसे कूटे हियो ॥ सु० ॥
 शौच करत अपार ॥ शु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हु ठ
 गी ॥ सु० ॥ विद्या खोइ सार ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोइ उ
 पास केलवी ॥ सु० ॥ लाज शिख जे वार ॥ शु० ॥
 दुख ज्वाला शिलि करु ॥ सु० ॥ पामु चयन ते वार
 ॥ शु० ॥ १५ ॥ आप विलुरि तन घणु ॥ सु० ॥ मा
 के अति तोफान ॥ शु० ॥ रोति न रहे राखता ॥ सु०
 ॥ पूढे तव राजान ॥ शु० ॥ १६ ॥ विलचिवा घणी
 बलबले ॥ सु० ॥ ए तुम सुतना काम ॥ शु० ॥ हो
 य वटाउ आपणा ॥ सु० ॥ तो घरनो स्यो नाम ॥ शु०

॥ १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए ॥ सु० ॥ जे पर
 ते पर होय ॥ शु० ॥ मदिर वसे न प्राहुपो ॥ सु० ॥
 इम जाखे सहु कोय ॥ शु० ॥ १८ ॥ प्रचुर्जी तुह्य प्रसा
 दथी ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ गील न
 जांग्यो मूलथी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमे काई ॥
 शु० ॥ १९ ॥ द्रीठा लुड कुलठने ॥ सु० ॥ जो परन
 व पोचाउ ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥
 नहितर काठ धखाउ ॥ शु० ॥ २० ॥ आत तपे अति
 आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥
 सोक्याना जगडा विपे ॥ सु० ॥ माता जूठी थाय ॥
 शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न
 लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु० ॥
 मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥ २२ ॥ जन अपवाद निवा
 रवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए
 जतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो हम आज ॥ सु० ॥
 ॥ २३ ॥ मदन कुमर आगे करी ॥ सु० ॥ स्नान क
 रेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या जेद जणावियो ॥ सु० ॥
 बीजो रूप धराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो ज
 इ रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ वृह
 चडि डाकी पने ॥ सु० ॥ जूले वावि मजार ॥ सु० ॥ २५ ॥
 शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु० ॥ वावि तणे परीमाण ॥ सु० ॥
 उर्द पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दारुया तेहि अयाण ॥
 ॥ सु० ॥ २६ ॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥ सु० ॥ राजा पासे

पुकारा॥सु०॥ साहण वाहण सामटे ॥सु०॥ राय चढ्यो
 तेहिवार ॥ शु० ॥ २७ ॥ चतुरगी सेन्या सजी ॥ सु०
 ॥ साहमो काम कुमार ॥ सु० ॥ आयो आडवर घणे
 ॥ सु० ॥ जाग्यो जरम अपार ॥ सु० ॥ २८ ॥ दुर्जय
 मदन विचारीयो ॥ सु० ॥ विद्या भागे राय ॥ सु० ॥
 नारी कहे लेइ गयो ॥ शु० ॥ राजा तव पिठताय ॥
 शु० ॥ २९ ॥ ए नारी व्यञ्चिचारिणी ॥ सु० ॥ चरित
 करे लख कोड ॥ शु० ॥ फिरी आयो रणचूमीका ॥ शु०
 ॥ पुत्र नम्यो करजोरु ॥ शु० ॥ ३० ॥ जनक जीति ज
 स वगीए ॥ सु० ॥ सो अपजस अवधार ॥ शु० ॥ ति
 रथ माहे मानीयो ॥ सु० ॥ जनक वनो ससार ॥ शु०
 ॥ ३१ ॥ वृद्ध विशेषे वाधीयो ॥ सु० ॥ गयो जेदि
 आकाश ॥ शु० ॥ यद्यपी उची नाशीका ॥ सु० ॥ तो
 ही पिण शीर तले वास ॥ शु० ॥ ३२ ॥ एह विवेक
 विच्यारवे ॥ सु० ॥ कामे तज्यो अर्जीमान ॥ शु० ॥
 तावेता कचन तणो ॥ सु० ॥ वेधे वधे घनवान ॥ शु०
 ॥ ३३ ॥ ज्वार साल ने तरु फल्यो ॥ सु० ॥ चउथो
 साजन देख ॥ शु० ॥ सहेजे हिनमणा हुवा ॥ सु० ॥
 मदन तो जाण विशेष ॥ शु० ॥ ३४ ॥ बधव बधन
 गोडीया ॥ सु० ॥ मिलीयो बहु परीवार ॥ सु० ॥ घर
 घर रग वधामणा ॥ सु० ॥ वरत्यो जय जयकार ॥ शु०
 ॥ ३५ ॥ विनय करीने विनवे सु० ॥ तात करो शुवि
 च्यार ॥ शु० ॥ तेग फिरे किम तेहनी ॥ शु० ॥ जेहनो

॥ १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए ॥ सु० ॥ जे पर
 ते पर होय ॥ शु० ॥ मंदिर वसे न प्राहुपो ॥ सु० ॥
 इम जाखे सहु कोय ॥ शु० ॥ १८ ॥ प्रभुजी तुह्य प्रसा
 दर्था ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ शील न
 जाग्यो मूलयी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमे कार्द ॥
 शु० ॥ १९ ॥ द्रीठा लुड कुलठने ॥ सु० ॥ जो परज
 व पोचाउ ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥
 नहितर काठ धखाउ ॥ शु० ॥ २० ॥ आत तपे अति
 आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥
 सोक्याना जगडा विपे ॥ सु० ॥ माता जूठी थाय ॥
 शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न
 लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु० ॥
 मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥ २२ ॥ जन अपवाद निवा
 रवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए
 जतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो हम आज ॥ सु० ॥
 ॥ २३ ॥ मदन कुमर आगे करी ॥ सु० ॥ स्नान क
 रेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या नेद जणावियो ॥ सु० ॥
 बीजो रूप घराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो ज
 ह रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ वृह
 चडि ढाकी पने ॥ सु० ॥ जूले वावि मजार ॥ सु० ॥ २५ ॥
 शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु० ॥ वावि तणे परीमाण ॥ सु० ॥
 उर्द पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दारुया तेहि अयाण ॥
 ॥ सु० ॥ २६ ॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥ सु० ॥ राजा पासे

कुमार, सुण नारद सुविच्यार ॥ आठे लाल ॥ माय
 वापने बूजो ए ॥ ते तो गमन कराय ॥ अणपूण्या
 न जवाय ॥ आठे लाल ॥ आगल पाठल शुजोए ॥ १ ॥
 मात पिताना पाय, प्रणमे बहुले जाय ॥ आ० ॥ को
 मल वचन प्रकासतो ए ॥ तात खमो अपराध ॥ मे दि
 धो दुख दाह ॥ आ० ॥ दिनपणो अति जाषतो ए ॥
 ॥ २ ॥ माता सुण अरदास, हुबु थारो दास ॥ आ० ॥ आ
 श हमारी पूरवी ए ॥ पडीयो पत्थर माही ॥ उठायो
 उठाही ॥ आ० ॥ आरती चिंता चूरवी ए ॥ ३ ॥ वैरी
 केरे वास, तुह पसाइ आश ॥ आ० ॥ पुगी माहरा म
 न तणी ए ॥ जाइ जाया आन ॥ करता हरता प्राण
 ॥ आ० ॥ पडुची न शक्यो तुम्ह जणी ए ॥ ४ ॥ हुतो
 दीन अनाथ, म्हारो कोइ न नाथ ॥ आ० ॥ गगन पद
 तो जिलीयो ए ॥ थारा किधा काज ॥ ए सघला शु
 ज साज ॥ आ० ॥ पाप पराजव पिलीयो ए ॥ ५ ॥ जेह
 ने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप ॥ आ० ॥ माय वि
 गेहो तेहमें ए ॥ नूढा माही एह ॥ जलपण केरी रेह
 ॥ आ० ॥ तुम्हशी जणणी जेहने ए ॥ ६ ॥ विसारे म
 ती मोय, माय विनवुं तोय ॥ आ० ॥ हियना नतिर रा
 खवो ए ॥ मुऊने वालक जाण, चूवी मुह शीर पाण
 ॥ आ० ॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ गती फाटे
 माय, पितापिण इम याय ॥ आ० ॥ चउधारा आशु
 वहे ए ॥ विसारयो नवीजाय, राख्यो पिण न रहाय

हिण आचार ॥ शु० ॥ ३६ ॥ साठ अने वली सोलमी
सु० ॥ ढाले शिल वखाण ॥ शु० ॥ गुणसागर उपदे
शीयो ॥ सु० ॥ गिलसु धर्म प्रधान ॥ शु० ॥ ३७ ॥

दुहा ॥ नारदऋषी अवलोकियो, पुत्र पराक्रम को
ढ ॥ चाली आयो आशनी, मदन नम्यो करजोड ॥
॥ १ ॥ मदन कहे सुण वापजी, माहरे जग नहीं कोय ॥
माय वाप वयरी थया, कहो किशी गती होय ॥ २ ॥
तुजसम अवर सोजागीयो, को नहीं जगत मजार ॥
वाप कृष्ण मा रुखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हु
आयो तुज तेडवा, चाल मतलावीश वार, अवसरनो
आगम जलो, जिम जगमें जलधार ॥ ४ ॥ अवसर
आयो पुवनसुत, सत्यवती उठरग ॥ विसाला पिण अ
वसरे, फरसे लक्ष्मण अग ॥ ५ ॥ अवसरथी सुग्रीव
ना, रामे समारथा काम ॥ रावण वधव पामीयो, ल
क पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अवसर पांडु पधारिया, कु
तीका पिण फद ॥ अवसर पारुव प्रगटीया, करवा
कौरव मद ॥ ७ ॥ अवसर यादव देखीए, जलो कि
यो उपगार ॥ अवसर चूक्या मानवी, सोच करे अ
पार ॥ ८ ॥ घूलनी पाणी पाइयो, जीवतढाने जोय ॥
घडा सोरेड्या उपरे, मुआ पनी शुं होय ॥ ९ ॥ जा
मा पुत्रना, व्याहमें तुज माता शिर केस ॥ लिया
सा जीवे नहीं, तुज मन थाय कलेश ॥ १० ॥

ढाल ७७ मी ॥ आठे लालनी देगी ॥ बोले मदन

॥ १५ ॥ हुतो बुढो देख, तु तरुणो सुविशेष ॥ आ०
 ॥ किउ न करे मन जावतो ए ॥ रचे विमान रसाल,
 सबहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमडल जिम
 आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त
 तकाल ॥ आ० ॥ किउ न चले वेगो वहि ए ॥ नारद
 वदन तुरत, तुटेखो परदत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति
 म सहिए ॥ १७ ॥ रुपाचल गिरि सोइ, उलघीया ते
 दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट
 वि जेह, तदक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला थान दे
 खाविया ए ॥ १८ ॥ नूमडलना रूयाल, गिरी सरी
 ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखता ए ॥ म
 ध्य देशमे देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु
 वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो
 ढाल रसाल ॥ आ० ॥ जाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु
 णसागर एम, बोले बोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा
 मुऊ मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार
 ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजा सार ॥ १ ॥
 मदन कहे ऋषि ए किहा, जाइ दल बल पूर ॥ खेच
 रमे नवि पुखीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋषी जां
 खे गजपुत्र धणी, दुर्योधन नूपाल ॥ चतुरगी सेन्या
 जली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ६ ॥ होड पढी जेही
 कारणे, रुलमणी नामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

॥ आ० ॥ जेह लेहणो सोइ लहे ए ॥ ८ ॥ अवर मा
 ताने शीश, नामी लहे आशीश ॥ आ० ॥ कोडी वर
 स चिरजिवजे ए ॥ जाइ तणो परीवार, स्वामि मदन
 कुमार ॥ आ० ॥ जाइ जणे आनद जे ए ॥ ९ ॥ सु
 ण मोटा मत्रीश, खामु विशवा वीश ॥ आ० ॥ जे भेरो
 स धरावीयो ए ॥ सुजट सहु करजोरु, आपनमे मन
 मोड ॥ आ० ॥ खमज्यो जोर करावीयो ए ॥ १० ॥ जे
 तावान गुलाम, तेहने पिण सलाम ॥ आ० ॥ उरण हुइ
 ने हालीयो ए ॥ नान्हा मोटा साथ, घाली गलामा
 वाथ ॥ आ० ॥ चित्त चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥
 मस्तक निण जेम देह, नाक विना मुख एह ॥ आ० ॥
 तारा विण जिम लोयणा ए ॥ पान विना जिम वेल,
 जल विण सरोवर मेल ॥ आ० ॥ लुण विणा जिम जो
 जणो ए ॥ १२ ॥ विद्या विण जिम देवि, हरी विण
 दरिये कहेवी ॥ आ० ॥ देवा विण जिम देहरो ए ॥
 विण श्री काम कुमार, सुना घर दरवार ॥ आ० ॥
 लालन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ बेसी विमाने ता
 म, नारदशु अजराम ॥ आ० ॥ सुढो जिम उडी ग
 यो ए ॥ हेज हिये न समाय, हिंसे जिम वढ गाय
 ॥ आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो-ए ॥ १४ ॥ ना
 रद कृतिशु विमान, तोमे लात प्रमाण ॥ आ० ॥
 हास्य हिए न समावही ए ॥ बावाजीशु ताम, बो
 ले कुमर काम ॥ आ० ॥ कामे शु न सोहावइ ए ॥

॥ १५ ॥ हुतो बुढो देख, तुं तरुणो सुविशेष ॥ आ०
 ॥ किउ न करे मन जावतो ए ॥ रचे विमान रसाल,
 सबहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमडल जिम
 आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त
 तकाल ॥ आ० ॥ किउ न चले वेगो वहि ए ॥ नारद
 वदन तुरत, तुटेखो परदत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति
 म सहिए ॥ १७ ॥ रुपाचल गिरि सोइ, उलघीया ते
 दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट
 वि जेह, तद्धक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला थान दे
 खाविया ए ॥ १८ ॥ चूमडलना रूयाल, गिरी सरी
 ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखता ए ॥ म
 ध्य देशमे देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु
 वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो
 ढाल रसाल ॥ आ० ॥ जाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु
 णसागर एम, बोले बोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा
 मुऊ मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार
 ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे बाजा सार ॥ १ ॥
 मदन कहे ऋषि ए किहा, जाइ दल बल पूर ॥ खेच
 रमे नवि पुखीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋषी जा
 खे गजपुर धणी, दुर्योधन चूपाल ॥ चतुरगी सेन्या
 जली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ६ ॥ होड पडी जेही
 कारणे, रुखमणी नामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

री, परणवा चालि उगहे ॥ ४ ॥ नामा घरे दिन बा
रमे, सुतनी थाप्यो नाम ॥ जानु विशेषे जानुने, ते
हसु व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देगी ॥ कुमर कहे सु
ण तातजी, नारद ए मुऊ वात ॥ कुमर ॥ कौतुरु क
रतो नहि रहु, राखे शु अखिवात ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १ ॥
रूप धरयो तव जिलनो, विरलो वदन विशाल ॥ कु० ॥
मोटा दात विहामणा, प्रौढ वणायो जाल ॥ कु० ॥ जौ०
॥२॥ उडा कुआ सारिखा, गाल डरावण हार ॥ कु० ॥
डिले वली अति लीलहरी, पिला केग अपार ॥ कु०
॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातना, दिसे मोटी काच ॥ कु०
॥ गेटा कर अति दुवला, मोठो पेट क्हाय ॥ कु० ॥
॥ ४ ॥ जाडी जाघ सळ घणा, रूपे रूप कुरूप ॥ कु०
॥ वेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कु० ॥ ५ ॥
अकुश अति आकरा, जागी केन देखाय ॥ कु० ॥ नृ
कुटी जाले जनुजडे, जीला केरो राय ॥ कु० ॥ ६ ॥
हाथे तीरने कामठो, थोथा बाण बेच्यार ॥ कु० ॥ गा
ति वालि गरवसु, वचन वदे आविचार ॥ कु० ॥ ७ ॥
मारग रोकनीने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कु० ॥ कौर
व केलवणी करे, आगे उजा आय ॥ कु० ॥ ८ ॥ रे जा
इ तुं स्यु कहे, क्यु रोकनीजे माग ॥ कु० ॥ सो जाखे तु
ह्म साजलो, दाण तणो मुऊ लाग ॥ कु० ॥ ९ ॥ कौर
व बोले जीलढा, बोल विमासी बोल ॥ कु० ॥ स्यु ह

म जोला वाणीया, आपे दमना खोल ॥ कु० ॥ १० ॥
 कृष्ण कह्यो ठे मुऊ जणी ॥ ह्यारा देश मजार ॥ कु० ॥
 वस्तु जलि ते ताहरी, हु बु कृष्ण कुमारा ॥ कु० ॥ ११ ॥
 तुम्ह सरीखा ठे केटला, कृष्ण तणे घर नद ॥ कु० ॥
 मुऊ सरीखो तो हुज बु, कृष्ण तणे कुल चद ॥ कु० ॥
 ॥ १२ ॥ तु साचोरे तु साचो, माता जायो रत्न ॥ कु० ॥
 रत्न अठु चिंतामणी, क्यु न करो तुम्ह यत्न ॥ कु० ॥
 ॥ १३ ॥ यत्न करे सा अति घण, पूजे स्या तुऊ पाय
 ॥ कु० ॥ ए आवी हाय विहथमे, जीज किया स्यु था
 य ॥ कु० ॥ १४ ॥ तो हु जायो कृष्णनो, मारु थारो
 मान ॥ कु० ॥ ठाकुर करडा चाहीए, ए गो एह मेदान
 ॥ कु० ॥ १५ ॥ ता लगे तेमनी व्यापना, ज्या लगे
 न जगे सूर ॥ कु० ॥ नाचे कूदे हरणलो, नायो सिंघ
 हजूर ॥ कु० ॥ १६ ॥ कौरव तुह्य कपटी घणा कपट
 तणे वल जोय ॥ कु० ॥ चूमी उडावी पाडवा रीस घ
 णी मुऊ सोय ॥ कु० ॥ १७ ॥ उधीत पोधीन थाहरी,
 ऊठो करो गुमान ॥ कु० ॥ वडमाता व्यञ्जिचारणी, था
 रा एह वखाण ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ आधे जाया आध-
 ला, होइ फिरो तुह्य आप ॥ कु० ॥ मीडु दीठाठे
 घणा, मिल्योन कालो साप ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १९ ॥
 यद्यपी वादल ढाकीयो, तेज जणावे जाण
 ॥ कु० ॥ विणसी जाणी गोठमी, विच करे प्रधान ॥
 ॥ कु० ॥ २० ॥ ले घोमो ले हाथीयो, जे थारे मन चाव

री, परणवा चालि उवाहे ॥ ४ ॥ नामा घरे दिन बा
रमे, सुतनी थाप्यो नाम ॥ जानु विंगेपे जानुने, ते
हसु व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देगी ॥ कुमर कहे सु
ण तातजी, नारद ए मुळ वात ॥ कुमर ॥ कौतुक क
रतो नहि रहु, राखे शु अखियात ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १ ॥
रूप धरयो लव जिलनो, विरलो वदन विंगाल ॥ कु० ॥
मोटा दात विहामणा, प्रौढ वणायो जाल ॥ कु० ॥ कौ०
॥ २ ॥ उडा कुआ सारिखा, गाल डरावण हार ॥ कु० ॥
डिले वली अति लालहरी, पिला केश अपार ॥ कु०
॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातना, दिसे मोटी काच ॥ कु०
॥ गेटा कर अति दुबला, मोठो पेट कदाय ॥ कु० ॥
॥ ४ ॥ जाडी जाघ सल घणा, रूपे रूप कुरूप ॥ कु०
॥ वेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कु० ॥ ५ ॥
अकुश अति आकरा, जागी केरु देखाय ॥ कु० ॥ चृ
कुटी जाले जमजडे, जीला केरो राय ॥ कु० ॥ ६ ॥
हाथे तीरने कामठो, थोथा वाण बेच्यार ॥ कु० ॥ गा
ति वालि गरवसु, वचन वदे अविचार ॥ कु० ॥ ७ ॥
मारग रोकीने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कु० ॥ कौर
व केलवणी करे, आगे उजा आय ॥ कु० ॥ ८ ॥ रे जा
इ तुं स्यु कहे, क्युं रोकीजे माग ॥ कु० ॥ सो जाखे तु
ह्य सांचलो, दाण तणो मुळ लाग ॥ कु० ॥ ९ ॥ कौर
व बोले जीलढा, बोल विमासी बोल ॥ कु० ॥ स्यु ह

वाद सहु निस्वाद हो, स्वाद नहो स्वाद न लागे
 को नलो ए ॥ साही नाखो दूर हो, चालो एहने चू
 र हो, चूरनहो चूरी चल्यो को मति टलो ए ॥ २ ॥
 एक थो दरवेस हो, मनोरथ सुविशेष हो, शेषनहो
 लाते फूट्यो खापरो ए ॥ हुवे चांगो गेह हो, तेहवो
 दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥ ३ ॥
 दल चाल्या अजीराम हो, दल रोकाया ताम हो, ता
 मनहो ताम रोक्या ए दल सहु ए ॥ सुनट मारण
 काज हो, धाया सजी साज हो, साजनहो साज
 सजे ते बहु ए ॥ ४ ॥ कुकुठ सुणी कान हो, सवर
 मिलीया आण हो, आणनहो सवर मिलीया अति घ
 णा ए ॥ विविध आयुधवत हो, युद्धमे बलवत हो, वत
 नहो मान मोने परतणा ए ॥ ५ ॥ जूमीने गिरी श्रृंग
 हो, वृद्ध उपरी रग हो, रगनहो रगी रमता देखीए
 ए ॥ कृष्ण अगज कोडीहो, जड शीरोमणी जोमी हो,
 जोडीनहो होड को न विशेषीए ए ॥ ६ ॥ सुनट ना
 ठा जाय हो, को न साहमा थाय हो, थायनहो सिंघ
 साहमा हर्णला ए ॥ उदधी कुमरी लिध हो, जीलनो
 कारज सिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए
 ॥ ७ ॥ देखीयो ऋषी राय हो, ए न लीधो जाय हो,
 जायनहो ए न लीधो सुरनरु ए ॥ लावीयो ततकाल
 हो, साधु पासे बाल हो, बाल नहो कियो रूप पुरद
 रु ए ॥ ८ ॥ ठरथी देखत हो, पृथही गुणवत हो, व

॥ कु० ॥ जेहनी जेहने सुपता, गेस किसो तुझ राय ॥
 ॥ कु० ॥ २१ ॥ घोडा हायीं गु करु, लेशु आगी वस्तु
 ॥ कु० ॥ माहरा मनमे जावती, देखी वस्तु
 समस्त ॥ कु० ॥ २२ ॥ आगीमे आगी घणी, आगी कु
 मरी जोय ॥ कु० ॥ सोइ आपो मुज नणी, हरी रली
 यायत होय ॥ कु० ॥ २३ ॥ यारे तो ए हासठे, पिण मा
 हरे ए साच ॥ कु० ॥ तो हु जायो वापनो, पालु बोली
 वाच ॥ कु० ॥ २४ ॥ जिम जिम हठ पोखीयो, पातसा
 हके पास ॥ कु० ॥ तिम हठ पोखु हु घणो, तो देख्यो
 शावास ॥ कु० ॥ २५ ॥ ढाल नली अठोत्तरमी, कौरव
 सु सवाद ॥ कु० ॥ गुणसागर जस पामशे, पूरव पुण्य
 प्रसाद ॥ कु० ॥ कौ० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रे रे निर्लज्ज दीठ तुं, जाखे किस्यु गिमार
 ॥ सोड देखी धूर आपणी, किजे पाउपसार ॥ १ ॥
 नान्हे मुहमे मोटीका, बोले बोल न कोय ॥ बोले तो
 पावे सही, गाल चपेटा सोय ॥ २ ॥ हुश करी जे ते
 तली, जे तो पुण्य प्रकाश ॥ आवो अबर जइ रह्यो,
 वामन शिफल आश ॥ ३ ॥

ढाल ७९ मी ॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए
 देशी ॥ वामन शिफल आश हो, कौरव जाखे तास
 हो, तास नहो जाखे कौरव राजवी ए ॥ नौरव ऊपा
 पात हो, करी निज आतमघात हो, घात नहो पावे
 नारी अनीनत्री ए ॥ १ ॥ एशु स्यो ऊखवाद हो,

यनहो आवे शु उतावलो ए ॥ पूरीसु शकेत हो, मा
 य मिलवाने हेत हो, हेतनहो चित्तमे उमाइलो ए ॥
 ॥१६॥ जाति कौरव काल हो, आवीयो सुकुमाल हो,
 मालनहो ढाल ए एकुणऐशीमी ए ॥ मदन महिमा
 माल हो, सुरजीने सुवीशालहो, सालनहो गुणसागर
 मन सारमी ए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मदन कुमर मन रगशु, यजी गगन वि
 मान ॥ आवे नगरी द्वारिका, गुप्तपणे गुण जाण ॥
 ॥१॥ धुर आयो चौगानमे, वधव नयणे दिठ ॥ सु
 दरता अविलोकता, लोयण अमीय पइठ ॥ २ ॥ पूवे
 विद्या सो कहे, जानु जानुं सम देख ॥ जामा सुत
 आनदमें, पुण्य प्रताप विशेष ॥ ३ ॥ घोना खेलावे
 घणा, घोडासु आति प्रेम ॥ आप जणावु एहने, मा
 सुख पामे जेम ॥ ४ ॥

ढाल ८० मी ॥ विठियानी देशी ॥ कौतुक केलवे
 घणु, तव श्री काम कुमाररे ॥ जाइ ॥ चरित तणो न
 हिं पार ए, कोइ न जाणे साररे ॥ जाइ ॥ कौ० ॥ १ ॥
 लबोदर काया वनी, चचल गति विस्ताररे जाइ ॥
 सर्व अवेवा शोचतो, सर्व सुलक्षण धाररे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ २ ॥ ते उचे स्वर सारिखो, अश्व अनोपम वान
 रे ॥ जा० ॥ विविध प्रकारे शृंगारीयो, सोना केरो पला
 एरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ३ ॥ एहवो घोडो कर धरी, सो
 सोदागर थायरे ॥ जा० ॥ पाणि पाव शिर कपणी, ज्या

तनहो कवण ए सुख कारीका ए कहे नारद ताम
 हो, सुणही कुवर काम हो, कामनहो ए ॥ वर नगरी
 द्वारीका ए ॥ ९ ॥ स्वर्ग खड समान हो, उपमानो
 यान हो, याननहो एहवो विजो को नहीं ए ॥ कृष्ण
 राय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो
 वास रुडोवे सही ए ॥ १० ॥ हेममे पागार हो, तुग
 न हाय अठार हो, ठारनहो रत्न मणीमि कागुरा ए ॥
 देव निर्मात काम हो, स्वर्गपुरी सम ठाम हो, ठामन
 हो पूरीये वन्वना नरा ए ॥ ११ ॥ वावीको विस्ता
 र हो, नीर पूरीत सार हो, सारनहो नारी मजन का
 रणे ए ॥ वना श्री गजराज हो, मद ऊरत सकाज
 हो, काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥ १२ ॥ मेहे
 ल तणी वरओली हो, वणती वणती पोली हो, पो
 लीनहो पोली तो उची कही ए ॥ सकल काती अ
 पार हो, उगतो दिनकार हो, कारनहो काति किरणे
 मीली रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वर सोह हो, सोह
 नो सदेह हो, दोहनहो सोह गुणे धन जाणीयो ए ॥
 स्वर्ग मृत्यु पाताल हो, तिन लोक रसाल हो, साल
 नहो सार शोधीने आणीयो ए ॥ १४ ॥ पूरी देखण
 जाय हो, साधु आडो थाय हो, थायनहो थाए आ
 डो सादरो ए ॥ यादवनो अति जोर हो, थारो चित्त
 चकोर हो, कोरनहो सोर माचे सखरो ए ॥ १५ ॥
 शहेर माहि जाय हो, मिलसु तुमने आय हो, आ

रहि लाजरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ बुढा बाबा बाउ
 ला, जीन करघा स्यो काजरे ॥ जा० ॥ चढि घोडे दे
 खुं सहि, चतुरपण तुज आजरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥
 ॥१५॥ घोमे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे
 ॥ जा० ॥ कोइ चढावे जोरसुं, देखाउ गति तामरे
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ सात पाच नर आवीया,
 उपाह्यो आकाशरे ॥ जा० ॥ पह्यो अपूठो उपरे,
 खोपर दत्त विणासरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ बीजी
 वारे इम सही, दाढ्या सुजट अपाररे ॥ जा० ॥ ती
 जीवार चढावता, चाप्यो जानुं कुमाररे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ १८ ॥ जानु हिये पग देइने, आपहि चढियो
 जामरे ॥ जा० ॥ लागो अश्व खेलाववा, तरुण तणी
 परे तामरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १९ ॥ नाचण कूदण
 चालणे, राग वागु अनुमानरे ॥ जा० ॥ राजपुत्र अ
 ति रजिया, रज्यो कुवर जानुरे ॥ जा० ॥ २० ॥ आ
 काशे उचो जइ, सुगमाइनो सचरे ॥ जा० ॥ देखावि
 आघो गयो, कुमर लिख्यो परपचरे ॥ जा० ॥ कौ०
 ॥ २१ ॥ एतो ऐगीमी कही, ढाल अनापेम नामरे ॥
 जा० ॥ गुणसागर कामे कियो, नामा सुत गत मा
 मरे ॥ जा० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ आगे जाता अति जलो, दिठो वन सुख
 ठाम ॥ पूढि कर्ण पिसाचिका, नामा वन अजीरामा ॥१॥
 घोमा रूपे चारीया, घास अने तरुपान ॥ विध्वसी घन

की बुढि कायरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ४ ॥ यल यल करतो
 आवीयो, जानु कमरनी पासरे ॥ जा० ॥ अथ रत्न
 अविलोकता, पायो अति उल्हामरे ॥ जा० ॥ का०
 ॥५॥ पूठे पथी कुण तु, हु परदेगी स्वामीरे ॥ जा० ॥
 हयपर आण्यो हिंसतो ॥ देव तुमारे कामरे ॥
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ६ ॥ कहे मोलमतिवत तु, कचन
 केरी कोमरे ॥ जा० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी
 जाणो खोमरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ७ ॥ आप कुदि घोने
 चड्यो, चावक लीधो हायरे ॥ जा० ॥ वाहे घोडो वे
 गशु, अचरिज सघले सायरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ८ ॥ सूरज
 रथ थनी रह्यो, करे विचारण प्राहिरे ॥ जा० ॥ के ए
 हनो के माहरो, नलो किस्यो दोय माहिरे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ ९ ॥ वक्र अने सन जावशु, नाचे कूदे सोयरे ॥
 जा० ॥ कुमर न सवाह्यो पडे, ताम विमासण होयरे
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १० ॥ उपरणी ने पागनी, उटकी पडी
 ए दोयरे ॥ जा० ॥ पाठे पडियो आपहि, लोगा हा
 सो होयरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ११ ॥ उठाइ उजो कियो,
 सोदागर त्रासतरे ॥ जा० ॥ थारा जाया गेकरा, बा
 वा किम जासतरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १२ ॥ कृष्ण तणे
 घर जाणीए, तु पाटोघर पूतरे ॥ जा० ॥ जानु नारे
 एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसूतरे ॥ जा० ॥ कौ०
 ॥ १३ ॥ घोडो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश
 राजरे ॥ जा० ॥ तुह्य स्या पुत्रा कृष्णने, कुलनी न

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा
 ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, केइद्र जाल कहावे ॥
 यादवनो परीवार, माहे जय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ
 होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ बुढा आणी सनेह,
 वरजे वारवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूढी का
 इ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो
 ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥
 मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥ १४ ॥ ति
 स एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी
 जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥
 दृष्टे आवी वावणी, सवही विधी अन्निराम ॥ १ ॥ क
 चन केरो कामठे, पयडीनो मडाण ॥ पच वरण रत्ना
 तणो, तेहनो किस्यो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी
 रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी नामा तणो,
 मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु सगती नित किजीए ॥ ए
 देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी
 साररे हो ॥ वज्रणा ॥ धोली धोती पहेरणेरे, फेटानो
 अति विस्तार हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके वाध्यो
 फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायरे हो ॥ व० ॥ पगे
 गुजराती खासडारे, वर्ण गुरुनो विरद धरायरे हो ॥
 व० ॥ रु० ॥ २ ॥ उपरणीने ओढवोरे, काने सोनानो जा

बेलडी, कीधो अधीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर वि
लोकियो, नामा केरो वाग ॥ जगभ तरुपर जेतल्य,
तेतानो तिहा लाग ॥ ३ ॥ वानर रूप रतिपति, रिस
विशेषे जोय ॥ पान फूल फल तोडीया, तुठ क्रियो व
न सोय ॥ ४ ॥ नगरी माहीं आवता. दिठो रथ वर
एक ॥ आवे चाल्यो सनमुखे. दिसे शोजा अनेक ॥ ५ ॥

ढाल ८१ मी ॥ रामचद्रके वाग चपो मोरी रह्यो
री ए देशी ॥ दिसे शोजा अनेक, सोवन रत्न विराजे
॥ मगल कुज विधेरु, वारु वाजा वाजे ॥ १ ॥ आरी
साकी सोह, सोहे ध्वज अजीराम ॥ नारीजण सदो
ह, गावे गीत सकाम ॥ २ ॥ पूगी विद्या काम, जाखे
शयल विच्यारो ॥ कुनारा घरनु नाम, परणे हरख
अपारो ॥ ३ ॥ कुनारा घर जाय, लावे कुन उदारु ॥
तुज माता दुखदाय, नामा शा अहकारु ॥ ४ ॥ कि
धो रूप विकार, उट अने खर केरो ॥ जोतरीया रथ
जार, खेमे आप घणेरें ॥ ५ ॥ हाशी करे ते नार,
हाको हाक मचावे ॥ जाजे रीसमजार, सो रथ आप
पुमावे ॥ ६ ॥ खढीत किधा कान, पाढ्या दात जी
वारे ॥ आयो कोपर जान, फाढ्या वस्त्र तेवारे ॥ ७ ॥
गीतथाने विलाप, करती नारी नाठी ॥ किम राखेवो
आप, हरीथी हरणी त्राठी ॥ ८ ॥ शेरी शेरी सोइ,
हिंढे आप सुहायो ॥ कामणगारो होइ, सबके मन
जायो ॥ ९ ॥ किन्नर सुर अवतार, खेचर नृचर रा

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा
 ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, के इद्र जाल कहावे ॥
 यादवनो परीवार, माहे नय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ
 होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ बुढा आणी सनेह,
 वरजे वारवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूढी का
 इ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो
 ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥
 मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥ १४ ॥ ति
 स एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी
 जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥
 दृष्टे आवी वावनी, सवही विधी अचिराम ॥ १ ॥ क
 चन केरो कामठे, पयडीनो मडाण ॥ पच वरण रत्ना
 तणो, तेहनो किर्यो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी
 रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी नामा तणो,
 मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु सगती नित किजीए ॥ ए
 देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी
 साररे हो ॥ वज्रणा ॥ धोली धोती पहेरणेरे, फेटानो
 अति विस्तार हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके वाध्यो
 फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायरे हो ॥ व० ॥ पगे
 गुजराती खासडारे, वर्ण गुरुनो विरद धरायरे हो ॥
 व० ॥ रु० ॥ २ ॥ उपरणीने ओढवेरे, काने सोनानो जा

ररे हो ॥ व० ॥ आगुलीया वर मुद्रडीरे, माये किषो
 तिलक उदाररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ३ ॥ मातो ने अरु
 फादशुरे, पिली आरुया जोति अपाररे हो ॥ व० ॥
 हाये कमडलु लाकडीरे, देव ध्वनीनो करे उचाररे हो
 ॥ व० ॥ ॥ रु० ॥ ४ ॥ गपा दिसे द्वारकारे, गगा के
 रो माये मडरे हो ॥ व० ॥ मथुरा माल विराजीतारे,
 किरीया काडे करी प्रचडरे हो ॥ व० ॥ ॥ रु० ॥ ५ ॥
 करमे रातो टिपणोरे, वाचे नक्षत्र वार विच्याररे हो
 ॥ व० ॥ जोशी जोतिप पूरीयोरे, लग्न तणी लहेवेला
 वाररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ ६ ॥ आशीर्वाद प्रकाशी
 योरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो ॥ व० ॥ कमळु
 जल जाचीयोरे, पेट चराइ सुखमें थायरे हो ॥ व०
 ॥ रु० ॥ ७ ॥ ए जल मत्री आपीशुरे, मन रलीयायत
 सोडरे हो ॥ व० ॥ देसे गीधो सामटोरे, तुहने पुण्य
 घणोरो होडरे ॥ व० ॥ रु० ॥ ८ ॥ चेनी चचल जा
 तनीरे, लाज नही निर्लंक अपार हो ॥ व० ॥ वाज
 ण म्नाण आवीयोरे, खेसो धोती मतलावो वाररे ॥ व०
 ॥ रु० ॥ ९ ॥ आवी वलगी वानरिरे, सो पूठे ए कुण वि
 च्याररे हो ॥ व० ॥ गुन्हेगार हमारडोरे, किउन लही जा
 मा की साररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १० ॥ जामाठे को नृत
 णीरे, के को देवीनो अवताररे हो ॥ व० ॥ उरमथकी तु
 उत्तरयोरे, जामा कृष्ण तणी पटनाररे हो ॥ व० ॥ रु०
 ॥ ११ ॥ माता जानु कुमारनीरे, तेहनी वावी विशेषे धाररे

हो ॥ व० ॥ हम रखवाली आकरीरे, लेण न पावे कोइ
 वाररे हो ॥ व० ॥ १२ ॥ जामा साये चूपतीरे, ए ज
 लमाहे जीले सोइरे हो ॥ व० ॥ के जामा सुत जानुजी
 रे, अवरने जल न पावे कोइरे हो ॥ व० ॥ १३ ॥ तु
 ऊ सरिखानी स्यु चालीरे, राव न राणीनो पइसाररे
 हो ॥ व० ॥ विप्र पधारो वेगसुरे, नहीतर जाणसो
 तुमे साररे हो ॥ व० ॥ १४ ॥ एह वचन सुणी खी
 जीयोरे, तु दासी केलणि कोइरे हो ॥ व० ॥ ब्राह्म
 ण पग रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ व०
 ॥ १५ ॥ हलवे हलवे चालीयोरे, पोहतो वाव तणा ज
 ल पास हो ॥ व० ॥ दासडीया मिली साहीयोरे, कर
 फरस्या गुण उपज्यो तासरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १६ ॥
 गिरी हुइ सामलीरे, सोजा पामी सघली दासरे हो ॥
 व० ॥ करेहि प्रशसा सादरीरे, पात्र वडो मुख दे शावा
 सरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १७ ॥ बाहिर आर्वा गोरकीरे,
 आपण माहि निहाले रुपरे हो ॥ व० ॥ ए मोटो उप
 गारीयोरे, एह पसाइ रुप अनूपरे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १८ ॥
 जरी कमंरुलु नीरसुरे, निसरीयो विप्र ते वाररे हो ॥
 व० ॥ खाली दीठी वावडीरे, दासी सघली लागी ला
 ररे हो ॥ व० ॥ रु० ॥ १९ ॥ जल शोसन ऐसी दौयमी
 रे, ढाल वारु विशेष एहरे हो ॥ व० ॥ श्री गुणसागर
 सूरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे जेह हो ॥ व० ॥ रु० ॥ २० ॥
 दुहा ॥ रिस वसे ते दासमी, जाखे वचन सरोस ॥

अति अट्ट अगाह जल, का किधो ते सोस ॥ १ ॥
 के नाकि के सोहरो, विप्र नहि चडाल ॥ एह्यो काम
 न को करे, जीव दया प्रतीपाल ॥ २ ॥

ढालट३मी ॥ हु वारी धन्ना ए देशी ॥ वनणारे ॥ अ
 जल लिधो जाय, वनणारे हम लागा तुह्य पाय ॥
 वनणारे जगम यावर जीव, वनणारे जल विण कर
 शे रीव ॥ वनणारे ॥ का० ॥ ए टेक ॥ जल राजा न
 लदेवतारे, जल सम अवर न कोय ॥ जल जगने जी
 वाडणारे, जल विण तृपति न होय ॥ व० ॥ का० ॥
 ॥ १ ॥ अन्न विना आघुसरेरे, जल विण एक लिंगार
 ॥ सरे नहि तिहा कारणेरे, जल मोटो ससार ॥ व० ॥
 का० ॥ २ ॥ अमृत पच वखाणियारे, जल सब आदि
 सार ॥ घणु किस्यु विस्तारवुरे, जलथी जग व्यवहार
 ॥ व० ॥ का० ॥ ३ ॥ इम वलिहारी ताहरीरे, बावा सु
 ण अरदास ॥ पाप तणी ठे पाठळीरे, धरी स्वामीनी
 को त्रास ॥ व० ॥ का० ॥ ४ ॥ नूस्या करो नगीना
 रहिरे, जाय जिम गजराज ॥ शक न माने कोइनिरे,
 गाजे जिम घन गाज ॥ व० ॥ का० ॥ ५ ॥ विविध
 प्रकारे चेष्टारे, करतो जाय उदार ॥ एटले आगे आ
 वियेरे, नामानो बेजाररे ॥ वं० ॥ का० ॥ ६ ॥ हाटानि
 शोना हरेरे, मणि मोतीने रयण ॥ हरे करे अति आ
 करोरे, लोका साथे कुचयनरे ॥ व० ॥ का० ॥ ७ ॥
 अन्न लुण कपुरसुरे, सुधा विविध प्रकार ॥ शस्त्र व

स्र आदि करीरे, द्रव्यतणो अपहार ॥ व० ॥ का० ॥
 ॥ ८ ॥ घोमा हाथी वाहिणीरे, जामा जानु नाम ॥
 जे देखे ते अपहरेरे, सोर मचायो स्वाम ॥ व० ॥ का० ॥ ९ ॥
 सात पाच मिलि सामटिरे, वेगे वेगे सोइ ॥ चोर ह
 मारो चोतरेरे, चोहडे वोए होइ ॥ व० ॥ का० ॥ १० ॥
 बाहारा साथे वोलिवोरे, पुरुषा जोर न कोइ ॥ कमडल्लु
 फोडी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ व० ॥ का० ॥
 ॥ ११ ॥ काइक जलतो वाविनोरे, काइक विद्या जोर
 ॥ चोहटो वाह्यो वेगसुरे, माचि रह्यो अति सोर ॥
 व० ॥ का० ॥ १२ ॥ कोडी कीराणा कापडारे, कोइ
 न लहे पार ॥ वस्तु अमोलीक वाहवेरे, पाम्यो हर्ष
 अपार ॥ व० ॥ का० ॥ १३ ॥ पाणीपूर पडुरथीरे,
 दासी गइ ते नास ॥ आपण दृष्टी अगौचरुरे, माने
 मन शावास ॥ व० ॥ का० ॥ १४ ॥ एतो त्रयायशीमी
 कहीरे, ढाल विशाल विशेष ॥ गुणसागर जवी साज
 लोरे, न करो कांइ अदेख ॥ व० ॥ का० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तदनतर किधो जलो, यौवन रुप रसाल ॥
 ब्राह्मण गुणको आगलो, गले तुलसीकी माल ॥ १ ॥
 चर्म शरीरी प्राणीयो, काठे वेठो आय ॥ मोह वसे मदम
 स्तना, विजानु शु जाय ॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ जुमखडानी देशी ॥ रगे रमतो
 राजीयो राजीयो, पेखे पुष्प पडुर ॥ रामा सुत मोह
 ना ॥ पूठे विद्या सो कहे सो कहे, ए सब फूल सनूर ॥

गे० ॥ १ ॥ जानु कुमर विवाहनी, गृथे माल अपार
 ॥ रा० ॥ मालि पास मागतो, आपो फूल बे च्यार ॥
 रा० ॥ २ ॥ नापे तव ते खीजीयो, फरसे हाथ लगा
 य ॥ रा० ॥ विविध जातना फूलडा, आक तणा कहेबा
 य ॥ रा० ॥ ३ ॥ गाधी शाले आवीयो, मागे वास
 सुवास ॥ रा० ॥ नापे ते तव वासनी, किधी वास कुवा
 स ॥ रा० ॥ ४ ॥ गजयाने जेइसा करे, जेइसा ने गज
 राज ॥ रा० ॥ हयथाने खर वाधीया, खरयाने हयसा
 ज ॥ रा० ॥ ५ ॥ उट थानके वोकना, वोकना थानके
 उट ॥ रा० ॥ खरही खूटने साधुजी, साधु करे खरखूट
 ॥ रा० ॥ ६ ॥ धान जातीने फेरवे, चावल तुरी थाय
 ॥ रा० ॥ तुरीने चावल करे, इम सब अनाज फिराय ॥
 रा० ॥ ७ ॥ लुण करे घनसारजी, घनसारानो खार
 ॥ रा० ॥ रत्न करे ते कांकरा, काकरा रत्न अपार ॥
 रा० ॥ ८ ॥ हिंग करे कस्तुरीका, कस्तुरी फिरी सो
 इ ॥ रा० ॥ सोनानो पितल करे, पितल सोना जोय
 ॥ रा० ॥ ९ ॥ घीनो तेल समाचरे, तेल तणो घृत
 धार ॥ रा० ॥ ज्वारी करे मोती तणी, मोती करे ज्वा
 र ॥ रा० ॥ १० ॥ पाट्टु वस्त्र विराजता, सोतो किधा
 टाटे ॥ रा० ॥ टाट सरीखा जे हुता, ते फिर किधा
 पाट ॥ रा० ॥ ११ ॥ धोले दिन बाजारमें, एतो पाफे
 वाट ॥ रा० ॥ वुब न वारह तेहनी, साह करे उच्चाट
 ॥ रा० ॥ १२ ॥ वेपारी घाघा हुवा, ठावी वस्तु न

पाय ॥ रा० ॥ ग्राहक आया फिर गया, वेपारी पिठ
 ताय ॥ रा० ॥ १३ ॥ लाज सरीखो व्यय करे, वेपारी
 आचार ॥ रा० ॥ लाज विना धन खोयवो, सोइ दूड
 विच्यार ॥ रा० ॥ १४ ॥ चाक फिरते निपजे, मोटो
 चाडो जोय ॥ रा० ॥ अण फिरते करवो नही, साह
 विमासण सोय ॥ रा० ॥ १५ ॥ कौतुक करतो चाली
 यो, आयो राजदुवार ॥ रा० ॥ बाबाजीनो देखीयो,
 मदिग सब विधी सार ॥ रा० ॥ १६ ॥ मैखकरीने लावीवो,
 जाणी बाबा प्यार ॥ रा० ॥ बाबो वैठो देखीयो, इद्र
 तणे अवतार ॥ रा० ॥ १७ ॥ दाता चुगता अरु गु
 णी, सायर जेम गजीर ॥ रा० ॥ मात सुनद्रा जाइ
 यो, मेरु तणी परे धीर ॥ रा० ॥ १८ ॥ स्वदेशे स्व
 जातीमे, मान लहे सहु कोय ॥ रा० ॥ ए परचूमी पं
 चाइण, जाग्य वली अति होय ॥ रा० ॥ १९ ॥ राय
 तणे गोडे लहे, मेष महा मयमत ॥ रा० ॥ पहीली दो
 रे गिर पडे, कृष्ण पिता बलवत ॥ रा० ॥ २० ॥ क
 र्मे तो नवी गुदरे, बावाहीसु सोय ॥ रा० ॥ सिंहा स
 गान साउका, ए उखाणो जोय ॥ रा० ॥ २१ ॥ श्री
 वसुदेव नरिंदशु, नूचर खेचर राय ॥ रा० ॥ आगे
 कोइ न जितीयो, पोते जीत्यो जाय ॥ रा० ॥ २२ ॥
 ए चोराशीमी ढालमे, पोते बाबा दिठ ॥ रा० ॥ श्री
 गुणसागर सूरिजी, नयणे अमीय पइठ ॥ रा० ॥ २३ ॥
 दुहा ॥ आगे दिठो अति नलो, नामा नुवन उ

ढार ॥ ध्वज तोरण माला जली, पोखे शोचन अपार
 ॥ १ ॥ विद्या जाले स्त्री सुणो, जो तु दुर्जन साल ॥
 करवु ते करजे इहा, विजो सहु जजाल ॥ २ ॥ स्नान
 कियो सरोवर जले, अरु शिर वूटा केस ॥ माथे टि
 को चिरनो, विप्र तणो वर वेग ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश
 नो सही, ब्राह्मण वाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो,
 गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री
 हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मजार ॥ पेखी पन्न
 रा पर तणारे, अमरखवत अपारोरे ॥ १ ॥ आठो वेद
 वो, दरसण मोहन वेलोरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आक
 णी ॥ जोजन अर्थे आवियोरे, जामा जामनी पास ॥
 स्वस्ती कही उजो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥ आ०
 ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता जोजन आप
 ॥ ऋग वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवु धापहो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेनीयारे, जोजन अर्थे उदार
 ॥ आवी मिल्याठे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥
 आ० ॥ ४ ॥ जोजननु शु मागवोरे, कृष्ण वलजा सग
 ॥ ह्य गय धन कचन मणीरे, माग माग मनरगहो ॥
 आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन वि
 चार ॥ तुहम तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार
 हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलठे घणारे, अन्न स
 मो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

नथी होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहथीरे,
 पहीली किधी एह ॥ मुऊ तुशी जग तु सहिरे ॥ इहा न
 ही सदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ जामा जाखे परीयणोरे,
 जल नोजनसु आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, चूरुच्या
 नोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी जाखे जाम
 नीरे, सघलामाही जाय ॥ मनगमतो नोजन करेरे,
 त्रपती घणेरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे
 नवी जिमुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले
 नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सु
 लक्षणवत हुरे, विद्यानो नडार ॥ मुऊ नोजन दे साद
 रोरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्म
 णने तिर्थजेरे, मुऊ तृपते तृपताय ॥ पात्र न मुऊ
 सो दुसरोरे, मात विमासे काइ हो ॥ आ० ॥ १३ ॥
 क्रिया द्विण लक्ष कोडीनेरे, नोजन दिधो वादी ॥ क्रि
 यावत एकही नलेरे, सुणीजे आदी अनादीहो ॥
 आ० ॥ १४ ॥ बैठो सघला आगलेरे, पग धोवाने
 काज ॥ विप्र कहे रोसे नरघोरे, आवेवे शिर खाजहो
 ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समजावे प
 रीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आ
 चारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ वडठो पहीले आशणेरे,
 ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरेरे, जा
 एयो वूटा जानीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहा पिण अ
 र्गनीम आसणेरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

ढार ॥ ध्वज तोरण माला नली, पोखे शोभ अपार
 ॥ १ ॥ विद्या जाखे स्त्री सुणो, जो तु दुर्जन साल ॥
 करवु ते करजे इहा, विजो सहु जजाल ॥ २ ॥ स्नान
 कियो सरोवर जले, अरु शिर वूटा केस ॥ माथे टि
 को चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश
 नो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो,
 गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री
 हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मजार ॥ पेखी पन्न
 रा पर तणारे, अमरखवत अपारोरे ॥ १ ॥ आठो वेद
 वो, दरसण मोहन वेलैरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आक
 णी ॥ नोजन अर्थे आवियोरे, नामा नामनी पास ॥
 स्तुती कही उनो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥ आ०
 ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता नोजन आप
 ॥ कुशा वेदनी व्यापथारे, आज जीमवु धापहो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेनीयारे, नोजन अर्थे उदार
 ॥ आवी मिल्याठे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥
 आ० ॥ ४ ॥ नोजननु शु मागवोरे, कृष्ण बलजा सग
 ॥ हय गय धन कचन मणीरे, माग माग मनरगहो ॥
 आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन वि
 चार ॥ तुह्य तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार
 हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलबे घणारे, अन्न स
 मो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

नथी होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहरीरे,
 पहीली किधी एह ॥ मुऊ तुशी जग तु सहिरे ॥ इहा न
 ही सदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ नामा नाखे परीयणोरे,
 नल नोजनसु आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, नूरुव्या
 नोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी नाखे नाम
 नीरे, सघलामाही जाय ॥ मनगमतो नोजन करोरे,
 नपती घणोरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे
 नवी जिमुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले
 नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सु
 लक्षणवत हुरे, विद्यानो नडार ॥ मुऊ नोजन दे साद
 रोरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्म
 णने तिर्यजेरे, मुऊ तृपते तृपताय ॥ पात्र न मुऊ
 सो दुसरोरे, मात विमासे काइ हो ॥ आ० ॥ १३ ॥
 क्रिया द्विण लक्ष कोडीनेरे, नोजन दिवो वादी ॥ क्रि
 यावत एकही नलोरे, सुणीजे आदी अनादीहो ॥
 आ० ॥ १४ ॥ बैठो सघला आगलेरे, पग धोवाने
 काज ॥ विप्र कहे रोसे नद्योरे, आवेठे शिर खाजहो
 ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समजावे प
 रीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आ
 चारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ वडठो पहीले आशणोरे,
 ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरोरे, जा
 एयो वृटा जानीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहा पिण अ
 गनीम आसणोरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

दार ॥ ध्वज तोरण माला जली, पोखे शौच अपार
 ॥ १ ॥ विद्या ज्ञाखे स्त्री सुणो, जो तु दुर्जन साल ॥
 करवु ते करजे इहा, विजो सहु जजाल ॥ २ ॥ स्नान
 कियो सरोवर जले, अरु शिर वूटा केस ॥ माथे टि
 को चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश
 नो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो,
 गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री
 हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मजार ॥ पेखी पमा
 रा पर तणारे, अमरखवत अपारोरे ॥ १ ॥ आठो वेद
 वो, दरसन मोहन वेलोरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आक
 णी ॥ जोजन अर्थे आवियोरे, जामा जामनी पास ॥
 स्वस्ती कही उनो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥ आ०
 ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता जोजन आप
 ॥ ऋषा वेदनी व्यापथारे, आज जीमवु धापहो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेनीयारे, जोजन अर्थे उदार
 ॥ आवी मिल्याठे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥
 आ० ॥ ४ ॥ जोजननु शु मागवोरे, कृष्ण बलजा सग
 ॥ हय गय धन कचन मणीरे, माग माग मनरगहो ॥
 आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन वि
 चार ॥ तुह्य तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार
 हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलठे घणारे, अन्न स
 मो नही कोइ ॥ अवरा त्रपाति न उपजेरे, त्रपती अ

लोपाणी सयल सगाइ ॥ आधे आधो पेलाइ, नवि
जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचारज उजा थाइ, हल
कार करे आगे आइ ॥ उपाध्याय आपवनाइ, निरखाणी
लघुता पाइ ॥ ५ ॥ जोशी जोतिप वरताइ, न सक्या
ए जाणी वुराइ ॥ जानि अनीमांनी जाइ, चउवे दुवे
अधीकाइ ॥ ६ ॥ तिरवाडी आवे धाइ, पळीतावे के
स गहाइ ॥ जट मिश्रा एह वताइ, महिमा तो आ
प गमाइ ॥ ७ ॥ महा बलनी एम बलाइ, कुठ्या वि
ए जाइ न काइ ॥ मारता नूत नमाइ, जटजीए कथा
सुणाइ ॥ ८ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुण्य न पाप
गणिजे ॥ होथाका लाहो लिजे, उजागर होइ फिरी
जे ॥ ९ ॥ नवलीनो सुठ कहावे, आपणाहि आप बधावे ॥
मकोडो खीज्यो आवे, तो मास आपणो चावे ॥ १० ॥
ते विप्र लथाबथ होवे, तव लोक तमासो जेवे ॥ ते
लाज निकामो खोवे, ते आपे आप विगोवे ॥ ११ ॥ ते
धरति साधर सोवे, माख्या लाता ना रोवे ॥ विण वेल
ए पोळि पोवे, विण लोटि मुहडो धोवे ॥ १२ ॥ ते
लमता माया फूटे, ते गेडाव्या नवि वूटे ॥ ते आप
आपमे कूटे, ते माहोमाहि लूटे ॥ १३ ॥ ते तमफडता
अति त्राठा, जडनमता साहे जाठा ॥ ते थोथे घावे
घाठा, लमथडिया जाइ नाठा ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ
लागा, जब लात धवुका वागा ॥ तेतो उघाढा नागा
गहेवरीया जाइ नागा ॥ १५ ॥ जे लुद पणाथी लडी

कल्यारे, अजब तमासो होइहो ॥ आ० ॥ १८ ॥
 वेदशास्त्रना जाण येरे, न लहो वेद विचार ॥ हिं
 स्यादिक पातीक करोरे, न तजो क्रोध लीगार हो
 ॥ आ० ॥ १९ ॥ गर्व करो जाति तणेरे, जाति न तारया
 कोइ ॥ तारे तो करणी करीरे, रीस कीया स्यु होइ
 हो ॥ आ० ॥ २० ॥ पचायशीमी ढालमेरे, विप्रा की
 धो क्रोध ॥ श्री गुणसागर मृरिजरे, धन तजे अ
 विरोध हो ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुधी वात न सरदहे, सुधीसु नहि रा
 ग ॥ मूरखने उपदेश ते, टाढि उपध लाग ॥ १ ॥
 सहजन फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष ॥ उ
 ळ्या मारेवा जणी, विप्र कहे मा देख ॥ २ ॥ माय
 कहे हु शु करु, विप्रा साथे न जोर ॥ तु पिण निचलो
 नवि रहे, ए चपाणी कोर ॥ ३ ॥ हलकारी विद्या घणु,
 हल हल थइ अपार ॥ आपणा माहि आधला, ला
 गा करण प्रहार ॥ ४ ॥

ढाल ८६ मी ॥ वनमालानी देखी ॥ लाग्या ते क
 रण प्रहार, नवि जाणे कोइ विचार ॥ आपणा मा
 हि अपार, बलगे ते गद्वेल गिमार ॥ १ ॥ पहिली तो
 जीज लडाइ, बीजी तो ढिंग बजाइ ॥ तीजी तो ला
 त लगाइ, चउथी तो दाता खाइ ॥ २ ॥ पचमी वा
 र सुजटाइ, लोटिनी मार मचाइ ॥ षठे लाकमी उठा
 इ, ते साहमा आवे लाइ ॥ ३ ॥ बावाने बेटो चाइ,

तर जाउ परआन ॥ ए० ॥ ३ ॥ जोजनने व्यवहा
 रनो, घाठो नावे ठाम, पहिली चोरुसी किजीए, डम
 कहे त्रिचुवन स्वाम ॥ ए० ॥ ४ ॥ नामा जापे
 शु कहो, एहवि उठि वात ॥ ए घर दीपे हाथीया,
 माणसनी शिमात ॥ ए० ॥ ५ ॥ पहेला मेवा पिर
 शीया, पिस्ता द्राख वदाम ॥ चारोली चतुराइश,
 खाडतली अर्नाराम ॥ ए० ॥ ६ ॥ खाजा बाजा सा
 रीखा, लाडुनी बहु जात ॥ घेवर फीणी लापसी पिर
 से मननी खात ॥ ए० ॥ ७ ॥ खीर खाड घृत साम
 टा, माढ्यो मोटे मान ॥ बडा विशेषे पिरशीया, विप्र
 तणो हित जाण ॥ ए० ॥ ८ ॥ घोळवमाने घरवंनी,
 पूरी परीघल जाव ॥ सालदाल ने सालणा, पिरसे
 चितने चाव ॥ ए० ॥ ९ ॥ घीनी घर न खेचइ, दु
 ध दर्हीने गोल ॥ दाखबुहारी रायता. ए अति वस्तु
 अमोल ॥ ए० ॥ १० ॥ नामा जाखे सादरी, अमृ
 त करे आहार ॥ कोइ काणी न राखवी ए सहु तु
 ज परीवार ॥ ए० ॥ ११ ॥ पिरसता वेला थइ, जि
 मता वार न कोइ ॥ वैश्वानर मुख मेल्हता, घास
 तणी परे जोइ ॥ ए० ॥ १२ ॥ लावोरे लावो ला
 वो वली, एकज लागी तास ॥ ताम अनेरा पिरस
 णो, पिरसे आणी उल्हास ॥ ए० ॥ १३ ॥ केइ हजारा
 कारणे, अन्न अने पकवान ॥ किधुथ ते वावरयु,
 अचरिज ए असमान ॥ ए० ॥ १४ ॥ पाकाने काचा

या, जे चूडपणे जडजडिया ॥ ते पोरप पोखे पडीया,
 ते अलगायी अरुवमीया ॥१६॥ जे या मुठाला माटी,
 ते पिता उपध वाटी ॥ बल हेते खाता काटी, थर ह
 रीया लागी साटी ॥ १७ ॥ मोकरडानि कडी चागी,
 ते खिर न मिठि लागी ॥ जब चोट पराइ वागी, ला
 डुनि लालच तागी ॥ १८ ॥ जोजन तो बहुला दे
 रूया, ए जोजन आज विसेरूया ॥ अवराने लाडु
 खाधा, जामाने गडधा लाधा ॥ १९ ॥ ए चारय हुठ
 चारी, ते दिठो हरि पटनारी ॥ ठोकावि अलगा किया,
 लघु विप्र समिपे लीधा ॥ २० ॥ ए वाशीमी टाल र
 साली, ए विप्र विनोद विसाली ॥ श्री गुणनागरजी
 जाखी, परजुन चरित्र ठे साखी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ परीयणशु जामा कहे, बालिक ब्राह्मण
 एह ॥ जीमावो हम आगले, आणी घणोरो नेह ॥
 ॥ १ ॥ माडो जचि माढणि, उपर थाल विशाल ॥
 विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥
 ढाल ८७ मी ॥ गौतमने मेल दियो महाविर ॥
 ए देशी ॥ जामानो जाण्यो करे, आज्ञाकारी सोय ॥
 जगति जलेरी साचवे, राचवे रागण होय ॥ १ ॥ ए
 विप्र हमारे मन वरूयो, ए टेक ए विप्र करा मतगा ॥ ए
 विप्र तणा गुणसार ॥ ए बाणे ढाक्यो रयन ए विप्र,
 देखत हम चयन ॥ ए० ॥ २ ॥ विप्र जणे सुण स्वा
 मनी, पुरो परुतो जाण ॥ बेसावे जिमवा जणी, नहिं

पसार ॥ गेटी सोढे सोवतां, लागे थंडी अपार ॥

॥ ए० ॥ २६ ॥ पुरो न पडे एकको, तो ए स्यो वि
स्तार ॥ पेट न दुखे थो खरो, घर सारु व्यवहार ॥

॥ ए० ॥ २७ ॥ आडबर माहे घणो, न लहे घरनी
सार ॥ ते तो माणस वावला, लोक हसावण हार ॥

॥ ए० ॥ २८ ॥ ब्राह्मण सायर अग्नीनो, पुरो पन्वो
दूर ॥ अन्न अने जल इधणा, जो दिजे जरपूर ॥

॥ ए० ॥ २९ ॥ यद्यपि में किधो घणो, आगे नायो
सोय ॥ नुरुयो तो अति नडनडे, दोपण एह न को

इ ॥ ए० ॥ ३० ॥ सत्याशीमी ढालमें, आयो नामा गेह ॥
श्रीगुणसागर सूरिजी, सा अती आपे नेह ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ कुवजा दाशी ए वली, सरली किधी जा
म ॥ रूप सोहागण सुदरी, नामा दिठी ताम ॥ १ ॥

विस्मय पामी नामनी, जाणी जाय न दास ॥ पूगे
री तु कुण ए, सा बोले उल्हास ॥ २ ॥ देव तुम्हारी

दासडी, कुत्रज्या हमारो नाम ॥ लघु ब्राम्हण परसा
दधी, रूप थयो अनीराम ॥ ३ ॥ लालच लागी ना

मनी, ए अति विद्यावत ॥ हाथ ग्रही आघो लीयो,
जइ वेठा एकत ॥ ४ ॥

ढाल ८८ मी ॥ संजम लेवा सचरघोरे, साथे स
हु परिवार ॥ ए देशी ॥ रहस्यपणे पूगे खरीरे, ज्ञान

तणो अनुमान ॥ नामा नूलिरे ॥ देव प्रकासो आप
णोरे, प्रण तणो ठे थान ॥ नामा नूलिरे ० ॥ १ ॥

करी. गाल चरीने ठेली ॥ पाठे काइ न देखिए, आम
 घडे जल मेली ॥ ए० ॥ १५ ॥ मुग मोठ मक्का घ
 णी, चावलने जव जेह ॥ गिहु चणा आदी करी,
 खाइ गयो तव तेह ॥ ए० ॥ १६ ॥ हय गय उट त
 णो सहु, दाणो पिण तेह खाव ॥ आणी उचारो पिर
 गीयो, तृपती तोहिन लाध ॥ ए० ॥ १७ ॥ अग्नी जा
 लमे वालीए, लाकम गाडा लाख ॥ तोपिण ते धापे
 नहीं, तिम एहनी अजीलाख ॥ ए० ॥ १८ ॥ या
 दवनी नारी मिली, करे कुतुहल कोरु ॥ निज निज
 घरथी आणके, पिरसे हौडाहोड ॥ ए० ॥ १९ ॥
 कोलाहल माच्यो घणो, मिलीया लोक तिवार ॥
 तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार ॥ ए०
 ॥ २० ॥ विप्र जणे सुण नामनी, आपणो वोल्यो
 पाल ॥ का याइ अति सुवडी, अवर किशी दिउं
 गाल ॥ ए० ॥ २१ ॥ जानु तणी माता जली, ना
 रायणनी नार ॥ उग्रसेन कुवरी कही, अवसर सहु
 तुळार ॥ ए० ॥ २२ ॥ ऋणपणो नवी बूजीए, तुळ
 सरखीने देख ॥ लघुजोजी हु बालुमो, नूरुयो राख्यो
 विशेष ॥ ए० ॥ २३ ॥ ना हुवो आहारजी ना हुवो उ
 पवास ॥ अधवीचो होइ रह्यो, कारे कियो विश्वास
 ॥ ए० ॥ २४ ॥ निका मदीर नान्हडा पावे सघली
 लाज ॥ मोटा घरडर मुखना साच मिलीए आज
 ॥ ए० ॥ २५ ॥ पाय पसारण तेतलो जे तो सोड

वे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ जा० ॥ दोरो डां
 डो दाखवोरे, देड मनगमता दाम ॥ जा० ॥ १ ॥ दुध
 जलावणी उतनेरे, वानरने फल जेम ॥ जा० ॥ सिल
 जलावण लपटारे, एह जलावण तेम ॥ जा० ॥ १३ ॥
 ठगा ठगोरी जामिकारे, आरती माही एम ॥ जा० ॥
 आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ जा०
 ॥१४॥ विप्र जणे जामा सुपोरे, जो वीधी कीधी जाय
 ॥ जा० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे
 लाय ॥ जा० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करुं
 शोच लिगार ॥ जा० ॥ लाज हमारी तुह्य जणिरे, तु
 गति मति दातार ॥ जा० ॥ १६ ॥ मुड मुडाइ मुह
 मोरे, कालो करिय अपार ॥ जा० ॥ फाटा चुथा पहे
 रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ जा० ॥ १७ ॥ ॐ ॐ
 अरु वरु रुढ मुशुरे, अथ्योत्तरसो वार ॥ जा० ॥
 जाय जपंता पामसोरे, रुप अनोपम सार ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ इद्राणी अलगी थकीरे, थाशे सहिय उदाश
 ॥ जा० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो जामा पास ॥
 जा० ॥ १९ ॥ देव दुर्लजा थायसोरे, कृष्ण तणी शी
 वात ॥ जा० ॥ रुखमणी तो पासगेमेरे, नहि आवे सु
 ण मात ॥ जा० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे,
 दुख विण सुख नवि होय ॥ जा० ॥ कान सहे विधाव
 णोरे, कुमल पेरे सोय ॥ जा० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु
 री जडी पडेरे, तो नव कुपलि लाल ॥ जा० ॥ दिन

जूलि जरमें जामनीरे ॥ ए आकणी ॥ जोसीडो जग
 मे वडारे ॥ जाखे वचन विच्यार ॥ जा० ॥ तत्र मत्र
 जाणु घणारे, वस आणु जरतार ॥ जा० ॥ २ ॥ व
 द्र सूर्य वरु देवतारे, वश वरतावु दोइ ॥ जा० ॥ इद्र
 करु घरे प्राहुणारे, शेपनाग शु सोइ ॥ जा० ॥ ३ ॥
 पायाले पेषु सहिरे, आकाशे पिण जाज ॥ जा० ॥ जग
 त तणा नोवाहरुरे, वेगे करीने थाज ॥ जा० ॥ ४ ॥
 अणजावतानो कालगुरे, जावतानो लाल ॥ जा० ॥ पुठे
 वु पूठे सहिरे, काज करु ततकाल ॥ जा० ॥ ५ ॥ ह
 म तुम्ह विच न आतरोरे, आंतप नाठि दूर ॥ जा० ॥
 तुज गुणमोरे वाधीयोरे, बैठो आणी हजूर ॥ जा०
 ॥ ६ ॥ पगे लागी हाहा करेरे, आसु नाखे नयण
 ॥ जा० ॥ हियो जरयो आवे घणुरे, मनमे अधीक
 कुचयन ॥ जा० ॥ ७ ॥ तु महारो वालेसरुरे, तुज सम
 अवर न कोइ ॥ जा० ॥ पिता पुत्र जाड जलोरे, क
 री दे काइक सोइ ॥ जा० ॥ ८ ॥ साल समाणी
 सालतिरे, सो कहिए निश दिश ॥ जा० ॥ दिन दि
 न आवे शिर चढिरे, ए दुख विश्वाविस ॥ जा०
 ॥ ९ ॥ साधी त्रिकोटि रोमगेरे, एक एकने एह
 ॥ जा० ॥ अमरख आणी अती घणोरे, पापणी पांमे
 वेह ॥ जा० ॥ १० ॥ आवटणु अती आकरुरे,
 लोही चढे नहि मस ॥ जा० ॥ निशदिन लागुं कुरणुरे,
 शातानो नहि अस ॥ जा० ॥ ११ ॥ हरी वश आ

वे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ जा० ॥ दोरो डां
 डो दाखवोरे, देड मनगमता दाम ॥ जा० ॥ १ ॥ दूध
 जलावणी जतनेरे, वानरने फल जेम ॥ जा० ॥ सिल
 जलावण लपटारे, एह जलावण तेम ॥ जा० ॥ १३ ॥
 ठगा ठगोरी जामिकारे, आरती माही एम ॥ जा० ॥
 आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ जा०
 ॥१४॥ विप्र जणे जामा सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय
 ॥ जा० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे
 लाय ॥ जा० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करु
 शोच लिगार ॥ जा० ॥ लाज हमारी तुह्य जणिरे, तुं
 गति मति दातार ॥ जा० ॥ १६ ॥ मुड मुडाइ मुह
 मोरे, कालो करिय अपार ॥ जा० ॥ फाटा घुथा पहे
 रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ जा० ॥ १७ ॥ उँ ईँ
 अररु वररु रुढ मुमुशुरे, अठ्योत्तरसो वार ॥ जा० ॥
 जाप जपता पामसोरे, रुप अनोपम सार ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ इद्राणी अलगी थकीरे, थाशे सहिय उदाश
 ॥ जा० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो जामा पास ॥
 जा० ॥ १९ ॥ देव दुर्लजा थायसोरे, कृष्ण तणी शी
 वात ॥ जा० ॥ रुखमणी तो पासगमेरे, नहि आवे सु
 ण मात ॥ जा० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे,
 दुख विण सुख नवि होय ॥ जा० ॥ कान सहे विंभाव
 णोरे, कुमल पेरे सोय ॥ जा० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु
 री ऊडी पडेरे, तो नव कुपलि लाल ॥ जा० ॥ दिन

योडामे थायस्येरे, शोचनिक सुविशाल ॥ जा० ॥
 ॥ २२ ॥ डरु डरु डरता रहेरे, उद्यम नहिय निगार ॥
 जा० ॥ आखी सरीया मानवीरे, काजलनो धिनगार ॥
 जा० ॥ २३ ॥ इम नीसुणी शा जामनीरे, आतुर यह
 अपार ॥ जा० ॥ विप्र वचन वाल्हा करिरे, हुद्र विप
 रीत ते वार ॥ जा० ॥ २४ ॥ परने चिते जेहपुरे, तेह
 वु पावे आप ॥ जा० ॥ एतो परतद्ध देखजोरे, जामा
 लाग्यु पाप ॥ जा० ॥ २५ ॥ वले आपणी आगशुरे,
 परशु द्वेपीणी होइ ॥ जा० ॥ शिर मुडावे आपणोरे, जा
 मनि परे जोइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ कीधीयी ठाकुर जणि
 रे, अवर परे अरदास ॥ जा० ॥ घोमो फिरी उपर च
 ढ्योरे, ते परे हुइ तास ॥ जा० ॥ २७ ॥ फीरी आवु
 आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ जा० ॥ इम कही आ
 गे चल्योरे, कारज कराय विरुध ॥ जा० ॥ २८ ॥ अ
 ध्यायसीमी ढालमेंरे, जामाने जरमाय ॥ जा० ॥ श्री गु
 णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥ जा० ॥ २९ ॥
 दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन र
 ग ॥ चाल्यो अति उबरगसु, आणी हेत अजग ॥ १ ॥
 काम कुमर आव्यातणी, वेळाने अधिकार ॥ माय मनो
 रथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥
 ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहियां गीरघर आवेगो ॥
 ए देशी ॥ मेरी सहिया लालन आवेगो, प्यारो प्राण
 आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुल शिणगार ॥

मे०॥ए आंकणी ॥ एह वासर जे गया, माहरे जावे वा
 दी ॥ पेट नरती दिन प्रति, न जिम्यो अन्न सवादी ॥ ज
 न मन जीवी तणीरे, आजहीथी आदी ॥ मे०
 ॥ १ ॥ चामरुपी होइ रहींया, मिंडका जग जोइ ॥ मे
 ह वुठे दैव त्रुठे, मूवा जीवे सोइ ॥ जीव जीवन आ
 वीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० ॥ २ ॥ सुनचीती स
 दा रहती, चेतना सुतनी पास ॥ गाय वनमे जाय हा
 की, चरती फिरत उदास ॥ हिंसति आवे घणु, वाबु
 रीया घर जास ॥ मे० ॥ ३ ॥ चक्रवाकी जीम चाहे,
 उगतो दिनेकोर ॥ चंदने चाहे चकोरी, बपैयो जलधा
 र ॥ आबनो वन कोकिला, विरहणी नरतार ॥ मे० ॥
 ॥ ४ ॥ क्षुधावतो अन्न चाहे, तृषावतो वारी ॥ स्थैर
 णी स्वगरमेरे, रोगीया उपचारी ॥ तेम ए मन माहरो,
 पुत्रने अधीकारी ॥ मे० ॥ ५ ॥ स्वामी श्रीमधर बतावी,
 सोइ वेला आज ॥ जलदनीपरी वाट जोता, मिल्यो ए
 सुज साज ॥ देवगुरु प्रसादथी, सरचा वगीत काज
 ॥ मे० ॥ ६ ॥ द्यो बहारो वाट जामो, जली रज बे
 सावी ॥ पचवर्णा कुसुमकेरो, फूल पगर रचावी ॥ ठा
 म ठामे धूपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ॥ ७ ॥ गे
 ह धोळो आज सोळो, दैवनो विवहार ॥ धांती फेरो
 पात्र तेढ्यो, पेखवा परीवार ॥ वाजा विविध प्रकार
 ना, बजावो इणीवार ॥ मे० ॥ ८ ॥ नारी आवो
 गित गावो, करो मंगल च्यार ॥ करी वधावो कलस

थोडामे थायस्येरे, शोचनिक सुविशाल ॥ जा० ॥
 ॥ २२ ॥ डरु डरु डरता रहेरे, उद्यम नहित्र लिगार ॥
 जा० ॥ आखी सरीया मानवीरे, काजलनो गिनगार ॥
 जा० ॥ २३ ॥ इम नीसुणी शा नामनीरे, आतुर वइ
 अपार ॥ जा० ॥ विप्र वचन वाल्हा करिरे, हुइ विप
 रीत ते वार ॥ जा० ॥ २४ ॥ परने चिंते जेहपुरे, तेह
 वु पावे आप ॥ जा० ॥ एतो परतद्ध देखजोरे, नामा
 लाग्यु पाप ॥ जा० ॥ २५ ॥ वले आपणी आगशुरे,
 परशु द्वेपीणी होइ ॥ जा० ॥ शिर मुडावे आपणोरे, ना
 मनि परे जोइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ कीधीथी ठाकुर नणि
 रे, अवर परे अरदास ॥ जा० ॥ घोमो फिरी उपर च
 ळ्योरे, ते परे हुइ तास ॥ जा० ॥ २७ ॥ फीरी आवु
 आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ जा० ॥ इम कही आ
 गे चलयोरे, कारज करीय विरुध ॥ जा० ॥ २८ ॥ अ
 व्यायसीमी ढालमेंरे, नामाने नरमाय ॥ जा० ॥ श्री गु
 णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥ जा० ॥ २९ ॥
 दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन रं
 ग ॥ चाल्यो अति उठरगसु, आणी हेत अचग ॥ १ ॥
 काम कुमर आव्यातणी, वेलाने अधिकार ॥ माय मनो
 रथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥
 ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहिया गीरघर आवेगो ॥
 ए देशी ॥ मेरी सहिया लालन आवेगो, प्यारो प्राण
 आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुल शिणगार ॥

म ॥ पाननी बीनी करिने, आपीशु आनिराम ॥ मे० ॥
 ॥ १७ ॥ वात सुणशु कुवर केरी, वेह धरी लगी
 जेह ॥ आपणा वितक विच्यारी, चाखीशु धरी ने
 ह ॥ मनोरथनी माला जली, गुंथी राखी एह ॥
 मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी जली, ढाल तो सुखकार
 ॥ कहे श्रीगुणसूरि सघली, ढालमे शिरदार ॥ साजल्यां
 आवी मिले, सकल वगीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ आगे जाता आवीयो, सुदर मदिर ए
 क ॥ ह्यथट गयथट नरथटा, पूरीत शोच अनेक
 ॥ १ ॥ वली विशेषे पूवता, विद्या चाखे इश ॥
 ए घर तुह्य माता तणी, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥
 नित्य महोत्तव नवनवा, दिजे पौली प्रवाय ॥ याचक ज
 य जय उच्चरे, जूरी जणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए दे
 शी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे
 रार्ची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥
 रूप धर्यो रलीयामणो, ऋपी वालीक रुमेरे ॥ मि
 ठो नीभीत चाखणो, बोले जीम सुमेरे ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटो
 रे ॥ पूज्य पठे वडी पागुरी, चलोटो पिण गेटोरे ॥
 मो० ॥ ३ ॥ खाधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥
 जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥
 ॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे दन धरावेरे ॥ म

लावो, सात पाच उदार ॥ दोव अकृतने ढर्हा, मण
 ण मेल्यो सार ॥ मे० ॥ ९ ॥ चोरु पुरो मर्ता अधु
 रो, रहे एक लिगार ॥ अलग चूरो असुन सघना,
 सजो सुन आचार ॥ वेगे हुवो उतावला, काइ लगावो
 वार ॥ मे० ॥ १० ॥ थाल रोला जरी कचोला, कुकु
 मा घन सार ॥ रत्न रुडा नही कूना, हेम रजत अ
 पार ॥ वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥ मे०
 ॥ ११ ॥ यत्न करणा असुन हरणा, वाटमे न रहा
 य ॥ राम जेसो अध तेसो, कुकुठ न कराय ॥ नाक
 चित्रो चिपडो, बुर मुहोटली जाय ॥ मे० ॥ १२ ॥
 नारी परणी अने उपरणी, साजी उज्वल बेस ॥ गौ
 सवठि कलस सपूर्ण, दधी मधु सुवीशेस ॥ अग्नी ज्वा
 ला दिपती, अपरस उण अशेष ॥ मे० ॥ १३ ॥ र
 थ सजोडो पाट घोडो, हाथीयो सिणगार ॥ पथे रा
 खो सरस चाखो, पित्त वरणी गार ॥ माजला मिली
 या जला, साधुरोजी धार ॥ मे० ॥ १४ ॥ हसनी
 परे हालतोरे, चालतो सुदर इद ॥ नयणे नीरखी हि
 ए हरखी, जाणी तेज जिणद ॥ साहमो जोशु घणु
 जेम दुतीया चद ॥ मे० ॥ १५ ॥ गोदी करीशु ही
 ये धरीशु, चुबीशु सोवार ॥ मुह माथो दिन सनाथो,
 जाणीशु सुविच्यार ॥ विलसशु मन मोकले, अरथना
 नडार ॥ मे० ॥ १६ ॥ हाथे फरशी हिण उरशी, राखीशु
 चाखी ताम ॥ देइ मुखमे कवो सुखमे जिमो कुवर का

म ॥ पाननी वीनी करिने, आपीशु आनिराम ॥ मे० ॥

॥ १७ ॥ वात सुणशु कुवर केरी, वेह धरी लगी

जेह ॥ आपणा वितक विच्यारी, जाखीशु धरी ने

ह ॥ मनोरथनी माला जली, गुथी राखी एह ॥

मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी जली, ढाल तो सुखकार

॥ कहे श्रीगुणसूरि सघली, ढालमे शिरदार ॥ साजल्या

आवी मिले, सकल वगीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ आगे जाता आवीयो, सुदर मदिर ए

क ॥ हयथट गयथट नरथटा, पूरीत शोन अनेक

॥ १ ॥ वली विशेषे पूबता, विद्या जाखे इश ॥

ए घर तुह्य माता तणो, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥

नित्य महोठव नवनवा, दिजे पौली प्रवाय ॥ याचक ज

य जय उच्चरे, जूरी जणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए दे

शी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे

राची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥

रूप धरयो रलीयामणो, ऋषी वालीक रुमेरे ॥ मि

ठो नीभीत जाखणो, बोले जीम सुमेरे ॥ मो० ॥

॥ २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटो

जे ॥ पूज्य पठे वडी पागुरी, चलोटो पिण गोटोरे ॥

मो० ॥ ३ ॥ खाधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥

जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥

॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे द्रु धरावेरे ॥ म

नमय नाथे ढरुडो, दरसणने दावेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥
 मुहमे दिधी मुहपति, मुनी मयले गात्रीरे ॥ गुण आ
 चारे उजलो, अति चारीत्र पात्रिरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ आ
 गे उवो बाहमे, पुजवाने काजेरे ॥ यत्न करेवे जीव
 नी, सजम गुण गाजेरे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रग रगाला पा
 तरा, पडीलेहि लिजेरे ॥ एखणा सुधी आहारनी, ग
 वेखणा कीजेरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ सुमते सुमतो ठे
 खरो, गुपतिए करी गाढेरे ॥ दर्शण दिठे जेहने,
 चित्त होवे याढेरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ पीहरीयो ठ का
 यनो, व्रत तो चोखा पालेरे ॥ निग्रह इद्रि पाच
 नो, दुपण सह टालेरे ॥ मो० ॥ १० ॥ गिल
 धरे नव वामसु, तस क्रोध न कोइरे, समता रसनो
 सागरु, निरलोनी अति होइरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ स
 नमुख दीठो आवतो, शा साहमी आवेरे ॥ देइ प्रद
 ऋणा वदना, करती मन सुख पावेरे ॥ मो० ॥ १२ ॥
 लेवा चाली पाटलो, हरी आसणे बेठेरे ॥ रुखमणी
 ना मन नीतरे, अति अचरिज पेठेरे ॥ मो० ॥ १३ ॥
 विनय करीने विनवे, ऋषी उरहा आवेरे ॥ बेसो बी
 जे आसणे, जिम साता पावेरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ ते
 धन थानक जाणीए, जिहा ऋषी ले विश्रामेरे ॥ उ
 ठावुठु कारणे, तुहम मति दु ख पामेरे ॥ मो० ॥ १५ ॥
 देवाधीष्टीत एह अठे, हरीके हरीको जायोरे ॥ बेठो
 सुख पावे सहि, अवराने असोहायोरे ॥ मो० ॥ १६ ॥

ऋषि जांखे सुण श्राविका, ए केहि चित्यारे ॥ सपा
 खेलावे मानवी, जाणीं अहिमतारे ॥ मो० ॥ १७ ॥
 लब्धि प्रसादे देवता, हमसु नवि बोलेरे ॥ ताजु
 घाली डुगरा, कर साथे तोलेरे ॥ मो० ॥ १८ ॥ मेरु
 तणो दाडो करे, धरती वत्राकारेरे ॥ राखे हाथा उ
 परे, सायर जलनी धारेरे ॥ मो० ॥ १९ ॥ तो तुह्य
 साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधेरे ॥ दिसोणे तो
 नान्हडा, सजम किम लाधेरे ॥ मो० ॥ २० ॥ जुमं
 डल पर जनमीया, प्रथवीपति तातोरे, माता तो म
 हि मडणी, वैरागे वातोरे ॥ मो० ॥ २१ ॥ आज ल
 गी गुरु जेटणा, हमने नवि हुइरे ॥ आपहि आपे जा
 गीया, गति मति जुइरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ तिरथवा
 शी बु सहि, इहां आयो आजोरे ॥ वरस सोलनो
 पारणो, करवाने काजोरे ॥ मो० ॥ २३ ॥ जाखे रा
 णी रुखमणी, ए अधीको केहेवायेरे ॥ उत्कृष्टी अव
 गाहना, वरसी तणो तप थायोरे ॥ मो० ॥ २४ ॥
 अवतार्ई उपवासीयो, माता थान हरामोरे ॥ वात व
 ढामु कीजीए, वोहरावणनो कामोरे ॥ मो० ॥ २५ ॥
 षट चौरघासीमी जली, ए ढाल कहावीरे ॥ श्री गुणसाग
 र सब लह्यो, माता दरशण पावीरे ॥ मो० ॥ २६ ॥
 दुहा ॥ दरशण पामी माता तणो, मान्यो सुख
 मनमाहि ॥ तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित प्राहि
 ॥ १ ॥ मन्हि मील्यो नयणा मील्या, अने मिलियो

वयणा काय ॥ च्यार मिलणमा एकहि, मिलण मिलि
नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहित्य वाहु जिणे सर विनवु ॥ ए दे
शी ॥ रुखमणी तुतो साची श्राविका, थारो अति
सोनाग हो ॥ परदेसामे साजल्यो, देव गुरुसु राग
हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रूपे जलि, सो महा
सुखदाय हो ॥ सत्ये वदे डर पापनो, सरलपणे सु
चि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी,
दया घणी दिल माहि हो ॥ सम चात्री शुन दृष्टणी
गुणानि रागणी प्राहि हो ॥ रु० ॥ ३ ॥ धर्म कथक धर्मात
मा, कुल तो उजय विसुध हो ॥ दिव्य दृष्टी देव
णी अर्थ लहे अविरोध हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनय
ति गुण जाणसी पर हित करत जगीस हो ॥ लब्धि
लिखी गुण धारणी एव ए एकविस हो ॥ रु० ॥ ५ ॥
समकीत गुणाने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देव
ने देवी चालवे, धर्मिसु धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥
पर्व तणी आराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पो
सा पडिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु०
॥ ७ ॥ शिववति सीता जिसी, जाग्यवति ससार हो
॥ पचालिनी उपमा, सत्यवति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८ ॥
साहमी साहमणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥
साधु साधविया तणी, गौरा जिम सचाल हो ॥ रु०
॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणी अधी

कार हो ॥ अण वोहोराव्या आखनी, जीमवा नेम अपार
 हो ॥ रु० ॥ १० ॥ इम सुणी गुण दूरथी, ठोमतो गुण
 गेह हो ॥ हु आयो तुक्ष आगणे, आणी धर्म सनेह
 हो ॥ रु० ॥ ११ ॥ सार न पूगी एतली, वोहोरो स्वा
 मी आहार हो ॥ अतराइ, कोइ माहरे, के थइ चित
 विसार हो ॥ रु० ॥ १२ ॥ कहे रुखमणी ऋषीजी सु
 णो, आरती वति आज हो ॥ राधण सीधण वीसरी,
 वीसरीयो सब काज हो ॥ रु० ॥ १३ ॥ एवढीसी आ
 रती अठे, जाखे सयल विचार, हो ॥ पुत्र आगम वे
 ला हिवे, ए जिन जाखीत सार हो ॥ रु० ॥ १४ ॥ स
 ही नाणी सघली मिली, सुके वृद्ध अशोक हो ॥ फूल
 फले करी गह गह्यो, देखे सघला लोक हो ॥ रु० ॥
 ॥ १५ ॥ मुगा लाग्या बोलवा, विरुपा अति रुप हो
 ॥ कुबज फिरी सरला थया, आधा नयण अनूप हो
 ॥ रु० ॥ १६ ॥ नीर जराणी वावडी, कमले शौच उ
 दार हो ॥ कोयल बोले सुहामणा, मोर करे किंगार
 हो ॥ रु० ॥ १७ ॥ विण ऋतु ऋतुराजीयो, आणी वि
 राज्यो आज हो ॥ जमरा गुजारव करे, फूल फल्या
 तरु साज हो ॥ रु० ॥ १८ ॥ माहरो मन पिण उलस्यो,
 पान्हो चढीयो पूर हो ॥ पिण नायो मुऊ नान्हमो, ए
 मन चित्या जूर हो ॥ रु० ॥ १९ ॥ उतावली एति की
 शी, जे जाख्यो जिनराय हो ॥ पद्दोर घनीने आतरे,
 सो तो रहस्ये आय हो ॥ रु० ॥ २० ॥ सा जाखे ऋषी

वयण काय ॥ च्यार मिलणमा एकहि, मिलण मिलि
नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहिव वाहु जिणे सर विनवु ॥ ए दे
शी ॥ रुखमणी तुतो साची आविका, थारो अति
सोनाग हो ॥ परदेसामे साजल्यो, देव गुरुसु राग
हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रुपे जलि, सो महा
सुखदाय हो ॥ सत्ये वदे डर पापनो, सरलपणे सु
चि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी,
दया घणी दिल माहि हो ॥ सम जावी शुन दृष्टणी
गुणनि रागणी प्राहि हो ॥ रु० ॥ ३ ॥ धर्म कथक वर्मात
मा, कुल तो उजय विसुत्र हो ॥ दिव्य दृष्टीए देख
णी अर्थ लहे अविरुव हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनय
ति गुण जाणोती पर हित करत जगीस हो ॥ लब्ध
लिखी गुण धारणी एव ए एकविस हो ॥ रु० ॥ ५ ॥
समकीत गुणने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देव
ने देवी चालवे, धर्मिसु धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥
पर्व तणी आराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पो
सा पढिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु०
॥ ७ ॥ शिलवति सीता जिसी, जाग्यवति ससार हो
॥ पचालिनी उपमा, सत्यवति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८ ॥
साहमी साहमणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥
साधु साधविद्या तणी, गोरु जिम सजाल हो ॥ रु०
॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये घारी प्रकारनो, दान तणो अधी

धा सुन्न सकेत हो ॥ रु० ॥ ३१ ॥ लाडु एक उपा
 नीयो, तव बोले ऋषीराय हो ॥ ए किस्यु पुण्यात
 मा, कर काठो देखाय हो ॥ रु० ॥ ३२ ॥ दुर्जयवे
 जिरसे नहि, हरी एकेको खाय हो ॥ चौथा ए तुम
 बूझइ, नहि ऋषी हत्या थाय हो ॥ रु० ॥ ३३ ॥
 नय कोइ मति मानजो, तपनि लवधी प्रमाण हो ॥
 जस्म होवे हम नोगव्या, जे ठे ते सह्यु आण हो ॥
 रु० ॥ ३४ ॥ वोहराव्या सघला सहि, खाय गयो ऋषी
 बाल हो ॥ चक्री खिर तणी परे, तस जिरयो ततका
 ल हो ॥ रु० ॥ ३५ ॥ धर्म तणी वर गोठडी, कर
 ता वरते नाम हो ॥ साजलवा सरखी हुइ, अवर क
 था अजीराम हो ॥ रु० ॥ ३६ ॥ एक्काणुमी ढालमें,
 नोजन माता हाथ हो ॥ श्रीगुणसागर सूरिजी, उल
 ट सघली साथ हो ॥ रु० ॥ ३७ ॥

दुहा ॥ नामा धाव विसुधशु, जाप जप्यो परिपू
 र ॥ रूप न रचवी राजीयो, ठतो गमायो नूर ॥ १ ॥
 द्युत खेलण धन वाठना, दाशीसु घरवास ॥ रूप आ
 शा शिर मुनिया ॥ ते नवि आस निरास ॥ २ ॥
 तृश्ना वाह्यो वाणीयो, जलवट वणज कराय ॥ को
 इ वाय ज्वूकने, आयो मूलग गमाय ॥ ३ ॥ जल
 हि जलने साचवे, ताल न तृपतो होय ॥ जल जल
 करता जल गयो, रातो पनीयो सोय ॥ ४ ॥ अरे
 किहा ए विप्रते, वादी विगोया जाय ॥ हाथ घसे

राजीया, घनी घड़थल होय हो ॥ नामा सुतना व्या
 हमे, शिर रुमा तो जोय हो ॥ रु० ॥ २१ ॥ बाल त
 जी तव बोलीयो, किसी विमासण एह हो ॥ बाल ग
 या फिरी आवशे, साजी चहीए देहहो ॥ रु० ॥ २२ ॥
 मे जाणयोयो मोटको, एठे उपद्रव्य कोइ हो ॥ तव ल
 गे जय नवी जाखवो, प्राण कुशल जव होइ हो ॥
 रु० ॥ २३ ॥ प्राण तजु ततखीण सही, पामीए अप
 मान हो ॥ मान गया जग जीवणो, ते तो जेहेर स
 मान हो ॥ रु० ॥ २४ ॥ मठी पाणी उतरया, तल
 पी तलपी मरी जाय हो ॥ सहिखुपि ते माणसे, अ
 मरखतो न सहाय हो ॥ रु० ॥ २५ ॥ पूठेवो युग
 तो नही, ऋषीने गृह व्यापार हो ॥ पिण आरती ठे
 आधली, जाखो काइ विच्यार हो ॥ रु० ॥ २६ ॥
 रिते हाथे न पूठीया, नवि फल दायक थाय हो ॥
 तोशु आपु देवजी, खीर खरीत सुहाय हो ॥ रु० ॥
 ॥ २७ ॥ शिली आगन सालगे, फूकि फूकि जोइ
 हो ॥ घाघी थाती जाणके, फिरी जाखे ऋषी सोइ
 हो ॥ रु० ॥ २८ ॥ शिधा मोदक मोटिका, सिधाहि
 पकवान हो ॥ मिठाइ मेवा घणा, फासुक वरसु प्र
 धान हो ॥ रु० ॥ २९ ॥ हाजर सहेजे जे हुवे, सो
 आणी वहिराय हो ॥ नरीया मोठा माटला, विद्याने
 प्रजाव हो ॥ रु० ॥ ३० ॥ सहारीया हरी केसरी,
 हरी आरोगण हेत हो ॥ लाडु लिधा नवि गया, लि

तंतरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु
 णवतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ नामा केरा लोक घशेरा,
 केसाकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीळिया अति उगलि
 या, बोले गोडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख
 तो जाण्योयो आगे, नारद वचन विच्याररे माइ ॥
 ए दिन लीधा काज न सिधा, दिन वदे हरि नाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पानी हेलो, माता म
 करे अदेहरे माइ ॥ बेटो करतो सोमे करवो, माणिश
 मन सदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणी गानी रा
 खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो
 जो वदन सरोजो, हाया आरीसो लीधरे माइ ॥ फि०
 ॥ १३ ॥ नारी सुरगी झूपीत अगी, हस्त मुखी हुशी
 याररे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वद सु
 विच्याररे माइ ॥ फि० ॥ १४ ॥ लोक प्रवीणा जाखे दीणा,
 माता हमनाहि दोपरे माइ ॥ तुम्ह हम ठाकुर हमतुम
 चाका, उसन जरीय कोसरे माइ ॥ फि० ॥ १५ ॥ स्वामनि
 कारज करवो आरज, हन आव्या तुम वाररे माइ ॥
 जीज गले एह वचन कहेता, साचो देवी विचाररे मा
 इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी जाखे रोसन राखे, स्वा
 मीनी केरो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे,
 ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि
 चारी हरखी नारी, सारी जारी जावरे माइ ॥ नाजन
 आगे धरती रागे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

शिर धूणवे, फीरी फीरी पिठताय ॥ ५ ॥

ढाल ९२ मी ॥ पुण्य तणारे फल मिठारे जाणो
 ॥ ए देशी ॥ फिरी] फिरी पिठतावा करति, वरते
 जामा जामरे माइ ॥ सात प्रकार अजावी आवी,
 सा दुख पावि तामरे माइ ॥ फि० ॥ १ ॥ नन स
 जाली पहिरे फाली, वाली जाक जमालीरे माइ ॥
 जवारी मेरे जानु कुमरपर, पूठे कुमर रसालीरे मा
 इ ॥ फि० ॥ २ ॥ तन मन प्यारो नद हमारो,
 सारो राखे इसरे माइ ॥ जेर न चाहु तुज आरा
 हु, ए मूको जगीशरे माइ ॥ फि० ॥ ३ ॥ अवर
 सह वातानो सुधो, पिण फिरी नावे केसरे माइ ॥ धु
 रती धूति खरी विगुती, होशे हास्य विशेषरे माइ ॥
 ॥ फि० ॥ ४ ॥ अमरख आणी जामाराणी, ठाणी ए
 अजीमानरे माइ ॥ रुखमणी चुमीने अति चुमी, करशु
 आपसमानरे माइ ॥ फि० ॥ ५ ॥ एमविमाशी बहुली
 दासी, नावी लीधी लाररे माइ ॥ माथे मुण्ण करवा
 चुण्ण, पोखी द्वेप अपाररे माइ ॥ फि० ॥ ६ ॥ मणी
 नो जाजन साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ ॥
 गावत गीत विशेषे आव्या, रुखमणीने दरवाररे मा
 इ ॥ फि० ॥ ७ ॥ आवत निरख्यो मनसुं पर
 ख्यो, ए जामा परीवाररे माइ ॥ आसु ढलिया ऋ
 षी अटकलिया, पूठे ताम विच्याररे माइ ॥ फि०
 ॥ ८ ॥ धुरठे हासु अति नेहासु, जांख्यो सह विं

ततरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु
 णवतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ नामा केरा लोक घणोरा,
 केसाकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीळिया अति उगलि
 या, बोले गोडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख
 तो जाणयोथो आगे, नारद वचन विचाररे माइ ॥
 ए दिन लीधा काज न सिधा, दिन वदे हरि नाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पानी हेलो, माता म
 करे अदेहरे माइ ॥ बेटो करतो सोमे करवो, माणिश
 मन सदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणी बानी रा
 खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो
 जो वदन सरोजो, हाथा आरीसो लीधरे माइ ॥ फि०
 ॥ १३ ॥ नारी सुरगी झूषीत अगी, हस्त मुखी हुशी
 याररे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वदे सु
 विचाररे माइ ॥ फि० ॥ १४ ॥ लोक प्रवीणा जाखे दीणा,
 माता हमनाहि दोषरे माइ ॥ तुझ हम ठाकुर हमतुम
 चाकर, उसन नरीय कोसरे माइ ॥ फि० ॥ १५ ॥ स्वामनि
 कारज करवो आरज, हन आव्या तुम वाररे माइ ॥
 जीज गले एह वचन कहेता, साचो देवी विचाररे मा
 इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी जाखे रोसन राखे, स्वा
 मीनी केरो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे,
 ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि
 चारी हरखी नारी, सारी नारी जावरे माइ ॥ नाजन
 आगे धरती रागे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

॥१८॥ अहृत धूप दहिसु मगल, फिजे विविध प्रकारे
 माइ ॥ अत्रम तणी अहि नाणी जाणी, एखाता उपर
 खाररे माइ ॥ फि० ॥ १९ ॥ नावि आवी आप जणा
 वी, कापे केस जे वाररे माइ ॥ कान नाक वेणी आं
 गुलिया, ठेदाइ तेहि वाररे माइ ॥ फि० ॥ २० ॥
 नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ ॥
 आप न देखे हरख विशेषे, चाली 'जाइ सोइरे माइ
 ॥ फि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणु घणेरी, करती
 जाइ प्रशसरे माइ ॥ एहवी मीठी अवर न दीठी, ध
 न एहनो कुल वसरे माइ ॥ फि० ॥ २२ ॥ देह विप
 र्यय जाणी हसता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ हम
 सुदरता ठे मन हरता, तेहथी हाश प्रकारे माइ ॥
 फि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत,
 आवत नामा पासरे माइ ॥ एक मुखीए दुखी
 रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ॥
 ॥ २४ ॥ नडके तडके नामा नामनी, केश न देखे
 एकरे माइ ॥ रेरे द्रोहणी दासडीयो तुहो, खाधी ला
 च अनेकरे माइ ॥ फि० ॥ २५ ॥ लाच तणु पुठेवुं
 पाठे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आगुलिया उतरी
 या दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ॥ २६ ॥ अ
 मकी चित नीतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे
 माइ ॥ ढाकी काया चोर तणि परे, निज निज घर
 गइ तामरे माइ ॥ फि० ॥ २७ ॥ सुसाति करीने स्वा

मनी पूढे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी
 रच न दोष न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥
 ॥ फि० ॥ २८ ॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सु
 खी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेनी प्रधाना आगे जां
 खे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी
 दडज नाप्यो आप्यो, ए न वद्यो विपरीतरे माइ ॥
 फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुऊने वितक वितरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होमे आया
 हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हासो, होडे हारी ने
 ठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा माहे पधारो प्रजु
 जी, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे ङाणा नवि जाय
 थाप्या, स्याणि चुनो नामरे माइ ॥ फि० ॥ ३२ ॥ हरी
 हासो न मावे द्वियडे, आप वनावे हाथरे माइ ॥ कोइ
 पलेखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी
 नामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कता, के
 थाशे सतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न
 विसरीयु, बलदेवाशु वासरे माइ ॥ तुम पुरुषोत्तम
 साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि० ॥ ३५ ॥
 हरीसु हलवर देइ उलजो, माये चहोडी नाररे मा
 इ ॥ सुधी वाते रुकटि करता, लहिशे नाम गीमाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ३६ ॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए बहु
 लो परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुडाइ दादा देखो, ए

॥१८॥ अकृत धूप दहिसु मंगल, किजे विविध प्रकारे
 माइ ॥ अत्रम तणी अहि नाणी जाणी, एखाता उपर
 खाररे माइ ॥ फि० ॥ १९ ॥ नात्रि आवी आप जणा
 वी, कापे केस जे वाररे माइ ॥ कान नाक वेणी आ
 गुलिया, ठेढाइ तेहि वाररे माइ ॥ फि० ॥ २० ॥
 नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ ॥
 आप न देखे हरख विशेषे, चाली जाइ सोइरे माइ
 ॥ फि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणु घणेरी, करती
 जाइ प्रशसरे माइ ॥ एहवी मीठी अवर न ढीठी, ध
 न एहनो कुल वसरे माइ ॥ फि० ॥ २२ ॥ देह विप
 र्यय जाणी हसता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ हम
 सुदरता ठे मन हरता, तेहयी हाश प्रकारे माइ ॥
 फि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत,
 आवत चामा पासरे माइ ॥ एक मुखीए दुखी
 रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ॥
 ॥ २४ ॥ नडके तडके चामा चामनी, केश न देखे
 एकरे माइ ॥ रेरे द्रोहणी दासडीयो तुझे, खाधी ला
 च अनेकरे माइ ॥ फि० ॥ २५ ॥ लाच तणु पुठेवु
 पाठे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आगुलिया उतरी
 या दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ॥ २६ ॥ च
 मकी चित नीतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे
 माइ ॥ ढाकी काया चोर तणि परे, निज निज घर
 गइ तामरे माइ ॥ फि० ॥ २७ ॥ सुसाते करीने स्वा

मनी पूठे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी
 रच न दोष न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥
 ॥ फि० ॥ २८ ॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सु
 खी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेनी प्रधाना आगे जाँ
 खे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी
 दडज नाप्यो आप्यो, ए न वधो विपरीतरे माइ ॥
 फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुऊने वितक वितरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होने आया
 हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हासो, होडे हारी ने
 ठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा माहे पधारो प्रचु
 जी, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे ढाणा नवि जाय
 थाप्या, स्याणि चुनो नामरे माइ ॥ फि० ॥ ३२ ॥ हरी
 हासो न भावे द्वियडे, आप वजावे हाथरे माइ ॥ कोइ
 पलेखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी
 नामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कता, के
 थाशे सतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न
 विसरीयु, बलदेवाशु वासरे माइ ॥ तुम पुरुपोत्तम
 साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि० ॥ ३५ ॥
 हरीसु हलधर देइ उलजो, माये चहोडी नाररे मा
 इ ॥ सुधी वाते रुकटि करता, लहिशे नाम गीमाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ३६ ॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए बहु
 लो परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुडाइ दादा देखो, ए

स्यो का व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव
दिलासा कोना, नामाने जरपूररे माइ ॥ रुखमणी घ
र लुटेना कारण, मोकलिया नड चूररे माइ ॥ फि०
॥ ३८ ॥ ए व्याणुमी ढाल नलेरी, मुडणको अर्थीका
ररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, इरी सुत च
रीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रूप तजी फीर थयो, चेलो पेहेल प्र
माण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए वड गुणनो जाण ॥१॥
विद्याधर माहे वस्यो, विद्या तेह विशेष ॥ रूप करेठे
नव नवा, पिण ए काम नरेश ॥ २ ॥ एहवो अवर न
जगतमे, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जा
इयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो
सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सघली ज
णे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि
कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पु
त्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रूप अ
नोपम सार ॥ अध मढलथी निकल्यो, सहेस किरण
दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवा शोजतो, सर्व अनूपण
धार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्यु जाणुं क्यु वनी आवसि ॥ ए
देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उठाय
हो ल ॥ आलिंग्यो अलजे घणु, हेज हिए न समा
य हे ॥ श्री दिन माहरो, दूधे बुठा मे

ह हो ॥ ला० ॥ दर्शण दिठो ताहरो, जाग्यो तनमे
 नेह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २ ॥ गती आधी गहिर्वरी,
 आसु वरसे नयणहो ॥ ला० ॥ माता पुत्र मिली रह्या,
 उपज्यो अर्धीको चयन हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३ ॥ मु
 ह अने माथो घणु, चुवे वारवार हो ॥ ला० ॥ हु वा
 री तुऊ उपरे, तु मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ बलहारी सुरति तणी, मुरती मोटी
 सोह हो ॥ ला० ॥ अणियाले लोयणे, माता पनोति
 मोह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आवो मिलो साहे
 लमी, देखो मेरो लाल हो ॥ ला० ॥ इद्र चली घर
 आवियो, सब विध रूप रसाल हो ॥ ला० ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ प्रेम गहेली गोरमी, चिगन करे लखकोरु हो
 ला० ॥ घन वुठा जिम मोरडी, नृत्य करे नर जोरु
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ७ ॥ दाखा पाहे दैवमी, मी
 ठी अति कहाड हो ॥ ला० ॥ पाणी पापण हेठलो, नि
 रखत निठे नाहि हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ८ ॥ लहेरी
 खारा जल तणी, वरस्या पाठे वाय हो ॥ ला० ॥ परदे
 शी प्यारो मिले, शितल कहि न जाय हो ॥ ला० ॥
 आ० ॥ ९ ॥ चदन तो शितल कह्यो, तेहथी चद
 सुचग हो ॥ ला० ॥ चदन चद विचारता, शितल न
 दन सग हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ मिश्री तो मी
 ठी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ॥ ला० ॥ मिश्री अमृ
 त दोयमे, मीठो नदन होइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥

स्यो कां व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव
दिलासा कौधा, नामाने नरपूररे माइ ॥ रुखमणी घ
र लुटेवा कारण, मोकलिया जेड नूररे माइ ॥ फि०
॥ ३८ ॥ ए व्याणुमी ढाल जलेरी, मुडणको अर्धीका
ररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, हरी सुत च
रीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रुप तजी फीर ययो, चेलो पेहेल प्र
माण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए वड गुणतो जाण ॥१॥
विद्याधर माहे वस्यो, विद्या तेह विशैप ॥ रुप करेठे
नव नवा, पिण ए काम नरेश ॥ २ ॥ एहवो अवर न
जगतमे, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जा
इयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो
सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सघली ज
णे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि
कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पु
त्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रुप अ
नोपम सार ॥ अभ्र मढलथी निकल्यो, सहेस किरण
दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवा शोचतो, सर्व अनूपण
घार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्यु जाणु क्यु बनी आवसि ॥ ए
देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो जठाय
हो लाल ॥ आलिंग्यो अलजे घणु, हेज हि ए न समा
य हो ॥ १ ॥ आज जलो दिन माहरो, दूधे वुठा मे

ला० ॥ आंखे काजल आजता, विच विच मेलेतान
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २१ ॥ आपेही लाग्या उठवा,
 जानुनी गतिकारहो ॥ ला० ॥ पाव चरे गिर गिर प
 रे, माता मोले लार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २२ ॥ मा
 ताको कर साहीयो, हस वचाकी चाल हो ॥ ला० ॥
 बोले जापा तोतली, माता पूठे वाल हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ २३ ॥ जाइ लोटे आगणे, धूले धूसर गा
 त हो ॥ ला० ॥ मुठी बाधी धूलशु, कठे लगावे मात
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २४ ॥ माता आपे सुखनी,
 आपी नाखे दूर हो ॥ ला० ॥ ए नही नही ए नही, ए
 उंतु लाव्य हजूर हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २५ ॥ आ
 मो मानी आकरो, रोवा लाग्यो जाम हो ॥ ला० ॥
 बोले माता रुखमणी, ए रहेवादे काम हो ॥
 ॥ ला० ॥ आ० ॥ २६ ॥ तव वय लिधो मूलगो,
 माय नमावे शीस हो ॥ ला० ॥ चिरजीवे चिर नद
 जे, माता दिए आशीस हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ २७ ॥ वारू वात विनोदशु, करती वरते माय
 हो ॥ ला० ॥ वरस सोलनो सचियो, दुख देशातर
 जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २८ ॥ माय मनोरथ
 गुथती, सफल थइ ते आज हो ॥ ला० ॥ पूरव पु
 ण्य प्रसादथी, मिलीया ए सुन्न साज हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ २९ ॥ एतो ज्याणुमी कही, ढाल महा
 अजीराम हो ॥ ला० ॥ श्रीगुणसागर सुरिजी, सरिया

॥११॥ सोवनो तो सुखटायकु, सोवनाहिर्यी रयण हो
 ला० ॥ रयण अने सोना थकी, नदन तो सुख दय
 न हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १२ ॥ न्यारार्थी न्यारो ख
 रो, सरसार्थी अति सरस हो ॥ ला० ॥ निकार्थी नीक्रे
 घणु, निको नदन हर्ष हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १३ ॥
 हियो सरोवर साकडो, उलट जलनो जोर हो ॥ ला० ॥
 लहेर न जाइ जालवी, रहींयो होइ सोर हो ॥ ला०
 ॥ आ० ॥ १४ ॥ सुख माहि दुख उपनो, माजीना
 मनमाही हो ला० ॥ वालपणो नगी देखीयो, ए दुख
 साले प्राही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १५ ॥ गर्ज तणी विधी
 माचवी, उदर बह्यो नव मास हो ॥ ला० ॥ कठी महा
 दुखे जनमीयो, किधो परघर वास हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ १६ ॥ दोष न देणो कोइने, कर्माकेरो दो
 प हो ॥ ला० ॥ जाग्य लिख्यो फल पाइए, मति करवो
 रागने रोसहो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १७ ॥ मदन कहे मा
 जी सुणो, ए दुख माणे कोइ हो ॥ ला० ॥ वालकरुप
 सुहामणु, करी देखाडु सोइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ १८ ॥ उधो सुतो आगले, चिंतबे सा मुह माहि
 हो ला० ॥ चपल पणे पाज धारतो, उठावे धरी वा
 ही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ मुठी बाधी सोह
 तो, मोहतो परीवार हो ॥ ला० ॥ हाशी करे अति
 कलकली, माताने हर्ष अपार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ २० ॥ खोले लिधो खातशु, धवरावे पयपान हो

रे आंखे ॥ जे कालो क्रोधी विशेषेरे, ते मत्र बले नि
 चु देखे ॥ ९ ॥ नर खोडे दिघा खरेरे, नर वचन वा
 ध्या गुटे ॥ मत्र बले वाधी आण्योरे, नवी गुटे ते न
 र ताण्यो ॥ १० ॥ ए मर्म हमाने लाधोरे, मत्र बले
 माणस गाधो ॥ ते साहमो होइने नूकेरे, ते चोर न
 लाइ मूके ॥ ११ ॥ एतो हु जाइने देखुरे, ए मत्र त
 णो बल पेखु ॥ ए सुतने किरती देवारे, चली आया
 प्रनु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवेरे, दरवाजे
 आडो होवे ॥ उठ कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे
 विच्यारी ॥ १३ ॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुणेए अतर
 जामी ॥ नामानो नोजन खाधोरे, अति होडे ते फल
 लाधो ॥ १४ ॥ प्रनुजी पाठा वलीएरे, गुरु बुद्धी वि
 च्यारी टलीए ॥ रिस वसे सो नाखेरे, मर्जादा न तेहनी
 राखे ॥ १५ ॥ अलगो था घणा खाणारे, मुऊ मंदिर
 माहि जाणा ॥ विप्र वाणी एम दाखीरे, न खवाइ जी
 वती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग
 साहीने तस घीसे ॥ पहुता पोले जाइरे, ते काया अधी
 की याइ ॥ १७ ॥ फिरी पूठे जब दिठोरे, ते ब्राम्हण
 थानरु वेठो ॥ मर्म न लिधो कोइरे, अति कालो पि
 लो होइ ॥ १८ ॥ मुऊसु इणीपरे मडेरे अवराने ए
 किम उडे ॥ ए डाकणी साकणी साचीरे, लही मान म
 हा मद माची ॥ १९ ॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धस
 मस करतो धावे ॥ दिसे रिस अपाररे, तव पूगी मा

वर्णित काम हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ श्रीवलज्जद्र तणा वली, सुजट महा कुं
जार ॥ आवी हुआ एकठा, रुखमणीने दरवार ॥१॥
मदन वहे माता कही, एठे कवण विच्यार ॥ जे ते त
रुवर वावीया, ते ए फल विस्तार ॥ २ ॥

ढाल ९४ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ ते फल ए
विस्तरियारे, ए जम आवी परवरीया ॥ दाशीनी बे
णी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥ १ ॥ ते होडे
जामा जाखीरे, हरी हलधर दिधा साखी ॥ सतजामा
जाइ पुकारीरे, तिहारी जम आया जारी ॥ २ ॥ मा
चिंता नवी धरणीरे, तु देखे हमारी करणी ॥ विद्या ब्रा
ह्मण किजेरे, लाकलडी हाथ ग्रहीजे ॥ ३ ॥ पेट ब
नो तसु हालेरे, ते हलुए हलुए चाले ॥ ते खीली रा
ख्या सघलारे, ते सुजट हुआ अति निवला ॥ ४ ॥
तव एक मोकलो किघोरे, प्रनु पासे गयो ते शिधो ॥
सुणी बोले श्रीवलदेवारे, ए मत्र तणा बल लेवा ॥
॥ ५ ॥ ए बहुतो मोहन गारीरे, ए बहुतो आप ठगा
री ॥ ए बहु तो कामण जापोरे, ए नाये पियु वश
आणे ॥ ६ ॥ शिलो दहिं दातज्युं तोडेरे, शिलो जल
पर्वत फोडे ॥ ए मोर चवे मुखे मीठोरे, पिण साप गलतो
दिठो ॥ ७ ॥ वाणी एह वढाकीरे, सापीणथी पिण ए वाकी
॥ आखरनो - अधीको - आघोरे, उरहो नवी आवे
वाघो ॥ ८ ॥ जे काम करे नही, पाखेरे, ते काम समा

क्रम दिठारे, माता लोचन अभीय पइठा, हलधर निज
घर आयोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥ ३२ ॥ ढा
ल चोराणुमी वारुरे, मकरध्वज बल विस्तारु ॥ श्री गु
णसागर जाषेरे, एतो पूरव पुण्य प्रकाशे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ माता पूढे कुमरने, किहा अढे ऋषी राय
॥ उदधी कुमरीनि पाखाति, कुमरी कवण कहाय ॥ १ ॥
कुमरी हरण आदे करी, नामा जुडण अत ॥ दसहि
बोल सुणाविया, अचरिजकारी सत ॥ २ ॥ कहण सुणन
सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक ॥ सुरगुरु तो न
ल वरणवे, मे मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल
विधी साचवी, सुख दुखदाइ दीय ॥ अव मिलो जइ
तातने, तात परम सुख होय ॥ ४ ॥

ढाल ९५ मी ॥ हो नणदल थाको विरो चारित्र
लेइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर, जाई मिलो तुम तातने,
तात वडो ससार हो ॥ कु० ॥ बोले माता रुखमणी,
आणी हेत अपार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १ ॥ जिम सु
ख दिधो मा नणी, तिम सुख द्यो नीज तात हो ॥
कु० ॥ तात तुमारा दर्शणे, तिरस्योथो दिन रात हो
॥ कु० ॥ जा० ॥ २ ॥ स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेह
नो स्वामी तात हो ॥ कु० ॥ पडीत जननी गोठमी, ति
जो दक्षिण वात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ३ ॥ कुमर कहे
किहा मिलु, परखदा माहि जाय हो ॥ कु० ॥ तात तु
मारो पुत्र बु, इम तो मे न कहाय हो ॥ कु० ॥ जा०

य कुमार ॥ २० ॥ मायकहे सण लालनरे, ए मोटा
 नामद गालण ॥ ए यादव केरो नायकरे, एह तुम्ह पि
 ता सुखदायक ॥ २१ ॥ श्रीहरीवशे एहवारे, को हुठ
 न एठे जेहवो ॥ श्रीवलदेव मुहायोरे, ए तुज उपर
 अत्र आयो ॥ २२ ॥ तुम्ह जइने पगे लागोरे, तुम्ह
 पागही मती जागो ॥ जाणी दीठु सायेरे, मति
 घालो मुहडे हाये ॥ २३ ॥ मदन कहे मा सुणि
 एरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो नाग खेलावेरे,
 तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युद्ध किस्यु
 प्रचुने जावेरे, मृगपतिनो अधीके दावे ॥ रण
 चढीयो रोलावेरे, हल मसल मार मचावे ॥ २५ ॥
 विप्र वेश न ठडेरे, ते सिंह थइ अति मने ॥ बाल
 शसी सम दाढोरे, गिरि मेरु सरिखो गाढो ॥ २६ ॥
 कुंकुम केसर गजेरे, तव मस्तक पुठ बिराजे ॥ सिंह
 नादने करतोरे, ते मदिरथी निसरतो ॥ २७ ॥ हलधर
 देखी वीमासेरे, जानी मरीए इणे हासे ॥ ए नारी
 नहि घर सरखीरे, में धूर वेहा लगे परखी ॥ २८ ॥
 उपरणीसु हाथोरे, वामो विटे नर नाथो ॥ आगे ध
 रीने ढूक्योरे, ते चोट करत न चूक्यो ॥ २९ ॥ ते मा
 होमाहि बलगारे, जण जोवे उजा अलगा ॥ तामण
 ताजण करवेरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥ ३० ॥ ते हारयो
 हरीने आगेरे, हलधरजी धरति लागे ॥ मदन गयो
 मा पासेरे, आलिङ्ग्यो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र परा

काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १४ ॥ विद्याधरपति नं
 दन, हु एकाकी बाल हो ॥ कु० ॥ लीधा जावे रुखम
 णी, जेहनो हरी रखनाल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १५ ॥
 चोर नहि लपट नहि, नहि नट वीटमे नाम हो ॥ कु० ॥ सा
 हि रह्योबु सुदरी, किउ न धसे नृप शाम हो ॥ कु०
 ॥ जा० ॥ १६ ॥ स्या तुह्य राणा राजीया, स्यो जीव्यो
 जगते माम हो ॥ कु० ॥ जेहनी लीजे जामनी, अवर
 किस्सु करे काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १७ ॥ युद्ध
 विना जाउ नहि, साजलज्यो जे सूर हो ॥ कु० ॥ पा
 र्वाहि जब दोडस्ये, तेका कीजे असूर हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ १८ ॥ एम सुणी यादव सजा, हल हल
 हुड अपार हो ॥ कु० ॥ सबाह्या नट सामठा, गाढा
 ऊजाण हार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १९ ॥ मूरठाणो
 हलधर महा, सुणी रुखमणी अपहार हो ॥ कु० ॥ उ
 ठाइ उजो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ २० ॥ भ्रकुटी जाली जमाडतो, करतो क
 प गरीर हो ॥ कु० ॥ उठ्यो अच्युत उतावली, मेरु त
 णी परे धीर हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २१ ॥ पाडु नदन
 परवडा, अर्जुन निम कुमार हो ॥ कु० ॥ कवण कवण
 करी कलकले, न लहे निज परिवार हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ २२ ॥ आप आपणे पारखे, गाजता नू
 पाल हो ॥ कु० ॥ उग्रसेन आदे करी, अरि कुल केरा
 काल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २३ ॥ ॥ ए पचाणुमी दा

॥ ४ ॥ राजा राणा पूवशे, एकुण ए कुण एह हो ॥ कु०
 ॥ रुखमणी सुत आइयो, यो परदेशा जेह हो ॥ कु०
 ॥ जा० ॥ ५ ॥ जले पवारयो बापडो, मावित्रा सुख
 काम हो ॥ कु० ॥ रडवन्तोयो पर घरा, जिम तिम
 आयो ठाम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ६ ॥ नान्हा मोठाना
 कया, में न खमाइ बोल हो ॥ कु० ॥ हु निशाण व
 जावते, मिलसु घुडाइ ढोल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ७ ॥ व
 रु बावा वड बधवा, हरी हलधरसु सोर हो ॥ कु० ॥
 मचाउ अति आकरो, जोउ जादव जोर हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ ८ ॥ नेमीनाथ गडी करी, वेम्हास सहु परी
 वार हो ॥ कु० ॥ आप जणावी तातने, करशु आइ
 जुहार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ९ ॥ वाचा मागु तुळ क
 ने, चाल हमारी लार हो ॥ कु० ॥ अण पूवया आवु
 नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १० ॥
 जाण्यु मति पागे वले, मति समरे उद्देश हो ॥ कु०
 ॥ कृष्ण तणी ठे पाधरी, मानी वात अशेष हो ॥ कु०
 ॥ जा० ॥ ११ ॥ वाहे साहि रुखमणी परखदा उपर
 आय हो ॥ कु० ॥ कीधी पुरुषा पचारणी साजळ या
 दव राय हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १२ ॥ जो जो जोग
 पांनवो, अवरजीको ऊऊर हो ॥ कु० ॥ आवी मी
 ल्यो उतावला, लागो हमारी लार हो ॥ कु० ॥ जा०
 ॥ १३ ॥ चदेरी पती मारीयो, कीधो अती सग्राम हो
 ॥ कु० ॥ आपी राणी रुखमणी, सो अब जाइ नि

बोले मातारे, साजल सुत वातारे, विग्नीहो माय क
 ही वाड जेरे ॥ त्रीय जाखे कतारे, मोमे गज दतारे,
 सूरनोहो नाम लही वाडजेरे ॥ ६ ॥ कुसमकी सेजोरे,
 सौवत सहेजोरे, विंटीएहो दुहवीयो तु घणोरे ॥ सहे
 णाठे सेलोरे, खाडासु खेलोरे, खेल खरो असोहा
 मणोरे ॥ ७ ॥ मुऊ लोचन तीरोरे, लागत अधीरोरे,
 कीमहो खमसे मालाकी अणोरे ॥ मुऊ हाक न हनीयो
 रे, तु पाए पडीयोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे ॥ ८ ॥
 नीडतो नगोरोरे, ए मोटो टोरोरे, मोरोहो मरण वि
 घ्यारजेरे ॥ सखीयामें वासोरे, न सहाय हासोरे ॥
 स्वामीनो काम समारीजेरे ॥ ९ ॥ रायागण आयारे,
 शोन्नत सवायारे, पायाहो सुजस प्रगट पणोरे ॥ कोइ
 बत्र धरावेरे, कोइ चामर ढोलावेरे, जावेहो चित्त रा
 जा तणोरे ॥ १० ॥ गुण लक्षणवतारे, सोहता दतारे,
 वरसेहो साठे विराजतारे ॥ मदशु अति वहेतारे, का
 इ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजतारे ॥ ११ ॥
 उचा अति चढीयारे, पर्वतशु अनीयारे, जुडीयाहो
 हेम जजीरसुरे ॥ ढलकती ढालेरे, मलपता चालेरे, हा
 लेहो आप सरिरसुरे ॥ १२ ॥ घोमा हणहणतारे, ते
 सघला बणतारे, खणताहो धरती खुरतालशुरे ॥ ल
 बोदर रुडारे, चालता नही कुमारे, सुमाहो वरण वि
 लासशुरे ॥ १३ ॥ रथ राजे वारुरे, चालता चारुरे,
 सारुहो तुरगम जोतरेरे ॥ शस्त्रासु नरीयारे, रण आ

लमे, आप जणावण हेत हो ॥ कु० ॥ आगुणसागर सृ
रिजी, मदन कियो सकेत हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ गती फरसे केइ नड, केइ अधर डसत ॥
केइ हाथ पटाडता, जाणे पाडे तत ॥ १ ॥ कपावे
काया घणी, क्रोध तणे वश जोय ॥ अध हुवा आगे
धसे, समज पडे नहीं कोय ॥ २ ॥ यज्ञ उखाली ना
खता, मोडता निज अग ॥ सुजट वहे उतावला, दे
खवा रण रग ॥ ३ ॥

ढाल १६ मी ॥ कागल लिखी दीधोरे ॥ ए देशी ॥
रण रगे रातारे, नड मोटा मातारे, खाताहो अ
मल अलवेसुरे ॥ रणजेरी दिधीरे, काइ ढील न
किधीरे, लीधोहो नेम ए सुदुरे ॥ १ ॥ कारिज
अणसरीयारे, जोजन परहरीयारे, कारिज जल पि
यारे ॥ बगतरने अगेरे, शिर टोप शुचगेरे, घगा
हो खमग हाथे लीयारे ॥ २ ॥ वरवा जलहलतारे,
खाडा खल खल तारे, ढालताहो नेजा अति नलारे ॥
तीरासु तिरकसिरे, जरी लीधा करकसिरे, बरकसहो
राखी राखण कलारे ॥ ३ ॥ हाथा कोडारे, काठा
परचडारे, दडाहो वज्र गदा ग्रहीरे ॥ जम दडस्यु
जोइरे, बतीसे होइरे, सादेहो साधन नस नणीरे ॥
॥ ४ ॥ तुटता कसणारे, सूरा तणा रसणारे, अस
णहो परदल बल बहुरे ॥ घोमाने हाथीरे, सदन सहु
साथीरे, आरुढहो हुआ ते नड सहुरे ॥ ५ ॥ तव

बोले मातारे, साजल सुत वातारे, विरनीहो माय क
 ही वाड जेरे ॥ त्रीय जाखे कतारे, मोमे गज दतारे,
 सूरनोहो नाम लही वाडजेरे ॥ ६ ॥ कुसमकी सेजोरे,
 सौवत सहेजोरे, विंटीएहो दुहवीयो तु घणोरे ॥ सहे
 णाठे सेलोरे, खाडासु खेलोरे, खेल खरो असोहा
 मणोरे ॥ ७ ॥ मुऊ लोचन तीरोरे, लागत अधीरोरे,
 कीमहो खमसे मालाकी अणोरे ॥ मुऊ हाक न हनीयो
 रे, तु पाए पडीयोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे ॥ ८ ॥
 जीडतो जगोरोरे, ए मोटो टोरोरे, मोरोहो मरण वि
 च्यारजेरे ॥ सखीयामें वासोरे, न सहाय हासोरे ॥
 स्वामीनो काम समारीजेरे ॥ ९ ॥ रायागण आयारे,
 शोचत सवायारे, पायाहो मुजस प्रगट पणेरे ॥ कोइ
 बत्र धरावेरे, कोइ चामर ढोलावेरे, जावेहो चित्त रा
 जा तणेरे ॥ १० ॥ गुण लक्षणवतारे, सोहता दतारे,
 वरसेहो साठे विराजतारे ॥ मदशु अति वहेतारे, का
 इ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजतारे ॥ ११ ॥
 उचा अति चढीयारे, पर्वतशु अमीयारे, जुडीयाहो
 हेम जजीरसुरे ॥ ढलकती ढालेरे, मलपता चालेरे, हा
 लेहो आप सरिर सुरे ॥ १२ ॥ घोना हणहणतारे, ते
 सघला बणतारे, खणताहो धरती खुरतालशुरे ॥ ल
 बोदर रुडारे, चालता नही कुमारे, सुमाहो वरण वि
 लासशुरे ॥ १३ ॥ रथ राजे वारुरे, चालता चारुरे,
 सारुहो तुरगम जोतरेरे ॥ शस्त्रासु नरीयारे, रण आ

गे धरारीरे, पायाहो धरणीने खोतररे ॥१४॥ नर पाय
 क पालारे, हुशीयार हठालारे, आगेहो होइने हालण
 रे ॥ दिसे जलहलतारे, रीसे कल कल तारे, बलता
 हो पूठे नवालणारे ॥ १५ ॥ रणजूमी आयारे, यदु
 पती रायारे, माढ्याहो लोग लडावणीरे ॥ माता मु
 नी सगेरे, मेळी मनरगेरे, रगेहो जग उमावणीरे ॥
 ॥ १६ ॥ हरी साय सरीखोरे, ए सयल परीखोरे, कि
 धाहो विविध प्रकारशुरे ॥ नर हयवर हाथीरे, सा
 थाशु साथीरे, जुजेहो धर्म विच्यारशुरे ॥ १७ ॥ जल
 ढोल दढामारे, काहला अजीरामारे, नाद नीरुपम जु
 जुनरे ॥ जुजाज वाजेरे, सरणाइ साजेरे, रागहो जमी
 री सिंधुनरे ॥१८॥ गोखे चढीया गोरीरे, देखे चित्त चो
 रीरे, आगे हो सोहे मारो नाहलोरे ॥ कुलदेवी मनावेरे,
 प्रीजडो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलोरे ॥१९॥ सूरु
 अति ऊजेरे, नर कायर धूजेरे, दीन वचन मुखे जपतारे
 ॥ जोवे देव तमासोरे, आकाशे वासोरे, वासगीहो थर
 हर कपतारे ॥२०॥ अतिशे हा आडवरेरे आच्छाद्यो
 अबरेरे, हाथहो हाथ सुजेनहिरे ॥ नहि वैरविरोधारे,
 हासा क्रत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥२१॥
 जनु सहु जागेरे, हरी दलने आगेरे, काम करे उठा
 वणीरे ॥ दल देखी खीसतारे, धाया धसमस्तारे, हल
 धर पाडवपर जणीरे ॥ २२ ॥ ते चोपे चढीयारे, अति
 गाढा लढीयारे, नमीया हो मदन माया करीरे ॥ हरी

आपण आयोरे, सब जोर दिखायोरे, कांड न चाले
 चिंता खरीरे ॥ २३ ॥ पग आघा ठावेरे, हरी साहमो
 आवेरे, पावे हो सुख हरी देखेरे ॥ हरी लोयण द
 क्षणरे, वर वाह सुलक्षणरे, फूरके हो ते नर पेखेरे
 ॥ २४ ॥ हरी नाखे नाइरे, ते रीस लगाइरे, तोहि तु
 ऊ साये नेहनोरे ॥ हसी बोले नीकोरे, जायो हरी जी
 कोरे, कृण समो नेहनो चलोरे ॥ २५ ॥ को जोर न
 चालेरे, का नाख न घालेरे, आपी हो त्रियारुपी ची
 खडीरे ॥ एह वचने कोप्योरे, अति गाढो रोप्योरे, ना
 ख हो त्रोडी जिम चिचमीरे ॥ २६ ॥ जेहनो बल आ
 पोरे, ते ठेद्यो चापोरे, ए वलि नाम महा वलिरे ॥ घर
 वेगा जाठरे हरी सुखीया थाठरे नारी हुइ न हुइ
 चलिरे ॥ २७ ॥ अगुठाथी लागीरे. जाइ माथे जा
 गीरे, रोमे हो रोम साली घणीरे ॥ तव कोडी उपा
 यारे किधा हरी रायारे एक न लागो नदन चणीरे
 ॥ २८ ॥ शब्दास्र बल जागोरे हरी बाधा लागोरे काल
 रुपी हो थयो कान्हमोरे ॥ माताजी देखेरे चिंत्या सु
 विशेषेरे मतरे दमे माहारो नान्हडोरे ॥ २९ ॥ बेसे
 मुऊ आडोरे ए दोइ पवामारे हाणी होवे घर मा
 हरेरे ॥ ऋपिरोप विचालोरे, जइ किजे टालोरे, हाथे
 हो वात ठे ताहरेरे ॥ ३० ॥ ऋपि विच करावेरे, ऋपी
 रोश हरावेरे, कृष्ण करो किंस्यु नदसुरे ॥ नदन स
 मगायोरे, धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाय आ

एदसुरे ॥ ३१ ॥ आलिंगी लीधारे, जाणे अमृत
 पिधारे, कीधा हो वित्रिव वधामणारे ॥ हरी हरख
 न मावेरे. सुत दर्शण सुहावेरे, पावे हो आनद अ
 ति घणारे ॥ ३२ ॥ ए ढाल प्रसीद्धिरे, पटनव्वद
 मी कीधारे, कीधी हो आप गणावणारे ॥ कहे गु
 णसागररे, हरी नद उजागररे. नागर नवल ली
 ला घणारे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ काम कुमर मिलवे करी ए अधविच वि
 चाल ॥ हर्ष अने विखवाद अति हरी पाम्यो सम
 काल ॥ १ ॥ नद मिल्यो आनदमे ए हरी हरख अ
 पार ॥ वधव नट धरणी पळ्या ए विखवाद अपार
 ॥ २ ॥ सकेलि माया सहु जे जिम था तिम कीध ॥
 जय जय कार जगतमें मदन महा जल लीध ॥ ३ ॥
 मार मार कर उठिया सरयु कहे नृप स्वाम ॥ एक
 ले पुत्र हमारडे. सकल किया गत माम ॥ ४ ॥ माता
 ऐसा पूत जणे जैसा काम कुमार ॥ जिहा जोउ ति
 हां तेहवो, आप जणावण हार ॥ ५ ॥

ढाल ९७ मी ॥ सुधारस मुरली बाजे ॥ ए देशी ॥
 आप जणायो जगतमेजी, श्री श्री काम कुमार ॥ या
 दव पाम्व नोजगारे, मारघो मान, अपार ॥ १ ॥ पुत्र
 पधारीयो, हरख्यो कृष्ण नरेश ॥ हरखी मा सुविशेष
 हरख्या लोक अशेष ॥ पु० ॥ ए आकणी ॥ उदधी
 विजय आदे करीरे, प्रणम्या दशेहि दसार ॥ आलिंगी

हियडे धेरेरे, श्री बलभद्र उदार ॥ पु० ॥ २ ॥ राजा
 अरजुन जीमसुरे, मिलवानो अधीकार ॥ राजा रा
 णा प्रणम्यारे, पगे लाग्यो परीवाररे ॥ पु० ॥ ३ ॥
 जानु कुमर नासी गयोरे, माता जामा पास ॥ वात
 जणावी विस्तररीरे, जामा हुइ उदासरे ॥ पु० ॥ ४ ॥
 जोली जामा जामनीरे, आरतिवति होय ॥ जे किर
 तार वना कियारे, तिणसु जोर न कोय ॥ पु० ॥ ५ ॥
 गगन थकि उतारीयोरे, विद्या रुपे विमान ॥ कुमरी
 राखी उलवेरे, चकीत हुवा राजान ॥ पु० ॥ ६ ॥ रुख
 मणी प्रनु पगे लागतारे, हरी हासो न समात ॥ कि
 उ न जणावीयो मुऊ जणीरे, सुत आगमनी वात ॥
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ हरी निरखे मुख रुखमणीरे, रुखमणी
 हरी मुख जोय ॥ हरी रुखमणी मुख पुत्रनोरे, पुत्र
 पिता मा जोय ॥ पु० ॥ ८ ॥ अमृत वरसे लोयणारे,
 परम महा सुख होइ ॥ ते सुख ज्ञानी वाहीरोरे, अ
 वर न जाणे कोइ ॥ पु० ॥ ९ ॥ जामा ठे वडजाग
 णीरे कहतिथी अनीवार ॥ अब जाग केहनो व
 मोरे, कुण वडी ससार ॥ पु० ॥ १० ॥ भें पिण बाल
 पणा थकीरे, काम किया अनीराम ॥ मुजहीसु सं
 ख्या जणीरे, अधीको कुमर काम ॥ पु० ॥ ११ ॥
 नगरीनी शोना घणीरे, कचरो काठेरे दूर ॥ फूल वि
 खेरे सेरकीरे, अग्र देवे अति नूर ॥ पु० ॥ १२ ॥
 वाजा विवीध प्रकारनारे, गुहिरगडे निशान ॥ नाडे

अवर गानीयेरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥
 घर घर गुडी जवळीरे, घर घर मंगळ च्यार ॥ वग
 घर होवे वधामणारे, घर घर उठव सार ॥ पु० ॥
 ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चढीरे, रुखमणी डोलें लार ॥
 दस दसारने हलधरुरे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥
 ॥ १५ ॥ गोखे वैठी गोरमीरे, बहुली दे आशीस ॥
 मात पितानी पूरज्योरे, आशा अधीक जगीस ॥
 ॥ पु० ॥ १६ ॥ घन तु माता रुखमणारे, थारे एवो पु
 त्त ॥ घणा किस्यु करे जाइयारे, कारण कोभीक सुत
 ॥ पु० ॥ १७ ॥ साजलता मारग विपेरे, विविध प्र
 कारे बोल ॥ आया रुखमणी मदिरेरे, वाग्या जगी
 डोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोठव किजतारे, हरखे
 सघला लोक ॥ नामाने जानु तणोरे, चितडो थाय
 सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नंदशुरे,
 अवर अनेरा शय ॥ रुखमणी घरे आरोगीयारे, दि
 न केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आ
 वीयोरे, हरीसु करे पुकार ॥ मुऊ पुत्री बहु तुह्य तणी
 रे, फिड न करो प्रनु सार ॥ पु० ॥ २१ ॥ हरी चित
 चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आ
 णी आपतारे, हरी हरषत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥
 दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री स
 रखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥
 साजन मेलानी चलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४ ॥

चौपड ॥ खरु खड वाणीठे नवनवी सुणता मि
ठी साकर जेवी ॥ श्रीहरीवश चरित्र जयजयो, चो
थो खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
बंधे हरीवश विस्तारनामा चतुर्थोऽधिकार समाप्त ॥

॥ श्री हरीवश वर्णन ढालसागर पचमो खड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ आचारज इद्रि दमे, आचारज ब्रह्मचारि
॥ आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आ
चार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती
व्रत पालता, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आ
राधता, आपे वाणी विलास ॥ अब पचम अधीका
रनो, पन्नणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सची
वा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ माड्यो आनवर घं
णे, कगी घणो उडाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी,
बोलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने
लीर्धी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीका, हरी बल अ
ने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आ
चार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, माहोमाही आ
नद ॥ बहीनी प्रसाद तुमारणे, ए मुऊ घर आणद
॥ ७ ॥ नूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ स
रखी वए पचासवर, कन्या भेली उदार ॥ ८ ॥ सगा

अवर गानीयोरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥
 घर घर गुडी जवळीरे, घर घर मगळ च्यार ॥ वर
 घर होवे वधामणारे, घर घर जंठव सार ॥ पु० ॥
 ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चढीरे, रुखमणी डोले लार ॥
 दस दसारने हलधरुरे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥
 ॥ १५ ॥ गोखे वेठी गोरमीरे, बहुली दे आर्शास ॥
 मात पितानी पूरज्योरे, आशा अर्धीक जगीस ॥
 ॥ पु० ॥ १६ ॥ घन तु माता रुखमणारे, वारे एत्रो पु
 त्त ॥ घणा किस्त्यु करे जाइयारे, कारण कोमीक गुत
 ॥ पु० ॥ १७ ॥ साजलता मारग विपेरे, निविध प्र
 कारे बोल ॥ आया रुखमणी मढिरेरे, वाग्या जगी
 डोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोठव किजतारे, हरखे
 सघला लोक ॥ नामाने जानु तणोरे, चित्तडो थाय
 सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नदशुरे,
 अवर अनेरा शय ॥ रुखमणी घरे आरोगीयारे, दि
 न केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आ
 वीयोरे, हरीसु करे पुकार ॥ मुऊ पुत्री बहु तुह्य तणी
 रे, फिउ न करो प्रनु सार ॥ पु० ॥ २१ ॥ हरी चित
 चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आ
 णी आपतारे, हरी हरषत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥
 दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री स
 रखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥
 साजन मेलानी जलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४ ॥

चौपड ॥ खरु खड वाणीठे नवनवी सुणता मि
ठी साकर जेवी ॥ श्रीहरीवश चरित्र जयजयो, चो
थो खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
वधे हरीवश विस्तारनामा चतुर्थो ऽधिकार समाप्त ॥

॥ श्री हरीवश वर्णन ढालसागर पचमो खड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ आचारज इद्रि दमे, आचारज ब्रह्मचारि
॥ आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आ
चार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती
व्रत पालता, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आ
राधता, आपे वाणी विलास ॥ अब पचम अधीका
रनो, पनणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सची
वा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ माड्यो आरुवर घ
णे, कर्ण घणो उडाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी,
बोलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने
लीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीका, हरी बल अ
ने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आ
धार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, माहोमाही आ
नद ॥ वहीनी प्रसाद तुमारने, ए मुऊ घर आणंद
॥ ७ ॥ नूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ स
रखी वए पचासवर, कन्या मेळी उदार ॥ ८ ॥ सगा

सणीजा सामटा, वहीन जुया जाणेज ॥ धिटी मीली
या एकठा, सहु परीवार सहेज ॥ ९ ॥

ढाल ९८ मी ॥ सेहेरानी देशी ॥ गुथी माल
णी जलो सेहरो, रचना रची साररे ॥ काम कुवर
शिर सोहतो, सोहे शोन अपार हो ॥ गु० ॥ १ ॥ पा
च पिरोजा हिराना, मुक्ताफल वर लालरे ॥ माणीक चू
नी लसणीया, जला रतन रसालरे ॥ गु० ॥ २ ॥ वि
विध प्रकारे कारीगरी, करी खाती अनेकरे ॥ देखण
आवे देवता. मन आणी विवेकरे ॥ गु० ॥ ३ ॥ मो
हन मस्तक उपता काने कुमल दोडरे ॥ चंदने सूर्य
एकठा, मिलिया तिहा जोडरे ॥ गु० ॥ ४ ॥ नखाशिख
लगी वणता जीके, जला चूपण होडरे ॥ पेहेरया प
रम पावन पणे, सोहे इद्र सम सोडरे ॥ गु० ॥ ५ ॥
पच स्वर शब्द सुहामणा, वाजता निशाणरे ॥ नाचे
पात्र मन जावती, दिजे वठित दानरे ॥ गु० ॥ ६ ॥
गयवर शिर सिंदुरनो, घणो किधलो पूररे ॥ हयवर सार
समारिया, चाले दधीहि लूररे ॥ गु० ॥ ७ ॥ साजन
मिल्या सामटा, मिली सामटी बालरे ॥ धवल मगल
घणा गावती, त्रिय जाक ऊमालरे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कु
मर घोडे चढयो मोटके, आया वाग मजाररे ॥ का
ल सबर हरी उठव, करे विविध प्रकाररे ॥ गु० ॥ ९ ॥
खेचरणी खरी खातिसु, गावे नवनवा घोलेरे ॥ चूच
रणी जरमाववा, करे अति घणा टोलरे ॥ गु० ॥

॥ १० ॥ पहिलि परणी रति रंगसु, पढी पचासने
 ठाठरे ॥ एक लग्ने तव व्याहनो, जणे ब्राह्मण पाठरे
 ॥ गु० ॥ ११ ॥ परणी पधारीया मंदीरे, पोहोती मन
 तैणी क्रोमरे ॥ इद्र इद्राणी सारखी, मिली काम रति
 जोडरे ॥ गु० ॥ १२ ॥ खेचर खेचरणी गया, तव
 आपणे ठामरे ॥ पुण्य तणा फल जोगवे, जली जा
 मनी पामरे ॥ गु० ॥ १३ ॥ उदधी कुमरी आदे क
 री, नृप कुमरीशु विलासरे ॥ जानु कुमर परणावि
 यो, पूगी मायनि आशरे ॥ गु० ॥ १४ ॥ काम किर
 ती, अती विस्तरि, घर घर वार वजाररे ॥ देश पुर
 नगरो घणु, जग माहे जयकाररे ॥ गु० ॥ १५ ॥ व
 दन विराजत जारति, करी लळिनो वेसरे ॥ अमरख
 आणीने किरती, लियो आपे परदेशरे ॥ गु० ॥ १६ ॥
 कमलि रमलि करे रंगसु, जोगी जमरलो जेमरे ॥
 नागर नवल रस रामती, रमे रातदिन तेमरे ॥ गु०
 ॥ १७ ॥ ए अठ्याणुमी ढालमे, हुवो कुमर परणेतरे ॥ श्री
 गुणसागर सूरिजी, रुखमणी सुख हेतरे ॥ गु० ॥ १८ ॥
 दुहा ॥ श्री कुवर वर सावनो, चरित्र सुणो जवि
 लोय ॥ चरम शरिरी आतमा, नाम लिखा सुख होय
 ॥ १ ॥ पूर्व जवतरनो जलो, जाई काम कुमार ॥
 आवी मिले किम एकठो, प्रिति तणो व्यवहार ॥ २ ॥
 ढाल ९९ मी ॥ केशर वरणो हो काढ कसुवो मो
 रा लाल ॥ ए देशी ॥ केटज जीवजे हो, सुख बहु

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
 च तीर्थी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जवुवतीने हो
 हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे दिपे हो जोगपुरदर ॥
 ॥ मा० ॥ लक्षणे शोने हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
 सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
 हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन नामे हो सु
 त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती हरीनो हो त
 सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
 तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निरका कहीए ॥ मा०
 ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
 वधाठ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
 पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मगल हो सो
 हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ नामा जायो हो कुमर नीरु ॥ मा०
 ॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
 घर थावे हो महोडव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चद
 ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुजानु
 हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
 प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
 ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चद वर्ण शुच
 नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुवर नमर सुजाण
 ॥ केलि करे मन जावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥
 वारु वसन विराजता, वारु नूपण धार ॥ वारु चाल
 मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ साब पढायो रतिपति,
 तिमहि जानु सुजानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल
 न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी
 वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आढे व
 चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥ १ ॥
 हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जावुवति जाया
 नणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलता अती खात
 सु, मित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण
 तात जुहार ॥ ३ ॥ साब वेठो काम पे, जानु पे सुजानु ॥
 रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानु ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल
 हो वही, पाडवा बलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां
 डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु
 जानु कुमार ॥ पहीली जीत साबकी, मदन केरे उप
 कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय
 ॥ ज्याकी पुठे कामठे, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु
 वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा
 रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी
 तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को
 डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
 न तीर्थी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जत्रुपतीने हो
 हरख सवायो ॥ मा० ॥ रुपे टिपे हो जोगपुरदर ॥
 ॥ मा० ॥ लक्षणे शोने हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
 सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
 हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन नामे हो सु
 त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती हरीनो हो त
 सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
 तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निको कहीए ॥ मा०
 ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
 वधान आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
 पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मगल हो सो
 हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ नामा जायो हो कुमर जीरु ॥ मा०
 ॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
 घर थावे हो महोत्तव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चद
 ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुजानु
 हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
 प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
 ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ रुप कला गुण आगला, चद वर्ण शुभ
 नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुवर नमर सुजाण
 ॥ केलि करे मन जावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥
 वारु वसन विराजता, वारु नूपण धार ॥ वारु चाल
 मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ साव पढायो रतिपति,
 तिमहि जानु सुजानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल
 न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी
 वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आडे व
 चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अचन ॥ १ ॥
 हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जावुवति जाभा
 नणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलंता अती खात
 सु, मित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण
 तात जुहार ॥ ३ ॥ साव वेठो काम पे, जानु पे सुजानु ॥
 रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानुं ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल
 हो वही, पाडवा बलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां
 ढोया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु
 जानु कुमार ॥ पहीली जीत सांबकी, मदन केरे उप
 कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय
 ॥ ज्याकी पुठे कामठे, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु
 वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा
 रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी
 तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को
 डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
 न तीर्थी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जवुवतीने हो
 हरख सवायो ॥ मा० ॥ रूपे दिपे हो जोगपुरंदर ॥
 ॥ मा० ॥ लक्षणे शोने हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
 सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
 हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन नामे हो सु
 त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती हरीनो हो त
 सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
 तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निको कहीए ॥ मा०
 ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
 वधाउ आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
 पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मंगल हो सो
 हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ नामा जायो हो कुमर नीरु ॥ मा०
 ॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
 घर थावे हो महोत्तव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चद
 ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुजानु
 हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
 प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
 ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ रूप कला गुण आगला, षड वर्ण शुन
 नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुवर जमर सुजाण
 ॥ केलि करे मन जावती, प्यारा प्राण सभान ॥ २ ॥
 वारु वसन विराजता, वारु नूपण धार ॥ वारु चाल
 मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ सांब पढायो रतिपति,
 तिमहि जानु सुजानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल
 न लीला थानु ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पाचमी वाडे परमेसरु, वखाणी
 वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान. बोले आढे व
 चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥ १ ॥
 हमारे लालना, लिलावत कुमार ॥ जावुवति जाभा
 नणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलंता अती खात
 सुं, भित्राके परीवार ॥ परखदा माहि आविया, करण
 तात जुहार ॥ ३ ॥ साव बेठो काम पे, जानु पे सुजानु ॥
 रुपे रजे राजवी, सोहाके निधानु ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल
 हो वही, पाडवा बलदेव ॥ कुवर दोय खेलाववा, मां
 डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कचन हारीयो, ताम सु
 जानु कुमार ॥ पहीली जीत साबकी, मदन केरे उप
 कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कचन कोडी दोय
 ॥ ज्याकी पुठे कामठे, जाती क्यु नवी होय ॥ ७ ॥ सु
 वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा
 रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोडी हेमनी, जी
 तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को
 डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वस्तुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

जामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
 न तीर्थी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जववतीने हो
 हरख सवायो ॥ मा० ॥ रूपे दिपे हो जोगपुरदर ॥
 ॥ मा० ॥ लक्षणे शोने हो सर्व सुहकर ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
 सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मत्रिनी नारी
 हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन, नामे हो सु
 त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती, हरीनो हो त
 सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
 तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निर्का, कहीए ॥ मा०
 ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
 वधान आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
 पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मगल हो सो
 हव गावे ॥ मा० ॥ साव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ जामा जायो हो कुमर, जीरु ॥ मा०
 ॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
 घर थावे हो महोडव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन घद
 ज्यु हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ साव सुजानु
 हो जनम वखाण्या ॥ मा० ॥ जाइ जाइसु हो प्रेम
 प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
 ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ रूप कला गुण आगला, घद वर्ण शुन
 नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

नीतता, तेणे कीयो दोर ॥ माचियो मना घणो, शि
ल जगनो सोर ॥ २४ ॥ मदन बधु गुणही सींधु, नं
द नद नंद ॥ जव विना कुचाले चाले, मोहनि तो
मसद ॥ २५ ॥ एतो सोमी ढालमे, साबको वखा
ण ॥ सूरि गुणसागरु, पुण्यको प्रमाण ॥ २६ ॥

दुहा ॥ जावुवतीशु हरी कहे, थारो साव कुमार ॥ न
गरी माहि नारीनो, लोपे सीयल अपार ॥ १ ॥
सा जाषे स्वामी सुणो, माहरो साधु शु लोग ॥ वा
लक बोली न जाणहि, किंर्यो अन्याइ जोग ॥ २ ॥
कटका माहे डाहरो, उट कहावे जेम ॥ काइ करो
हरी रायजी, लोगा वाह्या एम ॥ ३ ॥ चारु घणो
मुह लागणो, डुवलकन्नो राय ॥ होवे तो घर तेहनो,
आटा ठिकर थाय ॥ ४ ॥ पेट गणोसा सारखो,
शकरको सो सोच ॥ किया कुटुबो निर वहे, अवर
सकलहि पोच ॥ ५ ॥ कहि सुणी चित नाषिए, जो
नवि निरखे नयण ॥ नयणेहि नीरख्या पठे, कहेणा
नहि को वेण ॥ ६ ॥ अणजाण्या अण देखीया, कह्यो
पर शीर योक ॥ अणसहता ना गिखव्या, जूठ
कहेवे लोक ॥ ७ ॥

ढाल १०१ मी ॥ सिंयल सलुणि मयणरेहा सनि
रे ॥ ए देशी ॥ साम कहे सुण सुदरीरे जूठ कहे नहि
लोयरे ॥ पचामे परमेसरुरे, पच करे तिम होयरे ॥
सा० ॥ १ ॥ अगुठाथी घुटियारे घुटीथी तो जानुरे ॥

स दोय कुकुडले, तोही नावे बोल ॥ १० ॥ च्यार सा
 ठी कोस्तुजे, कोडी दुणी जोय ॥ अथ्यवदे वादही, हे
 म हारे सोय ॥ ११ ॥ वपनकोडी दोयसे, युद्ध होवे
 जोड ॥ लालच लान लोनवे, लिउरि लीउ वहोरु ॥
 ॥ १२ ॥ वेर न विच्यारी हीए, चहत मान सनमान ॥
 मन प्राणशु गमे, होमी करतहे आन ॥ १३ ॥ सांब
 कहे मायजी, धरयो ठाफ्यो आण ॥ फेरीउ सार ना
 वही, कठुक जीती जाण ॥ १४ ॥ वित्त चित्त मोकले,
 देता शरु नाही ॥ सर्व साव सावजी, होइ रह्यो जग
 माही ॥ १५ ॥ दान ने दया करे, वालही गोपाळ ॥
 देव सेवा साचवे, मानही जूपाल ॥ १६ ॥ जेर एक
 जोजन, मेह जोजन वार ॥ सर्व लोकमे सुणिए, दान
 सवल सार ॥ १७ ॥ दान देता शरुहि, फिरति सुजस
 आश ॥ पुत्र पोधी वाठना, वाजीको विलास ॥ १८ ॥
 देखी पेखी सुविशेषी, त्याग तेग तास ॥ धर्म नद
 हलधरु, पाइया उल्हास ॥ १९ ॥ कृष्ण साये विन
 ति, करत धरता हेत ॥ साबकु निवाजवी, होत क
 बुक देत ॥ २० ॥ देव विनती करो, कुमरजी केरे
 काज ॥ दायक पायक मोहि स्यो, रिऊहि तो राज ॥
 ॥ २१ ॥ हाथी घोडाकि कबु, नाहिहे प्रवाह ॥ आ
 प कुल किज ते, पामे हे उवाह ॥ २२ ॥ मास ए
 क राज दियो, हलधरादिक आय ॥ काम जानु कु
 मार ए, नमे सकल राय ॥ २३ ॥ निति गडी अ

नीतता, तेणे कीयो दोर ॥ माचियो मना घणो, शि
ल जगनो सोर ॥ २४ ॥ मदन वधु गुणही सींधु, नं
द नद नद ॥ जव विना कुचाले चाले, मोहनि तो
मसद ॥ २५ ॥ एतो सोमी ढालमे, साबको वखा
ण ॥ सूरि गुणसागरु, पुण्यको प्रमाण ॥ २६ ॥

ढुहा ॥ जावुवतीशु हरी कहे, थारो साव कुमार ॥ न
गरी माहे नारीनो, लोपे सीयल अपार ॥ १ ॥
सा जाणे स्वामी सुणो, माहरो साधु शु लोग ॥ वा
लक बोली न जाणहि, किस्यो अन्याइ जोग ॥ २ ॥
कटका माहे डाहरो, उट कहावे जेम ॥ काइ करो
हरी रायजी, लोगा वाह्या एम ॥ ३ ॥ चारु घणो
मुह लागणो, दुवलकनो राय ॥ होवे तो घर तेहनो,
आटा ठिकर थाय ॥ ४ ॥ पेट गणोसा सारीखो,
शकरको सो सोच ॥ किया कुटुवो निर वहे, अवर
सकलहि पोच ॥ ५ ॥ कहे सुणी चित नाषिए, जो
नचि निरखे नयण ॥ नयणेहि नीरख्या पळे, कहेणा
नहि को वेण ॥ ६ ॥ अणजाण्या अण देखीया, कह्यो
पर शीर योक ॥ अणसहता ना शिखव्या, जूठ
कहेठे लोक ॥ ७ ॥

ढाल १०१ मी ॥ सियल सलुणि मयणरेहा सति
रे ॥ ए देशी ॥ साम कहे सुण सुदरीरे जूठ कहे नहि
लोयरे ॥ पचामे परमेसरुरे, पच करे तिम होयरे ॥
सा० ॥ १ ॥ अगुठाथी घुटियारे घुटीथी तो जानुरे ॥

जानुथी कटी जइ अडेरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा०
 ॥ २ ॥ केनि यकी हियडे चडिरे, हियडायी गले जामरे
 परम, महा दुख आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥ सा०
 ॥ ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि न तोढ्या जातरे
 ॥ नाके चढ्यो दुख दु समोरे, लोक तदा विल ल्यतरे ॥
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ वानु नखे जो काकडीरे, बोलावा लुटत
 रे ॥ कुण आगे पूकारीएरे, माता ठोरु कुटतरे ॥ सा०
 ॥ ५ ॥ पीडरीयो परजा तणोरे, राजार्जिनो नामोरे ॥
 आप अन्याय जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥
 सा० ॥ ६ ॥ प्रजुजी तो जाली घणीरे, सा ने पति जे
 एकरे ॥ वालिक वाला बाजलारे, एक सरीखी टेकरे ॥
 सा० ॥ ७ ॥ सुदरीने समजाववारे, साम करे उपायरे
 ॥ पूरवलि मन साजलिरे, घावक जाणे घायरे ॥ सा०
 ॥ ८ ॥ जाववति आहिरणीरे, आपण हरी आहिररे ॥
 दहि वेचणने आवीयारे, खेले जिहा कुवर धीररे ॥ सा०
 ॥ ९ ॥ सामा वरसा सोलनिरे, सामी वरस सो दाखरे
 ॥ सामा रुपे रुअडीरे, देखी करे अर्जीलापरे ॥ सा०
 ॥ १० ॥ मास अहारा लपटारे, सरीखो होइ सजावरे ॥
 उमासे उ रुपसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ॥ ११ ॥
 साब कहे आहिरणीरे, आपण उरहि आवरे ॥ वेचाउ
 महि ताहरोरे, अधीको लाज अपाररे ॥ सा० ॥ १२ ॥
 कत कहे कुवर सुणोरे आगे कोइ न कामरे ॥ लाजे
 धाया वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

लाते मारचो तव डौकरोरे, साहि वाला हाथरे ॥ खा
 चि चाल्यो नितरेरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० ॥
 ॥ १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कही हरी रा
 यरे ॥ जांवुवति प्रगट करीरे, जाजी गयो धरी लाजरे
 ॥ सा० ॥ १५ ॥ हरीणाद्धीसु हरी कहेरे, दिठा सुतनां
 कामरे ॥ माता मयगल मारणोरे, हरी सामीनी अची
 रामरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जे न टले सबधथीरे, अवरं
 केम टलतरे ॥ अजख जखे जे मानविरे, ते क्यु जख
 न जखतरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ हाथ बुरीने लाकरीरे, बु
 टी घमृतो आपरे ॥ आयो परखदामे चलिरे, पुढे श्रीह
 री वापरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ कुवर एशु किजीएरे, प्रनु
 ए खुटी थायरे ॥ वात कहेजे कालनीरे, ए तस मुहमे
 देवायरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ रे रे धीठ शिरोमणीरे, रे रे
 कर्म कुपातरे ॥ करणी कहेणी ताहरीरे, सारखी देखा
 तरे ॥ सा० ॥ २० ॥ देश निकालो कियोरे, जाजे अ
 लगो अपाररे ॥ क्रोधे पूरयो कान्हजी, न करे सोच
 लिगाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥ राजा एहवा चाहीएरे, न्या
 य धर्म प्रतिपालरे ॥ वेटा उपर वाहणीरे, खेरावे नू
 पालरे ॥ सा० ॥ २२ ॥ काम कहे सुण तातजीरे, ए
 मुज वाइलो विररे ॥ कदिए आवे पगे लागवारे, सा
 हसवत सधीररे ॥ सा० ॥ २३ ॥ केशव कोप वशे क
 हेरे, जानु कुमरनी मायरे ॥ वेसाडी जल हाथणीरे,
 लावे तवही अवायरे ॥ सा० ॥ २४ ॥ चमते पाणी पे

सवारे, ताम समे अरदासरे ॥ उखथ आढी तावनरे,
 ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ विडोही तत्र पा
 ननेरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताण्यो त्रुटे महीरे,
 अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी
 जणणी तणारे, जामा वनमा जायरे ॥ विद्याने वले वा
 हलोरे, कन्या रूप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ वारु वेश
 विराजतिरे, जोवनवति नाररे ॥ रूप कला गुण आग
 लिरे, दिसती जाक ऊमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोत
 र सोनी ढालमेरे, साव कुवरशु रोसरे ॥ श्री गुणसा
 गर सूरिजीरे, उसन जरि ए कासरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ जामा आवी वागमे, देखी कन्या रूप ॥
 मोर्हा मनमे माननी, पूठे सकल सरूप ॥ १ ॥ ए वन
 माहे एकली, काइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुदर म
 हा, वलतो उत्तर वाल ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥
 जामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा जणी ॥ तोहि
 जरम न जागोहो ॥ जा० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी,
 ठगने वाट पचास हो ॥ जा० ॥ उ रोकवे शेरडी, उफा
 डे आकाश हो ॥ जा० ॥ २ ॥ उधाडो तनु साधुनो,
 ठग मुलतानी तीर हो ॥ जा० ॥ जालवी सकीए केट
 ला, नाखे विंधी शरीर हो ॥ जा० ॥ ३ ॥ ठगउ दे
 हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ जा० ॥ माही र
 ही फोले घणु, ए जग प्रगढ्यो पाठ हो ॥ जा० ॥ ४ ॥

विठुनो विष पुगडे, अहि विष दाढे जोय हो ॥ जा०
 ॥ ठगनो विष हियने वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥ जा०
 ॥ ५ ॥ ठग मुखे मीठा सही, माहि अधीक कठोर हो
 ॥ जा० ॥ पणितजननो पारीखो, जेइवो पाको बोर हो
 ॥ जा० ॥ ६ ॥ कोटी प्रकारे ठग तणी, न मीटे सहज
 सजाव हो ॥ जा० ॥ आवा जावु उपरे, राता माहि क
 साव हो ॥ जा० ॥ ७ ॥ कुमरी नणे नामा नणी, वारु व
 चन विगाल हो ॥ जा० ॥ हु पुत्री राजा तणी, बाधी ज
 इ मोसाल हो ॥ जा० ॥ ८ ॥ व्याह जोग जाणी करी,
 वाप हमारो आय हो ॥ जा० ॥ बेसारी सुखपालमे,
 लेइ चाल्या माय हो ॥ जा० ॥ ९ ॥ आवी वस्यो ए
 वागमे, सुता सघला लोक हो ॥ जा० ॥ मुऊने नावे
 निंदनी, मामी तणो वियोग हो ॥ जा० ॥ १० ॥ हु
 तव हेठी उतरी, दूर रह्यो सुखपाल हो ॥ जा० ॥ प्रो
 हर पाठे सोवती, गोडी गयो नूपाल हो ॥ जा० ॥ ११ ॥
 जागी जोयु दहदिसे, चाली गयो ते साथ हो ॥ जा०
 ॥ युथ अष्ट निम हरणली, फिरती फिरु अनाथ हो
 ॥ जा० ॥ १२ ॥ जो तु पुत्र सुजानुसु, पुत्री वठे
 व्याह हो ॥ जा० ॥ घर पधरावजे माहरे, आणी अ
 ति उगह हो ॥ जा० ॥ १३ ॥ सा जाखे सुण स्वामी
 नी, उखाणो जगमाहीहो ॥ जा० ॥ मुराना मिठा नही,
 लापशीयायी प्राही हो ॥ जा० ॥ १४ ॥ हरी सुत
 जायो ताहरो, याए मुऊ नरथार हो ॥ जा० ॥ तो तो

सवारे, ताम समे अग्दासरे ॥ उखध आदी तावनेरे,
 ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ विडेही तव पा
 ननेरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताण्यो त्रुटे महीरे,
 अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी
 जणणी तणारे, नामा वनमा जायरे ॥ विद्याने वले वा
 हलोरे, कन्या रुप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ वारु वेश
 विराजतिरे, जोवनवति नाररे ॥ रुप कला गुण आग
 लिरे, दिसती जाक कमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोत
 र सोमी ढालमेरे, साव कुवरशु रोसरे ॥ श्री गुणसा
 गर सूरिजारे, उसन जरि ए कांसरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ नामा आर्वी वागमे, देखी कन्या रुप ॥
 मोर्हा मनमे माननी, पूठे सकल सरुप ॥ १ ॥ ए वन
 माहे एकली, काइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुदर म
 हा, वलतो उत्तर वाल ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥
 नामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा जणी ॥ तोहि
 जरम न जागोहो ॥ जा० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी,
 ठगने वाट पचास हो ॥ जा० ॥ उ रोकवे शेरडी, उफा
 डे आकाश हो ॥ जा० ॥ २ ॥ उधाडो तनु साधुनो,
 ठग मुलतानी तीर हो ॥ जा० ॥ जालवी सकीए केट
 ला, नाखे विंधी शरीर हो ॥ जा० ॥ ३ ॥ ठगउ दे
 हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ जा० ॥ माही र
 ही फोले घणु, ए जग प्रगढ्यो पाठ हो ॥ जा० ॥ ४ ॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥
 कुमर सुजानु जाणीए, खेलण काज वसत ॥ मोरा ला
 ल ॥ साये मित्र मनोहरु, वनमे जाइ रमत ॥ मो० ॥
 ॥ १ ॥ कुमर सुजानु जाणीए ॥ ए आकणी ॥ हिंको
 ले अति हिंचती, गाती गीत सुधग ॥ मो० ॥ नारी
 नीरोपम निरखता, उपज्यो अंग अनग ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ २ ॥ चुह कमाने सधीया, तिखा लोचन
 बाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विधी प्रा
 ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ महियलरुपे माडीयो, मोहनी
 मोटो फद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाई गति
 मतिमद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आवली, ला
 ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुदरी, रागी
 राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरठाणा धरणी प
 छ्यो, मत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाइ घर आणी
 यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥
 कन्या भेली निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥
 जामा कुमर सुजानुनो, व्याह तशी विधी ठाण ॥
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ जाखे कुमरी मूलगी, जामासु आण
 द ॥ मो० ॥ करशु कर कर उपरे, तो वरशु तुज नद ॥ मो०
 ॥ कु० ॥ ८ ॥ वाला वात विशेषथी, जाखे जामा सा
 थ ॥ मो० ॥ मूऊ परण्ये परणी सहु, परणेवि नहीना
 थ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ जामा मान्या बोलमा, स्यो
 बहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी रुही पग पानही, पुरुष

तुठो जाणीए, आपणवे फिरतार हो ॥ जा० ॥ १५ ॥
 वरण विचारयो दूधनो, सचलो धोठो होय हो ॥ जा०
 ॥ आक अने सुरजी तणो, अतर न क्रियो कोयहो
 ॥ जा० ॥ १६ ॥ न करी एह विच्यारणा, नहीं घर
 जोगी जात हो ॥ जा० ॥ मुसो घाल्या पाखम, हस नी
 पखो थात हो ॥ जा० ॥ १७ ॥ सिंह प्रते जवुक कहे,
 कानहयो होइ हो ॥ जा० ॥ केम फिरी खर आवही, ते
 म ए नामा जोइ हो ॥ जा० ॥ १८ ॥ आप चढी वर
 हायणी, आगे साव वेसार हो जा० ॥ लेइ आवी
 निज घेर, माटीपणो अवधार हो ॥ जा० ॥ १९ ॥
 न्हानण धोवण जोजने, आसन शयन विचार हो
 ॥ जा० ॥ ससुखा अति माचवे, स्वार्थीयो ससार हो
 ॥ जा० ॥ २० ॥ समय विच्यारे आपणो, सयण स
 याणा जेह हो ॥ जा० ॥ श्री हरीचद्र नरिद्र ज्यु, मर
 द कहावे तेह हो ॥ जा० ॥ २१ ॥ विमो तेरसोर्मा
 ढालमे, नामा साव कुमार हो ॥ जा० ॥ श्री गुणसा
 गर सूरिजी, करे विनोद अपार हो ॥ जा० ॥ २२ ॥
 दुहा ॥ श्रीवसत ऋतुराजीयो, आयो करीय मडाण
 ॥ कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मो
 रा आवा अति जला, केसु कुसम सम वान ॥ मधु
 कर गुजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलि
 याचलना वायरा, वाजे अति सुखकार ॥ दुखियाने
 दुखदायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥
 कुमर सुजानु जाणीए, खेलण काज वसत ॥ मोरा ला
 ल ॥ साये मित्र मनोहरु, वनमे जाइ रमत ॥ मो० ॥
 ॥ १ ॥ कुमर सुजानु जाणीए ॥ ए आकणी ॥ हिंको
 ले अति हिंचती, गाती गीत सुधग ॥ मो० ॥ नारी
 नीरोपम निरखता, उपज्यो अग छनग ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ २ ॥ चुह कमाने सधीया, तिखा लोचन
 बाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विधी प्रा
 ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ सहियलरुपे माडीयो, मोहनी
 मोटो फद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाई गति
 मतिमद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आवली, ला
 ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुदरी, रागी
 राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरठाणो धरणी प
 छ्यो, मत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाइ धर आणी
 यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥
 कन्या झेली निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥
 जामा कुमर सुजानुनो, व्याह तशी विधी ठाण ॥
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ नाखे कुमरी मूलगी, जामासु आण
 द ॥ मो० ॥ करशु कर कर उपरे, तो वरशु तुज नद ॥ मो०
 ॥ कु० ॥ ८ ॥ वाला वात विशेषथी, नाखे जामा सा
 थ ॥ मो० ॥ मूऊ परण्ये परणी सहु, परणेवि नहीना
 य ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ जामा मान्या बोलना, स्यो
 बहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी कही पग पानही, पुरुष

कह्यो शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी मांही
 साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वामा करशु दा
 वीयो, देखे सघळो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ क
 न्या निनाणु तणी, दक्षण करशु खाण ॥ मो० ॥ साही
 ने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांवजी, शुकुटी चो
 हडी कपाल ॥ मो० ॥ विहाव्यो कुवर खरो, नागी गयो
 ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सासजरयो आयो
 सहि, जामा जननी पास ॥ मो० ॥ कठ लगाई पूर्ण
 यो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुक
 नेमारे मायजी, जाइ साव सनूर ॥ मो० ॥ साव कीहारे
 डरपणो, धावी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥
 पगे लागी उजो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥
 अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहा तिहा दुखदा
 य ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेढीयो, जामा नूरक खाय
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ साव कहे तें आणीयो, स
 कल लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, मा
 ता जूट मतजाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ जणे सुजामा
 जामनी, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया
 कामनी, सोचनको सताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग
 माता ठग तातजी, जाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप
 ठगारो, जगतनो हु कीम पहुचु तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमागद पुत्री जली सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥
 एव साव कुमर घरे रमणी शत अजिराम ॥ मो०
 कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजतातनां, प्रणमी जाखे
 वात ॥ मो० ॥ कामकला सुविचारता, इरी हासो न स
 मात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुजानुने, प
 रणावी सुखकार ॥ मो० ॥ मनमान्या सुख जोगवे, साव
 सुजानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ साव कहे वसुदे
 वसु, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थे परदेशा आयकी,
 पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २४ ॥ सब विध सु
 दर सुदरी, घर बेठाही देख ॥ मो० ॥ तात प्रसाद तु
 ह्यारडे, मे पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु० ॥ २५ ॥ बेटा
 जी तुह्य तो वना, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम
 सम अवर न उपनो, ह्यारा वश मजार ॥ मो० ॥ कु०
 ॥ २६ ॥ तिजेत्तर सोमी ढालमें, जाबुवति उहाह ॥ मो०
 ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरजी व्याह
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन
 एह ॥ विदरजी कुमरी जली, रुप कला गुण रेह ॥
 ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आश ॥
 सहि करी जाणु सखी, पूरो पुण्य प्रकाश ॥ २ ॥

ढाल १०४ मी ॥ आज जलो दिन माहरो ॥ ए देशी
 ॥ विदरजीसु मन वरयो, जूया जलेरो जाव हो ला
 ल ॥ बहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

कह्यो शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी माही
 साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वामा करशु दा
 वीयो, देसे सघळो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ क
 न्या निनाणु तणी, दक्षण करशु खाण ॥ मो० ॥ साही
 ने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांवजी, धुकुटी चो
 हडी कपाल ॥ मो० ॥ विहाव्यो कुवर खरो, नाडी गयो
 ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सासजरयो आयो
 सहि, नामा जननी पास ॥ मो० ॥ कंठ लगाई पूठी
 यो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुऊ
 ने मारे मायजी, जाइ साव सनूर ॥ मो० ॥ साव कीहारे
 डरपणो, आवी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥
 पगे लागी उजो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥
 अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहा तिहा दुखदा
 थ ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेडीयो, नामा नूरक खाय
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ सांव कहे तें आणीयो, स
 कळ लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, मा
 ता जूट मतनाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ नणे सुनामा
 नामनो, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया
 कामनो, सोचनको सताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग
 माता ठग तातजी, जाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप
 ठगारो, जगतनो हु कीम पडुचु तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमागद पुत्री जली सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥
 एव साव कुमर घरे रमणी शत अनिराम ॥ मो०
 कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजतातना, प्रणमी जाखे
 वात ॥ मो० ॥ कामकला सुविचारता, हरी हांसो न स
 मात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुजानुने, प
 रणावी सुखकार ॥ मो० ॥ मनमान्या सुख जोगवे, साव
 सुजानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ सांव कहे वसुदे
 वसु, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थे परदेशा आथमी,
 पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २४ ॥ सब विध सु
 दर सुदरी, घर बेठाही देख ॥ मो० ॥ तात प्रसाद तु
 ह्यारडे, मे पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु० ॥ २५ ॥ बेटा
 जी तुह्य तो वना, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम
 सम अवर न उपनो, ह्यारा वश मजार ॥ मो० ॥ कु०
 ॥ २६ ॥ तिफेत्तर सोमी ढालमें, जाबुवति उच्चाह ॥ मो०
 ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरजी व्याह
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन
 एह ॥ विदरजी कुमरी जली, रुप कला गुण रेह ॥
 ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आग ॥
 सहि करी जाणु सखी, पूरो पुण्य प्रकाश ॥ २ ॥

ढाल १०४ मी ॥ आज जलो दिन माहरो ॥ ए देशी
 ॥ विदरजीसु मन वरयो, जूया जलेरो जाव हो ला
 ल ॥ बहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ द्रुत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया
 राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुऊ पुत्रने, धर आ
 शीप प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुकमीयो रीसे
 रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अ
 मरख अति घणो, मारो ठे हरी दार हो ॥ ला० ॥
 वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, वहिन कुमर घटि
 वस हो ॥ ला० ॥ जो वर वर लहेशे नहीं, अण पर
 एया परसस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी घरथी च
 डालने, घरे दिधा अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घा
 ठा जेहने, उपावे अदेह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥
 द्रुत तणे मुख साजली, ए अविचारी वात हो ॥ ला०
 पिठतावो करती घणो, दुचिंती रुखमणी मात हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सा
 व कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चडालनो, कुमनपर
 आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सो
 हतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रखाव उ
 पागसु, वाजे मादल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥
 सुर गायननी उपमा, जेद सगीतनो जाण हो ॥ ला०
 ॥ स्वर मडलसु साचवे, राग तणा मडाण हो ॥ ला०
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसु, मुर्बना एकवि
 स हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसु, जाणपणाना इ
 श हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहा गुण नवि
 हुवे, सुगुण तिहा नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

गुण एकठा, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ॥ ११ ॥ मोह्या राणा राजीया, मोह्या बाल गोपाल
 हो ॥ ला० ॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु
 विलास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर
 मानवी, थनी आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा
 कारणे, मोहि रह्या धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ॥ १३ ॥ नादे मोह्या हरणला, प्राण तजे ततकाल हो
 ॥ ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, सहिरो लघु लाल हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ १४ ॥ नादे स्वर ढाड्यो, स्वाग विरुप
 धरत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, येइ थेइ थेइ
 करत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलन राचियो,
 ए जग माहि अचन हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी
 आगले, कीधो नाटारन हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥
 नादे ब्रह्मा चनमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥
 वेदि नाख्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला० ॥ वि०
 ॥ १७ ॥ वेद थकी ए पचमो, नाद कह्यो उपवेद हो
 ॥ ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु
 खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण ऋदय हारी ख
 रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १९ ॥ ना
 री जननो बाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥
 चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अनिराम हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरनी नृप कुवरी, वेठी राजा

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ द्रुत अनोपम मोरुख्यो, रुकमीया
 राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुक पुत्रने, धुर आ
 शीप प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुकमीयो रीसे
 रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अ
 भरख अति घणो, मारो ठे हरी कार हो ॥ ला० ॥
 वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, वहिन कुमर घटि
 वस हो ॥ ला० ॥ जो वर वर लहेशे नहीं, अण पर
 एया परसस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी घरयी च
 डालने, घरे दिधा अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घा
 ठा जेहने, उपावे अदोह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥
 द्रुत तणे मुख साजली, ए अविचारी वात हो ॥ ला०
 पिठतावो करती घणो, दुचिती रुखमणी मात हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सा
 व कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चडालनो, कुमनपर
 आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सो
 हतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रखाव उ
 पांगसु, वाजे मादल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥
 सुर गायननी उपमा, जेद संगीतनो जाण हो ॥ ला०
 ॥ स्वर मडलसु साचवे, राग तणा मडाण हो ॥ ला०
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसु, मुर्वना एकवि
 स हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसु, जाणपणाना इ
 श हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहा गुण नवि
 हुवे, सुगुण तिहा नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

गुण एकठा, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ॥ ११ ॥ मोह्या राणा राजीया, मोह्या बाल गोपाल
 हो ॥ ला० ॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु
 विलास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर
 मानवी, थनी आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा
 कारणे, मोहि रह्या धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ॥ १३ ॥ नादे मोह्या हरणाला, प्राण तजे ततकाल हो
 ॥ ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, सहिरो लघु लाल हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ १४ ॥ नादे स्वर ढाड्यो, स्वाग विरुप
 धरत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, येइ थेइ थेइ
 करत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलन राचियो,
 ए जग माहि अचन हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी
 आगले, कीधो नाटारन हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥
 नादे ब्रह्मा चनमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥
 वेदि नाख्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ॥ १७ ॥ वेद थकी ए पचमो, नाद कह्यो उपवेद हो
 ॥ ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु
 खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण ऋदय हारी ख
 रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १९ ॥ ना
 री जननो बाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥
 चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अनिराम हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरजी नृप कुवरी, वेठी राजा

गोद हो ॥ ला० ॥ गवराव्यां ते डुवडा, मोहि गीत वि
 नोद हो ॥ ला० ॥ धि० ॥ २१ ॥ सुदरताइ देहिनी, सु
 घडाइ अर्धाकार हो ॥ ला० ॥ जीम जीम जोवे सन
 मुखे, तीम तीम उपजे प्यार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २२ ॥
 किहा यकी तुह्य आविया, पूठे राज कुमार हो ॥ ल्य०
 ॥ स्वर्ग थकी पाव धारीया, माणस लोक मजार हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ २३ ॥ देखी नगरी झारिका, इहा आ
 या जोइ हो ॥ ला० ॥ मदन कुमार सोजागीयो, पूठे
 कुमरी सोइ हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २४ ॥ साव कहे सुण
 सुदरी, मदन महा दातार हो ॥ लॉ० ॥ जोग पुरदर
 सुदरु, आप कियो किरतार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २५ ॥
 माननीया मन मोहवा, मोहन सुरति आप हो ॥ ला०
 ॥ गीत घणा रति पती तणा, गावे करी आलाप हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ २६ ॥ अवर अनेरा मानवी, पामे
 उपम जास हो ॥ ला० ॥ सोतो प्रनु आपण अठे,
 स्यु वरणिण तास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २७ ॥ अय
 रावतिनी उपमा, अवर गजा देवाय हो ॥ ला० ॥ पि
 ण अयरावति हाथीयो, कहे किण सम कहेवाय हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ २८ ॥ इद्र तणि उपमा दिया, अवर न
 राहो धिक्कार हो ॥ ला० ॥ पिण तो उपमा इद्रने, अवरा
 ऐ अविच्यार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २९ ॥ इस प्रनु सर्व
 जगतको, इसो इश नही होइ हो ॥ ला० ॥ राय मदन
 राया तणो, पिण तसराय न कोय हो ॥ ला० ॥ वि० ॥

॥ ३० ॥ प्रजुताइ तो इद्रनी, धनद देवको कोस हो
 ॥ ला० ॥ तेज जलण को जागतो, काकतणो तो रोस
 हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सत्व रामके राज तो,
 हरीनी थितीनो थोज हो ॥ ला० ॥ सुरथी नर थकी
 खग थकी, पामी अधीकी शोज हो ॥ ला० ॥ वि०
 ॥ ३२ ॥ रुडामे रुडो घणो, गुरुयोने गुणवत हो
 ला० ॥ पुण्ये प्रापती पामीए, काम सरीखो कत हो
 ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३३ ॥ कुमरी हुइ अनुरागणी, सु
 जस सुणत प्रमाण हो ॥ ला० ॥ परणु कुमर कामने,
 नेहीतर ठेडुं प्राण हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३४ ॥ एत
 ल ठुव्यो हाथीयो, किनही वसना वत हो ॥ ला० ॥ राय
 कहे गज वश करे, ते वगीत पावत हो ॥ ला० ॥
 वि० ॥ ३५ ॥ नाद बले वश आणीयो, ते मोहोटो गजरा
 ज हो ॥ ला० ॥ मागण हारो मागीयो, सारु वगीत काज
 हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३६ ॥ बाप प्रसादे ठे सहु, रोटा पोवण
 हार हो ॥ ला० ॥ नवीठे तेह थकी दिए, ए तु कारज
 सार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३७ ॥ दे ए विदरजी कुम
 री, कन्यादान प्रधान हो ॥ ला० ॥ मुऊसो वर न
 वी पामसो, तुव्यो श्री किरतार हो ॥ ला० ॥ वि०
 ॥ ३८ ॥ खिज्यो राजा रुकमीयो, रे रे कहि दे गाल
 हो ॥ ला० ॥ जगी जगी ठो सही, बोलो बोल सजा
 ल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ३९ ॥ किधा नगरी बाहीरा,
 ग्राम अपावन थाय हो ॥ ला० ॥ मामो मारेवो नहि,

मारया नाय रीसाय हो ॥ला०वि०॥ ४० ॥ चत्रोत्तर
सोमी ढालमे, वैदरजीनी प्रेम हो ॥ला० ॥ गुणसागर
परजुनसु, नग जडाणो हेम हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मदिर चली, निशजर सोवे सोय
॥ निद गइ प्रजु निरखता, मन रलीयायत होय ॥ १ ॥
लेख लेखी सुविशेषयी, दिधो कुमरे जाम ॥ रुखम
णी नामे वाचता, पामी अचरिज ताम ॥ २ ॥ पूठे प
दमनी प्रेमशु, देव प्रकाशो नाम ॥ थारा मननो जा
वतो, हुठु कुमर काम ॥ ३ ॥

ढाल १०५ मी ॥ हसलानी देशी ॥ जाग्य बढो
प्रजु पाइयो ॥ एटेर ॥ ए वरहे श्री काम कुमारके, पु
रदरहे केरो अवतारके ॥ हुठु हे वरुवखती नारके, प्र
सशाहे लेशु ससारके ॥ जा० ॥ १ ॥ जे मन मा
ने आपणो, करवोहे सोइ जरतारके ॥ नारी जमारो
नाहशु, जरवोहे ए जग व्यवहारके ॥ जा० ॥ २ ॥ पि
तावर पहिरयो जलो, ककणहे बाध्यो वर हाथके ॥ वे
छा साधी वेगशु, कुवर रहे कुवरीने साथके ॥ जा०
॥ ३ ॥ आरण कारण साचवी, तव किधो हे विवाह
उल्हासके ॥ रात बशी उठी गयो, आयो हे बधवनी
पासके ॥ जा० ॥ ४ ॥ पश्चिम राते सोवती, कुम
री हे निद्रावश थायके ॥ दिन उग्या आवे सही, दा
तण हे लेइने धायके ॥ जा० ॥ ५ ॥ दिठी कुमरी
निदमें, ककण हे बाध्यो सुवीशेषके ॥ कोरी सामी पहे

रणे, ए नीको हे परणेतर वेसके ॥ जा० ॥ ६ ॥ सां
 स नरी पाठी वली, लावी हे राणीने रायके ॥ परत
 द्द चरीत्र देखावता, आपणपेहे उर्शींगण थायके ॥
 जा० ॥ ७ ॥ रायनणे राणी सुणो, ए कारीज हे विपरी
 त जोयके ॥ कुलने लग्न लावीयो, ए बेटी हे नही वे
 रण होयके ॥ जा० ॥ ८ ॥ जलहर जग जीवाडणो, जा
 इ हे विद्युत गुण खाणके ॥ वसदेव तस माहीं ए, उ
 पजी हे विषवेली आणके ॥ जा० ॥ ९ ॥ हु चूक्यो वा
 चा सही, पापणी हे पुत्रीने हेतके ॥ हिवे उरण थाय
 सु, एहने हो डुवमाने देतके ॥ जा० ॥ १० ॥ फाटो
 दुध न राखणो, विणठो हे माणसनो त्यागके ॥ करवो
 ठे सुण सुदरी, सगपण हे करवो नहि लागके ॥ जा०
 ॥ ११ ॥ अगुठो सापे रुस्यो, ठेदे हे शाणा नर जेह
 के ॥ रास्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी ठेहके ॥ जा०
 ॥ १२ ॥ राजा तेनी मागणे, दिधी हे कुमरी तेहि वा
 रके ॥ पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोच ली
 गार के ॥ जा० ॥ १३ ॥ खरी ए आपी रीस वसे, जे
 शीर हे आवत कलकके ॥ सतवति सीता सती, रघु
 पती हे सा तजीय निशकके ॥ जा० ॥ १४ ॥ डुव क
 हे हु स्यु करु, नरवि हे हमहिने नेठके ॥ राजसुता सु
 क मालिका, करवी हे एहनी अती वेठके ॥ जा० ॥
 ॥ १५ ॥ लोकोमे अवहेलणा, मनमे हे तस हरख अपा
 रके ॥ मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाने ससारके

॥ जा० ॥ १६ ॥ सात्र कहे सुण जाइजी, आपणपेहे दे
 खावा आजके ॥ देव चुनन समरावियो, निंदा हे सारे
 सब काजके ॥ जा० ॥ १७ ॥ धाँ धाँ मांदल वाजहि,
 नाचे हे तिहा पात्र अनेकके ॥ मगल गावे गोरडी, वरते
 हे विवाह तरा अनेकके ॥ जा० ॥ १८ ॥ रोस गयो राजा
 तणो, किजे हे पठतावो एम के ॥ ढाढीने गाढी करी,
 दिजे हे विदरनी केमके ॥ जा० ॥ १९ ॥ आत तपे
 अती आकरी, गाढो हे मनमाही कुचयनके ॥ अग्नी
 तणा सजोगथी, चाठी हे जीम चुत्रे नयनके ॥ जा०
 ॥ २० ॥ मारीता गोरु तणा, अवगुण हे सासेवा प्रा
 हिके ॥ कुमारीका सुत जाइयो, कुति हे नृप काढी नाहि
 के ॥ जा० ॥ २१ ॥ काठ जल बोले नहि, आपण हे
 उपायो जाणके ॥ वरुवानल जल वालणो, सायर हो
 न उल्हावे प्राणके ॥ जा० ॥ २२ ॥ क्रोध वसे मुऊ आ
 धलो, कीधो हे कार्य विपरीतके ॥ न कुच वातने कारणे,
 तोमी हे पुत्रि स्यु प्रीतके ॥ जा० ॥ २३ ॥ सोइ दान
 श्रवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके ॥ खबर क
 री जणाविया, एतो कोइ हे हरी सुत कहिवाय के ॥
 जा० ॥ २४ ॥ बूटी चाले आवियो, मिलिया हे जाणे
 जा धायके ॥ हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कठ ल
 गायके ॥ जा० ॥ २५ ॥ काम साब कुमर जला, आ
 यया हे निज घर उग्राह के ॥ आनद रग वधामणा,
 सासु हे मन उपज्यो उग्राहके ॥ जा० ॥ २६ ॥ दिधो

अधीको दायजो, दिधां हो साथे परीवारके ॥ देइ द
 दामा जीतना, चाल्यो हे श्री काम तिणवारके ॥ जा०
 ॥ २७ ॥ आव्या नगरी द्वारिका, हररुयो हे श्री कृष्ण
 नरेशके ॥ हरखी माता रुखमणी, हररुयो हे परीवार
 अशेषके ॥ जा० ॥ २८ ॥ जे जे चिंत्या बोलना, ते तेहे
 चढीया परीमाणके ॥ बहुअर सासुप्रीतडी, माने हे सु
 ख मेरु समानके ॥ जा० ॥ २९ ॥ सावअने परजुनजी,
 तनसु हे जुदा मन एकके ॥ जोडी नल कुबेर तणी,
 राखे हे हठ न तजे टेकके ॥ जा० ॥ ३० ॥ अनिरुद्धादिक
 कामने, नदन हे गुणवता सोइके ॥ तस सरुया सुत
 सवने, साखा हे विस्तरती जायके ॥ जा० ॥ ३१ ॥ पच
 मोत्तर सोमी ढालमे, वैदरजी हे केरो विवाहके ॥ श्री गुण
 सागर सूरिजी, लिजे हे शुज कर्मा लाहके ॥ जा० ॥ ३२ ॥
 चौपइ ॥ खड खड रसठे नव नवा, सुणता मीठा से
 लमीरस जेवा ॥ श्री हरीवश चरित्र जय जयो, पचम
 खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रवधे हरी
 वश विस्तार नामा पाचमो खड समाप्त ॥

॥ अथश्री ढालसागर प्रवध हरीवस वर्णन ॥

॥ ठठो खड प्रारज ॥

दुहा ॥ गुण पणविसे पूरीया, सुदरने सुकुमाल ॥
 एहवा उपाध्याय तणां, प्रणमी चरण त्रिकाल ॥ १ ॥
 वर ठठा अधीकारनो, विस्तरिये विस्तार ॥ पचालि

प्रगाटि खगी, सती गिरोमणी सार ॥ २ ॥ ठठा झा
 ता अग ठे, तिहा ठे बहु विस्तार ॥ नारयो वीर नि
 एदजी, गणधर सजा मऊार ॥ ३ ॥ नागसीरी हुति
 ब्राह्मणी, कडवो तुवो दिध ॥ मास खमणने पारणो, मु
 निवर हल्या लीध ॥ ४ ॥ करता करमज सोहिला, जो
 गवता जजाल ॥ नागसीरी जीम मति करो, फोगट
 पातिक जाल ॥ ५ ॥ नमती नूर नवतरे, चपा नगरी
 तेह ॥ नद्रा उरे उपनी, सागरदत्तने गेह ॥ ६ ॥

ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥
 ए देशी ॥ जीहो नरकादिक दुख जोगवि ॥ लाला० ॥
 परवश कर कर रीव ॥ जीहो नद्रा घर आवी अवतरयो
 ॥ ला० ॥ नागसीरीनो जीव ॥ १ ॥ चतुर नर जो जो
 कर्म विपाक ॥ ए आरुणी ॥ जीहो करम करे सो रा
 क ॥ च० ॥ १ ॥ जीहो अनुक्रमे जाइ दारीका ॥ ला०
 ॥ सुंदर रुप रसाल ॥ जीहो नणी गुणी चोसट कला
 ॥ ला० ॥ चाले राज मराल ॥ च० ॥ जो० ॥ २ ॥ जी
 हो वेपारी विजो वसे ॥ ला० ॥ तिहा वली जिणदत्त
 शेठ, जिहो धनपती सघलावे घणा ॥ ला० ॥ सघला
 जेहने हेठ ॥ च० ॥ जो० ॥ ३ ॥ जीहो तस घर घर
 णी नली ॥ ला० ॥ सागर नामे पुत्त, जीहो रुपवत स
 हुने गमे ॥ ला० ॥ राखे घरनो सुत ॥ च० ॥ जो० ॥
 ॥ ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फिरे ॥ ला० ॥ नगर
 कुतुहल काज, जीहो रमलीकरे सुकमालीका ॥ ला० ॥

घर उवर कुल लाज ॥ च० ॥ जो० ॥ ५ ॥ जीहो सा
 गर रुपे मोहीयो ॥ ला० ॥ घर आव्यो दिलगीर, जी
 हो मातपिता पूढे तिहा ॥ ला० ॥ नदन कोइ अत्रि
 र ॥ च० ॥ जो० ॥ ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तुमे साजलो
 ॥ ला० ॥ जो मुऊ वागो खेम, जीहो सागरदत्तनी न
 दर्ना ॥ ला० ॥ परणावो मुऊ प्रेम ॥ च० ॥ जो० ॥ ७ ॥
 जीहो वात सुणी शेठ 'हरखीयो ॥ ला० ॥ साजन ली
 धा साथ, जीहो सागरदत्त घरे आवीयो ॥ ला० ॥ वे
 उ मिल्या देइ हाथ ॥ च० ॥ जो० ॥ ८ ॥ जीहो शेठ
 कहे किण कारणे ॥ ला० ॥ आया मुऊ घरवार, जीहो
 तुऊ पुत्री मुऊ पुत्रने ॥ ला० ॥ दिजे एह विचार ॥
 च० ॥ जो० ॥ ९ ॥ जीहो शेठ कहे मुऊ अगजा ॥ ला० ॥
 जिवन प्राण समान, जिहो गेह जमाइ जो रहे ॥ ला०
 ॥ तो आवो करी जान ॥ च० ॥ जो० ॥ १० ॥ जीहो
 इम साजली विलखो थयो ॥ ला० ॥ शेठ गयो निज
 ठाम, जीहो सागर पूढे वापने ॥ ला० ॥ वात कही ति
 णे ताम ॥ च० ॥ जो० ॥ ११ ॥ जीहो सागर आदर
 करी कहे ॥ ला० ॥ जीवन प्राण समान, जीहो गेह
 जमाइ जो रह्यु ॥ ला० ॥ वठित जोग रसाल ॥ च० ॥
 जो० ॥ १२ ॥ जीहो जिनदत्त सागरने कहे ॥ ला० ॥
 चिता मत करो चित्त, जीहो जान सर्जी तिहा आवीया
 ॥ ला० ॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० ॥ जो० ॥ १३ ॥
 जीहो हथमेलो सागर अहे ॥ ला० ॥ शेठ सुतानो दा

थ, जीहो जोजर सरीयो आकरो ॥ ला० ॥ चिते न
 जुड्यो साय ॥ च० ॥ जो० ॥ १४ ॥ जीहो अनुक्रमे
 परण्यो प्रेमशु ॥ ला० ॥ सागर करत विचार, जीहो
 नामे ए सुकुमालीका ॥ ला० ॥ परणामे अशीधार ॥
 च० ॥ जो० ॥ १५ ॥ जीहो साऊ समे एक मेहेलमा ॥
 ला० ॥ सुता स्त्री नरतार, जीहो अग लगावे अगसुं
 ॥ ला० ॥ जेह विषय अगार ॥ च० ॥ जो० ॥ १६ ॥
 जीहो कर्मनीकाचीत जेहने ॥ ला० ॥ ते केम पामे जो
 ग, जीहो उठोत्तरसोढाले गुणसागर कहे ॥ ला० ॥
 तोही न समजे लोग ॥ च० ॥ जो० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित्त वि
 च्यार ॥ धर्म करो निज हितनणी, जिम पामो नवपार ॥
 ॥१॥ मन नग देखी वालम तणो, चमकी नारी तेवार
 ॥ असमजस ए स्यु करे, कोइक खरो विचार ॥ २ ॥

ढाल १०७ मी ॥ हींडोला खाटे त्रण कडा ॥ ए दे
 शी ॥ रथ असवारी समारथी ॥ साहीव मोरा ॥ कि
 धा दिधा दान हो ॥ सागरदत्त ग्रह उतरया ॥ सा० ॥
 हररुया सहु साजन हो ॥ १ ॥ कर्म अजब गति, बा
 धो विविध मति ॥ उदय आवे अति आकरा ॥ सा०
 ॥ कर्म करे सो होय हो ॥ ए आकणी ॥ सागर बली
 सुकमालिका ॥ सा० ॥ बेठा जइ एकातहो ॥ पिण च
 लुराइ नीज नाहनी ॥ सा० ॥ चचल चित्त नीरखंत
 हो ॥ क० ॥ २ ॥ रग हतो जे परणता ॥ सा० ॥ ते

रग नहि खेलत हो ॥ ए रगमे ते रगमे ॥ सा० ॥ अ
 तर अनत अनत हो ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रतिवता गुण
 राखवा ॥ सा० ॥ आवी करे मनोहार हो ॥ अग फर
 स अति आकरो ॥ सा० ॥ केम सहे जरयार हो ॥
 ॥ क० ॥ ४ ॥ जीम अहि ठडे काचली ॥ सा० ॥
 उठ्यो नारी उवेख हो, रे प्रिउ पूठे प्रेमदा ॥ सा० ॥
 उठोगे कुण विशेष हो ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे पिउ देह
 चिंता नणी ॥ सा० ॥ जाइसग्रह अनुखग हो, नारी
 पिण जारी नरी ॥ सा० ॥ जाणी कपट थइ सग हो ॥
 ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रिउ वारे पिण नवी रहे ॥ सा० ॥ नव
 लिंगत कोइ नेह हो, सागरनो दाव फाव्यो नही
 ॥ सा० ॥ आव्यो करी सुची देह हो ॥ क० ॥ ७ ॥ ठ
 यल शक्यो नही ठेतरी ॥ सा० ॥ नेह गहेली नार हो,
 जोरे कर ग्रही कतनो ॥ मा० ॥ आण्यो गेह मजार
 हो ॥ क० ॥ ८ ॥ सेजे बेसारयो हेजथी ॥ सा० ॥ मां
 नी घणी मनुहार हो, खिण खिणमे इम किम करो
 ॥ सा० ॥ कहोने प्राण आधार हो ॥ क० ॥ ९ ॥ मां
 न्यो प्रथम समागमे ॥ सा० ॥ कपट नीहेजा कत हो,
 किम रडशे इणे लक्षणे ॥ सा० ॥ प्रिती रिती मतीवत
 हो ॥ क० ॥ १० ॥ प्रथमज कलवमें मद्धिका ॥ सा० ॥
 स्यो तेह माही स्वाद हो, स्वामी अबला उपरे
 ॥ सा० ॥ एवढो स्यो उनमाद हो ॥ क० ॥ ११ ॥
 पहेली रामतमे प्रनु ॥ सा० ॥ काढी वेठा वेस हो,

आगन्त कीम निस्त्राहस्यो ॥ सा० ॥ मुकुर्या एह किं
 प हो ॥ क० ॥ १२ ॥ मर्हाल कर्हाल कारी इसा
 ॥ सा० ॥ टर्हालनि करण हार हो, तांपिण मन माने
 नहीं ॥ सा० ॥ अहो यौवन शिणगारहो ॥ क० ॥
 ॥१३॥ हु तुम पगनी पानही ॥ सा० ॥ तुमे मुक शीरना
 मोरु हो, गोद बिठाइ पाए पडु ॥ सा० ॥ किम रह्या मु
 ह मचकोड हो ॥ क० ॥ १४ ॥ तुम सुमरे नवी दु
 हव्या ॥ सा० ॥ लहेणे देणे लिगार हो, लालच हुवे को
 इ वातनी ॥ सा० ॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥
 ॥ क० ॥ १५ ॥ होवे जमाइ लाडको ॥ सा० ॥ जिमरु
 शे तिम रग हो, पिण विण स्वार्थ रुसणु ॥ सा० ॥ ते
 तो वालीक ढग हो ॥ क० ॥ १६ ॥ इम कही खीण
 विसमी ॥ सा० ॥ चतुरानन चीत चाव हो, निद्रावश
 हुइजीके ॥ सा० ॥ सागर लीधो दाव हो ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ वार उघाडी नाशीगयो ॥ सा० ॥ सुती मु
 की नार हो, एहवी में जाणी नहीं ॥ सा० ॥ धीग एह
 नो अवतार हो ॥ क० ॥ १८ ॥ सतोत्तर सोमी ढालमे
 ॥ सा० ॥ कीजे क्रोड विशेष हो, गुणसागर ए नवी
 मीटे ॥ सा० ॥ जे विधी लिखीया लेख हो ॥ क० ॥ १९ ॥
 दुहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती नवि देखे पा
 स ॥ गद गद कठ रुदन करे, नाह कीहा गयो नाश
 ॥ १ ॥ जारी लेइ दाशी तिहा, आवे मनने रग ॥
 विलखी शेठ सुता घणी, दाशी देखी विरग ॥ २ ॥

दाशी चाखे स्वामिनी, आमण दुमणी कांड ॥ पहीले
 दिन खटपट किशी, गुण अवगुण न जणाइ ॥ ३ ॥
 सुती गोडीने गयो, सागरदत्त घर आप ॥ दाशी शे
 ठाणीने कहे, एह जमाइ पाप ॥ ४ ॥ सागरदत्त री
 से नरयो, जीनदत्तने घर जाय ॥ उलजा दे शेठने,
 निज अगज तुम नाय ॥ ५ ॥ तेडी सुतने हडकीयो,
 तें कीयो ए अकाज ॥ शेठ सुता परणी करी, गोडी
 कीम निजलाज ॥ ६ ॥ पुत्र कहे सुण तातजी, जाउ
 नही तस पास ॥ जोगी जगम व्रत ग्रहु, मत कर
 अवर विखास ॥ ७ ॥ शेठ सुणी ए वातडी, गोडी आ
 पण कान ॥ आवी वेटीने कहे, पूर्व करम नीदान ॥ ८ ॥

ढाल १०८ मी ॥ मुनिवर दूढणा ॥ ए देशी ॥ अ
 न्य दिवस घरनो धणीरे हा, सागरदत्त सुजाण ॥ क
 र्म विटवणा ॥ उचो वइठो महीलमारे हा, देखे नग
 र मनाण ॥ क० ॥ १ ॥ नूखे चागो दुवलारे हा, शे
 ठे दीठो रक ॥ क० ॥ हाये चागो ठिकरोरे हा, मागे
 चीक नीशक ॥ क० ॥ २ ॥ निण निणाट माखी क
 रेरे हा, जे लाजे ते खाय ॥ क० ॥ फाटा त्रुटा लुग
 मारे हा, केने नावे दाय ॥ क० ॥ ३ ॥ शेठे तेडावी
 तेहनेरे हा, दीधु आदरमान ॥ क० ॥ मोदक दीधां
 मोकलारे हा, उपर जनु धान ॥ क० ॥ ४ ॥ नाइ तेडी
 मरदन कीयारे हा, स्नानकराव्यो तास ॥ क० ॥ आ
 नरण पहीराव्या नलारे हा, तन हुवो तेज प्रकाश

॥ क० ॥ ५ ॥ गेठे आडवर करीरे हा परणावी नि
 ज धीय ॥ क० ॥ सखरा वाघा घर दियारे हा, सुख
 नोगवे चिरजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हररूपो जीखारी घ
 पुरे हा, जाग्यो जाग अजग ॥ क० ॥ कीहा शेठ घ
 र पामोयोरे हा, जीहा सुख नवरंग ॥ क० ॥ ७ ॥
 मीठा नोजन जिमवारे हा, सासु सुसरा मान ॥ क० ॥
 शेठ सुता सुकमालीकारे हा, लाधु रूप निधान ॥ क०
 ॥ ८ ॥ रात समे वेहु जणारे हा, सुवा मदीर जाय ॥
 क० ॥ जिण वेला कर फरशीउरे हा, अगन समो दु
 खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो दुमक तिहा यकीरे हा,
 लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप कांचली जीम त
 जीरे हा, टलीय अलाय वलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
 ठाणी नीज नदनीरे हा, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
 माता पूवे शु थयोरे हा, रुदन करे रुसकाय ॥ क० ॥
 ॥ ११ ॥ जननी नाखे सुण सुतारे हा, मत मन आ
 णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हा,
 हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी नजी
 धीरमारे हा, घरवेठी दे दान ॥ क० ॥ अतराय मीट
 शेसही रेहा, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
 शेठ सुणी आवी कहेरे हा, बेटी मतकर अदोह ॥ क० ॥
 पूर्व कर्म उदय थकीरे हा, पतीसु थाए वीगेह ॥
 क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हा, जाचक
 आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमाग्यो दीएरे हा, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध
 वीरे हा, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वर्गीकरण विधी
 पूठतारे हा, बोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मत्र
 तत्रने जत्रडारे हा, औषध मूली तेम ॥ क० ॥ कामण
 मोहण जिनमतिरे हा, करण करावण नेम ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरोरे हा, करती तप उ
 पवास ॥ क० ॥ मारगथी वाहिर पडीरे हा, सेवति व
 नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ काइकरे व्रत आदरयोरे हां,
 जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणारे
 हा, वदे दु ख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोली
 चीतसुरे हा, लागे अपर खीरत ॥ क० ॥ रागीनो म
 न राचणारे हा, वैरागी वीरचत ॥ क० ॥ २० ॥
 वनवासे दूषण घणारे हा, रागी नरने होय ॥ क० ॥
 घरवासे वैरागीयारे हा, दोष न लागे कोय ॥ क० ॥
 ॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव ठे घणीरे हां, आवा दाडम
 द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पागे पडेरे हा, अणखाया
 अचीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपे साची मोटकीरे
 हां, वसुधामे विख्यात ॥ क० ॥ हाथी उडे वायरेरे
 हा, मास मास कुण मात ॥ क० ॥ २३ ॥ अठोत्तर सो
 मी ढालमेरे हा, किउ किउ न करे कर्म ॥ क० ॥ वुट
 वो नहि जीवनेरे हा, एक विना जिन धर्म ॥ क० ॥ २४ ॥
 बुहा ॥ ललितादिक गोठिल वसे, पाच पुरुष ध
 नवत ॥ राजा माने अती घणु, जोगी जमर रमत ॥

॥ क० ॥ ५ ॥ शेठे आडवर करीरे हा परणावी नि
 ज धीय ॥ क० ॥ सखरा वाघा घर दियारे हा, सुख
 जोगवे चिरजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हररुपां नीखारी व
 पुरे हा, जाग्यो जाग अजग ॥ क० ॥ कीहा शेठ व
 र पामीयोरे हा, जीहा सुख नवरग ॥ क० ॥ ७ ॥
 मीठा जोजन जिमवारे हा, सासु सुसरा मान ॥ क० ॥
 शेठ सुता सुकमालीकारे हा, लाधु रुप निधान ॥ क०
 ॥ ८ ॥ रात समे वेहु जणारे हा, सुवा मदीर जाय ॥
 क० ॥ निण वेला कर फरशीउरे हा, अगन समो दु
 खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो दुमक तिहा थकीरे हा,
 लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप काचली जीम त
 जीरे हा, टलीय अलाय वलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
 ठाणी नीज नदनीरे हा, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
 माता पूवे शु थयोरे हा, रुदन करे रुसकाय ॥ क० ॥
 ॥ ११ ॥ जननी जाखे मुण सुतारे हा, मत मन आ
 णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हा,
 हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी नजी
 धीरमारे हा, घरबेठी दे दान ॥ क० ॥ अतराय मीट
 शेसही रेहा, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
 शेठ सुणी आवी कहेरे हा, बेटी मतकर अदोह ॥ क० ॥
 पूर्व कर्म उदय थकीरे हा, पतीसु थाए वीगेह ॥
 क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हा, जाचक
 आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमाग्यो दीएरे हा, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध
 वीरे हा, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वगीकरण विधी
 पूढतारे हा, बोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मत्र
 तत्रने जत्रडारे हा, औषध मूली तेम ॥ क० ॥ कामण
 मोहण जिनमतिरे हा, करण करावण नेम ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरोरे हा, करती तप उ
 पवास ॥ क० ॥ मारगथी वाहिर पढीरे हा, सेवति व
 नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ काइकरे व्रत आदरयोरे हा,
 जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणुरे
 हा, वदे दु ख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोलो
 चीतसुरे हा, लागे अपर खीरत ॥ क० ॥ रागीनो म
 न राचणोरे हा, वैरागी वीरचत ॥ क० ॥ २० ॥
 वनवासे दूषण घणारे हा, रागी नरने होय ॥ क० ॥
 घरवासे वैरागीयारे हा, दोष न लागे कोय ॥ क० ॥
 ॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव ठे घणीरे हा, आवा दाडम
 द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पागे पढेरे हा, अणखाया
 अचीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपै साची मोटकीरे
 हा, वसुधामें विख्यात ॥ क० ॥ हाथी उडे वायरेरे
 हा, मास मास कुण मात ॥ क० ॥ २३ ॥ अठोत्तर सो
 मी ढालमेरे हा, किउ किउ न करे कर्म ॥ क० ॥ वुट
 वो नहि जीवनेरे हा, एक विना जिन धर्म ॥ क० ॥ २४ ॥
 दुहा ॥ ललितादिक गोठिल वसे, पाच पुरुप ध
 नवत ॥ राजा माने अती घणु, जोगी जमर रमत ॥

॥ १ ॥ रथ वेशी वेशा सहित, आया वन पडूर ॥ वेश्या रथयी उतरी, बैठी आसन पूर ॥ २ ॥ पांचे गोठिल सेवका, मिल दिवो आदेश ॥ जोजन करग्यो जातिशु, जीम खशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहित हो श्री सितलना यके ॥ ए देशी ॥ एक गोठिल हो घणं चतुरसुजा एके, वेश्या आगल आइत ॥ रगे राती हो मेन्दी लेइ हाथके, पग मरण मन जाइयो ॥ १ ॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्यु कोवे इण नातरे ॥ पाच गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ नचातरे ॥ २ ॥ तिणे मान्यो हो पग रुमी जातके, बेल फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रग्या बेज रगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥ ३ ॥ एक लायक हो सुदूर नर आयके, माथे वत्र धरे तिसे ॥ आपे उजो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी इसे ॥ ४ ॥ जोवन नर हो एक मोहन बेलके, तेल सुगंध शीशी लिए ॥ वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥ नवरगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥ एक विंके हो चामर चित लायके, कर सेती बीडा दीए ॥ ६ ॥ जो चडके हो तडके दे गालके, फिर जवाब नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पांचे हो नर मिठा बोलके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गोमी ते

मूढके, निश वेश्या मदिर बसे ॥ ८ ॥ हिवे साधवी
 हौ देखी ते इमके, चिंने चित धन्य ए सहि ॥ हुनो प
 रणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी न
 हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अनीमानणी नारके, सिं
 हासन उपर चढी ॥ पाचे नर हो करे जीजीकारके,
 देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लींनु हो देखी
 गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ जोगवता हो
 मिठा नर पाचके, सजम व्रतथी खलजले ॥ ११ ॥
 जो तपनो हो कोइ फलबे साचके, तो पिण हु पूरव
 जवे ॥ एहणी परे होजो जरतारके, तप सजम ज
 ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु जातिके,
 आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार
 के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३ ॥ हिवे चेली हो
 गुरुणी सु रीसके, गुरुणीसु नवि मीले ॥ मन माने हो जी
 हा तिहा जाइके, जोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥
 हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र
 ली ॥ अग धोवे हो दिनमे दस वारके, धोवे साडी
 निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्यु धेखके,
 खटपट निपट निर्लज वली, शेठ बेटी हो जाणयो
 स्वाद न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥
 पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, बेठी तिहा सुक
 मालिका ॥ आप ठादे हो रहि अटक न काइके, जा
 प जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पानोशण हो आवे को

॥ १ ॥ रथ वेशी वेशा सहित, आया वन पड्ड ॥ वे
श्या रथ्या उतरा, वेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पाचे गो
ठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ जोजन करज्यो
जातिशु, जीम खशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहित्र हो श्री सितलना
यके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणु चतुरसुजा
णके, वेश्या आगल आइत ॥ रगे राती हो मेन्दी
लेइ हाथके, पग मरण मन जाइयो ॥ १ ॥ धन्य वे
श्या हो सुहागण नारके, स्यु कीवे डण नातरे ॥ पा
च गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चा
तरे ॥ २ ॥ तिणे मारयो हो पग रुमी जातके, वेल
फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रग्या वेउ रगके,
मधुर स्वर गुण गाइने ॥३॥ एक लायक हो सुदर नर
आयके, माथे उत्र धरे तिसे ॥ आपे जचो हो करी
सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोवन नर हो
एक मोहन वेलके, तेल सुगंध शीशी लिए ॥ वेश्या
शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुये द्रढ हिए ॥ ५ ॥
नवरगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥
एक विंके हो चामर चित लायके, कर सेती वीडी
दीए ॥ ६ ॥ जो नडके हो तडके दे गालके, फिर ज
बाब नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते
हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बो
लके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गोमी ते

मूढके, निश वेश्या मदिर वसे ॥ ८ ॥ हिवे साधवी
 हौ देखी ते इमके, चिते चित धन्य ए सहि ॥ हुनो प
 रणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी न
 हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अर्जीमानणी नारके, सिं
 हासन उपर चढी ॥ पाचे नर हो करे जीजीकारके,
 देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लींचु हो देखी
 गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ जोगवता हो
 मिठा नर पाचके, सजम व्रतथी खलजले ॥ ११ ॥
 जो तपनो हो कोइ फलवे साचके, तो पिण हु पूरव
 जवे ॥ एहणी परे होजो जरतारके, तप सजम ज
 ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु जातिके,
 आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार
 के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३ ॥ हिवे चेली हो
 गुरुणी सु रीसके, गुरुणीसु नवि मीले ॥ मन माने हो जी
 हा तिहा जाइके, जोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥
 हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र
 ली ॥ अग धोवे हो दिनमें दस वारके, धोवे साडी
 निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्यु धेखके,
 खटपट निपट निर्लज वली, शेठ बेटी हो जाण्यो
 स्वाद न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥
 पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, बेठी तिहा सुक
 मालिका ॥ आप वादे हो रहि अटक न काइके, जा
 प जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पानोशण हो आवे को

॥ १ ॥ रथ बेगी बेगा सहित, आया वन पडूर ॥ बे
 श्या रथयी उतरी, बेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पांचे गो
 ठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ जोजन करग्यो
 जातिशु, जीम सुशी हुवे वेग ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहित हो श्री मितलना
 यके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणु चतुरसुजा
 एके, वेश्या आगल आइत ॥ रगे रती हो मेन्दी
 लेइ हायके, पग मरुण मन जाइयो ॥ १ ॥ धन्य वे
 श्या हो सुहागण नारके, स्यु कीये इण नातरे ॥ पा
 च गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ नचा
 तरे ॥ २ ॥ तिणे मान्यो हो पग रुमी जातके, बेल
 फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रग्या वेउ रगके,
 मधुर स्वर गुण गाइने ॥ ३ ॥ एक लायक हो सुदर नर
 आयके, माथे वत्र धरे तिसे ॥ आपे जजो हो करी
 सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥ ४ ॥ जोजन नर हो
 एक मोहन बेलके, तेल सुगंध शीशी लिए ॥ वेश्या
 शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुये द्रढ हिए ॥ ५ ॥
 नवरगी हो सारगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥
 एक विंजे हो चामर चित लायके, कर सेती बीडी
 दीए ॥ ६ ॥ जो नडके हो तडके दे गालके, फिर ज
 वाव नको करे ॥ जे मागे हो हासे करी लाखके, ते
 हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पांचे हो नर मिठा बो
 लके, गणिकासु मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गोमी ते

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
 जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख सपजे, पुण्य वना
 ससारोरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामो न
 व पारोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
 लणी तस पटराणीरे ॥ रुपे रजा सारखी, बोले को
 कील वाणोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
 री, सुन वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर नलो चद्र
 मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
 न नले, राणीए जाइ वेठोरे ॥ रुप अनोपम मनो
 हरु, गुणमणी माणीक पेठोरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
 त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधु नामरे ॥ दिन
 दिन वाधे नृप सुता, चपक जिम गीरी ठामरे ॥
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ चपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
 नरे ॥ गगा गोरी अवतरी, रजाने अनुमानरे ॥
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ चद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हस ग
 ति चालेरे ॥ राजकुमर दुलती रमे, मातपिता जन
 पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चौसठ महिलानी कला, नणी
 गुणी चतुराहरे ॥ तप किधा जनमतरे, तिण नख शी
 ख अधीकाहरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
 ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ नूपण पहीराव्या नला, ज
 नमन मोहन गारीरे ॥ पु० ॥ १० ॥ सखीय साहेली
 परवरी, रमजम करती रगेरे ॥ करी जुहार पिता न
 णी, वेठी उठरगेरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

इ नारके, तिण आगल सुख दुस कहं ॥ बिजे
 कोइ नहीं हो आल जजालके, आप वसे सुखी
 रहे ॥ १८ ॥ परीकमणी हो जो आवे दायक, तो
 किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विक्रया करे च्य
 रके, हरि वस परमादमे ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो
 तिणे वरस अनेकके, वेहडे आलोया नहीं ॥ कर्म
 बाध्या हो गुटे नहीं जीवके, कोड जतन करे कोस
 हो ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे
 सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमा
 णके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहा
 यी हो चवी साधवी जीवके, सुज करमें किहा अवत
 री ॥ ते सुणजो हो सवध विचारके, सुणता मन आ
 णद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधा
 जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो
 माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

दुहा ॥ देश माहि वे दिपतो, सजल देश पचा
 ल ॥ कपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥
 ॥ १ ॥ उचो कोट त्रिकोट जीम, परदल नजणहार ॥
 दरवाजा च्यारे नला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥
 लिखमीधर व्यवहारीया, वसे सदा सुख वास ॥ शेठ
 सेनापती मत्रवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११० मी ॥ नमो नमो अरणक महा मुनि
 ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहा, द्रुपद-नामे रा

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
 जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख सपजे, पुण्य वना
 ससरोरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामो न
 व पारोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
 लणी तस पटराणीरे ॥ रुपे रजा सारखी, बोले को
 कील वाणोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
 री, सुन वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर नलो चद्र
 मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
 न नले, राणीए जाइ वेटिरे ॥ रुप अनोपम मनो
 हरु, गुणमणी माणीक पेटीरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
 त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधु नामरे ॥ दिन
 दिन वाधे नृप सुता, चपक जिम गीरी ठामरे ॥
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ चपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
 नरे ॥ गगा गोरी अवतरी, रजाने अनुमानरे ॥
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ चद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हस ग
 ति चालेरे ॥ राजकुमर दुलती रमे, मातपिता जन
 पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चोसठ महिलानी कला, नणी
 गुणी चतुराहरे ॥ तप किधा जनमतरे, तिण नख शी
 ख अधीकाहरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
 ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ नूपण पहीराव्या नला, ज
 नमन मोहन गारीरे ॥ पु० ॥ १० ॥ सखीय साहेली
 परवरी, रमजम करती रगेरे ॥ करी जुहार पिता न
 णी, वेठी उवरगेरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

इ नारके, तिण आगल सुख दुख कहे ॥ बिने
 कोइ नही हो आल जजालके, आप वसे सुखणी
 रहे ॥ १८ ॥ परीकमणो हो जो आवे दायक, तो
 किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विक्रया करे च्य
 रके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो
 तिणे वरस अनेकके, वेहडे आलोया नही ॥ कर्म
 वाध्या हो वुटे नही जीवके, कोड जतन करे कोस
 ही ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे
 सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमा
 णके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहा
 यी हो चवी साधवी जीवके, सुज करमें किहा अवत
 री ॥ ते सुणजो हो सबध विचारके, सुणता मन आ
 णद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधा
 जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो
 माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥
 दुहा ॥ देश माहि ठे दिपतो, सजल देश पचा
 ल ॥ कपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥
 १ ॥ उचो कोट त्रिकोट जीम, परदल नजणहार ॥
 दरवाजा च्यारे नला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥
 लिखमीधर व्यवहारीया, वसे सदा सुख वास ॥ शेठ
 सेनापती मन्नवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११० मी ॥ नमो नमो अरणक महा मुनि
 ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहा, ऋपद नामे रा

ढाल १११ मी ॥ विनीषण वात विच्यारो एह ॥
 ए देशी ॥ सोनानी ठीडका नलिरे, कागल रग रगे
 ल ॥ मत्रिसर लिखजो नलोरे, रखे करो काइ ढिलरे ॥
 ॥१॥ मानव मानो नूपति आण ॥ स्वामि नगती सुख
 पामशोरे, लहस्यो कौड कल्याणरे ॥ मा० ॥ ए आक
 णी ॥ मत्रिसर कागल लिख्योरे, बहु घर नज उप
 मान ॥ अक्षर लिखिया परवमारे, वाचत हुइ आसा
 नरे ॥ मा० ॥२॥ दूत तेडावी राजवीरे, कागद दिधो
 हाथ ॥ प्रथम तु जाजे द्वारकारे, जिहा राजा हरी ना
 थरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ पग ऊटकी पगे लागजेरे, श्रीप
 तिने कहेजे जुहार ॥ कागल देइ विनवेरे, हरखति हो
 य मुरारे ॥ मा० ॥ ४ ॥ समुद्रविजे नृप सारीखारे,
 नमीजे दसे दसार ॥ अतुलिवल बलनद्रजीरे, केहे
 जे तास जुहाररे ॥ मा० ॥६॥ राज पधारो हित धरी
 रे, मतकरो ढिल लिगार ॥ द्रुपद सुता ठे द्रोपदिरे, वि
 वाहनो अधीकाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इम कही दूत चा
 लियोरे, हय गय रथ नर वृद ॥ अनुक्रमे आयो द्वा
 रीकारे, जिहा ठे नूप मुकुदरे ॥ मा० ॥७॥ वाग विचे
 नेरो दियोरे, जोजन करी बहु जात ॥ वागो सखर
 वणाइयोरे, सुदर तनु शोचतरे ॥ मा० ॥८॥ लायक
 पायक परीवरयोरे, आडवर करी दूत, राजसजा ते
 आवियोरे, वेठा नर रजपूतरे ॥ मा० ॥९॥ पगे ला
 गी कागद दियोरे, मुख वचन शुन वाण ॥ कुशल

अगना, रूपे रती गुणदाणीरे ॥ जणे ते जाणी ना
 रती, अन्त वाणी सुदाणीरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ राजा
 मनमाहो चितवे, केहने ए परणावुर ॥ सरीसे मरीखे
 जो मीले, तो चिहुमे जस पावुरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ कुल
 आचार मुवर जलो, सामु सुसरो साररे ॥ घरलस
 मी किर्ती घणी, सुलक्षण वर गीरदाररे ॥ पु० ॥ १४ ॥
 एतला गुण जोइ करी, वेटि दिजे वापरे ॥ पाठल नाग्य
 लिख्यो लहे, लोकरनको सतापरे ॥ पु० ॥ १५ ॥ जाउ पुत्री
 सुखमा रही, चिंता को मति करीशरे ॥ परणावीश मन
 मानीयो, जे जग मोटो इशरे ॥ पु० ॥ १६ ॥ एकसो
 दसमी ढालमे, पूठया जाण सुजाणरे ॥ गुणसागर कहे
 पुण्ययी, चढशे वात प्रमाणरे ॥ पु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वलि पूठया वरु नार्गीया, गढ गजणहि चा
 ल ॥ एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टकाल ॥ १ ॥
 सयवरा मडप रगसु, माढ्यो अविक्क मडाण ॥ कुमरी
 लाडकी द्रोपदी, वाग चढे प्रमाण ॥ २ ॥ चोकस वात
 वणाइने, जोशी तुरत तेढाय ॥ मास लगन शुभ दिन
 घडी, जोवो जोतिष राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुग
 तिसु, पोष मास शुदि त्रीज ॥ गोधुलिक चोखो अ
 ठे, वरस माहि एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रजी
 यो, जोशीने ये दान ॥ कुसम माला घाली गले, दि
 धो आदरमाम ॥ ५ ॥ आप नूप परधान शु, वेठा करे
 विचार ॥ सजा विच सिंहासने, पासे सह परिवार ॥ ६ ॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥
 आपी पाणी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लाठल दे मात मलार ॥ ए दे
 शी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आ
 ज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथी
 णापुर तु जाय, जिहा वसे पंडुराय ॥ आज हो पाच
 पुत्रशु सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युद्धिष्टर जेष्टी जा
 ण, नीमसेन बीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन त्री
 जो नदन तेहनेजी ॥ नकुल चौथो सोय, सहदेव पा
 चमो जोय, आज हो माहोमाहे प्रीती अधिकी जेह
 नेजी ॥ २ ॥ वली तस राजमजार, दुर्योधन हितकार
 ॥ आज हो गागेय त्रिदुर आदी ते सवेजी ॥ मकल व
 डा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे
 जइ सहुने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, मि
 लि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम
 नणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वना सरव राजान ॥
 आ० ॥ केमरीये वाधे करी गोना घणीजी ॥ ४ ॥ त
 दनतर वलि राय, त्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो च
 पापुर नगरी जाजे तु सहीजी ॥ करण तिहा राजान,
 दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अग नराधीप नणी के
 हेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सहु
 समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥
 ते पिण साजलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

खेम पूगी वल्लिरे, राजेसर कल्याणरे ॥ मा० ॥ १० ॥
 मधुसुदन मन हरखियोरे, बाची कागल तेह ॥ क
 पिलपुर जावा जर्णारे, जाग्यो अर्थाक सनेह ॥ मा०
 ॥ ११ ॥ सुणजो सहकु याद्वारे, सणजो दसे दमार ॥
 सोल सहस नृपति सुणारे, करज्यो एक विचाररे
 ॥ मा० ॥ १२ ॥ मान्यो वचन सहु मिलिरे, श्रीपति
 नो हितकार ॥ आदरशु नोजन दियोरे, दूतने कृ
 ष्ण मुराररे ॥ मा० ॥ १३ ॥ कृष्ण सीख ले चालि
 योरे, दूत प्रमोद अपार ॥ वाग माहि जिहा उतरयो
 रे, करी सजाइ साररे ॥ मा० ॥ १४ ॥ कटक शुनट
 साथे घणारे, चाल्यो तिहाथी दूत ॥ मारग आवे जो
 वतोरे, जिहा अचरिज अदनुतरे ॥ मा० ॥ १५ ॥
 गाम नगरपुर लाघतोरे, कगतो विचे मुकाम ॥ आन
 द सेति आवियोरे, जीहां कपिलपुर गामरे ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ सूरज उगे आवियोरे, दूत ते राजदुवार ॥
 सजा मिलि सहकु जुड्यारे, किधो जुगति जुहाररे
 ॥ मा० ॥ १७ ॥ दूत कहे करजोडनेरे, मानी वात
 मुरार ॥ जाग्य वडो वे राजलोरे, होसे जय जय का
 ररे ॥ मा० ॥ १८ ॥ सहकु रलियायत थ्यारे, चढशे
 वात प्रमाण ॥ इग्यार सोमी ढालमेरे, होसे कोड क
 ल्याणरे ॥ मा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ निसुणी दूत वचनथी, आति हरख्यो रा
 जान ॥ इण कारजथी माहरोरे, होशे जस परधान ॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥
 आपी पाणी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लाठल दे मात मलार ॥ ए दे
 शी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आ
 ज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथी
 णापुर तु जाय, जिहा वसे पडुराय ॥ आज हो पाच
 पुत्रशु सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युद्धिष्टर जेष्टी जा
 ण, श्रीमसेन बीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन श्री
 जो नदन तेहनेजी ॥ नकुल चौथो सोय, सहदेव पा
 चमो जोय, आज हो माहोमाहे प्रीती अधिकी जेह
 नेजी ॥ २ ॥ वली तस राजमजार, दुर्योधन हितकार
 ॥ आज हो गागेय विदुर आदी ते सवेजी ॥ सकल व
 डा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे
 जइ सहने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, भि
 लि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम
 नणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वक्रा सरव राजान ॥
 आ० ॥ केसरीधे वाधे करी गोना घणीजी ॥ ४ ॥ त
 दनतर वलि राय, श्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो च
 पापुर नगरी जाजे तु सहीजी ॥ करण तिहा राजान,
 दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अग नराधीप नणी के
 हेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सह
 समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥
 ते पिण साजलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

कपीलपुर जावा उठरग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे चो
 यो दूत चलाय, हियने हरख न माय ॥ आ० ॥ वेगे
 मनावो सोयपुर पतिजी, दमगोप सुत शीसुपाल ॥
 पाचसे जाइ रसाल, आज हो गिस नमावी कीधी
 विनतीजी ॥ ७ ॥ पाचमो दूत पठाय, हर्थागिस न
 गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी
 हाजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥
 आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहाजी ॥ ८ ॥ हिवे
 ठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मयुरा
 नगरी जणी सोतो मोकजेजी ॥ श्रीधर नामे राय, बे
 ठोवे सुखदाय, आज हो लेख वाचीने कहे आव्या
 जलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम
 प्रमाण ॥ आ० ॥ आणदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥
 सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥
 स्वामी वचन सहु सजलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा
 य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुरुणपुर
 नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे
 जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तु वलजे करजे मुऊ फ
 तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शु वात, जातु नगर वैरा
 ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम जाखजेजी ॥ सत
 जाइशु आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा
 य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री
 गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

चूपती एम कह्योजी ॥ तेणे तिमज किव, आगन्या
 पागी दिघ ॥ आ० ॥ साजली राय सुख अधिको ल
 ह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश नोतरया राय, दसमो दूत
 चलाय ॥ आ० ॥ द्रुपद राजानी निज खाते करीजी ॥
 जाजे देसादेश, लघु वडा नरेश ॥ आ० ॥ वात प्र
 कासे शिघ्र हेत धरीजी ॥ १४ ॥ हिवे सकल राजान
 साजली द्रुपद वाण ॥ आ० ॥ कपीलपुर आवण अति
 उमह्याजी ॥ ढाल वारोत्तरसोमि एह, सुणता पामे नेह
 ॥ आ० ॥ सूरी गुणसागर साजन सुख लह्याजी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सजा सुधरमी कृष्णजी, वेठा बलनद्र पा
 स ॥ कोष्टिक जोशी तेडीने, पूढे मुहुरत तास ॥ १ ॥
 तिणे दान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण ॥
 सनमुख सारो चद्रमा, राजन शास्त्र प्रमाण ॥ २ ॥
 यादव चाद्रव मेह जिम, जूडीया उपनही कोरु ॥ वा
 त सुणी विवाहनी, हररुया होडा होरु ॥ ३ ॥ कृष्ण
 कहे सहु साजलो, मतकरो कोइ विलव ॥ करी सजाइ
 आवज्यो, पर्जुन कुमर अरु सब ॥ ४ ॥ वात थापी ते
 उठिया, पोहता निज निज गेह ॥ घर जाइ मजन
 करे, जिणथी दिपे देह ॥ ५ ॥

ढाल ११३ मी ॥ ठठी वाडे ठेल ठवीलो ॥ ए
 देशी ॥ कीधा सोल श्रृंगार ॥ राजदा ॥ द्वारावती नगरी
 धणीए ॥ आया रुखमणी पास ॥ रा० ॥ जिणसु प्रित्त
 अठे घणी ए ॥ १ ॥ रुखमणी अधिक सनेह रा० ॥

कपीलपुर जावा उठरग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे बो
 यो दूत चलाय, हियमे हरस न माय ॥ आ० ॥ वेगे
 मनावी सोयपुर पतिजी, दमगोप सुत शीसुपाल ॥
 पाचसे जाइ रसाल, आज हो गिस नमारी कीवी
 विनतीजी ॥ ७ ॥ पाचमो दूत पठाय, हथीगिस न
 गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी
 हाजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥
 आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहाजी ॥ ८ ॥ हिवे
 ठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मयुरा
 नगरी जणी सोतो मोकलेजी ॥ श्रीवर नामे राय, बे
 ठोठे सुखदाय, आज हो लेख वाचीने कहे आव्या
 जलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम
 प्रमाण ॥ आ० ॥ आणदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥
 सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥
 स्वामी वचन सहु सजलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा
 य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुमणपुर
 नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे
 जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तु वलजे करजे मुऊ फ
 तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शु वात, जातु नगर वैरा
 ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम जांखजेजी ॥ सत
 जाइशु आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा
 य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री
 गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

कृष्ण सनामाहि आवीया ए, जुडीया यदु राजान
 रा० ॥ वदीजन जस गाइया ए ॥ १२ ॥ शीणगा
 र्या गजराज रा० ॥ मखमल कुल सुहामणी ए,
 घटा घुघरमाल रा० ॥ गले कंचन मणी मेखला ए
 ॥ १३ ॥ शिस शिंदुर वणाय रा० ॥ काने वेउ चामर
 ढले ए, ऐरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल चली
 बनी ए ॥ १४ ॥ कृष्ण चढ्या गजराज रा० ॥ मस्त
 क ठत्र रतने जम्या ए, चामर विंजे च्यार रा० ॥
 नगर लोक जोधा चम्या ए ॥ १५ ॥ चचल चप
 ल तुरग रा० ॥ निला पिला हसला ए, शिणगार्या
 बहु मूल रा० ॥ आपनी न सके वासला ए ॥ १६ ॥
 रातारथ चोसाल रा० ॥ नवल तुरगम जोतर्या ए,
 चिहु दिश घटा चार रा० ॥ जाणी गगनथी उतर्या
 ए ॥ १७ ॥ लायक पायक कोड रा० ॥ हरखित साथ
 उचा घणा ए, सुदर वेश वणाव रा० ॥ चाकर चतु
 र सुहामणा ए ॥ १८ ॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा० ॥
 द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल निशाण रा० ॥
 असवारे असी जालीया ए ॥ १९ ॥ बलनद्र कृष्णजी
 जोड रा० ॥ दसे दसार पामे रह्या ए, सोल सहस
 राजान रा० ॥ सहुको आव्या गहगह्या ए ॥ २० ॥
 सब परजून कुमार ॥ रा० ॥ केसरीए वाघे चला ए,
 मोटा मोती काति ॥ रा० ॥ रुप कला गुण आगला
 ए ॥ २१ ॥ गणिका रुप रसाल ॥ रा० ॥ अनगेसना

राज मया करो मोक्षणी ए, बेसो आसन एह रा०
 ह दाशी प्रचु तुम तणी ए ॥ २ ॥ रुखमणी कृष्ण
 रिद्ध रा० ॥ आसन वेठा एकठा ए, रामत करवा रं
 ग रा० ॥ रतन जडीत चला सोगठा ए ॥ ३ ॥ ले
 इ आरीसो हाथ रा० ॥ मुख दुति देखे कानजी ए,
 रुखमणी राणी हेज रा० ॥ दिपे दुति अर्जीरामजी
 ए ॥ ४ ॥ श्रीपती सामल मेह रा० ॥ रुखमणी बनी
 चुनामणी ए, आनरण रतण जडाव रा० ॥ इद्र घ
 नुप दुती निरजणी ए ॥ ५ ॥ रुखमणी पूठे वात
 रा० ॥ राज चढाउ साजल्या ए, नूपती मिलीया जो
 र रा० ॥ हय गय पायक खलजल्या ए ॥ ६ ॥ कृ
 ष्ण कहे सुण नार रा० ॥ कपीलपुर अमे जाइसा ए,
 द्रुपद सुता विवाह रा० ॥ देखी तमासो आइसा ए
 ॥ ७ ॥ रुखमणी बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन म
 ति करो ए, तुम विण घडीय ठमास रा० ॥ बाले
 सर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर वरस विहाय रा०
 ॥ तुम विण साहीव किम रहु ए, शोक तणो जजा
 ल रा० ॥ सुख दुख किण आगल कहु ए ॥ ९ ॥
 कृष्ण कहे मे बोल रा० ॥ बोल्यो ते सही पालवो
 ए, उत्तम अविचल वाच रा० ॥ अपजस दूरे टाल
 वो ए ॥ १० ॥ रुखमणी जाखे एम ॥ रा० ॥ बालम
 वेला पधारजो ए, मत मूको विसार रा० ॥ मुने नाह
 सजारजो ए ॥ ११ ॥ रुखमणी दिधी शिख रा० ॥

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ २० ॥ २ ॥ उबर
 पिपर लिंबडा, लुबजूब वरु बोर ॥ २० ॥ पान विनी
 वारी नली, वेठा मोर चकोर ॥ २० ॥ ३ ॥ माली मा
 लनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ २० ॥ वेचण
 आवे पोळमे, लेज्यो वचन विच्यार ॥ २० ॥ ४ ॥ कु
 ण आपणो कुण पारको, गुनही ने दे मार ॥ २० ॥ कृ
 ण्ण आपणे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ २० ॥ ५ ॥
 धान मूल वेपारमे, मत को करो अन्याय ॥ २० ॥ नि
 तीरी पथ चालता, सहको लागे पाय ॥ २० ॥ ६ ॥ कौ
 नुक जोवण कौतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ २० ॥
 शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ २० ॥ ७ ॥
 डेरा तिहाथी उपड्या, गुमीया गुहीर निशाण ॥ २० ॥
 कटक विकट चिहु दिश वहे, धूल चढी असमान ॥
 २० ॥ ८ ॥ आगल किधा हार्थीया, मदमाता ऊजार
 ॥ २० ॥ घोडा जोड्या जोरमे, हिंसे सहस प्रकार ॥
 २० ॥ ९ ॥ नवरग नेजा फरहरे, विचविच तुब अवाज
 ॥ २० ॥ धौधौ धौ शब्द सुणी, चोर चरु जाय जाज
 ॥ २० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे
 मुकाम २० ॥ मोटा ठोटा राजवी, शेव करे शिरनाम
 ॥ २० ॥ ११ ॥ दही दूध घृत नरी घना, पान फूल फ
 ल जेद ॥ २० ॥ धोरी धोला जोरुले, आगल जेटे ने
 ट ॥ २० ॥ १२ ॥ जलयल वन गीरी लघता, आया
 देश पचाल ॥ २० ॥ जिणी दिशे गगा वहे, जाणे वाल

नामे वडी ए, लाखा गमे साथ ॥ रा० ॥ नागी चतुर
 रूपे वनी ए ॥ २२ ॥ दल वादल ममाण ॥ रा० ॥
 तवु ताण्या वागमे ए ॥ डेरा हुवा नजीरु ॥ रा० ॥ कृ
 ण्ण पधारया रगमे ए ॥ २३ ॥ ऋद्धोपत जसपत ॥ रा०
 ॥ ठडीदार आगल वडे ए ॥ सोनागी शिरदार ॥ रा०
 ॥ एकसो तेरमी ढाले गुणसागर कहे ए ॥ २४ ॥

दुहा ॥ नोवत वाजे वागमे, सरणाइ बहु जात ॥
 घडीयाले वाजे घडी, खलकखडी मन खात ॥ १ ॥ मजरो
 करे दरवारची, सहु कोइ नरराय ॥ शिख लेइ केशव
 तणी, निज निज थानक जाय ॥ २ ॥ कृष्ण पधारया मही
 लमे, नवरग जीहा चित ठाम ॥ सुख सेजा वेठा सुखे,
 पासे वेठा राम ॥ ३ ॥ वात करे दरवारनी, मारग कु
 च मुकाम ॥ वार कोस वाधी मजल, पग पग जल
 तृण ठाम ॥ ४ ॥ सूयो मारग अटकल्यो, वाकी टाली
 वाट ॥ कोमी सुजट इण कटरुमे, घोटक कुजर घा
 ट ॥ ५ ॥ द्वारामति नगरी थकी, आया सघला लो
 क ॥ उटवलद वेसरनरी, चार रस चिज थोक ॥ ६ ॥
 वासर पाचमु कामठे, सुणोलोक धरी राग ॥ पान फू
 ल मत तोरुज्यो, ए मुऊ मोहन वाग ॥ ७ ॥

ढाल ११४ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ जावु लिंबु
 आवली, आवा दाम्म द्राख ॥ रगीला मोहना ॥ ज
 वीरा रायण जली, नवरगी नवलाख ॥ २० ॥ १ ॥ बि
 जोराने करमदा, नारेली तरबुज ॥ २० ॥ सुफ सखर

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ २० ॥ २ ॥ जंवर
 पिपर लिंबडा, लुबजूब वरु बोर ॥ २० ॥ पान विनी
 वारी जली, वेठा मोर चकोर ॥ २० ॥ ३ ॥ माली मा
 लनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ २० ॥ वेचण
 आवे पोलमे, लेज्यो वचन विच्यार ॥ २० ॥ ४ ॥ कु
 ण आपणो कुण पारको, गुनही ने दे मार ॥ २० ॥ कृ
 ण्ण आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ २० ॥ ५ ॥
 धान मूल वेपारमे, मत को करो अन्याय ॥ २० ॥ नि
 तीरी पथ चालता, सहको लागे पाय ॥ २० ॥ ६ ॥ कौ
 तुक जोवण कौतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ २० ॥
 शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ २० ॥ ७ ॥
 डेरा तिहाथी उपड्या, गुनीया गुहीर निशाण ॥ २० ॥
 कटक विकट चिहु दिश वहे, धूल चढी असमान ॥
 २० ॥ ८ ॥ आगल किधा हाथीयां, मदमाता ऊजार
 ॥ २० ॥ घोडा जोड्या जोरमे, हिंसे सहस प्रकार ॥
 २० ॥ ९ ॥ नवरग नेजा फरहरे, विचविच तुव अवाज
 ॥ २० ॥ धौधौ धौ शद सुणी, चोर चरु जाय जाज
 ॥ २० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे
 मुकाम २० ॥ मोटा बोट राजवी, शेव करे शिरनाम
 ॥ २० ॥ ११ ॥ दही दूध घृत जरी घना, पान फूल फ
 ल जेद ॥ २० ॥ धोरी धोला जोमले, आगल जेटे ने
 ट ॥ २० ॥ १२ ॥ जलथल वन गीरी लघता, आया
 देश पचाल ॥ २० ॥ जिणी दिशे गगा वहे, जाणे वाल

गोपाल ॥ २० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु
 र अपार ॥ २० ॥ गुदरी घणी डेलडी, मणीका डा
 ख अपार ॥ २० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध
 रती जोवा लाग ॥ २० ॥ पग पग पाणी मोकला, व
 न वाडीना वाग ॥ २० ॥ १५ ॥ देश डिम सरशी स
 ही, देखी कृष्ण नरेश ॥ २० ॥ ए मोटोटे राजवी, जे
 हनो एहवो देश ॥ २० ॥ १६ ॥ हरी जाखे नृती सुणो,
 दिठा देश अतेक ॥ २० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
 दीठो तुमे कोइ एक ॥ २० ॥ १७ ॥ हिवे कपिलपुरनो घणी,
 दुपद नामे चुप ॥ २० ॥ कृष्ण सामागम साजली,
 करे सजाइ अनूप ॥ २० ॥ १८ ॥ तेज्या मोटा वागी
 या, ज्यारी मोटो जाग्य ॥ २० ॥ वागा पहिरया नव
 नवा, शिर सारगी पाग ॥ २० ॥ १९ ॥ सुदर कुजर
 सऊ किया, घोडा कचन साज ॥ २० ॥ घोडो वहिल रथ
 जोतरया, मिलिया मुचट समाज ॥ २० ॥ २० ॥ एक
 सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ २० ॥ सुखिया
 जिहा तिहा सुख लहे, आदरमान अपार ॥ २० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ घुरया ददामा ततद्वणे, वली वागी कर
 ताल ॥ नवरग नेजा फरहरे, चतुरग सैन्य विसाल
 ॥ १ ॥ सोहव नारी कलस नरी, करे सोल शिणगार
 ॥ देरवाजे उनी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
 सजाइ सऊ करी, चढीयो नगरी राय ॥ वदिजन ज
 य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आढर देइ कृष्ण
जी, मिलिया बेउ उगय ॥ ४ ॥ हरी पूठे राजा सु
णो, कुशल खेम आणद॥राजपाट चढती कला, देश
न केइ दद॥५॥राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेषे
आज ॥क्रिपा करी पधारीया, राज वधारी लाज ॥६॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सय
न सेति कहे, श्रीपति कटक मुकाम हो ॥ सुदर ॥ रा
जा वे मिलिया तिहा, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु०
॥ १ ॥ जूपति जेट जली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो
॥ सु० ॥ साजन सगपण राखवा, कोमी करे कुरवाण
हो ॥ सु० ॥ जू० ॥ २ ॥ गजवाजी रथ पालखी, जेट करी
मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता
कोइ न खोरु हो ॥ सु० ॥ जू० ॥ ३ ॥ श्रीपति
रारुयो जेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सु० ॥ द्रुपद
कहे प्रजु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो ॥ सु० ॥ जू०
॥ ४ ॥ इण अवसर तिहा पुरी सरे, मिलिया नगरी
ना लोक हो ॥ सु० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचरिज
जोवा जोग हो ॥ सु० ॥ जू० ५ ॥ साये कुणकुण वागी
या, कुणकुण सिरदार हो ॥ सु० ॥ जोमी जमर कुमर
तिहा, कुणकुण दसे दसार हो ॥ सु० ॥ जू० ॥ ६ ॥ मयमता
हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइहो ॥ सु० ॥ रथ पा
यक वर पालखी, दिठा आणद होय हो ॥ सु० ॥ जू० ॥
॥ ७ ॥ नगर महोठव नृप करे, आरुवर असमान हो ॥

गोपाल ॥ २० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु
 र अपार ॥ २० ॥ गुदरी घणी डेलडी, मणीका द्रा
 ख अपार ॥ २० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मैत्रा घणा, ध
 रती जोवा लाग ॥ २० ॥ पग पग पाणी मोकला, व
 न वाडीना वाग ॥ २० ॥ १५ ॥ देश डिम सरशी म
 ही, देखी कृष्ण नरेश ॥ २० ॥ ए मोटोठे राजवी, जे
 हनो एहवो देश ॥ २० ॥ १६ ॥ हरी जाखे नृती मुणो,
 दिठा देश अनेक ॥ २० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
 दीठो तुमे कोइ एक ॥ २० ॥ १७ ॥ हिवे कपिलपुरनो वणी,
 दुपद नामे नृप ॥ २० ॥ कृष्ण सामागम सानली,
 करे सजाइ अनृप ॥ २० ॥ १८ ॥ तेज्या मोटा वागी
 या, ज्यारो मोटो जाग्य ॥ २० ॥ वागा पहिरघा नव
 नवा, शिर सारगी पाग ॥ २० ॥ १९ ॥ सुदर कुजर
 सऊ किया, घोडा कचन साज ॥ २० ॥ घोडो वहिल रथ
 जोतरघा, मिलिया मुजट समाज ॥ २० ॥ २० ॥ एक
 सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ २० ॥ सुखिया
 जिहा तिहा सुख लहे, आदरमान अपार ॥ २० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ घुरघा ददामा ततकृणे, वली वागी कर
 ताल ॥ नवरग नेजा फरहरे, चतुरग सैन्य विसाल
 ॥ १ ॥ सोहव नारी कलस नरी, करे सोल शिणगार
 ॥ देरवाजे उनी रही, जान हुवेपेसार ॥ २ ॥ सबल
 सजाइ सऊ करी, चढीयो नगरी राय ॥ बदिजन ज
 य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आठर देइ कृष्ण
जी, मिलिया बेज उगय ॥ ४ ॥ हरी पूठे राजा सु
णो, कुशल खेम आणद ॥ राजपाट चढती कला, देश
न केइ ददा ॥ ५ ॥ राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेषे
आज ॥ क्रिपा करी पधारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सय
न सेति कहे, श्रीपति कटक मुकाम हो ॥ सुदर ॥ रा
जा वे मिलिया तिहा, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु०
॥ १ ॥ नूपति जेट जली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो
॥ सु० ॥ साजन सगपण राखवा, कोमी करे कुरवाण
हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २ ॥ गजवाजी रथ पालखी, जेट करी
मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता
कोइ न खोम हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ३ ॥ श्रीपति
राख्यो जेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सु० ॥ द्रुपद
कहे प्रनु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो ॥ सु० ॥ नू०
॥ ४ ॥ इण अवसर तिहा पुरी सरे, मिलिया नगरी
ना लोक हो ॥ सु० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचरिज
जोवा जोग हो ॥ सु० ॥ नू० ५ ॥ साये कुणकुण वागी
या, कुणकुण सिरदार हो ॥ सु० ॥ जोमी जमर कुमर
तिहा, कुणकुण दसे दसार हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ६ ॥ मयमता
हार्थीनी घटा, हयवर पार न कोइहो ॥ सु० ॥ रथ पा
यक वर पालखी, दिठा आणद होय हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
॥ ७ ॥ नगर महोठव नृप करे, आरुवर असमान हो ॥

गोपाल ॥ २० १३ साल चणा गहु घणा, उडद मसु
 र अपार ॥ २० ॥ गुदरी घणी डेलडी, मणीका ब्रा
 ख अपार ॥ २० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, घ
 रती जोवा लाग ॥ २० ॥ पग पग पाणी मोकला, व
 न वाडीना वाग ॥ २० ॥ १५ ॥ देश ठिम सरशी स
 ही, देखी कृष्ण नरेश ॥ २० ॥ ए मोटोठे राजगी, जे
 हनो एहवो देश ॥ २० ॥ १६ ॥ हरी नाखे चूती मुणो,
 दिठा देश अनेक ॥ २० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
 दीठो तुमे कोइ एक ॥ २० ॥ १७ ॥ हिवे कपिलपुरनो धणी,
 दुपद नामे चुप ॥ २० ॥ कृष्ण सामागम साजली,
 करे सजाइ अनूप ॥ २० ॥ १८ ॥ तेज्या मोटा वागी
 या, ज्यारी मोटो जाग्य ॥ २० ॥ वागा पहिरया नव
 नवा, शिर सारगी पाग ॥ २० ॥ १९ ॥ सुदर कुजर
 सळ किया, घोडा कचन साज ॥ २० ॥ घोडो वहिल रथ
 जोतरया, मिलिया मुजट समाज ॥ २० ॥ २० ॥ एक
 सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ २० ॥ सुखिया
 जिहा तिहा सुख लहे, आदरमान अपार ॥ २० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ घुरया ददामा ततद्धणे, वली वागी कर
 ताल ॥ नवरग नेजा फरहरे, चतुरग सैन्य विसाल
 ॥ १ ॥ सोहव नारी कलस जरी, करे सोल शिणगार
 ॥ देखवाजे उनी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
 सजाइ सळ करी, चढीयो नगरी राय ॥ वदिजन ज
 य जयकरे, माधव सतमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

नू० ॥ १७ ॥ चपा नगरीनो धणी, कृष्ण महिपति
 ह हो ॥ सु० ॥ सल्य नूप दलवल सहित, आयो
 कल अवीह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १८ ॥ गधारादि
 पती, शकुनी नामे अति सुर हो ॥ सु० ॥ कंपीलपु
 आयो तुरत, गज घट घणे पडुर हो ॥ सुं० ॥ नू०
 १९ ॥ दमघोष सुत दलपती, जाणे बाल गोपाल
 ॥ सु० ॥ नगरी चदेरीनो धणी, आयो नृप शिशु
 ल हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २० ॥ कुम्भन नगरीनो राजी
 , रुकमी नृप कुल चदहो ॥ सु० ॥ वार न लाइ आव
 , साथे शेवक ब्रद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २१ ॥ वय
 ट नगरिनो धणी, किचक नाम नरेश हो ॥ सु० ॥
 नाइशु आवीयो, किधो नगर प्रवेश हो ॥ सु०
 नू० ॥ २२ ॥ मथुरा नगरी अधीपती, श्रीधर नाम नरिंद
 ॥ सु० ॥ आयो मृगपती साहसी, मन धरतो
 णद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २३ ॥ मालव देश तणो
 णी, वयरीसाल नरेशहो ॥ सु० ॥ आयो धायो धसम
 , जिहावे द्रुपद देश हो ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम गामा
 र नगरथी, आया मोटा नूप हो ॥ सु० ॥ कपील
 र डेरा दिया, दिपे तेज अनूप हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
 २५ ॥ द्रुपद महीपति आणीया, करी उठव पुरमां
 हो ॥ सु० ॥ सहुने सरिखा राखीया, सऊ थयो न
 र अगाह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २६ ॥ मोटा मदिर
 ालीया, धवल उचा आवास हो ॥ सु० ॥ नामाकित

सु० ॥ जादव जेवे जग घटा, गणिका गावे गान हो
 ॥ सु० ॥ नू० ॥ ८ ॥ पूरण कलस शिर पदमनी, सनमुख
 आवे तेह हो ॥ सु० ॥ पइसारी नृप मानीत, जकी
 जुकी धरी नहे हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ९ ॥ दरवार वार ब
 णाइत, सबल कियो ठिठकाव हो ॥ सु० ॥ पच वर्ष
 फूल विखेरिया, बहु परिमल महकाव हो ॥ सु० ॥ नू०
 ॥ १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरिज
 कोड हो ॥ सु० ॥ उचे नवलखा मालिया, आवी र
 ह्या मन कोड हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ११ ॥ हिवे कपीलपुरनो
 धणी, जलीजली जेट अणाय हो ॥ सु० ॥ कमलापति
 आगल धरे, जिण दिठे सुख थाय हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
 ॥ १२ ॥ मेवा देश परदेशना, साकर काजू सार हो ॥
 सु० ॥ कला कुद अति उजला, कोला पाक अपार
 हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १३ ॥ साकर वाणी जतनसु, पा
 णी जरी जरी कुज हो ॥ सु० ॥ कुसमपुर फणस ज
 लि, सितल मधुर सुरजहो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १४ ॥ एवा
 शितल जल पीए, मधुर मीठाइ खाय हो ॥ सु० ॥
 नोजन सरस किया पढी, मारग श्रम मीट जाय हो
 ॥ सु० ॥ नू० ॥ १५ ॥ पडु राजा पिण आवियो, पाच
 पुत्र वली साथ हो ॥ सु० ॥ विदुर करण गागेयशु,
 दुर्योधन नर नाथ हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १६ ॥ राज ग्र
 ही नगरी धणी, श्री सहदेव नरिंद हो ॥ सु० ॥ आड
 वर करी आविया, मयमत साथ गयंद हो ॥ सु० ॥

य ॥ केसर चदन कुसुमले, धूपदीप समुदाय ॥ ७ ॥
 करी पूजा कामदेवनी, जाखे द्रोपदी नार ॥ देव दया
 करी मुऊने, जलो देजो नरतार ॥ ८ ॥

ढाल ११६ मी ॥ अलबेलानी देशी ॥ नवयौवन
 रुपे रुयदीरे लाल, हरखीत वदन उमाय ॥ रायजा
 दिरे ॥ करी उलग पाठी वलीरे लाल, आवी जिहा
 नीज माय ॥ रा० ॥ १ ॥ सीलवती नली द्रोपदीरे ला
 ल ॥ ए आकणी ॥ आचूपण अग लुहणारे लाल, अ
 रगजो अग लगाय ॥ रा० ॥ कोरजमल पहिरावीयो
 रे लाल, केसर रगी पाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ २ ॥ वेणी
 दम जमावनोरे ॥ ला० ॥ सोहे मूल अमूल ॥ रा० ॥
 माथे सोहे राखनीरे ॥ ला० ॥ रतन जडीत शीश फू
 ल ॥ रा० ॥ सी० ॥ ३ ॥ काने कुडल जलकतारे ॥ ला० ॥
 चद सूरज अनकार ॥ रा० ॥ कर ककण वर विठियारे
 ॥ ला० ॥ नक वेसर शिणगार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ४ ॥ नयन
 कमल दल सारिखारे ॥ ला० ॥ अजन रेख वणाय ॥
 रा० ॥ दम अगुलिए मुद्रडीरे ॥ ला० ॥ निलवट तिलक
 सोहाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ ५ ॥ रग रगीला सोहतारे ॥
 ला० ॥ उठण जीणा चिर ॥ रा० ॥ कर पग मान्या
 मान्यारे ॥ ला० ॥ कान राखी नखशिर ॥ रा० ॥ सी०
 ॥ ६ ॥ जघ कमल लता जीसारे ॥ ला० ॥ सोहे रा
 जकुमार ॥ रा० ॥ गंगा गौरी सारखीरे ॥ ला० ॥ रति
 रजा अवतार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ७ ॥ घोट वहिल आ

हुता जिके, सहुने दिध विमास हो ॥ सु० ॥ नू०
 ॥ २७ ॥ जुडीया नुपती जलजला, हुता जं
 ल हो ॥ सु० ॥ द्रुपद ते सतोखीया, जिमाड्या सुखि
 शाल हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २८ ॥ निज निज आवासे
 रह्या, सघला राजा जाण हो ॥ सु० ॥ गित गान क
 रे रगशु, पामे कोड कल्याण हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २९ ॥
 रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो ॥ सु० ॥
 सुख शेती वेठा सही, मन धरता प्रमोद ॥ सु० ॥
 नू० ॥ ३० ॥ ढाल सो पन्नरमी जली, मिलिया गय
 सुजाण हो ॥ सु० ॥ गुणसागर हिवे साजलो, विवाह
 नो मडाण हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ द्रुपद राजा आपणा, तेरुया शेवक कोड ॥
 सयंवरा मडप माडीयो, मनथी आलस गोड ॥ १ ॥
 गगा जल निरमल वहे, ठाम मोकली जाण ॥ तास
 तिरघ रतिसमी, करी तिहा सखर मफाण ॥ २ ॥ म
 डप गयो मोकलो, कचन मुक्ताफल रयण ॥ शोजा
 विवीध प्रकारनी, देखत आनद नयन ॥ ३ ॥ फूल
 पगर सुहामणा, धुप घटी मेहकत ॥ तोरणनी रचना
 रची, देखी जन हरखत ॥ ४ ॥ लगन तणो दिन आ
 वीयो, हेम सिंहासन राय ॥ वेठा सघला आयने, वि
 विध शोजा लाय ॥ ५ ॥ सघला माही शोचतो, रा
 जा पडु जोय ॥ पुत्र पाच महाबली, गजी न सके
 कोय ॥ ६ ॥ हिवे मजन करी द्रुपदी, देव जुहारण जा

॥ रा० ॥ सी० ॥ १६ ॥ चित्रधारणी शीखवेरे ॥ ला० ॥
 गती मती मदाचार ॥ रा० ॥ गुणासागर सूरी ए कहीरे
 ॥ ला० ॥ ढाल सोलोत्तर सोमी सार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सशी वयणी मृग लोयणी, रुदय कोमल
 गात ॥ कोकिल कठी हसगती, अमृत वचन सोहात
 ॥ १ ॥ राजकुमरी राजी घणी, दिठा बहु राजान ॥
 मडप विच आणी हिवे, हाथणी जेम आलान ॥ २ ॥
 धणीयाणी मन उलखे, रुचता बोले बोल ॥ एहवी
 साये आठे, विनती करे नीटोल ॥ ३ ॥ एक नारी
 नृपती घणा, सहुको देखणहार ॥ हिमकर देखी
 सरोवरे, विकस्ये कुमुद हजार ॥ ४ ॥

ढाल ११७ मी ॥ निंदरडी नाहो निवारीए ॥ ए दे
 शी ॥ जिहा वेठाठे कृष्णजी, तिहा आवी हे सखी
 राजकुमारके ॥ आरीसो आगे धरी, देखने हे जला
 राज कुमारके ॥ १ ॥ सखीय कहे सुण स्वामिणी,
 मन थीर करीहे निज नयन निहालके ॥ जे मन माने
 ताहरे, तेहने कठेहे नाखे फूलानी मालके ॥ स० ॥
 ॥ २ ॥ ए अवसर पाम्यो जलो, मत चूकेहे सखी हीए
 विचारके ॥ द्वारामती नगरी धणी, एतो सनमुख
 ही वेठा कृष्ण मुरारके ॥ स० ॥ ३ ॥ सोलसहेस नृप
 दिन प्रते, जसु शेवाहे सारे करजोडके ॥ सोलासहस
 राणी घरे, मन मोहनहे सुदर नही खोडके ॥ स० ॥ ४ ॥
 तिन खमनो राजीयो, नर सघलाहे माने जसुआण

णी चलिरे ॥ ला० ॥ घुमर माल वणाय ॥ रा० ॥ स
 खी साहेली कुठरीरे ॥ ला० ॥ लागी जननी पाय ॥
 रा० ॥ सी० ॥ ८ ॥ मन मान्यो वर तुलहिरे ॥ ला० ॥
 जननी दिले आशिप ॥ रा० ॥ रथ बैठी आणदसुरे
 ॥ ला० ॥ तुठो मुळ जगदिश ॥ रा० ॥ सी० ॥ ९ ॥
 चाड साथे सारथीरे ॥ ला० ॥ शुनट लिया गिरदार
 ॥ रा० ॥ रथ रखवाली ते करेरे ॥ ला० ॥ रतन जन
 न अधीकार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १० ॥ सावधान जोता
 थकारे ॥ ला० ॥ कर जाली तरवार ॥ रा० ॥ कुशल
 खेमशु आवीयारे ॥ ला० ॥ हरखी राजकुमार ॥ रा०
 ॥ सी० ॥ ११ ॥ मडप माहि पेसतारे ॥ ला० ॥ दि
 ठा श्रीपति राम ॥ रा० ॥ विजा पिण दिठा घणारे ॥
 ला० ॥ सहुने करे प्ररणाम ॥ रा० ॥ सी० ॥ १२ ॥ च
 पक पाडल मालतीरे ॥ ला० ॥ फूल दडो लेइ हाथ
 ॥ रा० ॥ परीमल बहुलो महमहेरे ॥ ला० ॥ सकल साहेली
 साथ ॥ रा० ॥ सी० ॥ १३ ॥ हाथे दरपण जालीयोरे
 ॥ ला० ॥ निर्मल दिसे रुप ॥ रा० ॥ मणी माणीक
 मुठे जड्योरे ॥ ला० ॥ तिण माही देखे चुप ॥ रा०
 ॥ सी० ॥ १४ ॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ॥ ला० ॥
 सूरवीर उदार ॥ रा० ॥ मात तात बाधव सहीरे ॥ ला०
 ॥ राजक्रुद्धी नडार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १५ ॥ चाषा
 जाणे जूजूइरे ॥ ला० ॥ दाशी चतुरसुजाण ॥ रा० ॥
 कुमरी साथे सचरेरे ॥ ला० ॥ देखाडे राय राणो ॥

के ॥ स० ॥ १४ ॥ हस गमनी इम सचरे, हिवे ति
 हार्थीहे आणी उमग सचके ॥ उलट घट माही घणो,
 हठ राणीहे देखी पानव पचके ॥ स० ॥ १५ ॥ देश
 वास दाशी कहे, रुप जोवन हे पाचे जोधारके ॥
 वरमाला घाली गले, मे वरीयाहे पच पाडव जरतार
 के ॥ स० ॥ १६ ॥ जय जय शब्द हुवो तिहा, हरी
 हरख्यो हे जाडव राजानके ॥ डुपद नृप मन रजीयो,
 जस शोभा हे मुऊ होशे जीहानके ॥ स० ॥ १७ ॥
 मगल नाद सुहामणा, शख वाजे हो घणा ढोल नि
 शानके ॥ सवरा मडपथी चल्या, कमलापति हे चूपती
 राया राणके ॥ स० ॥ १८ ॥ ढाल सतरे सोमी जली, गु
 णसागर हे अधीक रसालके ॥ पुण्ये सहु वडित फले,
 जग माहि हे होसे जस विसालके ॥ स० १९ ॥

डुहा ॥ पाचे पाडव द्रोपदी, रथ बेशी तिणवार
 ॥ जाइ साथे वागीया, आवी निज दरवार ॥ १ ॥
 आरीम कारीम सहु किया, मजन करी मन रग ॥
 चवरि विच बेठा चतुर, पाचे पानव चग ॥ २ ॥ राज
 कुमरी शिणगार करी, आणि सहियर साहि ॥ अमी
 य सलुणे लोयणे, वेठि चोरी माहि ॥ ३ ॥

ढाल ११८ मी ॥ सोहलानी देशी ॥ सुहव सुहव
 गावे सखरो सुहलोजी, सुणता श्रवण सुहाय ॥ सर
 खी सरखी जोमी एहनीजी, रोहिणी जिम द्विजराज ॥
 सु० ॥ १ ॥ कुमर कुमर अमर रुपे रुयडाजी, पाचे पडू

के ॥ दशेदसार जादवा जुम्या, तिणमाहीहे दिपे ज्यु
 जाणके ॥ स० ॥ ५ ॥ एहवो विजो राजवी, नही को
 इये सखी शिरदारके ॥ जो मन माने ताहरे, तो बर
 जेहे सखी जल जरवारके ॥ स० ॥ ६ ॥ तिहायी आ
 गल सचरी, जिहा वेठाहे सखी बलजद्र वीरके ॥ दा
 शी कहे ए गुण जरयो, साह सामेहे सखी साहसवीर
 के ॥ स० ॥ ७ ॥ तिहायी पिण आगे गइ, जिहा वे
 ठाहे सखी दसे दसारके ॥ समुद्रविजे राजा बडो,
 जेहनो सुतहे सखी नेम कुमारके ॥ स० ॥ ८ ॥ तिहायी
 आगे आवता, तिणे दिठाहे वसुदेव नरिंदके ॥ बहुते
 र सहस अते जरी, एहवोहे पती लहीए आणठके ॥ स०
 ॥ ९ ॥ राजसुता मन चितवे, घणी राणीहे घणो पाप ज
 जालके ॥ पगे नमता पिण आयमे, तिणसुहे माहरे कुण
 पपालके ॥ स० ॥ १० ॥ जो सुख चाहेहे सखी, तो एहहे
 सहदेव नरेशके ॥ शूर साहशीक गढपति, जिणही
 मन हे नही कुरु कलेशके ॥ स० ॥ ११ ॥ राजग्रही
 नगरी जली, तसु नायकहे सखी देव स्वरूपके ॥
 जरासवनो पाटवी, एणे पुठेहे चडता वडा वडा जूप
 के ॥ स० ॥ १२ ॥ ठाकुरथी चाकर हुवो, तेहनोहे स
 खी नही सोजाग्यके ॥ इम चितवी आगे गइ, कोइ
 देखु हो सखी मोटे जागके ॥ स० ॥ १३ ॥ एणीपरे
 सघला राजवी, तिणे दिठाहे सखी नयन निहालके ॥
 कुमरी कहे दाशी प्रते, सुहागणहे तु आगल चाल

पंच रंग ढाल्याढोलियाजी, पगे पुतली जाण ॥ कोमल
 कोमल माखण सारखी सेजमीजी, रेशम वणियो वाण
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ पटकूल पटकूल हय रथ हार्थीजी, उंशीसां
 अर्जीराम ॥ जलजला जलजला वागा आपीयाजी, दि
 धा वली आठ गाम ॥ सु० ॥ १३ ॥ आप्या आप्या हय
 रथ हार्थीयाजी, सतोण्या सहु तेम ॥ एकसो एकसो
 अढारमी ढालेजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ हिवे द्रोपदी पंचालीपती, धरणीधरने नेट
 ॥ आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥ १ ॥
 जे पिण विजा राजवी, आया हुता साथ ॥ तेने सहु
 सतोपिया, मोकल करी निज हाथ ॥ २ ॥ कमलाप
 ति सेना सजी, दिध ददामा चोट ॥ राजा सहुको
 चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेला आ
 ढो फिरी, आयो बहु परीवार ॥ पाडू महिपति विन
 वे, सुणजो कृष्ण मुरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे,
 मानो वचन विमास ॥ हथीणापुर पावन करो, मुज मन
 पूरो आश ॥ ५ ॥ सघलि मानी कृष्णजी, प्रिती जली
 ते वात ॥ विजे पिण मिलि करी, कीधो हरी सघात ॥ ६ ॥

ढाल ११९ मी ॥ रसियानी देशी ॥ कटक ते कं
 पीलपुरथी चालियो, डेरा बाहिर दीध सलुणी ॥ धज
 स ददामा हो वाजे अति जला, द्रुपद नृपजस लीध
 ॥ स० ॥ १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी जणी कहे, वे
 टी सुण एक गीख ॥ स० ॥ सासु सुसरानो माने क

कुमार ॥ अपठर अपठर सरखी द्रोपदीजी, परणी प्रेम
 अपार ॥ सु० ॥ २ ॥ याचक याचक दिधी दहणाजी, सुजस
 ययो ससार ॥ अवसर अवसर दान सुहामणाजी, वुठो
 जिम जलधार ॥ सु० ॥ ३ ॥ कींचित कींचित कामणी
 तिण समेजी, हरखाणी हरी हास ॥ सहियर सहियर
 दिठो न साजल्योजी, पाच पुरुपनो वास ॥ सु० ॥ ४ ॥
 माननी माननी हिवे मन मोकलेजी, वरसे वर दस
 वार ॥ द्रुपदा द्रुपदा जो ए आदरखाजी, वर कुण नी
 वारण हार ॥ सु० ॥ ५ ॥ उत्तर उत्तर आपे महिला
 माननीजी, गरव मकरे हे गिमार ॥ मुनिवर मुनिवर चा
 रण गुण कह्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ॥ ६ ॥
 उत्तम उत्तम पात्र सतोखीयाजी, दिधा अढलक दान ॥
 सुकृत सुकृत कीधा एणे कुमरीजी, तिण पामी जग
 मान ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्रुपद द्रुपद नृपति कनकनाजी, कर
 मुकावण कोड ॥ माणीक माणीक मणि मोति घणाजी,
 हय गय रथ अठ जोरु ॥ सु० ॥ ८ ॥ दासी दासी जू
 जूआ देशनीजी, सखरो वेश वणाय ॥ कोकिल को
 किल सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो जाव ॥ सु० ॥
 ९ ॥ आभ्रण आभ्रण मुगट जडावराजी, कुडल मो
 ती माल ॥ वाटकि वाटकि नव नव काटकीजी, हाट
 कना पण थाल ॥ सु० ॥ १० ॥ दिविय दिविय पाटण
 निपनीजी जारी सखरे घाट ॥ चामर चामर उत्र सु
 हामणाजी, चद्रासन जल माट ॥ सु० ॥ ११ ॥ पच रंग

॥ स० ॥ अतराय मत करजे धर्मनी, राजमत देखे चूत
 ॥ स० ॥ चु० ॥ ११ ॥ मात तात निज भ्रात सजारजे, म
 करे चित्त अदोह ॥ स० ॥ कुशल खेमरो कागल मोक
 ले, धरजो प्रियसु मोह ॥ स० ॥ चु० ॥ १२ ॥ रुदन
 करे नृप कुमरी चालता, आसु लहे मात ॥ स० ॥
 बेटी गुण पेटी तु माहरी, सजारीस दीन रात ॥ स०
 चु० ॥ १३ ॥ मिलणो सुख विठडणो दोहिलो, मात
 पिता करे विलाप ॥ स० ॥ फिर मिलणो जो पुण्य घ
 णो हुवे, तो दुणो सुख थाय ॥ स० ॥ चु० ॥ १४ ॥
 जिम तिम शिख करी माता कहे, बेटी थाय असूर
 स० ॥ जाइ साथे आवे ताहरे, हथीणापुरठे दूर ॥
 स० ॥ चु० ॥ १५ ॥ माताने पगे लागी द्रोपदी, रये
 बेठी तिणवार ॥ स० ॥ तिहाथी राणी आमण दुमणी,
 आवे महील मजार ॥ स० ॥ चु० ॥ १६ ॥ नयन
 जरे जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लिंगार
 ॥ स० ॥ खिण खिण माही बेटी साजरे, विरह बुरो स
 सार ॥ स० ॥ चु० ॥ १७ ॥ दाशी दास मिलीने विन
 वे, राणी सोग नीवार ॥ स० ॥ कुमरी वेगे तुम घर
 आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥ १८ ॥ राणी ठाम करी मन आपणो, वइठी पिण दि
 लगीर ॥ स० ॥ सा माजी माजी कहती मुऊ द्रोपदी,
 मात कहे कुण वीर ॥ स० ॥ चु० ॥ १९ ॥ हथीणापुर
 नणी सह राजदी, चाल्या सेन्या लेय ॥ स० ॥ पाय

ह्यो, विण कहे मतकरे शिष्य ॥ स० ॥ चु० ॥ २ ॥
 य पहिली माचारी उठजे. आलस नाणे अग ॥ स०
 ॥ धर्णीय जिमाटी हो तु जिमजे पगी, मतकरे निच प्र
 सग ॥ स० ॥ चु० ॥ ३ ॥ आख्या विहुमा जिम अत
 र किस्यो, तिम पाचे नरतार ॥ स० ॥ सरीखा गि
 णजे मत अतर करे, तुज सरज्या फिरतार ॥ स०
 ॥ चु० ॥ ४ ॥ अरीहत देव सुगुरु शेवा करे, जि
 न धर्म धरजे चित ॥ सु० ॥ मुखरी मन जाले वच
 न अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥ ५ ॥ निंदा मत करे हो वेटी पारकी, मतकरे मन अ
 चीमान ॥ स० ॥ अवगुण ढाकी गुण प्रगट करे,
 तप करी मतकरे निदान ॥ स० ॥ चु० ॥ ६ ॥ समकी
 त सुयो मनमाही धरे, जिम पामीश शिववास ॥
 ॥ स० ॥ निज परजन सेती मिलती रहे, बोले व
 चन विमास ॥ स० ॥ चु० ॥ ७ ॥ सुधा साध ज
 णी आदर करे, देजे अढलक दान ॥ स० ॥ असन
 पान खादम सादिम जला, सुख पामी असमान ॥
 ॥ स० ॥ चु० ॥ ८ ॥ कोह्यो काचो कडुओ आकरो, नि
 रस लुखो अन्न ॥ स० ॥ पढ्यो रढ्यो पसुपखी चाखीयो,
 मत देजे कोह वन्न ॥ स० ॥ चु० ॥ ९ ॥ रात उघाडो र
 ह्यो जे सुखडो, विणठो नावे काम ॥ स० ॥ स्वादहिन
 मत देजो साधुने, जोजे ठाम कुठाम ॥ स० ॥ चु० ॥ १० ॥
 पाती नेद मतकरजे जिमण समे, मरम मत बोले मूल

अथ ढालसागर श्री हरिवस चरित्र सातमो खड प्रारज-

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वठित फल दा
 तार ॥ अव सप्तम अर्धीकारनो, नविक सुणो विस्ता
 र ॥ १ ॥ जग्गी श्री मणिचूडानि, खेचर कियो अपहा
 र ॥ अर्जुन हुवो वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शु
 रवीर गुण आगलो, पारथ प्रबल प्रताप ॥ देखी पाडू
 प्रथविपती, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नद
 धरमातमा, नृप पदवि थापत ॥ सकल घरानि साहि
 वी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अवर जिम दिनकर क
 री, ध्वज करी देउल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथ
 वी शोची तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देगी ॥ प्रथवी रसवती
 खरी, तरुवर अर्धीक फलतारे ॥ दूध घणो सुरजी त
 णो, माग्या घन वरसतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जा
 ण ए ॥ ए आकणी ॥ लान घणो व्यापारमें, चाकर
 बहुला यासोरे ॥ जीकुकने जीक्षा घणी, न रहे को
 इ निरासोरे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवती तो कामनी, सुहा
 गण सोजागोरे ॥ जोर जलाइ आदरे, घर घर दिजे
 तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बेटा माने बापने, पूजे मायना
 पायोरे ॥ गुरुने माने चेलजा, वरते निरतो न्यायोरे
 ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहा, अवर नको
 विपगितोरे ॥ बहु जगती सासु तणी, सोक्या माहि
 प्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप हणवे हिंसका, कुठ गिलने

लागी द्रोपदा हिवे कृष्णने, कुमरीने शिख देय ॥ स० ॥
 चु० ॥ २० ॥ पडु महीपती सेती हली, सगप
 ण राखण सच ॥ स० ॥ द्रुपद राजा निज पुर आवी
 यो, मिलीने पान्धवच ॥ स० ॥ चु० ॥ २१ ॥ गजपुर
 नगर सिणगारयो चिहु दिशे, भिलीया लोक अपार
 ॥ स० ॥ उनी टोले टोले गोरडी, गावे मगल च्यार ॥
 स० ॥ चु० ॥ २२ ॥ उंठव मोहठव विविध प्रकारशु,
 जोता अचरिज कोरु ॥ स० ॥ अनुक्रमे आया निज
 महीलमा, पडू सूतनी जोरु ॥ स० ॥ चु० ॥ २३ ॥ प
 डू नूपती सहु राजा नणी, सतोखी सुखदाय ॥ स०
 ॥ करी विविध प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोच व
 णाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २४ ॥ विनय करी पगे लागी
 द्रोपदी, सहुने दिधी शीख ॥ स० ॥ नृपति पोहोता नि
 ज निज स्थानके, मारग खाता इख ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥ २५ ॥ कुति मन हरखीत हुइ घणी, लागी बहुअर
 पाय ॥ स० ॥ पुत्रवति होजे तु बहु, ए आशीष सो
 हाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २६ ॥ नीत नीत नवला रग वधाम
 णा, नव नव मगल माल ॥ स० ॥ गुणसागर सूरि पुण्ये
 लह्यो, एनुणविस सोमी ढाल ॥ स० ॥ चु० ॥ २७ ॥
 चोपइ ॥ खड खड रस बे नव नवो, सुणता मीठा
 साकर जेवो ॥ श्री हरी वश चरित्र जय जयो, ठो
 खरु ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री साळसागरे श्री
 हरीवंश चरित्र वर्णनो नाम शष्ठमो खंड समाप्त ॥

अथ ढाळसागर श्री हरिवंस चरित्र सातमो खड प्रारज.

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वठित फल दा
 तार ॥ अव सप्तम अधीकारनो, नविक सुणो विस्ता
 र ॥ १ ॥ नग्री श्री मणिचूडानि, खेचर कियो अपहा
 र ॥ अर्जुन हुवो वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शु
 रवीर गुण आगलो, पारथ प्रबल प्रताप ॥ देखी पाडू
 प्रथविपती, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नद
 धरमातमा, नृप पदवि थापत ॥ सकल धरानि साहि
 वी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अवर जिम दिनकर क
 री, ध्वज करी देजल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथ
 वी शोनी तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देशी ॥ प्रथवी रसवती
 खरी, तरुवर अधीक फलतारे ॥ दूध घणो सुरनी त
 णो, माग्या धन वरसतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जा
 ण ए ॥ ए आकणी ॥ लाज घणो व्यापारमें, चाकर
 बहुला आसोरे ॥ जीह्नुकने जीह्ना घणी, न रहे को
 इ निरासोरे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवती तो कामनी, सुहा
 गण सोजागोरे ॥ जोर जलाइ आदरे, घर घर दिजे
 तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बेटा माने बापने, पूजे मायना
 पायोरे ॥ गुरुने माने चेलना, वरते निरतो न्यायोरे
 ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहा, अवर नको
 विपणितोरे ॥ बहु नगती सासु तणी, सोक्या माहि
 प्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप इणवे हिंसका, जुठ गिलने

॥ ध० ॥ २८ ॥ हरि हलधर आदि करी, साजन माहि
 सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निज निज
 गेहोरे ॥ ध० ॥ २९ ॥ वीसोत्तर सोमा ढालंम, प्रिती त
 णो अर्धाकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा
 जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसु, मुख मिठा चित
 कूड ॥ पान्त्र कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥
 ॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान ॥
 मुजसु हशिया हासते, साले साल समान ॥ २ ॥
 जिणशु तेण प्रकारशु, को करी दाय उपाव ॥ जोमी
 बनावु पाडवा, तो हु राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार
 करता थका, जाइ सघला ताम ॥ एहवे तिहा कण
 आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हु तुम साथे न वोळु ऋपज्जि
 ॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय वोलावे, मामाने हेत
 आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी जाखे, वैरी तणो ब
 ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मैलो अधिक कुशेलो, को
 रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाह तणे वळे वलीयो,
 बलबल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पाडव सजानी
 शोना देखी, मुज हुवे दु ख अपारोजी ॥ वली पाडव
 ने पचाली हशिया, कियो अध तणो कुमारोजी
 ॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलु नवी किधु, वघती
 वैरी वेलजी ॥ मूल थकी जो वेदत एहने, तो पामत जस

केलजी ॥ म० ॥ ४ ॥ हिवे पांडव साथे नवी चाले,
 एहनो सबलो साथजी ॥ जाइ पच माहोमाही सचे, हेत
 घणो हरी नाथजी ॥ म० ॥ ५ ॥ एक उपाव अठे मुऊ आग
 ल, देव पासा सुख दायजी ॥ देश बनावु जीसि कपटे,
 जुवा खेलावी रायजी ॥ म० ॥ ६ ॥ इम विच्यार करी
 पिताने, हरख्यो मन राजानोजी ॥ शकुनी चेद पासा
 नो जाणे, माने माहूरु मानोजी ॥ म० ॥ ७ ॥ पाम्ब
 ने तुमे आही तेनावो, विदुर मोकली तातजी ॥ सजा
 रचीने द्यूत रमाडु, चाले वन विख्यातजी ॥ म० ॥ ८ ॥
 सजा करावी द्रव्य लगावी, शोचानो नही पारजी ॥ प
 धरावी सिंघासण माख्यो, उठव विविध प्रकारजी ॥
 ॥ म० ॥ ९ ॥ तेनी हरी हलधरने पाडव, तेच्या दशे
 दसारजी ॥ बहु सनमानी पाडव साये, पोखे प्रेम अ
 पारजी ॥ म० ॥ १० ॥ हुवो प्रात सजामा आयो, दु
 र्योधन चूपालजी ॥ शतधात सुनट सघाते, सेन्या स
 वि सजालजी ॥ म० ॥ ११ ॥ पायक पोताना सघला मे
 ल्या, योध तणे त्या द्वारजी ॥ आयुध कवच टोप तनु
 सजीया, आया सजामजारजी ॥ म० ॥ १२ ॥ गाम
 गामथी तुरगम आवे, मदगल ताजा तगजी ॥ जमी
 त पाखर ऊलके अग माही, नाभे शिश मन रगजी
 ॥ म० ॥ १३ ॥ निपम द्रोण कर्ण दु शासन, शकुनी
 सबल सुत एहजी ॥ ऋपाचार्यने अश्वथामा, वाहीक
 अति बल देहजी ॥ म० ॥ १४ ॥ सजा मध्य जड र

॥ ध० ॥२८ ॥ हरि हलधर आदि करी, माजन माहि
सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानायो, पोहता निज निज
गेहोरे ॥ ध० ॥२९ ॥ वीसोत्तर सोमा ढालंम, प्रिती त
णो अर्धीकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा
जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसुं, मुख मिठा चित
कूड ॥ पान्त्र कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥
॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान ॥
मुजसु हशिया हासते, साले साल समान ॥ २ ॥
जिणशु तेण प्रकारशु, को करी दाय उपाव ॥ जोमी
बनावु पाडवा, तो हु राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार
करता थका, जाइ सघला ताम ॥ एहवे तिहा कण
आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हु तुम साथे न बोळु ऋपनजी
॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय बोलावे, मामाने हेत
आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी जाखे, वैरी तणो ब
ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मैलो अधिक कुशेलो, को
रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाह तणे बले बलीयो,
बलबल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पाडव सजानी
शोना देखी, मुज हुवे दु ख अपारोजी ॥ वली पाडव
ने पचाली हशीया, कियो अध तणो कुमारोजी
॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलु नवी किधु, वधती
वैरी वेलजी ॥ मूल थकी जो वेदत एहने, तो पामत जस

॥ म० ॥ २४ ॥ प्रथम माव नारुयो राजाए, बोल्यो श
 कुनीआराजी ॥ जित्यो ए दुर्योधन राणो, पाडु तणा सु
 त हारयाजी ॥ म०॥२५॥ अरिने डावे जुवो खेलावे, वि
 दुर तणे नही सारेजी ॥ हयवर गयवर रहवर पुरवर,
 राज अने त्रिय हारेजी ॥ म०॥२६॥ राज सघलो करी
 आपेवस्य, पचाली तेमावेजी ॥ निरजय थइ नरु चा
 ल्या वेगे, पचाली मदिर आवेजी ॥ म० ॥ २७ ॥ पर
 पुरुष दिठा आवता, घरमा पेठी नारीजी ॥ दाशीए
 तिहा राख्या वारी, नवी लोपीजे कारजी ॥ म०॥२८॥
 फिरी पाठा आया सुजट, स्वामी अबला नावेजी ॥
 नाखे दुर्योधन मठर धरतो, ए परोहितथी शु थावे
 जी ॥ म०॥२९॥ उठ दु शासन जातु वेगे, लाव्य नारी
 मुऊ पासेजी ॥ ते दिन सुतु विसरयो जाइ, सहु देखता
 किधी हाशीजी ॥ म०॥३०॥ रोस नरयो दु शासन राणो,
 आवे करत आवाजजी ॥ देखी द्रोपदी आसु ढाले, शि
 रहेशे मुऊ लाजजी ॥ म०॥३१॥ नणे दाशी मोटा तु
 म राणा, अबलाशु सो प्राणजी ॥ मेरुकि मत तजे मर
 जादा, मानो वचन राजानजी ॥ म० ॥ ३२ ॥ चरण प्र
 हार हणी दाशीने, आयो मदिर मांहीजी ॥ नारी नाशी
 नितर जाइ, दुर्बुद्धी केने थाइजी ॥ म० ॥ ३३ ॥ रीस
 करीने मारी ते नारी, लीधी जाली केसजी ॥ धाय
 पुकार करे विलपती, आवला बाले वेसजी ॥ म० ॥
 ॥३४॥ जाइ मारे नथी अवसर, किम आउ सजाम

ह्या तरवारी, युद्ध जाणी तिहा प्रौढजी ॥ गंड निशाण
 गनीर स्वर वाजे, जोइ विदुर थयो दग मृदजी ॥
 ॥ म० ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सजा मन्थे बेठा, पावल सद्
 राय राणजी ॥ तिणे समे पाडव पवारया, जिम नि
 शा प्रगटीत जाणजी ॥ म० ॥ १६ ॥ पाडवने सर्व स
 जा देखामी, जोइ थया रलीयातजी ॥ प्रिती करी दु
 र्योधने काढी, द्युत क्रिमानी वातजी ॥ म० ॥ १७ ॥ आ
 पणे रमोए इहा वेहु जाइ, रमत सजामाहि बेठार्जी ॥
 जिम अर्जुनने सहदेव तिहा, नकुल चिता माही पे
 ठार्जी ॥ म० ॥ १८ ॥ युधीष्टीर कहे सुणो दुर्योधन, वे
 द्युत राजवी कर्मजी ॥ परनारी सग पशु वध करवो, ए
 महत तणो नही धर्मजी ॥ म० ॥ १९ ॥ हगी बोल्यो
 राय दुर्योधन, सत्य कहु धर्मरायजी ॥ क्वत्री तणो ध
 र्म द्युत आखेठक, करता सुखे दिन जायजी ॥ म०
 ॥ २० ॥ बलतु वचन कह्यु जलु रमशु, कुणे न रा
 ख्या वारीजी ॥ अर्जुननु अजिमान न राख्यु, थइ बे
 ठा जुहारीजी ॥ म० ॥ २१ ॥ दुर्योधन दु शाशन शकु
 नी, मिळी कर्ण कुमती एहजी ॥ पाडव प्रते वायक जा
 खे, सजा सुणता तेहजी ॥ म० ॥ २२ ॥ कायक होड
 वदीने रमीए, तो ते उलट थायजी ॥ जे काइ होड क
 रो ते आपु, इम जाखे युधीष्टिर रायजी ॥ म० ॥ २३ ॥
 प्रथम डावमें शु आपवु, कहो युधीष्टिर रायजी ॥ स्व
 रथ पलाण सहित ए घोडा, आपु मुख केहेवायजी

हो ॥ आवो धावो उतावलां, सियल तणा रखवाल
 हो ॥ कु० ॥ १ ॥ परमेष्ठी मन ध्यावती, जिनशास
 न शीर ताज हो ॥ दुष्ट तणे हाथेपडी, ठोडावो मुऊ
 आज हो ॥ कु० ॥ २ ॥ गागेयने गुरु देवता, आणी
 ग्रहि जिम चेरि हो ॥ दुरमती आइ ए सहुने, किण
 हिन पाठि फेरी हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ पाच पति शीर
 माहरे, पिण नविजळ्या कोइ हो ॥ मानी मान महाव
 लि, वेठा निचु जोइ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ हाक वागी पु
 र शेहेरमा, करे किसु किरतार हो ॥ पाडव केरी प्रेम
 दा, लुटे सजा मजार हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ दुष्ट दु शा
 सन खेंचियो, द्रोपदी चिर चतुर हो ॥ आवी ताम उ
 ना रह्या, सानिध्यकारी सुर हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ चीर
 अमुलख दुसरो, ढाक्यो सती शरीर हो ॥ ते पिण खे
 च्यो तिसरो, पूरयो नवरग चीर हो ॥ कु० ॥ ७ ॥
 देखो राड कपटणी, पहिस्थ्या जाजा चीर हो ॥ ल्यो
 उतारी वेगसु, कहे दु-शासन वीर हो ॥ कु० ॥ ८ ॥
 इम अनुक्रमे पूरीयां, आठोत्तर सो पर्म हो ॥ शील
 प्रजावे राखीयो, सजा माहि शर्म हो ॥ कु० ॥ ९ ॥
 श्वेत निला रातमा, नारी कुजरवान हो ॥ एक एक
 पे रग आगला, पूरया श्री जगवान हो ॥ कु० ॥ १० ॥
 जैजैकार देवे किया, सतिय तणो सत जाण हो ॥
 दुष्ट दु शासन जाखो पढ्यो, हुवो अवीक खिसाण
 हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ नीषम जाखे जूपति, नीम अर्जु

ऊरजी ॥ राजा सहु मुने देखेओ अने, किम रहेशे मु
 ज आचारजी ॥ म० ॥ ३५ ॥ नारी चिते हवे किम
 होस्पे, हारठे मुऊ कतजी ॥ कुण जिवता मुऊने ताषे,
 सही यया कलपतजी ॥ म० ॥ ३६ ॥ गागेयने गुरु
 द्रोणाचारज, वेठा सहु राजानजी ॥ सना विच दुय्ये
 धन आगे, उनी राखी आणजी ॥ म० ॥ ३७ ॥ क
 हे दु शासन वेसो खोले, निठरूरी मे लानीजी, थारी
 ते गम फिरीयो पाणी, खीजवशे कहे नानीजी ॥ म०
 ॥ ३८ ॥ रिसाणो दु शासन राणो, खंचे विर अजा
 णजी ॥ गुणसागर सो एकवीसमी ढाले, होशे सत
 परमानजी ॥ म० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गा
 ज ॥ ठाडो पटराणो पणो, पठी करजो लाज ॥ १ ॥
 तु हशीयी मुऊने, आज यइ आधीन ॥ लाज न रा
 खु ताहरी, इम जाखे मती हीन ॥ २ ॥ कुबुधी वचन
 इम साजली, कत सामु जोवे नार ॥ नीम थयो तव
 रातडो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुण्य
 आपणा, तो किम हरीए विर, ते माटे नवी बोलवो,
 राखो समता धरी धीर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथ
 णी, जलथ्यो दु ख अगाह ॥ ढाकी अग तनु कपती,
 नयणे नीर प्रवाह ॥ ५ ॥

ढाल १२२ मी ॥ शियल सरु तरुवर शेवीए ॥ ए
 देशी ॥ कुण पत राखे माहरी, कोप्यो दुरीजन काल

कुता मात हो ॥ कु० ॥ १८ ॥ आगल आवी नामी
 यो, माताजीने शीस हो ॥ आज पुत्र मे साजल्यु, दु
 हवाणा तुम दिग हो ॥ कु० ॥ १९ ॥ हु आवीगि तु
 म केडले, मेतो घडी न रहेवाय हो ॥ पुत्र पाखे माय
 की, तोले हिणि थाय हो ॥ कु० ॥ २० ॥ एतले विदु
 र आवीया, माजी कहे एम वाण हो ॥ राजा तुमने
 ए शु थयो, हूता अधीक सयाण हो ॥ कु० ॥ २१ ॥
 विदुर कहे हु शु करु, माहरु कांड न थाय हो ॥ गागे
 य द्रोण ए दु ख धरे, पिण दुष्टने न केहवाय हो ॥ कु०
 ॥ २२ ॥ माजी मेलो इहा किणे, रेहशे अमारे पास
 हो ॥ राजा नीपम जणावीने, तुम्हे चालो वनवास
 हो ॥ कु० ॥ २३ ॥ शिख आपी निज नारीने, रेहेज्यो
 माजी पास हो ॥ सेवी तृण्या अरु नूखकी, दु ख घ
 णो वनवास हो ॥ कु० ॥ २४ ॥ केम रहेवाये मुऊथी,
 वैरी बहुलो साथ हो ॥ लाज न राखी माहरी, इणे
 ग्रह्यो मुऊ हाथ हो ॥ कु० ॥ २५ ॥ वेश खोले कहे मु
 ऊने, साजलतां तुम कत हो ॥ जो मुऊने नवि तेडशो,
 तो आणीश मुऊ अत हो ॥ कु० ॥ २६ ॥ चाले सा
 थे प्रेमदा, सासुने पगे लाग हो ॥ माता पिण साये
 हुइ, नहि रेहवा मुऊ लाग हो ॥ कु० ॥ २७ ॥ वडा
 तणे पगे लागीने, तात तणी लेइ शिख हो ॥ पां
 डव वनमे चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कु०
 ॥ २८ ॥ वाविस सोमी ढालभे, कौरव कीधो कोप हा ॥

न बलवत हो ॥ आण न लोणे राजा तणी, नहि तो
 आणे तुम अत हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सती वणु नवि ठे
 नीए, एहने सोयल समर्थ हो ॥ नारी पाम्र कने मो
 कलो, नहितर यागे अनर्थ हो ॥ कु० ॥ १३ ॥ विदुर
 कहे मे पेलु कहु, आचरता परपच हो ॥ आगले अ
 नर्थ नीपजे, जो जो एहना सच हो ॥ कु० ॥ १४ ॥
 कौरव कामनी रमवडे, रोति वनमजार हो ॥ तो मा
 हरु कहु मानजो, जो सत होय ससार हो ॥ कु० ॥
 ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सुत आधला, हियडु फुट्यु आज
 हो ॥ सती वीटवी शु कियो, खोइ सनामे लाज हो
 ॥ कु० ॥ १६ ॥ होइ जाखो राजीयो, ठोडी द्रोपदी
 नार हो ॥ पचाली जग परगटी, सतिव सिरोमणी
 सार हो ॥ कु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वरस वार वनमा वसे, नष्ट चर्या ए एक
 ॥ दुर्योधन कहे पाडु सुत, वली कहु वात विवेक ॥
 ॥ १ ॥ वता पडे जो वरसमा, तो फिरीने वनवास
 ॥ वार वरस लगे भोगवे, एठे माहरी जाप ॥ २ ॥
 आज्ञा ते अगी करी, द्रोपदी बाधव लेह ॥ युद्धीष्टी
 र गजपूरे आवीया, गुरु प्रणमि ससनेह ॥ ३ ॥ प्रेमे
 नमी मा वापने, विरम्या ते तेणीवार ॥ युद्धीष्टीरे मा
 नी कियो, वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल मृलगी तेहीज ॥ मारी मान महाबलि, चा
 लिया वन भ्रात हो ॥ शिख करवा आविया, जिहा ठे

चूए सिंचतारे हा ॥ केडे थया लहि विखवाद ॥ मे०
 ॥ ७ ॥ ते पाचे पुरथी निसरघारे हा, तव नगर थयु
 निस्तेज ॥ जीव जते पचेद्रि विनारे हा, तनुनु न र
 हे जेम तेज ॥ मे० ॥ ८ ॥ युधीष्टीर मावित्रने नमिरे
 हा, बोले एहवा बोल ॥ प्रतिज्ञा अम पालतारे हा,
 वधशे तुमारो तोल ॥ मे० ॥ ९ ॥ सुपुरुपने मान धन
 ठेरे हा, रखे धरो मन खेद, धर्म सदा दिल धारयोरे
 हा, ते साधे अनेक उमेद ॥ मे० ॥ १० ॥ मातजि मो
 ह तणे वशेरे हा, परवश थाए प्राण ॥ विर पलि वि
 र मातनुरे हा, अरिहतनि वहियो आण ॥ मे० ॥ ११ ॥
 अम तात तणि तक साधयोरे हां, सेवजो गुरुना पा
 य ॥ आशिष देवो अमनेरे हा, जेहथी विघन पलाय
 ॥ मे० ॥ १२ ॥ एम अश्वासी सर्व स्वजननेरे हा, पु
 रिजन साहमु जोय ॥ काइ करी होय अमे किलामना
 रे हा, ते खमजो सहु कोय ॥ मे० ॥ १३ ॥ चींतर ते
 नयणे वल्यारे हां, तव सहु पुरना लोक ॥ पिण पग नवि
 चाले पुर नणिरे हां, सहुने वाध्यो शोक ॥ मे० ॥ १४ ॥
 गुणसागर कहे साजलारे हा, ढाल अति रसाल ॥ वि
 सारया न विसरेरे हा, वाहला कोइ काल ॥ मे० ॥ १५ ॥
 ढाल तेहिज ॥ वधावानी देशी ॥ कृष्ण नरेसर
 आवियो, काइ आयो हो आयो बहु परीवारशु ए ॥
 पाडव साथे बोलियो, काइ बोल्यो हो बोल्यो सकल
 प्रकारशु ए ॥ १ ॥ कौरव कूटि काडिए, काइ काडि

श्रीगुण पाउव नवी करे, मरजादानो लोप हो ॥ कृ० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ विहावे अति द्रोपदी, कुर अने करभिर ॥ दि
या उमाइ पान ज्यु, पान्त्र चीम समीर ॥ १ ॥ विदु
र विबुव गुरु सारिखो, देइ शिख विगोप ॥ पोहचाकी
पावो वल्यो, आसु ढाले अशेष ॥ २ ॥ भृष्टदुमन आ
मो फिरी, कपिलपुर आणत ॥ खत्रर तदा वनवासनी,
यादवपति जाणत ॥ ३ ॥

ढाल १२३ मी ॥ हे जादु ऊगमग जोति सुहावे
॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय वापनेरे हा, नयणा
न माये नीर ॥ मे एक कुताने पाडुएरे हा, धरु न जा
ए धीर ॥ मेरे साजना साजलजो सहु कोय ॥ १ ॥ मी
नपणो मुखे आदरिरे हा, पाडु न बोले बोल ॥ धर्म
पुत्र धीरज धरिरे हा, तव करे थइ अमोल ॥ मे० ॥
॥ २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हा, तातजी अमे
वन जाय ॥ सत्य प्रतिज्ञा पालसुरे हां, वधस्ये तव म
हिमाय ॥ मे० ॥ ३ ॥ सुपुरुष न राचे राज्यनेरे हा, राज्य
जाए तो जाउं ॥ सुख दु ख वनथले वेठिएरे हा, पि
ण एक वचन मत जाउं ॥ मे० ॥ ४ ॥ धैर्य धरिने ता
तजीरे हा, आपो अम आदेश ॥ बोल न बोलाए दुखे
रे हा, रोक्यो कठ प्रदेश ॥ मे० ॥ ५ ॥ हा ना काइ
न करी शकेरे हा, वितक जाणिने तेह ॥ बाधव पाचेने द्रौ
पदिरे हा, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ॥ ६ ॥ पडु कु
तिने अविकारे हा, अबाने बाला आद ॥ आसु जले

जणाव्यो हो अरीम पती जोयु धनी ए ॥ ११ ॥ प
 चशी पेट दुखदायकु, दुखदायक हो कस तणो परे जो
 इस्यो ए ॥ गाफील खिजे वडवना, काइ तेहथी हो हु
 शीयारीमें होइज्यो ए ॥ १२ ॥ फागुण कालीचउदश,
 मध्य राते हो करशे तुम्ह सुकुइडो ए ॥ देशी, आग
 उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण नहीं चुहडो ए ॥ १३ ॥
 पच पुत्रसु डोकरी, काइ वहशु हो रातवसा सुख नि
 रमली ए ॥ आग जगी फीरी पाडव पुल्या, सा बुढी हो
 वेटा वहशु परजली ए ॥ १४ ॥ नीमे जुजावल साही
 यो, साहीयो पुरोहित हजुरमा जालीयो ए ॥ पाडवजी
 उवारीया, कांइ काकेहो एह उपद्रव्य टालीयो ए ॥
 ॥ १५ ॥ लोक मिली हाहा करे, काइ हुवो हो एह अ
 कारज अति घणो ए ॥ कौरव तो अति कुरलीयो,
 काइ लोगामे हो दोश उतारण आपणो ए ॥ १६ ॥
 सक कौरवनी खरी, काइ पाडव हो नाठा जाइबे सही
 ए ॥ गिरे पने ने आखडे, काइ जाणे हो दिन रात
 जावे वही ए ॥ १७ ॥ द्रुम गिरीने वन नदी, विसामो
 हो नवी लीए शका परहरीए ॥ दर्नीकुर पग विंवी
 ए, काइ विंधे हो काटा खुचे काकरीए ॥ १८ ॥ थाकी
 माता अति घणी, काइ थाकी हो पचाली पग नवी
 नरे ए ॥ नकुल अने सहदेवजी, कांइ थाक्या हो चा
 लवाने आलस करे ए ॥ १९ ॥ एक खघोले मायनी,
 काइ चोहडीहो बिजे खघोले वहु ए ॥ वधव होइ वा

हो काठि टिजे देशयी ए ॥ राजाजीने थापिए, काइ
 थापी हो थापी शु विशेषयी ए ॥ २ ॥ पाडव बाले
 स्वामीजी, काइ स्वामी हो स्वामी वनभं चालयो ए ॥
 बोल न चूक्यो आपणो, काइ आपणु हो आपणु बो
 ल्यो पालयो ए ॥३॥ देव प्रसादे तुम्हारडे, काइ तुम्हारे
 हो प्रसादे सहु पाधरु ए ॥ होशे कारज सुदरु, काइ
 सुदरु हो सघलु कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ बाइ सुन
 द्रा पुत्रशु, काइ लेइ हो पोहोच्या प्रनु द्वागमती ए ॥
 पचाली पीहरीए, काइ पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति
 ए ॥५॥ साते माणस सचरे, काइ सचरे हो चूख अने
 त्रप अवगणी ए ॥ माता पुत्र सनेहडे, काइ नेहनेहो
 राची नारी अति घणी ए ॥६॥ दिवस केतलाने आतरे,
 काइ आतरे हो पुरोहित पाव धारीयो ए ॥ मोकलियो
 कौरव तणो, काइ कौरव हो कौरवनो हितकारियो ए
 ॥७॥ जाखे देव दया करो, काइ दया हो वनवासे मति
 सचरो ए ॥ खमो अपराध अमारडो, अमारो हो मानेवो
 कह्यो खरो ए ॥८॥ इद्रप्रस्था नामे जलो, पुर आव्यो हो
 कीधी गाढी विनति ए ॥ वइठा तुम सुख जोगवो, जो
 गवो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ९ ॥ धोलो दूध
 विचारी ए, विचारी हो आया वारिणा वति ए ॥ ला
 ख घरे उतारीया, काइ उतारीया हो जाइ मति घटीया
 रति ए ॥ १० ॥ विदुर कियो उपगार हे, उपगार हो
 सुरग वणावी पढवडी ए ॥ कागल माही जणावीयो,

नने वारे, नीम तणे मन रोस थयो ॥ १ ॥ मांसाहा
 री निज आचारी, अबलाने शु चोट करे ॥ जो बलवं
 तो बो मयमतो, मुऊ साहमा पग क्यु न नरे ॥ २ ॥
 घीय शींचाणी आग तणीपरे, तरु उपाडी आइयो ॥
 वृद्ध उखानी नीम नरेसर, राक्षस उपर धाइयो ॥
 ॥ ३ ॥ होत लथा बथ होत बथावथ, उपर तले आ
 वी दोइ ॥ जाय हेडवा कुती शेती, कहे हणीयो तुम्ह
 सुत कोइ ॥ ४ ॥ खरुग सबाही आया धाइ, राजा
 जमरुपी होइ ॥ गदा उपाडी हेठो पाडी, मारी लीयो
 नीमे सोइ ॥ ५ ॥ ताम हेडवा एह कुटवा, साथे
 रही साता पावे ॥ नूली पडी पचाली बाला, देवि त
 व शोधी लावे ॥ ६ ॥ तव ते थाक्या देवि हेडवा, सा
 सु बहुने खाधे धरे ॥ कुतीने राजाजी हठे, नीम हे
 डवा व्याह करे ॥ ७ ॥ मदिर विविध प्रकारे बणावी,
 सेज तणी रचना किजे ॥ पान फूलने तेल सुगंधा,
 वस्त्र अनोपम पहीरीजे ॥ ८ ॥ नीम सघाते सुख वी
 लसता, हेडवाने गर्ज रहे ॥ गर्ज तणी एकाते हेडं
 वा, सासुनीशु वात कहे ॥ ९ ॥ शाल दाल घृत र
 सोइ, तिवण तो खाटा खारा ॥ देवि हेडवा आप स
 मारे, देवर जेठ जिमे सारा ॥ १० ॥ चक्राजीध पुरी
 देवशर्मा धरे, पारुवजी आव्या चाली ॥ सासु जेठ त
 णे आदेशे, हेडवा पिहर हाली ॥ ११ ॥ रोज सुणं
 ता नीम नणतो, ब्राह्मण नारी किउ रोवे ॥ माथे हाथ

धीया, काइ पुठे हो समरवशी होये महु ए ॥ २० ॥
 राजा अर्जुन कर धरी, काइ चाल्यो हो चाल्यो मार
 ग वरुनो ए ॥ माणस पट नीर वाहोया, काइ जाइ
 हो जाइ सुखमें जीमडो ए ॥ २१ ॥ तेवीमा सोमीटा
 लने, काइ टलीयो हो टलीयो उपद्रव्य धर्मयी ए ॥
 श्री गुणसागर सुरिजी, काइ होशे हो होशे सुख सु
 न कर्मयी ए ॥ २२ ॥

दुहा ॥ विपम पय बोली करी, पहुता निश्चल ठा
 म ॥ साय सुइ सुखमे सहु, जीम चल्यो जल काम
 ॥ १ ॥ सरोवर जल लेइ बल्यो, पठे लागी ताम ॥
 तिष्ठ तिष्ठ मुख चाखती, जास हेडवा नाम ॥ २ ॥
 आवीयी मारण जणी, पिण पती करवा काज ॥ वि
 नय करी करजोमीने, आगे उनी लाज ॥ ३ ॥ जीम
 जणे सुण नामनी, तुमे प्रकाशो आप ॥ राखसना
 म हेरवनी, वहीन अतु सकलाप ॥ ४ ॥ तुम हणवा
 हु मोकली, हु मोही तुम देख ॥ प्रचु हुशीयारी कि
 जीए, राक्षस जोर विशेष ॥ ५ ॥ व्याहो मुऊ प्राणे
 श तुम, हु तुम दाशी समान ॥ वनवाशे खिजमत करु,
 जिम वाधे मुऊ वान ॥ ६ ॥ वनवासे शु व्याहवुं, जा
 खे जीम कुमार ॥ आडबर आपे अवसरे, करत न
 शोच लिगार ॥ ७ ॥

ढाल १२४ मी ॥ योगननी देशी ॥ वात करता
 हाली चाली, राक्षस तो आइ गयो ॥ लाते मारी बे

हा तिहा शितलताइहो ॥ ताप हरे परकी तनु केरो, ए
ह तणी अर्धाकाइ हो ॥ २३ ॥ ढाल ए चौबीस सो
मी, वक नामा राक्षस हणीयो ॥ श्री गुणसागर न रहे
बानो, जीम बल जगमाही जणीयो ॥ २४ ॥

दुहा ॥ पाडव प्रजु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हम आज
॥ कौरव केडे लागशे, मतको विणसे काज ॥ १ ॥ आ
धी राते निकल्या, सूतो मूकी गाम ॥ द्वैतवने आया
वही, राखवा निज माम ॥ २ ॥ लोक वचनथी साज
ली, ए सघलो विरतत ॥ दुर्योधन राजा घणो, माने
हर्ष अत्यत ॥ ३ ॥ प्रियवद नामे जलो, दूत महा वा
चाल ॥ काकोजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल ॥ ४ ॥
खबर हुइठे तुम तणी, दुर्योधन नरनाथ ॥ आवे ठे तु
म्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥ ५ ॥

ढाल १२५ मी ॥ पथीडो वात करे धुर ठेहथीरे ॥
ए देशी ॥ द्रोपदिरे द्रोपदि रीसे परजलीरे, बोले रोस
अपाररे ॥ कौरवरे कौरव केम ढाडे नहीरे,
आवे पमीयो लाररे ॥ द्रो० ॥ १ ॥ राजरे राज लीयो
धन सघलोरे, लीयो महातम वीनरे ॥ तो पिणरे पूठन ठ
मे पापीयोरे, पुण्याइ हम हीनरे ॥ द्रो० ॥ २ ॥ धीग
मुऊरे नारीपणु घर तुम्ह तणरे, धीग तुम्ह क्षत्री ना
मरे ॥ बादीरे उपर विवीनी पररे, माडेठे पलाणरे
॥ द्रो० ॥ ३ ॥ सासुरे सासु प्रत्ये बहुअर कहेरे, वीर
जननी ए नामरे ॥ काइरे काइ वरावे हेजथीरे, जाया

लगावी गाढो, ब्राह्मण गहेवरीयो होवे ॥ १२ ॥ जा
 पे वरु नामे एक राक्षस, शिला वीरुवी आवे ॥
 नगर लोक नयर्जात घणेर, वचने पिण अति
 विहावे ॥ १३ ॥ काउसगादिक करणी करता, परमे
 ष्ठी मनमे ध्यावे ॥ राजा प्रजा एक मनावी, उपद्रव्य
 करवा पावे ॥ १४ ॥ राक्षस रोस तजीने सुधी, बात
 राजासु इम जासे ॥ एक एक नर नक्षण कारण,
 नीत पहीचावे मुऊ पासे ॥ १५ ॥ राजा मानी पत्री
 ठाणी, आज हमारो ठे वारो ॥ माता वहीन टावर
 वेटी, रोवेठे ए अवधारो ॥ १६ ॥ केवल ज्ञानी वात
 कहीवी, पाडवयी टलशे कारो ॥ सोतो नाया अम दी
 न आयो, बोले परदेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सहने रो
 वता राखो, थारे वारे हु जाशु ॥ राक्षस हणीने लोक
 सकलनो, हुतो रखवालो थाशु ॥ १८ ॥ आप गयो रा
 क्षस आवासे, हरख्यो देखी उचपणो ॥ सयल कुटवो
 धापी खाशु, एहने तनुनो मास घणो ॥ १९ ॥ माहो
 माही माच्यो जगडो, धगडे कारीज सारीयो ॥ गदा
 प्रहारे बलवल केलवी, जीमे राक्षस मारीयो ॥ २० ॥
 पुष्फ वृष्टी अबरनी वाणी, जय जयकार ते उठली,
 मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, लोगानी पूगी रली ॥ २१ ॥
 जिनवयणे करतुती देखी, लोका पाडव जाणीया ॥
 धन धन माता पिता धन करणी, पाडव सुजस व
 खाणीया ॥ २२ ॥ चंदन चप जिहा जिहा जाए, ति

मुऊ देह मऊाररे ॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करु
 रे, कोइ आगल न लहु हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ वि
 चारे सिद्ध हुवो हरी नदजीरे, गिरी शिखरे बेठो आ
 परे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो
 दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए
 पापथीरे, जिम करतो गिमाररे ॥ आवेरे धनुष्य सवा
 ही साहमोरे, नाणे सकलीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अ
 र्जुनरे अर्जुन सामो होवतारे, धनुष्य छिनाइ लीधरे ॥
 खडगेरे लफता खडग खसोटीयारे, प्रचुसे अधकी कि
 धरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ बायेरे बाथे पनीया रोसशुरे,
 अडीया दोइ ऊजाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आ
 गलेरे, हुवो जस विस्तारे ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ कुसुमरे वृष्ठी थइ
 प्रचु उपरेरे, प्रगढ्यो सुरवर एकरे ॥ माग्यरे माग्य वर
 मुख नाखतोरे, पुठे आणी विवेकरे ॥ द्रो० ॥ १९ ॥ वर
 नीरे पाठे आपण कुणठोरे, कियो किसो जजालरे ॥ वै
 ताढ्येरे वैताढ्य रथनुपुर नलोरे, पुरवर अधीक रसालरे
 ॥ द्रो० ॥ २० ॥ इदररे इदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली
 लघु भ्रातरे ॥ काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति
 उतपातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राक्षसरे राक्षस ते तल ता
 ल तणे वलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ नाख्योरे नाख्यो
 उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२ ॥
 मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा नणीरे, मे दिठा गिरीवर
 अगरे ॥ बलरे बल जोवा माया करीरे, तुमे हु जि

पुण्य नीकामरे ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ पुरुपरे पुरुप सहे किम
 एवडोरे, पीमुन पराजव काजरे ॥ मङ्गलरे मढ मार
 ण न विसरे, अष्टापद घन गाजरे ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ एक जरे
 एकजणी नीरजय थडरे, नारी सिंहणी सोयरे ॥ सासुरं
 पचजणी निज जोवनोरे, वादी गमायो जोयरे ॥ द्रो० ॥
 ॥ ६ ॥ राकरे राक तणी परे मुजनेरे, विगोवी प्रखदा
 माहिरे ॥ पाचरे पाचे उजा जोइयोरे, तरणु न ऋदुं
 प्राहीरे ॥ द्रो० ॥ ७ ॥ मारेरे अने मरे त्रिय कारणेरे,
 जेहने शिर एक होयरे ॥ पुरुपरे पुरुप पचनी पदम
 णीरे, विटवी न उठो कोयरे ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एहरे एह
 वचन नीसुणी तदारे, अर्जुन जीम सहदेवरे ॥ फूकेरे
 फूक दिया सिलगे घणीरे, उठीया ततखेवरे ॥ द्रो० ॥
 ॥ ९ ॥ युगतीरे युगती वचन समजावीयारे, धर्मनद
 राखेवा धर्मरे ॥ जेठरे मासतणी नदीनी परेरे, आया
 ठाम विचारी मर्मरे ॥ द्रो० ॥ १० ॥ प्रियवदरे प्रिय
 वद चरितव विसरज्यो, मारी मान चल्या मतिवतरे ॥
 श्रीगीरिरे श्रीगधमादन आइयारे, गुपतपणो गुणवत
 रे ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ इदररे इदर किल नगर अठे नलोरे,
 तिहा राखी निश्चल ध्यानरे ॥ राजारे राजा इदर तणी
 सुतरे, साधे विद्या सुजाणरे ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ विद्यारे
 विद्या विधी अराधतारे, आवी उजी तामरे ॥ जग
 तीरे जावे श्री अर्जुनजीरे, किधो विद्या प्रणामरे ॥
 ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ विद्यारे जाखे कारज शुं करुरे, वसो

मुञ्ज देह मजाररे ॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करु
 रे, कोइ आगल न लहु हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ वि
 धारे सिद्ध हुवो हरी नदजीरे, गिरी शिखरे वेठो आ
 परे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो
 दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए
 पापथीरे, जिम करतो गिमाररे ॥ आवेरे धनुष्य सवा
 ही साहमोरे, नाणे सकलीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अ
 र्जुनरे अर्जुन सामो होवतारे, धनुष्य ठिनाइ लीधरे ॥
 खडगोरे लफता खडग खसोटीयारे, प्रनुसे अधकी कि
 धरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ बाथेरे बाथे पनीया रोसशुरे,
 अढीया दोइ फुजाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आ
 गलेरे, हुवो जस विस्तारे ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ कुसमरे वृष्टी थइ
 प्रनु उपरेरे, प्रगढ्यो सुरवर एकरे ॥ माग्यरे माग्य वर
 मुख जाखतोरे, पुठे आणी विवेकरे ॥ द्रो० ॥ १९ ॥ वर
 नीरे पाठे आपण कुणठोरे, कियो किसो जजालरे ॥ वै
 ताढ्यरे वैताढ्य रथनुपुर चलोरे, पुरवर अधीक रसालरे
 ॥ द्रो० ॥ २० ॥ इदररे इदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली
 लघु भ्रातरे ॥ काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति
 उत्पातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राद्धसरे राद्धस ते तल ता
 ल तणे वलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ जाख्योरे जाख्यो
 उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२ ॥
 मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा जणीरे, मे दिठा गिरीवर
 अगरे ॥ बलरे बल जोवा माया करीरे, तुमे हु जि

तो जगरे ॥ द्रो० ॥ २३ ॥ रथरे रथ वेग्री प्रजु आर्की
 यारे, राक्षस उपर सूररे ॥ जीव्येरे जीव्यो राक्षम
 जीयारे, सुजस तणा वरतूररे ॥ द्रो० ॥ २४ ॥ इंदरे
 इंदर सनमान लही घणोरे, प्रणम्बा मार्जी पायरे ॥
 चित्रागदरे चित्रागद मुखचरीत्र सुणातारे, सहु मन ह
 रखीत आयरे ॥ द्रो० ॥ २५ ॥ ढालजरे ढाल पचवि
 ससोमी जलीगे, हणीयो ते तल तालरे ॥ श्रीगुणरे श्री
 गुणसागर सूरजीरे, पाडव जश विशालरे ॥ द्रो० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ माता पुत्र अने बहु, वेठा सुख पावत ॥ क
 मल एक कचन तणो, अवरयी आवत ॥ १ ॥ पचा
 ली करमे लीयो, कमल वास निज सास ॥ लेता मन
 वाध्यो घणो, पामी अति जल्हास ॥ २ ॥ चामनी जा
 खे निमशु, एहवा कमल उदार ॥ आणी आपो मुऊ
 जणी, नाह मतलावो वार ॥ ३ ॥

ढाल १२६ मी ॥ शियलसु रगी चुदडी ए देशी ॥
 लावोने कमल सुहामणा, कहे नीम जणी एम वाणरे ॥
 हुश करु तुम उपरे, मारा पीजजी जीवन प्राणरे ॥
 ला० ॥ १ ॥ ए कमल मुऊने गमे, लावो नाथ मतला
 वो वाररे ॥ तुम सरिखे प्रितम उतेरे, मुऊ लाखेणो अव
 ताररे ॥ ला० ॥ २ ॥ चामनीनो मन राखवा, उठ्यो
 नीम कुवर मतिवतोरे ॥ पतिवृताशुं प्रितमी, तिण बोल
 न फिरी वालतोरे ॥ ला० ॥ ३ ॥ चाल्यो मारग वकडो, काइ
 उलघी विखम वाटरे ॥ देखी कमल वन शोचतो, अवे

हुश धरी वन घाटरे ॥ ला० ॥ ४ ॥ लेइ कमल पाणे
 वल्यो, पुठे हुवो रत्नक देवरे ॥ बाधी राख्यो नीमने,
 काइ हाली न सके हेवरे ॥ ला० ॥ ५ ॥ फरके नेत्र
 दाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे ॥ नीम सकट माहीं
 पळ्यो, जोता नवी आयो सुज वाटरे ॥ ला० ॥ ६ ॥
 उठा ताम उतावला, वधव च्यारे आणी सनेहरे ॥ पो
 होंची न सक्या तेहथी ॥ तव बाधीया पिण तेहरे ॥
 ला० ॥ ७ ॥ कुता माता द्रोपदी, काइ एकलडी निर
 धाररे ॥ काजसग ध्यान करी रह्या, सारी रात दिवस
 मजाररे ॥ ला० ॥ ८ ॥ केवल उठव कारणे, सुरपति
 आपे तव जायरे ॥ सति उपर सुर आवता, तव जान
 रह्यो खलायरे ॥ ला० ॥ ९ ॥ ज्ञानवले तव देखीयो,
 काइ सति तो रहीं विदायरे ॥ पाच पाडवने शखचुन,
 काइ बाधीया अति दुख थायरे ॥ ला० ॥ १० ॥ सुरप
 तिण सुर मोकल्यो, सो आयो गोमावण काजरे ॥ ते कहे
 लेता कमलने ॥ मे बाधीयाठे आजरे ॥ ला० ॥ ११ ॥
 गोक्यो इद्र आदेशथी, करी प्रिती घणी शखरायरे ॥
 कमल लेइने आवीया, काइ प्रणम्या माजी पायरे ॥ ला०
 ॥ १२ ॥ माता जिडी हेजथी, काइ चा पे हियना सा
 यरे ॥ उपद्रव्य टलियो धर्मथी, हेजे मिलियो सघलो
 साथरे ॥ ला० ॥ १३ ॥ बविसा सोमी ढालमे, श्री
 जैन तणो धर्म कीजेरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, तो
 ततक्षण कारज सिजेरे ॥ ला० ॥ १४ ॥

दृहा ॥ बोलि गया पट मास जत्र, पुनरपी
 सोइ ॥ द्वैत वने आनदम, वासर जाना जोइ ॥ १
 खबर लेइ दुर्योवन, कीधी टोड तेवार ॥ साहण
 हण सामटे, आयो विपन मजार ॥ २ ॥ हरी सुत
 त्रागद तणो, सरोवरठे सुविशाल ॥ रखवाला
 रोकवे, जोर करे नूपाल ॥ ३ ॥ चित्रागद आयो
 ढी, कौरव साथ विकराल ॥ सिंचाणो जीम चरक
 लि, लेइ गयो ततकाल ॥ ४ ॥ बूरो वावत पर तणो,
 बूरो लहे नर आप ॥ केडे पन्ता पाडवा, कौरव
 पति सताप ॥ ५ ॥

ढाल १२७ मी॥जीवरे तु शियल तणो कर सग॥ए
 देशी ॥ किधो लाने आपणोजी, कौरवपति जेम जोय ॥
 चित्रागद लेइ गयोजी, परवश दुखियो होयरे ॥आ सुण
 जोजी कौरवपति जेम होय ॥१ ॥ ए आकणी ॥हाहाकार
 सहको करेजी, जोर न चाले कोइ ॥जेहने शीर आवी
 पनीजी, नीर वहे शिर सोइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ सापे
 ताक्यो मीडकोजी, मोरे ताक्यो साप ॥ निज स्वार्थनो
 आधलोजी, मारण न जाणे आपरे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 वगलो निंदे हसनेजी, मणिने निंदे काच ॥ काम पढ्या
 यी पारखोजी, सहने प्यारो साचरे ॥ आ०॥४॥ नीड प
 ष्या जाइ जलाजी, लोक बिराणा जाण ॥ कौरवपतिनी
 कामनीजी, वेगे करी विलखाणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ यु
 धीष्टिर नृप आगलेजी, करती अधीक विखास ॥ गो

त्र तणा गोवालियाजी, सांजल अम अरदासरे ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ कुल मडण कुल केसरीजी, जेठ जुगतसु जो
 य ॥ पीमाइ जाइ घणुजी, कवण निंद तुम्ह सोयरे ॥
 ॥ आ० ॥ ७ ॥ मयीयो मिली घनेदेवताजी, रतन
 किया अपहार ॥ ऋषि अगस्ति पिवताजी, नाम लियो
 जल खाररे ॥ आ० ॥ ८ ॥ वडवानल जल बालवे
 जी, पाज तणो जसवाद ॥ राम करवे सायरुजी, न त
 जे निज मरजादरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ गुणग्राहि तो गु
 ण ग्रहेजी, अवगुण नाखे दूर ॥ दात वखाण्या स्व
 आननाजी, श्री हरी होय हजूररे ॥ आ० ॥ १० ॥ रा
 जा हरि सुत शु कहेजी, वेगे मत लावो वार ॥ दुर्योध
 न गोडाववाजी, थाउ शूर अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥
 विनय करीने विनवेजी, अर्जुन जीम कुमार ॥ व्याधी
 टली वीण औपधेजी, मौन तणो अधिकाररे ॥ आ०
 ॥ १२ ॥ राजा नाखे जाइयोजी, क्षत्री केरो धर्म ॥
 वहिला थाउ वाहरुजी, सचवाइ कुल कर्मरे ॥ आ० ॥
 ॥ १३ ॥ आ इशन जो इश नहिजी, चाल्यो श्रीहरी नं
 द ॥ चित्रागद साथे अढ्योजी, पायो सुजस आणदरे
 ॥ आ० ॥ १४ ॥ गोडावी कौरवपतिजी, वेशी विमा
 ने आय ॥ चित्रागद चतुराइ पणेजी, अर्जुनने पोचा
 यरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ जब आया राजा कनेजी, दु
 र्योधन दु ख पाय ॥ शिक्षक चढियो मस्तकेजी, ताम
 घणु अकुलायरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ न नमे किलकनी

परेजी, खेचर गरदन साहि ॥ पगे लगायो
 परवश हठ न काइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ कुशल पूजते
 बोलिगोर्जा, निज चित्त सरखो ताम ॥ रिपु पिडा मा
 ले नहिजी, साले तुज प्रणामरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ रो
 स न आयो पाडवाजी, वीतलस स्यो गोह ॥ सतोषी
 घर मोकल्याजी, द्रोहि न तजे द्रोहरे ॥ आ० ॥ १९ ॥
 दुष्ट न ठमे दुष्टताजी, कैसे हु गीए देत ॥ दोइयो सो
 वारकेजी, काजल होय न श्वेतरे ॥ आ० ॥ २० ॥ स
 तावीससो ढालमेजी, जला जलपण साची ॥ श्रीगुण
 सागरसूरि कहेजी, समयसमयघनमार्चरे ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विदुरने जीपम कहे, दुर्योधन स्यु ताम ॥
 दिठा अर्जुन एकणा, सुनट पणाना काम ॥ १ ॥ पा
 डव उपगारी साहि, प्राण दान दातार ॥ रे कृतघ्न
 कृतघ्नपणो, क्युं न तजे अविच्यार ॥ २ ॥ शिख न
 एकाहि मन वसी, सामो थयो सरोप ॥ औषध विविध
 प्रकारना, माने नहि त्रिदोष ॥ ३ ॥ जयद्रथ राजा आ
 वियो, जगनिपति सुविच्यार ॥ जक्ती करी जल जो
 जने, लेड चाल्यो नार ॥ ४ ॥

ढाल १२८ मी ॥ सुमति सदा दिलमा धरो ॥ ए
 देशी ॥ साजलजो वात विनोदनि, जयद्रथ राजा वि
 रुयात ॥ शयाने ॥ मारगे जाता उतरयो, दुर्योधननो
 जामात ॥ श० ॥ साजलो वात विनोदनी ॥ १ ॥ कौश
 ल्या पति दुष्टने, कुताए धरि हेत ॥ शयाने ॥ जमाइ

तु उतरघो, सघलां साथ समेत ॥ श० ॥ सा० ॥ २ ॥
 अर्जुने विधाने वले, रसोइ निपाइ रग ॥ श० ॥ जो
 जन पिरस्या जावता, कुताए उज्वल रग ॥ श० ॥
 सा० ॥ ३ ॥ मजन जोजन युक्तिसु, उपर आपी त
 बोल ॥ श० ॥ प्राहुणा जाणी प्रेमसु, सहु करे रग रो
 ल ॥ श० ॥ सा० ॥ ४ ॥ अरहा परहा सहु गया, ते
 लपटे लेइ लाग ॥ श० ॥ रथमा घाली द्रौपदी, रुद
 यमा आणी राग ॥ श० ॥ सा० ॥ ५ ॥ जयद्रथ ते
 महा चोरटो, रथ खेडी नाठो जाय ॥ श० ॥ वाहरे ते
 पुठे वेगशु, नीम अर्जुन जव धाय ॥ श० ॥ सा० ॥
 ॥ ६ ॥ कुता कहे तव हे वत्सो, गुनहि पणे ए रगे मा
 र ॥ श० ॥ जामात ठे ए माहरो, रखे मारो तुमे ठा
 र ॥ श० ॥ सा० ॥ ७ ॥ नीम अर्जुन वे जयकरा,
 बहु बहु नाखता वाण ॥ श० ॥ जयद्रथने जइ मि
 ल्या, तव तिहा पढ्यो जगाण ॥ श० ॥ सा० ॥ ८ ॥
 नीमे गदाने घाते करी, तेहनो रथ करयो चकचूर ॥
 श० ॥ काचा कुन तणी परे, देखी दल सहु नाठो दू
 र ॥ श० ॥ सा० ॥ ९ ॥ अर्धचद्र बाणे अर्जुने, ध्व
 जा ठत्र दाडि मुठ ॥ श० ॥ जयद्रथना तव ठेदिया,
 तव चुडो पडयो ते नूच ॥ श० ॥ सा० ॥ १० ॥ मा
 त वचन सचारिने, जीवतो मेल्यो जयद्रथ ॥ श० ॥
 लुण हरामी जे हुए, ते स्यो सावे अर्थ ॥ श० ॥ सा०
 ॥ ११ ॥ गुणसागर कहे साजलो, ए कही ढाल रसा

ॐ ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नधि टले, जेहने जेहशो हु
 र डाल ॥ श० ॥ सा० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मुजानी परे कुटियो, मृठ अने शिर केस ॥
 ण सघाते कापिया, जाड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

डाल तेहिज ॥ जगकमल ठनी जायोरे वाला, शा
 म मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवकृपि एक दिवस आ
 पो, करण अति उपकाररे ॥ पारुवाशु प्रगट जाले,
 कौरवा अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ जोर जोर पणु नव
 गडे, प्रत्यक्ष देख्यो एहरे ॥ कष्ट वकी गोडाइ आ
 णे, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
 रिया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिंह आखी समा
 यी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ दूध दि
 यो साप मुखे, गरल हुवे जेमरे ॥ आवमे उपगार करी
 यो, होइ जाइ तेमरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
 मति, क्रिया अपर करतरे ॥ कियाहिथी निच न करे,
 अवतो द्वेष धरतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ बिंदुनो तो सिंधु
 जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो बिंदु माने,
 निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेष नागवे सहस फ
 णपति, जीच्या दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
 तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अकुश दिपत
 माही, नावा नीर मजाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
 हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चद्रने जे करी कालि
 मा, चूलीयो जगवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

वाधतो थो वानरे ॥ दे० ॥ ९ ॥ दशदिसा थेइ अठे
 दावी, कहे द्रुवासा शापरे ॥ लाखने रस सरिखो करे,
 देइ राखी गपरे ॥ दे० ॥ १० ॥ व्याप विसनो वाधी
 मूकी, करे रही विधायरे ॥ निचनी तो जीन परगुण,
 कही न सके न्यायरे ॥ दे० ॥ ११ ॥ हेतु तो कह्या
 मे नव, कौरवा समजायरे ॥ घडेतो चोपडे गटो, ला
 गतो न देखायरे ॥ दे० ॥ १२ ॥ सनामाही अति उ
 ञ्हाही, बे प्रवाहे वयणरे ॥ नाखे जोले स्वजन टोले,
 कियो अधिक कुचयनरे ॥ दे० ॥ १३ ॥ पाडवने ह
 णे जे नर, लहे आधो राजरे ॥ पुरोहित सुत ग्रह्यो
 विनो, करे विप्र अकाजरे ॥ दे० ॥ १४ ॥ प्रौढ वि
 द्या नामे कृत्या, करे साधन साररे ॥ सबल दल बल
 साजी सुदर, अठे आवणहाररे ॥ दे० ॥ १५ ॥ क
 री मसुरती सना विसर्जी, चितवे चित चावरे ॥ अ
 ति उपद्रव्य हरण जाणो, तप तणो सुप्रजावरे ॥ दे०
 ॥ १६ ॥ काउसग्ग करत सघला, धरे श्री जिन ध्यान
 रे ॥ सूरने सनमुखा निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥ दे०
 ॥ १७ ॥ बोलीया इम दिवश साते, ध्यानसु धीरे
 गातरे ॥ आठमे दिन दिशाने मुखे, उठीयो अति वातरे
 ॥ दे० ॥ १८ ॥ घणा हाथी घणा घोडा, घणा रथ घणा लो
 करे ॥ उदधीना कलोलनी परे, सबल दल बल योग
 रे ॥ दे० ॥ १९ ॥ आइया तव ध्यानमाथी, बहु सासु
 दोयरे ॥ घाली रथमे लेइ चाल्या, नारी जोर न काइरे

ल ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नवि टले, जेहने जेहवो हु
ए डाल ॥ श० ॥ सा० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मुजानी परे कुटियो, मूठ अने अरि केस ॥
वाण सघाते कापिया, जाड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ जगरुमल ठमी जायोरे वाला, गा
म मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवक्रुपि एक दिवस आ
यो, करण अति उपकाररे ॥ पाप्माशु प्रगट जाखे,
कौरवा अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ जोर जोर पणु नव
ठडे, प्रत्यक्ष देख्यो एदरे ॥ कट वकी ठोडाइ आ
णे, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
रीया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिंह आखी समा
थी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ दूध दि
थो साप मुखे, गरल हुवे जेमेरे ॥ आधमे उपगार करी
यो, होइ जाइ तेमेरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
मति, किया अपर करतरे ॥ कियाहिथी निच न करे,
अवतो द्वेष धरतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ बिदुनो तो सिंधु
जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो बिंदु माने,
निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेष नागवे सहस फ
णपति, जीच्या दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अकुश दिपत
माही, नावा नीर मजाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चद्रने जे करी कालि
मा, चूलीयो जगवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

जाखे मुण जामनीरे, एहनो क्रया नाम ॥ केडे ला
 गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति
 काढी तव कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो
 अति कपतिरे, वाणी वदे अर्जराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स
 हणहारोतो को नहिरे, देवी नुमारो कोप ॥ तो स्या
 माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु
 वाने शु ए मारिएरे, काइ देवि देखेरे विमास ॥ एम
 सुणी अबरे गइरे, करती हड हन हाशरे ॥ रे० ॥
 ॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा नरतार
 ॥ विण नरतारा जामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥
 ॥ ९ ॥ आसु लुहिए आखनारे, नीलीणी जाखे सारा ॥
 सुख दुख आपद सपदारे, लागी डोले लारा ॥ रे० ॥
 ॥ १० ॥ उगे आडबर घणेरे, आथमता नहि वार ॥
 दोय अवस्था नोगवेरे, दिन माहि दिनकार ॥ रे० ॥
 ॥ ११ ॥ सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहगण नायक चद
 ॥ एक पखवाडे वाधतोरे, बीजे थाए मद ॥ रे० ॥ १२ ॥
 लेहरी वाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे
 हवो माणस वज वजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥
 ॥ १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, ऊठो जग व्यव
 हार ॥ रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥
 ॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि
 चि पिउ देह ॥ मुर्ग मीटजासे सहिरे, बेठा थाशे एह
 ॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र नरी पाणी तणोरे, पदमनी पो

॥ दे० ॥ २० ॥ तिहा वृकोदर इद्र नदन, ममर मुर स
 काजरे ॥ मात वठल पिसुन पिना, उपजंठे आजरं ॥
 दे० ॥ २१ ॥ कसाघाते घणु हणता, पिपनी पाडतरे
 ॥ ताम ते तो असुररुपी, तरशमु तामतरे ॥ दे० ॥ २२ ॥
 दिन वचन विचारी वीरा, पुहवी वावतरे ॥ आप आ
 पणे आयुधासु, उल्लहसता आवतरे ॥ दे० ॥ २३ ॥
 पिसुन नाठा जाइ त्राठा, कोन सामो होइरे ॥ विघन ट
 लीयो दैव वलीयो, धर्मयी जय जोइरे ॥ दे० ॥ २४ ॥
 आठावास सोमी ढालमाही, पुरोहित सुत रोसरे ॥
 श्रीगुणसागर सूरि साखी, हुवो हिया सोसरे ॥ दे० ॥ २५ ॥
 दुहा ॥ तृपा व्यापी अति आकरी, खेद करता नूर
 ॥ आया ते सरोवर चली, पिधो जल जरपूर ॥ १ ॥
 जल पियो तृपता हुया, तरु तले ले विश्राम ॥ मुर
 ढाए धरणी पढ्या, नामी न लाने ताम ॥ २ ॥
 ढाल १२९ मी ॥ रतनशी गुरुगुण मिठडारे ॥ ए
 देशी ॥ पुठे आवी द्रोपदीरे, मृत रुपी पढ्यो कत ॥
 देखी अकुलाणी घणारे, आरती अति व्यापत ॥ १ ॥
 रे रे दैव कुलक्षणारे, किंस्यु कुसहज्यो अग ॥ पढी
 यामे पाडे घणारे, करतो रग विरग ॥ रे० ॥ २ ॥
 एतले आवी नीलडीरे, पचालीनी पास ॥ पूरणहारी
 ए जेतलेरे, सोर मच्यो आकाश ॥ रे० ॥ ३ ॥ करती
 आडबर घणारे, धरति रुप कराल ॥ कृत्या नामे ए
 राक्षशीरे, आइ गइ ततकाल ॥ रे० ॥ ४ ॥ नीलणी

जाखे मुण नामनीरे, एहनो क्रत्या नाम ॥ केडे ला
 गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति
 काठी तव कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो
 अति कपतिरे, वाणी वदे अर्जराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स
 हणहारोतो को नहिरे, देवी तुमारो कोप ॥ तो स्या
 माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु
 वाने शु ए मारिएरे, काइ देवि देखेरे विमास ॥ एम
 सुणी अवरें गइरे, करती हड हड हाशरे ॥ रे० ॥
 ॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा नरतार
 ॥ विण नरतारा नामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥
 ॥ ९ ॥ आसु लुहिण आखनारे, नीलीणी जाखे सारा ॥
 सुख दुख आपद सपदारे, लागी डोले लारा ॥ रे० ॥
 ॥ १० ॥ जगे आडवर घणेरे, आथमता नहि वार ॥
 दोय अवस्था जोगवेरे, दिन माहि दिनकार ॥ रे० ॥
 ॥ ११ ॥ सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहगण नायक चद
 ॥ एक पखवाडे वाधतारे, बीजे याए मद ॥ रे० ॥ १२ ॥
 लेहरी वाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे
 हवो माणस वज वजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥
 ॥ १३ ॥ सत्र दिन न हुवे सारिखारे, जूठो जग व्यव
 हार ॥ रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अर्धीकार ॥
 ॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि
 चि पिउ देह ॥ मुर्ग मीटजासे सहिरे, बेठा याशे एह
 ॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र नरी पाणी तणारे, पदमनी पो

खे प्यार ॥ आलस मोडो उठियारे, नारी कृत्यो गुवि
 च्यार ॥ रे० ॥ १६ ॥ विसमय पाम्यो पाड्यारे, एतो अ
 चरिज कोय ॥ एतले प्रगट्यो देवतारे, परम महा सु
 ख होय ॥ रे० ॥ १७ ॥ सुर जाखे स्वामी सुणारे, इ इ
 णामर देव ॥ तूठो तप बलि तुम्ह तणेरे, आयो कर
 वा सेव ॥ रे० ॥ १८ ॥ कृत्या कृत्य निवारवारे, माहा
 रा कीया काज ॥ ए सत्रलाहि जाणजेरे, जग मोटो
 जिनराज ॥ रे० ॥ १९ ॥ समय समरवो हु सहिरे, ब
 हुली करी अरदास ॥ आचूपण आपी घणारे, देव ग
 यो आकाश ॥ रे० ॥ २० ॥ एगुणतिस सोमी ढालमे
 रे, पाप नाठा जाणय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, पाम्व
 पुण्य प्रमाण ॥ रे० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विविध प्रकारे रसवाति, अति रसवाति अ
 पार ॥ आपण काजे निपनि, आइ गयो अणगर ॥
 ॥ १ ॥ जाव घणो आदरपणो, प्रतिलानो ऋषी रा
 य ॥ पाच दिवस सुहामणा, जय जय शब्द सुणाय ॥
 ॥ २ ॥ बोले शासन देवता, सवडर ए वार ॥ पोहतो
 वरस ए तेरमो, गुप्त पणानो सार ॥ ३ ॥

ढाल १३० मी ॥ वली नकुल कहे सुणो वाता॥रा
 जाजी, गोधीक नामे तिहाजी ॥ यइ अश्व पालक अ
 चीराम राजाजी, रहेसु अश्वशाल होशे जिहाजी ॥
 ॥ १ ॥ वली बोल्यो तिहा सहदेव ॥ रा० ॥ गोविंद नामे
 गोवालीवजी, करशु गौपालानु कामा॥रा० ॥ निश्चय लान

ए वाते निहालियोजी ॥ २ ॥ वली दौपदी कहे सुणो
 वात ॥ रा० ॥ हु तिहा सैरधी नामे सहिजी, रहेसु
 सुदर्शना राणिने पास ॥ रा० ॥ तेहने रिऊवसु सेवामा रही
 जी ॥ ३ ॥ अगिकारि निज निज काम ॥ रा० ॥ निज
 निज वेप धारीनेजी, पोहोता विराट नगर नजिक, श्रो
 ताजी, परखी नहि नर नारिनेजी ॥ ४ ॥ तेतो आव्या
 नगर सभीप, श्रोताजी, शस्त्र शशिकोट कोटमा ध
 रयाजी ॥ तेहनो जेद न जाणे कोय श्रोताजी, कल्पांत
 जोए तेहवा करघाजी ॥ ५ ॥ ते सहुणे पुरमा किध प्रवे
 श ॥ रा० ॥ राज धारे जूदा जूदाजी, विराटे आपी बहु
 मान ॥ रा० ॥ निज निज कामे थाप्या सूधाजी ॥ ६ ॥
 सर्वे सुखे समाधे तेह, श्रोताजी, रहेवे विराटना राज
 माजी ॥ कोइ दुहवे नहि तिलमात्र, श्रोताजी, साव
 धान निज निज काममाजी ॥ ७ ॥

दुहा ॥ चोरि नाम ए आपणा, मड देशमे जाय ॥
 वयराटा राजा घरे, रहीया पाडव राय ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ इणपुर कबल कोइ न लेशी ॥ ए
 देशी ॥ कक विप्रनो नाम धरावे, राजाजी अहकार
 रखावे ॥ जीम रसोइदार सुहायो, वृहनटा हरिनद
 कहायो ॥ १ ॥ नकुल निरोपम नाम धराणयो, ग्वाल त
 णी मति तो लहु आणयो ॥ पचाली सैरद्री दासी, मा
 जी राख्या आला रासी ॥ २ ॥ नगर तणे परीसर
 जव आवे, पितृयवने हथीयार ठिपावे ॥ समीत त

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सकल जय वात बतावि
 ॥ ३ ॥ समो पिठाणे सोइ माटी, मुड विचाले मरे
 आटी ॥ चतुर शिरोमणी पाचे भ्राता, एकाते मूकी
 ज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाळी आया, निज नि
 ज कामे सयल लगाया ॥ पुठता ए उत्तर पाया, फ
 रुव घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पाडवजी तो अठे
 वनवागी, तेह यकी हम फिरा उदाशी ॥ राजा जा
 खे जाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥ ६ ॥
 सुखमे रहिए ए घर सपे, अठे तुमारो राजा जपे ॥
 प्रात समे मारिने वदे, शीख लहि सहुए आनदे ॥
 ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी बहिन क
 हाणी ॥ ठिडोत्तर सो किचक चाइ, नृपने साल्मनी
 अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन
 मेल्यो सुविशाल ॥ पाम्बानी जे खबरज लावे, अस
 पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करिने जु
 हार, लावु खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जो
 तो रंगे, मागे जंग ए नूपति सगे ॥ १० ॥ लावो
 मूज पासे लफ्वा दूतो, शक्ति न होय तो बाधीयो पु
 तो ॥ वडा बना इम नूपती जीती, लेतो दान महा
 बल शेती ॥ ११ ॥ मळ देश वैराटो राजा, पुरी स
 चा अधीक दिवाजा ॥ वेठो नूपती परखद्या पूरी, कं
 कविप्रसु सजा सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहा क
 णचाली देखी सजा जाकजमाली ॥ उचो रायने करीय

जुहार, राजा पूढे कवण विचार ॥१३॥ सुण स्वामी हथी
 णापूर नूप, दुर्योधननो दूत अनूप ॥ देश देशना जीती
 राणा, आव्यो आप मनावी आणा ॥१४॥ होय बलीयो
 कोइ मुऊने साधो, नहीतर पुतलु पाए बाधो ॥ किचक
 तव मुठीए बल घाल, उठ्यो कोप करी विकराल ॥१५॥
 आयो नूपती हाली चाली, दूते फगोल्यो पाए जा
 ली ॥ ककनणे वालीयो बलवत, खाय घणुने ठे मय
 मत ॥१६॥ स्वामी जो इहाकण आवे, देश सहना पुतलां
 गोडावे ॥ राजाए तव पुरुषज नेज्यो, सुतो नीम उठावे
 हेजो ॥१७॥ चालो स्वामी राय बोलावे, कक विप्र तुम
 वात वणावे ॥ खाई अन्न खुटाडा कोस, एम वात कहे
 तिहा जोस ॥ १८ ॥ लेइ चाटवो उठ्यो जाम, धरती
 धणवा लागी ताम ॥ चाली आयो सजा मजार, देखी
 दूतने हरख्यो अपार ॥ १९ ॥ आवी कक पाए शिर
 नाम्यु, पढी जोयु नेमल नेम सामु ॥ इहाए जो
 ध किहाथी आव्यो, स्या पुतला पगे बाधी लाव्यो ॥
 ॥ २० ॥ इहा आइने वाकरी बाइ, नही जीवतो जा
 ए जाइ ॥ एम कही माहो माही बलग्या, लोग सह
 जूवे जइ अलगा ॥ २१ ॥ वागे हाथ उठे पडवदा,
 खमेडे मोल नासे नर वृदा ॥ लात प्रहारे प्रथवी पि
 ण ध्रुजे, उडे खेह सूरज नवी सुजे ॥ २२ ॥ उठी क
 चेरी राजा पिण जाग्यो, पढीयो मल्ल नुजावल ला
 ग्यो ॥ एतो पाडव नीमजी दिसे, एम विच्यारयो वि

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सकल जय वात बतावि
 ॥ ३ ॥ समो पिठाणे सोद माटो, मुढ विचाले म्हे
 आटी ॥ चतुर शिरोमणी पाचे भ्राता, एकाते मूखी
 ज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाली आया, निज नि
 ज कामे सयल लगाया ॥ पुठता ए उत्तर पाया, पं
 रुत्र घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पाडवजी तो अवे
 वनवाशी, तेह थकी हम फिरा उदाशी ॥ राजा ज
 खे जाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥ ६ ॥
 सुखमे रहिए ए घर सपे, अवे तुमारो राजा जपे ॥
 प्रात समे माजीने वदे, शीख लहि सहुए आनदे ॥
 ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी बहिन
 हाणी ॥ विडोत्तर सो किचक चाइ, नृपने सालानी
 अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन
 मेल्यो सुविशाल ॥ पारुवानी जे खबरज लावे, लाख
 पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करीने जु
 हार, लावु खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जो
 तो रगे, मागे जग ए नूपति सगे ॥ १० ॥ लावो
 मूज पासे लफवा दूतो, शक्ति न होय तो वाधीयो पु
 तो ॥ वडा बन्ना इम नूपती जीती, लेतो दान महा
 बल शेती ॥ ११ ॥ मळ देश वैराटो राजा, पुरी स
 ना अधीक दिवाजा ॥ बेठो नूपती परखद्या पुरी, कं
 कविप्रसु सजा सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहा
 णचाली देखी सजा जाकजमाली ॥ उजो रायने करीय

आव्यो अश्व चढीरी ॥ फिरता वन आराम, सैरद्री
 द्रष्टे पनीरी ॥ ४ ॥ सतीशुं आय नखत, चालो मुऊ
 घरेरी ॥ हु जग मोठो राय सहु मुऊ आण धरेरी
 ॥ ५ ॥ आपु नवलख हार, चौकी रत्न जमीरी
 ॥ करी थापु पटनार, तुऊशुं प्रित खरीरी ॥ ६ ॥ बो
 ली चटक लगाय, फिट कुवडी शु लवेरी ॥ वालु तारो
 राज, आगे शियल हवेरी ॥ ७ ॥ आव्यो चाबख ले
 इ, किचक कोप करीरी ॥ वेन सुदर्शणां ताम, आवी
 आडी फिरीरी ॥ ८ ॥ बाइ ए वारो वीर, इम किम का
 म करेरी ॥ एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥
 ॥ ९ ॥ मोटी राजकुमार, परणावु वरनारी ॥ रहवा
 द्यो एहथी हठ, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एक
 वार मुऊ द्वार, आपे नेह धरीरी ॥ पूरु मन तणी खा
 त, न करु आश फिरीरी ॥ ११ ॥ बहीन नणे सुण
 वीर, तु मति चिंता करेरी, होशे धीरे काज, जान
 आप घरेरी ॥ १२ ॥ हरखाणो तव राय, होशे काम
 नलेरी ॥ हुवो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥
 ॥ १३ ॥ एकत्रीसा सोमी ढाल, गुणसागर एम जा
 पी ॥ लेशे दु ख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥ १४ ॥
 दुहा ॥ एक दिवस राणी राजली, निपजावी पकवा
 न ॥ गोत्रज तणी पूजा करी, आपी सहुने मान ॥
 ॥ १ ॥ पात्र कर धरी प्रेमदा, किधो सैरद्री साद ॥
 मदिर आपो मारा वीरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥ २ ॥

श्या विसे ॥ २३ ॥ जाणयो जीम तणो जडवाय, च
 द्यो मुख यकी एम वाय ॥ जीन करतो जाणी गाढो.
 जीमे पवाडी पाड्यो ठाढो ॥ २४ ॥ त्रीसे सोमी ठा
 ले जणीयो, जीमे मल्ल महा बल हणीयो ॥ श्रीगुण
 सागर सूरि वर्दीतो, पुण्ये पात्रज जगजस जीव्यो ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एक दिवश परीवारशु, किचक नामे नूप ॥
 वेन तणे घर आवीयो, दिठो सेंद्री रूप ॥ १ ॥ बही
 न जणी एम पूर्णयो, ए कुण नारी होय ॥ किहां थ
 की आवी अठे, रूपे रजा सोय ॥ २ ॥ जे आपण घ
 र वालीयो, तेह तणी ए नार ॥ रहेवे मुज आगळे.
 दाशीपणे सुविच्यार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे,
 वहीन जणी कहे एम ॥ एकवार मुज मदिरे, मोकल
 ज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मतकर ए चाइजी, करता
 होय अकाज ॥ शिल न लोपे सुदरी, एहनो पती शि
 रताज ॥ ५ ॥ राय वैराटे इम कह्यो, ए कोइ कारण
 रूप ॥ रूडी रिते राखज्यो, जलावी मुज नूप ॥ ६ ॥

ढाल १३१ मी ॥ रामचद्रके वागमे ॥ आवो मो
 री रह्योरी ॥ ए देशी ॥ उठी चल्यो तब राय, मनमा
 रिस घणेरी ॥ तेढाव्योरे खवास ॥ करे वात बुरेरी
 ॥ १ ॥ एकली देखी जो नार, कहेज्यो हेत धरीरी ॥
 शु करशे मुज राय, पाडु लाज खरीरी ॥ २ ॥ एक
 दिवस नृपनार, रती खेल जणीरी ॥ आवे वन उद्या
 न, साथे सखीय घणीरी ॥ ३ ॥ साथे किचक राय,

णी राय ऊखाणो हाकलियो नूपालजी ॥ द्रो० ॥ ७ ॥
 आज मुकुवु तुऊने जाणी, काले तारी वातजी ॥ आ
 ण वहे माहरी राय राणा, आज घणी आरुयतजी ॥
 द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहोने वल्यो पावो, गयो निज आ
 वासजी ॥ पचाली तिहाथी आवी, महरालीनी पा
 सजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधु सघलु, हि
 यु फाटता रोयजी ॥ अम देश तो सहु उजड थइ,
 सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे
 आशासना दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां
 माहरा दातज घाटा, ठे मुऊ अतर साखीजी ॥ द्रो०
 ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे
 वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो न
 रतारजी ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ किचके मुऊने एणीपरे जारुयो,
 आणीश तारो अतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली,
 तिण कारण मुऊ कतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ मे विन
 वाया गोद विठाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पि
 ण साजली हेवु घाल्यु, करी नही मुऊ निरजी ॥ द्रो०
 ॥ १४ ॥ नीम भृकुटी चाले चडावी, वचन वदे सुण
 नारजी ॥ एतला दिन आपण दु ख लिधा, ते धर्म
 तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुऊ आणाए एत
 लो कीजे, किचक नणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय
 एकाते मिलशु, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो० ॥ १६ ॥
 कत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

मार्जी किम मने मोकलो, शु नर्या जाणता वात ॥ काल
 एणे तुम देखता, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूष
 देखी मजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणे लाज पर
 नारनी, लपट माणस तेम ॥ ४ ॥ वाइ न केशे तुज्जे
 मे वारयो ठे एह ॥ नाम लीए जो ताहरु, तो टलि
 आवजे गेय ॥ ५ ॥ परवश प्रेमदा शु करे, लेइ चाली ते
 पात्र ॥ आव्यो घर जव दुकूमो, यरहर कपे गात्र ॥ ६ ॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सी
 ता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रोपदी मनमा जोयु
 विमारी, किचक कुबुद्धी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इ
 षे मदीर, रहे किम शियल सनूरोजी ॥ द्रो० ॥ १ ॥
 एम ऊपाती आवी वाला, किचक तणे आवासजी ॥
 दिधु पात्र दूरथी उनी, लीधु हाथ खवासजी ॥ द्रो०
 ॥ २ ॥ मेळी याल वली जव पाठी, किचक आयो
 पूठजी ॥ रे उनी रडा किहा जाइस, वाणी वदे इम
 ऊठजी ॥ द्रो० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सजा सनमुख,
 नारी नाठी जायजी ॥ आवी उनी राजा शरणे, का
 मी केडे थायजी ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ कक वीप्र देखता मा
 री, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुनट जोता,
 कीधी सजा गत मामजी ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इ
 म वदे वाणी, गोमावो माहाराजजी ॥ ए पापीडो मुऊ
 ने पीडे, मूकावे मुऊ लाजजी ॥ द्रो० ॥ ६ ॥ कक न
 षे वैराट सजानी, लाज लेइ मठरालजी ॥ इम नीसु

णी राय ऊखाणो हाकलियो नूपालजी ॥ द्रो० ॥ ७ ॥
 आज मुकुबु तुऊने जाणी, काले तारी वातजी ॥ आ
 ण वहे माहरी राय राणा, आज घणी आख्यतजी ॥
 द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहोने वल्यो पावो, गयो निज आ
 वासजी ॥ पचाली तिहायी आवी, मठरालीनी पा
 सजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधु सघलुं, हि
 यु फाटता रोयजी ॥ अम देश तो सहु उजड थइ,
 सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे
 आशासना दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां
 माहरा दातज घाटा, ठे मुऊ अतर साखीजी ॥ द्रो०
 ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे
 वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो न
 रतारजी ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ किचके मुऊने एणीपरे जाख्यो,
 आणीश तारो अतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली,
 तिण कारण मुऊ कतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ मे विन
 वाया गोद बिठाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पि
 ण सांजली हेवु घाल्यु, करी नही मुऊ निरजी ॥ द्रो०
 ॥ १४ ॥ नीम भृकुटी नाले चडावी, वचन वदे सुण
 नारजी ॥ एतला दिन आपण दु ख लिधा, ते धर्म
 तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुऊ आणाए एत
 लो कीजे, किचक नणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय
 एकाते मिलशु, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो० ॥ १६ ॥
 कत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

माजी किम मने मोकलो, शु नथी जाणता वात ॥ काल
 एणे तुम देखता, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूष
 देखी मजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणें लाज पर
 नारनी, लपट माणस तेम ॥ ४ ॥ वाद्द न केणे तुज्जे.
 मे वारयो ठे एह ॥ नाम लीए जो ताहरु, तो टलि
 आवजे गेय ॥ ५ ॥ परवश प्रेमदा शु करे, लेइ चाली ते
 पात्र ॥ आव्यो घर जव दुकमो, थरहर कपे गात्र ॥ ६ ॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सी
 ता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रोपदी मनमा जोयु
 विमाशी, किचक कुवुद्वी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इ
 णे मदीर, रहे किम शियल सनूरोजी ॥ द्रो० ॥ १ ॥
 एम ऊपाती आवी वाला, किचक तणे आवासजी ॥
 दिधु पात्र दूरथी उजी, लीधु हाथ खवासजी ॥ द्रो०
 ॥ २ ॥ मेली थाल वली जव पाठी, किचक आयो
 पूठजी ॥ रे उजी रडा किहा जाइस, वाणी वदे इम
 ऊठजी ॥ द्रो० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सजा सनमुख,
 नारी नाठी जायजी ॥ आवी उजी राजा शरणे, का
 मी केडे थायजी ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ कक वीप्र देखता मा
 री, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुजट जोतां,
 कीधी सजा गत मामजी ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इ
 म वदे वाणी, ठोकावो माहाराजजी ॥ ए पापीढो मुऊ
 ने पीडे, मूकावे मुऊ लाजजी ॥ द्रो० ॥ ६ ॥ कक न
 णे वैराट सजानी, लाज लेइ मवरालजी ॥ इम नीसु

लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे नड जीमजी ॥ मन
 मोहना ॥ स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥
 केस समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह
 ॥ ला० ॥ १ ॥ सेथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक
 वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥
 म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर
 कचुकी ॥ म० ॥ मस्तक उन्व्यो चीर ॥ ला० ॥ पग
 पीतावर ढलकतो ॥ म० ॥ ऊणके नेजर गुहिर ॥ ला०
 ॥ ३ ॥ नाख्यो कठे लहकतो ॥ म० ॥ पचाली उर
 नो हार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम जामनी ॥ म० ॥
 तुम जीती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारीवेश जीमे
 कख्यो ॥ म० ॥ करवा किचक जग ॥ ला० ॥ चाल्यो
 मध्य बजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अग ॥ ला० ॥
 ॥ ५ ॥ आंव्यो किचक मदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो
 पम घाट ॥ ला० ॥ मोती जुवख बाधीया ॥ म० ॥
 लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थाशे आ
 वता ॥ म० ॥ सुव वार लिगार ॥ ला० ॥ देइ शीर चींते
 पोढियो ॥ म० ॥ चरणे चापी किमाड ॥ ला० ॥ ७ ॥ एट
 ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनु शिणगार ॥
 ॥ ला० ॥ पेठो मदिर एकतो ॥ म० ॥ सेवक रहियो
 वार ॥ ला० ॥ ८ ॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥
 मोहनी मोटो वध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतंगीयो ॥
 ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

लश्रगार सज्या तनु सुदर, पेस्या दरपण जोइजी ॥
 ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ मारग जातां किचके दिठी, वाली
 जाकजमालीजी ॥ कामानुर अकुलाणो राजा, फेरी को
 ट निहालीजी ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ दिवश गत हिंडु तु
 म्ह जोता, लागी लेह तुमारीजी ॥ आज मनोरथ य
 या पूरण, किधी सार अम्हारीजी ॥ द्रो० ॥ १९ ॥
 मुख पचाली वायक बोली, सुणो सुनट एक वात
 जी ॥ कोइ मदिर देखामो एकाते, तो रमीए तुम स
 घातजी ॥ द्रो० ॥ २० ॥ हिंमोला खाट ऊवुके उची,
 मणीमय मारा आवासजी ॥ आवज्यो रात समे
 तुम राणी, जिम पूगे मुज आसजी ॥ द्रो० ॥ २१ ॥
 इम सकेत करीने चाल्यो, किचक नीज आवासजी
 ॥ नामनीए सहु वात प्रकाशी, नीम नणी उल्हास
 जी ॥ द्रो० ॥ २२ ॥ ए बतिस सोमी ढाले, वात ज
 णावी तासजी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, जो
 जो कुविसन विनाशजी ॥ द्रो० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ नीम नणे सुण नामनी, आप सुरगो वे
 श ॥ थाशु किचकनि कामनी, हुश धरी सुविशेश ॥
 ॥ १ ॥ देइ आलिंगन एहने, पोचाडु जम लोक ॥
 तो तु मुऊने जाणजो, नीम तणो बल रोक ॥ २ ॥
 आज पढी कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह ॥
 खोमा मजार तणीपरे, नमतो राखु एह ॥ ३ ॥

ढाल १३३ मी ॥ समुद्र विजय सुत चढलो, साम

लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे नड जीमजी ॥ मन
 मोहना ॥ स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥
 केस समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ सेथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक
 वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥
 म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर
 कचुकी ॥ म० ॥ मस्तक उंढ्यो चीर ॥ ला० ॥ पग
 पीतावर ढलकतो ॥ म० ॥ जणके नेउर गुहिर ॥ ला०
 ॥ ३ ॥ नाख्यो कठे लहकतो ॥ म० ॥ पचाली उर
 नो द्वार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम जामनी ॥ म० ॥
 तुम जीती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारी वेश जीमे
 करयो ॥ म० ॥ करवा किचक जग ॥ ला० ॥ चाल्यो
 मध्य बजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अग ॥ ला० ॥
 ॥ ५ ॥ आव्यो किचक मदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो
 पम घाट ॥ ला० ॥ मोती जुवख बाधीया ॥ म० ॥
 लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थाशे आ
 वता ॥ म० ॥ सुवु वार लिगार ॥ ला० ॥ देइ शीर चींते
 पोढियो ॥ म० ॥ चरणे चापी किमाड ॥ ला० ॥ ७ ॥ एट
 ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनु शिणगार ॥
 ॥ ला० ॥ पेठो मदिर एकतो ॥ म० ॥ सेवक रहियो
 वार ॥ ला० ॥ ८ ॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥
 मोहनी मोटो वध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतगीयो ॥
 ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन मुविचार
 ॥ ला० ॥ आवी अवाशे उचो रह्यो ॥ म० ॥ कर
 सु कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि
 ॥ म० ॥ एहनु पूगी ते शीश ॥ ला० ॥ उठो उठो न
 द्रे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥
 ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखमावीयु ॥ म० ॥ तव सां
 नल्यु शु यार ॥ ला० ॥ चरण सकाचा आपणा ॥
 ॥ म० ॥ राध उघाड्यो द्वार ॥ ला० ॥ १२ ॥ पोल देइने प
 स्वरयो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड
 की मडप उंसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्या नार ॥ ला०
 ॥ १३ ॥ एम सघले जोता यकां ॥ म० ॥ किचके दि
 ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुवुद्धी इहां आवीयो ॥ म० ॥
 ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ नीम मधुर ए
 म बोलियो ॥ म० ॥ आवो कत सुजाण ॥ ला० ॥
 वार घणी मुऊने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण
 ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही उळ्यो नीमडो ॥ म० ॥ कि
 चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवे हु नही करु ॥
 ॥ म० ॥ मूको मुऊने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर जाली
 ने पटकियो ॥ म० ॥ करतो आक्रद साद ॥ ला० ॥
 नीम नणे परनारसु ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥
 ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीधो कोथलो ॥ म० ॥ शिर
 चाप्यु धरु माहि ॥ ला० ॥ किचक परतक पामीयो
 ॥ म० ॥ पाप तणा फल प्राहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ नीमे

ताम वीच्यारियो ॥ म० ॥ ए नृत्य केली साल ॥ ला० ॥
 धनुर विद्या इहाकण जणे ॥ म० ॥ देखी जिये वाल
 ॥ ला० ॥ १९ ॥ चारवट चार उचो करी ॥ म० ॥ चा
 पीयो ते माय ॥ ला० ॥ पुनरपी नीम वीचारीयो ॥ म०
 ॥ रखे जाणे कोइ आय ॥ ला० ॥ २० ॥ रक्त तणी स
 लीका जरी ॥ म० ॥ चारोट लीखीयो नाम ॥ ला० ॥
 राजा वात जणाववा ॥ म० ॥ त्रण अक्षर तिणी ठाम
 ॥ ला० ॥ २१ ॥ काम करी किचक तणे ॥ म० ॥ जी
 म गयो निज थान ॥ ला० ॥ सकल संबध आवी
 कह्यो ॥ म० ॥ नारी जणी बहु मान ॥ ला० ॥ २२ ॥
 तेतीसासोमी ढालमे ॥ म० ॥ श्री गुणसागर जोय ॥
 ॥ ला० ॥ किचक प्रत्यक्ष पापीयो ॥ म० ॥ कीधाना
 फल सोय ॥ ला० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ राय कचेरी आवियो, पूरी सजा अजी
 राम ॥ किचक जाइ सहु मिली, वेठा करी प्रणाम ॥
 ॥ १ ॥ राजा पूठे सादरो, तुम वधव गुण खाण ॥ ह
 मणा अमे दिठा नयी, कुण कारण राजान ॥ २ ॥
 अम जाइ काले चमी, गया हता काइ वार ॥ राते
 पिण आव्या नयी, अम मदिर, निरधार ॥ ३ ॥ राये
 शेवक मूकीया, किचक तणे दरवार ॥ पूठे जइ सा ना
 रीने, किहा बे तुम जरतार ॥ ४ ॥ साऊ समे शोभा
 धरी, तेडी शेवक साथ ॥ गया पूवघा विण मुजने,
 हजी नवि आव्या नाथ ॥ ५ ॥

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन सुविचार
 ॥ ला० ॥ आवी श्रवाशे उन्नो रह्यो ॥ म० ॥ कर
 सु कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि
 ॥ म० ॥ एहनु पूगी ते शीश ॥ ला० ॥ उठो उठो न
 द्रे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥
 ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखमावीयु ॥ म० ॥ तव सा
 नल्यु शु यार ॥ ला० ॥ चरण सकोचा आपणा ॥
 ॥ म० ॥ राय उघाळ्यो द्वार ॥ ला० ॥ १२ ॥ पोल देइने प
 स्वरयो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड
 की मडप उंसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्या नार ॥ ला०
 ॥ १३ ॥ एम सघले जोता थका ॥ म० ॥ किचके दि
 ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुबुद्धी इहा आवीयो ॥ म० ॥
 ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ नीम मधुर ए
 म वोलियो ॥ म० ॥ आवो कत सुजाण ॥ ला० ॥
 वार घणी मुऊने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण
 ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही उळ्यो नीमडो ॥ म० ॥ कि
 चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवे हुं नही करु ॥
 ॥ म० ॥ मूको मुऊने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर जाली
 ने पटकियो ॥ म० ॥ करतो आक्रद साद ॥ ला० ॥
 नीम नणे परनारसु ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥
 ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीघो कोथलो ॥ म० ॥ शिर
 चाप्यु धरु माहि ॥ ला० ॥ किचक परतद्ध पामीयो
 ॥ म० ॥ पाप तणा फल प्राहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ नीमे

एणे सैरद्री सजा मांही मारी, मृत्यु हुवो एम रा
 य विच्यारी ॥ कि० ॥ ९ ॥ वालीयो आद मिल्या सह
 लोग, जारोट अलगो कियो बल योग ॥ काढ्यो कि
 चक मिली बहु साथ ॥ देखी राणी नीढ्यो लेइ बा
 थ ॥ कि० ॥ १० ॥ बेन जाइनो अग निहाले, तिम
 तिम आखे आसुडा ढाले ॥ वात विविध प्रकारे दा
 खी, सहु मिली एम रोती राखी ॥ कि० ॥ ११ ॥ ना
 इ मिली सुविचारण किजे, सैरद्रीने साथे दहीजे ॥
 एह थकी किचकनो नासो, सती किहा पामे घर वा
 सो ॥ कि० ॥ १२ ॥ शवका किचक काज ए किजे,
 केस ग्रही सैरद्री लीजे ॥ थरहर थरहर ध्रुजे सोइ, नीम
 कहे चिंता नही कोइ ॥ कि० ॥ १३ ॥ कुरु कुरु करी
 किचक कागा, सैरद्रीने नाखण लागा ॥ नीम नूजा
 वले वृक्त उखाली, किचक बधव मारया वाली ॥
 ॥ कि० ॥ १४ ॥ बाधव शोक करत सरोखी, राजा ए
 राणी सतोखी ॥ एका किना ए जे काजो, ठेढ्यो तो
 ए विनाशे राजो ॥ कि० ॥ १५ ॥ डोकरडी घर बाघ
 ज पइठो, एह उखाणो परतक्त दिठो ॥ एतो आग
 न तरे देखाया, हाथशुरे उल्हाशी जाय ॥ कि० ॥ १६ ॥
 एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असा
 धी ॥ मुऊने तो आयो जोगवणो, काठावे नृप पद नो
 गवणो ॥ कि० ॥ १७ ॥ चूर जालमें हुवु पडीयो, सिंह
 तणी शिकारे चनीयो ॥ मसली पेट उपाए पिना, सा

ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साधे
 ॥ ए देशी ॥ किचक नाइ मिली सव आवे, राजासुं
 एम वात सुणावे ॥ हजीय न आव्या किचक राय,
 राजाजी मन चिता थाय ॥ कि० ॥ १ ॥ शेवक ते
 डी पूवयो अर्जीराम, ठाकुर तुमारा गया कुण काम
 ॥ नृत्य तणी साला नरनाथ ॥ तिहा सुधी हता अमे
 सहुसाथ ॥ कि० ॥ २ ॥ पगी अमने शिखज आपी,
 आप एकीला गया थिर थापी ॥ द्वारपाले पिण एम
 ज नाख्यो, निरुलता वार अमे नवी जाख्यो ॥ कि०
 ॥ ३ ॥ राजा शोध करेवा रगे, उठ्यो सुनट लेइ बहु
 सगे ॥ घर घर शेरी चोक मजार, जोता न लाधो शो
 ध लिगार ॥ कि० ॥ ४ ॥ वेहेन सुदर्शणा वात ए जा
 णी, नाइ न लाधो होइ विराणी ॥ नृत्यशालाए आ
 वे सहु साथ, पग न लाजे जोता नरनाथ ॥ कि० ॥
 ॥ ५ ॥ धरति विवर दिठो तिणे ठाम, दिसेवे इहा थ
 यो सग्राम ॥ चारोटे अक दिठा अति राता, बेन न
 णे इहा सही मुज भाता ॥ कि० ॥ ६ ॥ मुहता प्रधा
 न तेडावी राजा, वचवे सहि अक्षर ताजा ॥ वाचता
 एम विचारे सुजाण, मे मारयो एम कहे कुण वाण ॥
 ॥ कि० ॥ ७ ॥ एतले राय आवी एम वाच्यु, में मा
 ख्यो मुख कहे तव साचु ॥ राणी आखे नाखे बहु नीर, तु
 मे मारयो दिसे मुज वीर ॥ कि० ॥ ८ ॥ कोएक पाप
 उदय थयो आज, किचक तणो एम थयो अकाज ॥

थ मजार ॥ केतलाएक अतिशय तीसाजी, पामवना
 सुविचार ॥ व० ॥ ३ ॥ दूत जलो तो खरोजी, साचो
 ए उपमान ॥ मठ देश महिमा घणोजी, दिन दिन
 चढते वान ॥ व० ॥ ४ ॥ सुशर्मा राजा कहेजी,
 एतो सुवी वात ॥ नगर तणी गौ वालवेजी, पांडव प
 रगट थात ॥ व० ॥ ५ ॥ खुणश हमारी ठे खरीजी,
 वैराटा नृपसाथ ॥ स्वामी काज समारताजी, सुजस
 दियो जग नाथ ॥ व० ॥ ६ ॥ कौरवपति सेना सजी
 जी, साथे सहु परिवार ॥ हय गय रथ पायक घणा
 जी, जीधमजी पिण लार ॥ व० ॥ ७ ॥ घम घम वाजे
 घुघराजी, पाखर जडीया पलाण ॥ उनी रज घमसा
 णसुजी, गयण ठायो वर नाण ॥ व० ॥ ८ ॥ देखी
 दल बल आपणोजी, मुलकाणो मन राय ॥ कुण द्द
 त्री मुक आगलेजी, युद्धे जीवता जाय ॥ व० ॥ ९ ॥
 सुशर्मा दक्षण दिशेजी, जाइ लाग्यो जाम ॥ गौ हर
 ता ते ग्वालीयाजी, आइ पूकारया ताम ॥ व० ॥
 ॥ १० ॥ द्दत्री सहु चडी चालियाजी, सजी जाया
 कर बाण ॥ पाडव चार साथे हुवाजी, वाग्या ढोल
 निशाण ॥ व० ॥ ११ ॥ जला जला जट पाखरया
 जी, सवाह्या अति सूर ॥ चूप हुवो गोवा हरुजी, वा
 जीया रण तूर ॥ व० ॥ १२ ॥ नृप लफवे जड लफय
 डाजी, जाग्या जाइ चूर ॥ उगता रवी आगलेजी,
 तम जिम नासे दूर ॥ व० ॥ १३ ॥ खीसती जाणी आ

प सघाते माडी क्रिमा ॥ कि० ॥ १८ ॥ काम पखे ए
 वीर बोलाया, अनृत काजे महा विप पाया ॥ जइ तु
 राख्यो चाहे चूने, तो मतकर एह कदाग्रह कूडा ॥
 कि० ॥ १९ ॥ आप जलो जगनु जलु जावे, आप मुवा
 जेम बुड कहावे ॥ सो हणीया तस हणता एको, क
 रे किशी ए आणी विवेको ॥ कि० ॥ २० ॥ जे दिन
 सो दिन आघो लहुवु, दिनपणे दिलासा दउवु ॥ ठ
 नीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रीजे ताणी ॥ कि०
 ॥ २१ ॥ चौतीस सोमी ढाले जणीया, नीम किचक
 सघला हणीया ॥ श्री गुणसागर सूरि वदीतो, गिल
 पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रनु
 पास ॥ खबर न पामी पान्वा, सोच घणो चित ता
 स ॥ १ ॥ विदुरने निपम तणो, वदन विलोके राय ॥
 प्रथवी सघली शोधता, पाडव बखर न थाय ॥ २ ॥

ढाल १३५ मी ॥ भेतारज मुनिवर धन धन तुम
 अवतार ॥ ए देशी ॥ बलवता पाडव प्रथवी माही
 प्रसिद्ध, गुणवता पाडव प्रगट होसे सो सिद्ध ॥ ए आ
 कणी ॥ विदुर अने निषम जणेजी, वाणी अधिक
 अनूप ॥ पान्वानी सहनाणकाजी, साजल कौरव नूप
 ॥ व० ॥ १ ॥ नीति अनिती न नीतीकाजी, रोग न अधीको
 सोग ॥ पान्व ठे जे देशडेजी, होशे सुखीया लोग ॥
 ॥ व० ॥ २ ॥ अरिहता अतिशय जीसाजी, दिशे ग्र

र अरती मत आण ॥ ४ ॥

ढाल १३६ मी ॥ अठिलालनी देशी ॥ तव सै
 रद्री वाल, बोले वचन रसाल ॥ आठे लाल ॥ कुवर
 पे चटक लगायनेजी ॥ १ ॥ अहो कुंवर कहु तुज,
 जुद्ध करणनि वूऊ ॥ आ० ॥ तो सारथीठे सोहामणो
 जी ॥ २ ॥ ए नरविंदल वेश, ठे सारथी सुविशेश ॥
 ॥ आ० ॥ अदत्त रूप सोहामणोजी ॥ ३ ॥ हरीनं
 दनो रथ आप, खैरतो परम प्रताप ॥ आ० ॥ ते र
 थ खैरशे ताहरोजी ॥ ४ ॥ ल्यो तुम एहने सग, हो
 से जीत अजग ॥ आ० ॥ दुश मतराखीश को हिवे
 जी ॥ ५ ॥ हस्ता रोता एह, आव्यो परुणो गेह ॥
 ॥ आ० ॥ कुवरे पुठयो सारथीजी ॥ ६ ॥ कहे विंदल
 महाराज, एतो आगे काज ॥ आ० ॥ आपणने गौ
 वालताजी ॥ ७ ॥ मायने महेलणी पास, पेरी वगत
 र तनु खास ॥ आ० ॥ रणरग रमवा सऊ थयोजी ॥
 ॥ ८ ॥ वहीन जणे सुण जाय, जीती कौरव राय ॥
 आ० ॥ लावज्यो ध्वज रलीयामणीजी ॥ ९ ॥ एह म
 नोरथ आज, मुऊ पुतलाने काज ॥ आ० ॥ होशे व
 स्र सादरोजी ॥ १० ॥ रणमे आयो चाल, देखी द
 ल विक्राल ॥ आ० ॥ जाणे घटा कादवनीजी ॥ ११ ॥
 अहो व्हनडा वाल, चडीयो मेह असराल ॥ आ०
 ॥ वाल रथ पाठो घरेजी ॥ १२ ॥ कहे अर्जुन अनू
 प, एह दुर्योवन जूय ॥ आ० ॥ एह ढल उजा एह

पणीजी, सुशर्मा कोपत ॥ मोटा चडने मोडवेजी, वै
 राटो रोपत ॥ व० ॥ १४ ॥ सुशर्माए बाधीयोजी, वै
 राटो नूपाल ॥ जोर न चाले कोइनोजी, सोचे बाल
 गोपाल ॥ व० ॥ १५ ॥ पाडव चारे धाइयाजी, धसमसता
 धूताल ॥ सुशर्मा खाथो कियोजी, नाठा चड ततकाल ॥
 ॥ व० ॥ १६ ॥ मठ राय गोडावियोजी, नीम नूजा
 बल जोय ॥ साथे तो वलीया जलाजी, नवलाथी शुं
 होय ॥ व० ॥ १७ ॥ हरख धरी तेही स्थानकेजी,
 रात रह्यो राजान ॥ कक तणे मुख साजलीजी,
 पान्वनो आरुखान ॥ व० ॥ १८ ॥ अत्रीकामे
 अधीको घणोजी, सुजस सुणी निज कान ॥ सत्य क
 रीने सरदहेजी, लीधी सबही मान ॥ व० ॥ १९ ॥
 चाकर जेहना एहवाजी, शूर महा सनूर ॥ ठाकुरनो
 केहवो किस्योजी, दिसे एह हजूर ॥ व० ॥ २० ॥ पै
 त्रिसा सोमी ढालमेंजी, नीमे जणाव्यो आप ॥ श्री
 गुणसागरसूरि कहेजी, न अपे तेज प्रताप ॥ व० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ प्रात हुवा कौरवपति, उत्तर दिशानी गा
 य ॥ वाली वलीया वेगशु, ग्वाल पूकारया आय ॥
 ॥ १ ॥ राजानो सहु रावणो, राजा साथे जोय ॥ उ
 त्तरा कुवर एकलो, घर रखवालो होय ॥ २ ॥ बुबार
 व श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार ॥ म्हारे नही कोइ
 सारथी, करे जणावण सार ॥ ३ ॥ महीलाने माय आ
 गले, गाल मारतो जाण ॥ सैरद्री बोली हशी, कुंभ

॥ आ० ॥ गुणसागर पाम्ब तणोजी ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पागे फिरयो स
ग्राम ॥ हाथ जोडी उचो रह्यो, अर्जुनपे अजीराम ॥
॥ १ ॥ खीजडे ठे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार ॥
कवच प्रमुख अयुध सहु, तु जइ लाव्य कुमार ॥२ ॥
आदेश लैइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहिरुपे
आयुध सवे, दिठा तिहा नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी
पागे फीरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपे आवी क
ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥

ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी परे
धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनद आपे आयनेरे लाला, ली
धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला०
॥ उपर साक्षी उदार ॥ १ ॥ चडी आयो लाला, पार
य प्रबल प्रताप ॥ ए आकणी ॥ आवी रणने सनमु
खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सहु
राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमजार ॥ च० ॥२ ॥
नाद शखनो साजलारे ॥ ला० ॥ पन्नणे श्री गागेय,
ए वाला रुप सुहामणोरे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह
मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपाति तव कलकल्यारे ॥ ला०
॥ अहो अहो जगदिश, ठे शत्रु मुऊ उपेरे ॥ ला० ॥
एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे नट सा
जलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर
टलवो जलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन थात ॥ च०

नाजी ॥ १३ ॥ लाख सवा गजराज, देखी पामे घन
 लाज ॥ आ० ॥ कालीघटा तेहनी बनीजी ॥ १४ ॥
 धरयो दुर्योधन नूप, मेघानवर अनूप ॥ आ० ॥ मे
 घ समो वड गाजतोजी ॥ १५ ॥ खड्डू चाला प्रका
 श, विजली सम आकाश ॥ आ० ॥ निलावर नेजा
 चलाजी ॥ १६ ॥ ए दल अधिक अलोल, वाइ द्रढता
 ममडोल ॥ आ० ॥ तजी कायर मुरीमा चजोजी ॥
 ॥ १७ ॥ ढल कौरवनो जोय, नयानित हुवो सोय ॥
 आ० ॥ हा हा मुऊ मारे खरोजी ॥ १८ ॥ अहो बह
 नडा वाल, चाल्य घरे रथ वाल ॥ आ० ॥ ए दल
 अधिक डरामणोजी ॥ १९ ॥ कहे हरी नद तेवार, रे
 कायर शिरदार ॥ आ० ॥ घर आगल शु फूलतोजी
 ॥ २० ॥ इहा नही ठे सेल, एठे खाडानो खेल ॥ आ०
 ॥ खेल खरो असुहामणोजी ॥ २१ ॥ ऊऊण लाग्या
 सूर, वागीया रणतूर ॥ आ० ॥ सुनट समरमे सक
 थयाजी ॥ २२ ॥ पसरियो दल पूर, देखी कुमर घर
 नूर ॥ आ० ॥ अगे बूटी धुजणीजी ॥ २३ ॥ रथथी
 पढीयो ताम, नासण लाग्यो जाम ॥ आ० ॥ पारथ
 पग पावो धरयोजी ॥ २४ ॥ हरीनद साह्यो हाथ,
 घाली गला माही बाथ ॥ आ० ॥ आपणो मरम प्र
 काशियोजी ॥ २५ ॥ हु अर्जुन अनीराम, शिखवु तु
 ऊ सयाम ॥ आ० ॥ आज शोना तुऊने देउजी ॥
 ॥ २६ ॥ बत्रिसा सोमी ढाल, जगमे सुजस विशाल

॥ आ० ॥ गुणसागर पाम्ब तणोजी ॥ ७७ ॥

दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पागे फिरयो स
ग्राम ॥ हाथ जोडी उन्नो रह्यो, अर्जुनपे अनीराम ॥
॥ १ ॥ खीजडे वे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार ॥
कवच प्रमुख अयुध सहु, तु जइ लाव्य कुमार ॥२ ॥
आदेश लैइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहिरुपे
आयुध सत्रे, दिठा तिहां नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी
पागे फोरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपे आवी क
ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥

ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी परे
धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनद आपे आयनेरे लाला, ली
धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला०
॥ उपर साधी उदार ॥ १ ॥ चढी आयो लाला, पार
थ प्रबल प्रताप ॥ ए आकणी ॥ आवी रणने सनमु
खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सहु
राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमऊार ॥ च० ॥२ ॥
नाद शखनो साजलारे ॥ ला० ॥ पजणे श्री गागेय,
ए वाला रुप सुहामणारे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह
मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपाति तव कलकल्यारे ॥ ला०
॥ अहो अहो जगदिश, वे शत्रु मुऊ उपरेरे ॥ ला० ॥
एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे नट सा
नलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर
टलयो नलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन यात ॥ च०

॥५॥सुजट दल जाखो वयारे॥ ला०॥चउ दिश हुवो अ
 धार, धग्णी पेड धुजे घणोरे ॥ ला० ॥ आयां अर्जु
 न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ मूकी धण पाठा वयारे ॥
 ॥ ला० ॥ तन जाखे हरी सुत, कायर किम पाठा व
 लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७ ॥
 लळा पामी राजीवोरे ॥ ला० ॥ आवी उनारे शूर,
 ठायो गवण घमसाणसुरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥
 च० ॥ ८ ॥ कर्ण कहे सहु साजलोरे ॥ ला० ॥ दु ख म
 आणशो कोय, आ रण अर्जुन मे वर्योरे ॥ ला० ॥ ए
 म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव
 तणोरे ॥ ला० ॥ वैराटा सुत कहे एम, तिलक सुजट
 कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कहो अर्जुन मुऊ तेम ॥ च०
 ॥ १० ॥ ऋपाचार्य रथ तणीरे ॥ ला० ॥ निलि ध्व
 ज अही नाण, कनकदड व्वज रथ जलोरे ॥ ला०
 ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइमुऊ
 उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण
 पसायथीरे॥ला०॥हु वरु धनुष्य वाण॥च०॥१२॥धनुष्य
 ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसुरे वाद, नाग
 केतुवर रथ जलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुर्योधन आद॥
 च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए
 कर्ण अजीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥
 सुजट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ बाणे अवर ठा
 इयोरे ॥ ला० ॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया

कर्ण रथ सनमुखेरे ॥ ला० ॥ कर्ण आडवर जोर ॥
 च० ॥ १५ ॥ अर्जुन रथना नादधीरे ॥ ला० ॥ सु
 जट न धरेरे धीर, सींह तणी परे गाजतारे ॥ ला० ॥
 आवी उजो वड वीर ॥ च० ॥ १६ ॥ शस्त्र ठेदि क
 र्णतारे ॥ ला० ॥ कहे अर्जुन तजी रीस, इण अवस
 र अग रायजीरे ॥ ला० ॥ पूगी सघली जगीस ॥
 च० ॥ १७ ॥ विंदाचल गजनि परेरे ॥ ला० ॥ अ
 डीया दोइ ततखेव, अचरिज पामी अवरेरे ॥ ला० ॥
 मिलाया कौतकि देव ॥ च० ॥ १८ ॥ मोटा नरुने मोडतारे
 ॥ ला० ॥ एकलडो हरी नद, मुर्डाइ धरणि विपेरे ॥
 ला० ॥ पडीया कर्ण नरिंद ॥ च० ॥ १९ ॥ द्रोण गु
 रु तव आवियारे ॥ ला० ॥ हरखाणो मन चूप, आ
 ज गुरु जले आवियारे ॥ ला० ॥ देवा शोच अनूप
 ॥ च० ॥ २० ॥ प्रथम बाणे हरीनदजीरे ॥ ला० ॥ किधो
 गुरु प्रणाम, मूकी बाण वर दुसरोरे ॥ ला० ॥ ठेदे ध्वज अ
 नीराम ॥ च० ॥ २१ ॥ अनर्थ जाणी आकरोरे ॥ ला० ॥
 प्रनु दया दिल आण, कौरवना दल उपरे ॥ ला० ॥
 मूके मोहन बाण ॥ च० ॥ २२ ॥ सैन्य सकल धर्णी
 पड्योरे ॥ ला० ॥ न रही शुद्ध लिगार, वार मणना
 जो घडेरे ॥ ला० ॥ तोपिण न लहेरे सार ॥ च० ॥
 ॥ २३ ॥ निल ध्वज कौरव तणीरे ॥ ला० ॥ पिले क
 र्ण विराज, लेजे ध्वज रलीयामणीरे ॥ ला० ॥ तुऊ
 जगनीनेरे काज ॥ च० ॥ २४ ॥ निपम जय मत्तम

॥५॥मुजट दल जासो थयारे॥ ला०॥चउ दिग हुवो अ
 धार, धरणी पेड वृजे घणारे ॥ ला० ॥ आयो अर्जु
 न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ मूकी भण पाठा वल्यारे ॥
 ॥ ला० ॥ तत्र नाखे हरी सुत, कायर किम पाठा व
 लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७ ॥
 लजा पामी राजीयोरे ॥ ला० ॥ आवी उनारे शूर,
 ठायो गवण घमसाणसुरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥
 च० ॥ ८ ॥ कर्ण कहे सहु साजतोरे ॥ ला० ॥ दु ख म
 आणशो कोय, आ रण अर्जुन मे वर्योरे ॥ ला० ॥ ए
 म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव
 तपोरे ॥ ला० ॥ वैराटा सुत कहे एम, तिलक सुजट
 कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कही अर्जुन मुऊ तेम ॥ च०
 ॥ १० ॥ ऋपाचार्य रथ तणीरे ॥ ला० ॥ निलि ध्व
 ज अही नाण, कनकदड व्यज रथ जलोरे ॥ ला०
 ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइमुऊ
 उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण
 पसायथीरे॥ला०॥हु धरु धनुष्य वाण॥च०॥१२॥धनुष्य
 ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसुरे वाद, नाग
 केतुवर रथ जलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुर्योधन आद॥
 च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए
 कर्ण अर्जीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥
 सुजट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ वाणे अधर ग
 द्वयोरे ॥ ला० ॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया

दारो ॥ ४ ॥ जिनवर आराधी, सुर विधी साधी, सि
 घामण वेसतो ॥ ते सघला वीरा साहस धीरा,
 प्रचुना पग प्रणमतो ॥ ५ ॥ वादलने टलवे पूजा
 मिलवे, सहस किरण दिनकारो ॥ देखावे आपो
 प्रबल प्रतापो, जगमाही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम
 कुर्ती जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह ॥ पे
 खता पेखी वात विशेषी, लोगाइहा पोह ॥ ७ ॥ पा
 रुव जाणी जण जण आणी, नामता निज शिसो ॥
 चिरजीवजो मो कोरु वरीसो, जाट जणे आशिसो ॥
 ॥ ८ ॥ तव वेगे वधावा आवे गावा, गाम तणी वर
 गोरी ॥ नाचती पात्रो सुललीत गात्रो, चतुर महा
 चित चोरी ॥ ९ ॥ निशाण धडुके उद न चूके, नादे
 अवर गाजे ॥ दिजे बहु दानो अति सनमानो, उठ
 व अधीक विराजे ॥ १० ॥ वयराटो राजा अधीक दि
 वाजा, करतो आवे ताम ॥ चरणे शिर नामी निज हि
 त कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥ ११ ॥ ते निज क
 रजोडे देवो लोडे, सपत सरीसो राजो ॥ अजीमान
 न राखे फिर फिर नाखे, तुम्हे सारया हम काजो ॥
 ॥ १२ ॥ सगपण करवे अति विस्तरवे, नेह तणो
 अधिकारो ॥ आतासु उलजी जाइ न सुलजी, लट
 जगनो व्यवहारो ॥ १३ ॥ कुवरनी जगनी वे शुभ ल
 गनी, शुभ लक्षण शुभकारी ॥ अति रुप रसाली
 जाक ऊमाली, वाली वे सुविचारी ॥ १४ ॥ अहेवनने

धरिरे ॥ ला० ॥ कुवर जिम शरु, लंड व्यज पात्रो
 वल्योरे ॥ ला० ॥ कपे अटारीरे लक ॥ च० ॥ २५ ॥
 कौरव राय पागो वल्योरे ॥ ला० ॥ वरतो मन सता
 प, गौधन वाली उत्तरारे ॥ आ० ॥ आयो प्रचुने प्र
 ताप ॥ च० ॥ २६ ॥ सरुत्रीसा सोमी ढालमेरे ॥ ला०
 ॥ अर्जुन देखायोरे आप, गुणसागर पाडव तणोरे ॥
 ला० ॥ चढतो तेज प्रताप ॥ च० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ मठराय घर आवीयो, पामी खचर तेवाग ॥
 उत्तरा कुमर एकलो, हुवो कौरव लार ॥ १ ॥ नूप च
 ढाइ कारणे, उद्यम करे अशेश ॥ आवी ताम वधा
 मणी, जित्यो कुमर नरेश ॥ २ ॥ कक विप्रने रायजी,
 वेठा सजा मजार ॥ सारी पासा खेलता, उलटनो
 अधिकार ॥ ३ ॥ करत प्रशसा पुत्रनी, कक कहे सुविचा
 र ॥ बृहनडा जस सारथी, जीते क्यु न कुमार ॥ ४ ॥

ढाल १३८ मी ॥ वेदनी देशी ॥ एतले चली आ
 या जगत सुहाया, हरी सुत नितर जाया ॥ कुमर
 पगे लागी उनो आगी, आलिंगे तव राया ॥ १ ॥ मु
 ह माथो चुवी अवर अबि, वारवार प्रशशो ॥ आप
 णपे करतो मुख उच्चरतो, कुवर कुल अवतशो ॥ २ ॥
 तव कुमर जाषे मर्म प्रकाशो, जीतो जास प्रससो ॥
 ते तीजेवासर आप उदोधर, प्रगट कुल अवतसो ॥ ३ ॥
 ॥ दिन त्रीजो पामी पाडव स्वामी, प्रगट थया सुख
 कारो ॥ तव नाही धोइ पावन होइ, पहेरी धोती उ

हरी जाणी तेह ॥ जाग आप्यो मे एह ॥ १८ ॥ कटक
 वले थाए ते करजो, युद्ध करता मत उंसरजो ॥ वराए
 तो जइने वरजो ॥ १९ ॥ सुए अणिए चपाए जेती,
 अवनि नवि आपु एहुने तेती ॥ फोगट थाशे ए फ
 जिती ॥ २० ॥ एतो रुडी ढाल पुराणी, गुणसागर ए
 म बोले वाणी ॥ जिनवाणी नजो प्राणी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ एम सुणी कहे दूत तव, राजन मानो वय
 ण ॥ गोत्र विरोध नहि नलु, जुठ विचारी सयण ॥
 ॥ १ ॥ किचक वक किम वीर जीसा, हेमवादिक
 हण्या जेण ॥ ते नीम आगले सही जागशो, केहेशो
 न कह्यो केण ॥ २ ॥

ढाल तेहीज ॥ रुकमणी राणी मेहेलम ॥ ए दे
 शी ॥ दूत कहे सुणो रायजी, नीम तणी नडवाय
 हो राज ॥ उह्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ
 राय हो राज ॥ दूत कहे सुणो रायजी ॥ १ ॥ अर्जुन
 आगल नहि आशरो, तुमारो तिलमात्र हो राज ॥ रा
 धा वेध साध्यो जिणे, वोलो विचारी गात्र हो राज ॥
 दूत० ॥ २ ॥ विद्याधर दल जीतीने, तुमने जिवितदा
 न हो राज ॥ ते माटे ते पूज्य ठे, का थाठ अज्ञान
 हो राज ॥ दूत० ॥ ३ ॥ तु अपकार करे सदा, ते क
 रे उपकार हो राज ॥ धर्म पुत्र धरमातमा, तुमारो हि
 तकार हो राज ॥ दूत० ॥ ४ ॥ अवनी भेघ वरसाव
 ता, युधीष्टीर जलधार हो राज ॥ वालि राखेठे वीरने,

पाणी निर बर्हा लिधु ॥ ४ ॥ हिबे तो अमे आप्या वा
 जी, दिलनी नलीपरं चागीशु दाजी ॥ बडाशु रुनीप
 रे बाजी ॥ ५ ॥ अत्र ए अवरं रह्यो न जाण, लोक
 माहि पिण हाशि थाए ॥ बलतु बल न खमाए ॥ ६ ॥
 तुमे तो गो ठाढा हिम, अग्निना नडका सरिखु हु नीम
 ॥ हिबे नहि पालु निम ॥ ७ ॥ युधिष्ठिर कहे तुमे सूर,ा,
 सकल पराक्रममा सदा पूरा ॥ नहि मेहलो अधूरा ॥
 ॥ ८ ॥ तोपणा गुले जो समजी गुडा, तो आपण न
 हि थडए नुडा ॥ बाधव थाए उन्ना ॥ ९ ॥ सहुनी
 आण लहि अदनुत, जय नामा तव मोकल्यो दूत ॥
 गजपुरे तेह पोहचता ॥ १० ॥ कृष्णनो दूत हु तु राजान,
 साजली सर्वे थड सावधान ॥ कथन सुणी धरी काना ॥ ११ ॥
 तेरे वरस महा दु खे गाली, पारुवे पुरी प्रतिज्ञा पाली,
 हिबे तुमे जूठ सजाली ॥ १२ ॥ एहनो तुमे हिबे आ
 पो राज, जेम तुमारि वाधे लाज ॥ करो विचारी काज
 ॥ १३ ॥ राज्य नापोतो आपो पच गाम, इद्रप्रस्थ तिलप्र
 स्थ अचिराम काशी ॥ गजपुर वारणावति नाम ॥ १४ ॥
 दूत वचन दुर्योधन काने सुणी, अहो मुने युद्धे आरो
 खो, बोलीठ ज्यु उखो ॥ १५ ॥ मुठ मरडीने दंतज
 घरनी, आलस मोडीने अधर ते करडी ॥ आरुये
 आखो तरडी ॥ १६ ॥ हारयु राज आवे किम हेव ॥
 एतो मारा शत्रु स्वयमेव ॥ साजलो वात सत्येव ॥
 ॥ १७ ॥ आज लगे ए जिहा रह्या जेह, प्रथवी मा

मा०॥२॥पांच चाइ पांडव केवराइ, अर्जुन जोर अपारो॥
 चीमशेन ज्यारे नारथ रचशे, तारेनही उगरानो आरो
 ॥ हो राजा ॥ मा०॥३॥ केवु होय तो हमणा किजे, तुम्हे
 कृष्णजी कारो ॥ प्रथवी एक कपी को न आपु क्या करे
 धर्म विचारो ॥ हो राजा ॥ मा०॥ ४ ॥ क्त्री होय ते
 खाफानी गत जाणे, एतो गाय चरावनहारो ॥ राज निती
 माही ए शुरे जाणे, मही लुटावन हारो हो राजा॥मा०॥५॥

अथ द्वितीय पद लिख्यते ॥ गइ जोम तुमारी हो
 पाडवो ॥ ग०॥ जिणे वात न मानी हमारी हो पाडवो
 ॥ ग० ॥ ए टेक ॥ क्त्री होय ते वेरज खेडे, शु करे
 चक्ती ससारी ॥ बापकी जाता बल जे न करे, चूप
 नही पिण जिखारी हो पाडवो ॥ ग०॥ १ ॥ ए अवनी
 माही अमर न रेणा, कहे धरम विचारी ॥ गोतर गर
 दन अमे जो करीए, तो शी गत थाए अमारी हो पा
 डवो ॥ ग० ॥ २ ॥ द्युत विद्या दलमाही रमीया, हा
 रथा गरथ नडारी ॥ ए लाखाग्रह माही तुमनेरे बा
 ल्या, शी रे सगाइ सगारी हो पाडवो ॥ ग०॥३॥ पाप
 तणेरे एणे पायोरे माडयो, पचालीरे पूकारी ॥ अधनो
 सुत जो अवनी लेशे, तारे पोरससे गवारी हो पाडवो
 ॥ ग० ॥ ४ ॥ आ अवनी उवे परु नाखु, उळ्यो ची
 म पूकारी ॥ सूरनो स्वामी शिखज आपे, ल्यो कौर
 वने मारी हो पाडवो ॥ ग० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय पद लिख्यते ॥ किधा अमने दधारी द

आज लगे निरधार हो राज ॥ दूत० ॥ ५ ॥ देव दा
 एव जेणे दम्ब्या, जेणे मारयो कसे हो राज ॥ आश्र
 वाए तेहने, तेनो जग अवतस हो राज ॥ दूत० ॥ ६ ॥
 पावक सरिखा पाडवा, तुतो घाम समान हो राज ॥
 वनमाली वायु परे, प्रेरेवे वली तास हो राज ॥ दूत०
 ॥ ७ ॥ तव भीष्म द्रोण विदुर कहे, साची मानो ए
 वात हो राज ॥ मनना आमला भेलीने, मिलि वेसो स
 हु भ्रात हो राज ॥ दूत० ॥ ८ ॥ शिखामण ते साज
 ली, वली कोप्यो विशैप हो राज ॥ अग्निज्वाला परे
 उपण्यो, धरतो दिलमा द्वेश हो राज ॥ दूत० ॥ ९ ॥
 तव कृष्ण दूत कहे कोपिने, आव्यो तेहने मौत हो रा
 ज ॥ युद्धे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत
 हो राज ॥ दूत० ॥ १० ॥ एम कही दूत आव्यो व
 ही, कृष्ण पासे सदेश हो राज ॥ माडीने सर्वे कह्यो,
 एके एक आशेश हो राज ॥ दूत० ॥ ११ ॥ सज्जन
 सहु ढाले जुठ, दुर्योधन दिल माहि हो राज ॥ कप
 ट राख्यो गुणसागर कहे, हिवे आगले शु था
 य हो राज ॥ दूत० ॥ १२ ॥

अथ चारथना ध्रुपद लिख्यते ॥ राग विहाग ॥ मानो
 वात हमारी हो राजा ॥ मा० ॥ पाच गाम पाडवने
 दिजे, उर सव जोमी तुम्हारी ॥ हो राजा ॥ मा० ॥ १ ॥
 करुदेश हस्तनापूर नगरी, अग देश पचालो ॥ उत्तर
 देश अयोध्या नगरी, दखण देश बगालो ॥ हो राजा

जी ॥ रा० ॥ सुडना करे उलालाजी ॥ रा० ॥ ध्वज
 घुघरी घट वाजेजी ॥ रा० ॥ रथ देखी रवीरय लाजे
 जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ इन जाणे आयुव शालाजी ॥ रा०
 घरणी चानुर्घटवालाजी ॥ रा० ॥ धव धव धाता च
 क्रवाराजी ॥ रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी ॥ रा०
 ॥ ८ ॥ न्दाना तीक्ष्ण तोखाराजी ॥ रा० ॥ खेडता
 रथ थाए होकाराजी ॥ रा० ॥ हयवरना थाए हिलो
 लाजी ॥ रा० ॥ जाणे समुद्र तणा कलोलाजी ॥
 रा० ॥ ९ ॥ न्रूये तो पगनवी मडेजी ॥ रा० ॥ रवि
 रथ हयवर मान खडेजी ॥ रा० ॥ तूर निर्घोषे गइ
 तद्राजी ॥ रा० ॥ तिहां अश्व थया उर्नोद्राजी ॥ रा०
 ॥ १० ॥ खणाए धरा खुर घातिजी ॥ रा० ॥ उडे डुं
 गरा उजातीजी ॥ रा० ॥ पवन वेगी जलपताजी ॥
 ॥ रा० ॥ एहवा ते अश्व असरुयाताजी ॥ रा० ११ ॥ च
 र्म कवच सनाहाजी ॥ रा० ॥ अगे पहिरया उठाहाजी
 ॥ रा० ॥ क्रपाण फल तुणीरजी ॥ रा० ॥ धनुरधर
 महा धीरजी ॥ रा० ॥ १२ ॥ सिंहनाद मुखे बोलेजी
 ॥ रा० ॥ विश्वने जाणे तृण तोलेजी ॥ रा० ॥ सग्रा
 म तणा महा रसीयाजी ॥ रा० ॥ पायक जाए बहु
 घशीयाजी ॥ रा० ॥ १३ ॥ रथ रेणुनरे रवी ठायो
 जी ॥ रा० ॥ जाणे वरशालो आयोजी ॥ रा० ॥ सर्व
 शब्द उळ्यो समकालेजी ॥ रा० ॥ त्रिचुवन कप्यो
 तिण तालेजी ॥ रा० ॥ १४ ॥ हाथीसु मिलीया हाथी

द्युम्न सेनापति, पांडवे करयो धरो प्रेम ॥ पांडवने कौ
 रव मिल्या, रामने रावण जेम ॥ १४ ॥ साम दाम ने
 द मुकीने, केवल नीग्रह एक ॥ ठरावीरणहेत्रमा, व
 ढ्वु एह विशेष ॥ १५ ॥

ढाल तेहीज ॥ तुम हे पीतावर पेहेरोजी मुखने म
 रकलडे ॥ ए देशी ॥ रणनु मुहुरत निरवारीजी, राज
 वीरण रशीया ॥ आयुद्ध अरची अधिकारीजी ॥ राज० ॥
 धूप दीप अक्षत फूलेजी ॥ राज० ॥ उपे आयुद्ध बहुमू
 लेजी ॥ राज० ॥ १ ॥ नीशाण तणे नीघोंपजी ॥ राज० ॥ जाणे
 ते वीर रस पोपेजी ॥ राज० ॥ अरुणोदय वेला रणे धाता
 जी ॥ रा० ॥ रवी सरीखा यथा वीर राताजी ॥ रा० ॥ २ ॥
 कोलाहल रणे उठलियोजी ॥ रा० ॥ सिंहनाद माहि जही
 जलीउंजी ॥ रा० ॥ रणतूरना थाय रणकाराजी ॥ रा०
 ॥ नेरीना वाजे नणकाराजी ॥ रा० ॥ ३ ॥ ढक्काका
 हल डणकाराजी ॥ रा० ॥ हुडक परुरो पूकाराजी ॥
 रा० ॥ घण धरणी लाज राखेजी ॥ रा० ॥ धीर
 पण शीर धारेजी ॥ रा० ॥ ४ ॥ गयवर गाजे घनला
 जेजी ॥ रा० ॥ वाजा रणना बहु वाजेजी ॥ रा० ॥
 ह्यवरना जो रहे स्वाराजी ॥ रा० ॥ चिहुदिशे रथना
 चित्काराजी ॥ रा० ॥ ५ ॥ वली सुजट शब्द नयका
 राजी ॥ रा० ॥ कोदरु तणा टणकाराजी ॥ रा० ॥ ग
 यवरनी घटा तिहा चालेजी ॥ रा० ॥ पोढा परवत
 स्या मालेजी ॥ रा० ॥ ६ ॥ मदऊर मयगळ रोशाला

हेठेरे, बेठो किम रहेठे, खारो लागे ए खरोरे ॥ १ ॥
 रथे बे वेशीरे, वाण नाखे वीहींशीरे, अजीमन्यु त
 व हशी, बलमा बोलियोरे ॥ नले तुमे आव्यारे, मु
 जने घणु जाव्यारे, संग्रामे सोहाव्या रखे ध्रुजो हियोरे
 ॥ २ ॥ ब्रह्मदवल रुधोरे, अजीमन्युए गुद्योरे, कैक
 वे तव खुद्यो, क्रपाचार्यनेरे ॥ ते चारे युद्धे जडीयारे,
 हथीयारे वढीयारे, अंगो अगे अडीया, लागे जय
 लोकनेरे ॥ ३ ॥ कैकव क्रपा जूजेरे, रथ रहित तनु
 ध्रुजेरे, खरुगे खगाशलुजे, अलुजे न एकलारे ॥ ख
 रगाडोप धरतारे ॥ फणटोप हरतारे, महा कोप कर
 ता, महा योद्धे मिल्यारे ॥ ४ ॥ ब्रह्मदवल बले वाध्यो
 रे, अजीमन्यु शुं वाध्योरे, रथ ध्वज सारथी तेहना
 वेदीयारे ॥ एहवे रथ खेडीरे ॥ प्रथवी उखेमीरे ॥ नि
 ष्मे न करी जोडी, पांडव दल जेदीयोरे ॥ ५ ॥ निष
 मने जेरेरे, पांडव दले ठोरीरे, नाशी चिहुएरे, अ
 र्थीर थयु अतिरे ॥ तव अजिमन्यु उष्योरे, निषमशु
 कोष्योरे, अहो मुने लोप्यो, ध्वज ठेद्यो ते वतीरे ॥ ६ ॥
 दुरमुख नृप केरोरे, सारथी सवेरोरे ॥ जेद्यो नलेरो
 वार लागी नहीरे ॥ तव निष्म क्रोधीरे, अजीम
 न्युसु योधीरे, एह महा विरोधी, आज मारु सहीरे
 ॥ ७ ॥ तव पांडव सेनार्थीरे, दश नृप थया सार्थीरे,
 अजिमन्यु लही हाथी, उपराले आवीयारे ॥ तव नि
 षम तिहा धायोरे, रथे वेशी आयोरे, दल दुरे नसा

जी ॥ रा० ॥ रथवाला रथ सार्थीजी ॥ रा० ॥ चाधी
 सु मिलीया चाधीजी ॥ रा० ॥ घोडाचड घोडाचरु
 तीजी ॥ रा० ॥ १५ ॥ रण वयु शायर रूपजी ॥ रा० ॥
 कलोला तुरग अनूपजी ॥ रा० ॥ गज रूपे जाणो वेह
 जी ॥ रा० ॥ मिन रूपी यया खेहजी ॥ रा० ॥ १६ ॥
 तिहा मगर यया रथ राशीजी ॥ रा० ॥ पाला जल
 माणसा चाशीजी ॥ रा० ॥ प्रवहण थया विमानजी
 ॥ रा० ॥ शस्त्र ते वडवाग्नी मानजी ॥ रा० ॥ १७ ॥
 रणेतुर मीशे निर्घोपेजी ॥ रा० ॥ सेना वेलाने पोखे
 जी ॥ रा० ॥ एहवुं रण रणायर राजेजी ॥ रा० ॥ क
 यर देखीने चाजेजी ॥ रा० ॥ १८ ॥ ढाल रसीली
 गुणसागर बोलेजी ॥ रा० ॥ सग्राम सागरने तोले
 जी ॥ रा० ॥ साजलता सूरु जागेजी ॥ रा० ॥ क
 यर तो दूरे चागेजी ॥ रा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ वीर रस वाजे विस्तरयो, आवीने रण मां
 हे ॥ एहवु ते तिहा देखीने, पार्थ पुत्र तिणे ठाए ॥
 ॥ १ ॥ अर्जीमन्यु तव उगली, पड्यो कौरव दल मां
 हे ॥ बाण धारा जल वरसता, शत्रु जवाशा सुकाए ॥
 ॥ २ ॥ तेहवो तिहा देखीने, दल पाम्यु सहु क्कोज ॥
 देखी पडता आचने, कहो कुण माडे थोच ॥ ३ ॥

ढाल लेहिज ॥ मेवाडा राणारे ॥ ए देशी ॥ अरजु
 न सुत आयोरे, अर्जीमन्यु सोहायोरे, न जाए सा
 ह्यो एतो आकरोरे ॥ क्रपाचार्य कहेगेरे ॥ ब्रह्मदबलल

वी ठो तुम्हे, द्रुपद पुत्रछीव ॥ शिखनीए रथे थापीने,
 तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ निष्मने जेदे वाणशु,
 गागेय नही नाखे वाण ॥ छीव शिखंनीया उपरे, एह
 उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णनां,
 पाडव करी प्रमाण ॥ बलथी ठल बहुअठे, जो होए
 बुद्धि विनाण ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज ॥ आस्थाननी देशी ॥ प्रजात थति
 परवस्था, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पाडव कौरव मि
 ल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ १ ॥ राजद र
 णरंग रसे जरघा, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर र
 से विराजता, गाजता सिंह जेम नेकरे ॥ रा० ॥
 ॥ २ ॥ शिखडीयो रथे थापीने, तिहा पार्य रही पूठे
 रे ॥ निष्मपे ज्यु जालीने, सजाली निज मुठेरे ॥ रा०
 ॥ ३ ॥ निष्म. छिवने जेदवा, समर्थ नही तक जोयरे
 ॥ आकर्णात ताणी वाणे मारघो, निष्म जाखे सो
 यरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म जेदीने इणे, जेद्या मा
 हरा प्राणरे ॥ ए शीखडीयानु नही गजु, सही अर्जु
 न वाणरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिण,
 पढ्यो रथ मजाररे ॥ तव शोकानुर थइ कौरव, आ
 वी रथ विंढ्यो तेणीवाररे ॥ रा० ॥ ६ ॥ अत समय
 ना वचन सुणवा, सहु थया सावधानरे ॥ तेवारे जी
 षमे तिहां सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ रा०
 ॥ ७ ॥ वाण वले प्रथवी जेदीने, निर्मल काढ्यु नीर

यो, शत्रु न फावीयोरे ॥ ८ ॥ तव निपम निज बाणरे,
 तसु ध्वजने ठाणरे, वेदी मने जाणे, रसे अरि जीततारे ॥
 तव उत्तर कुमारेरे, शल्य गजने सहागरे ॥ तव शल्यने
 ठारे, देखी अरि दिपतारे ॥ ९ ॥ अमोघा स्वर्ण शक्तिरे,
 मेली निज शक्तिरे, सह जोता सशक्ति, उत्तर मारीउरे ॥
 तव पार्थ बाणने पूरेरे, दल नाठु दूरेरे ॥ आयो अर्जुन
 सुरे, नरहे वारीउरे ॥ १० ॥ तव निपम नुजालोरे ॥
 धरी धनुष क्रोधालोरे, आवी उजमालो, सेनाशु
 अल्योरे ॥ धृष्टद्युमन थयो साहमोरे ॥ महा मच्यो सग्रा
 मोरे, लेवा विश्रामो, रवी शायरे पज्योरे ॥ ११ ॥ दिनकर
 गयो दूरेरे, न रह्यो हजुरेरे, महा सग्रामे दिनपणे,
 आय म्योरे ॥ प्रितीवती ढालेरे, कही गुण वीचालीरे
 ॥ नमीए प्रहकाले, युद्धयी जे सम्योरे ॥ १२ ॥

दुहा ॥ रणने मेली राजवी, पोहोता निज निज या
 न ॥ पेहले दिवशे युद्ध एम, थयु ते धरजो कान ॥ १ ॥
 रात्री समये सह राजवी, पाडव कृष्ण समाज ॥ मि
 लीने करे मत्रणु, किम सिधाशे काज ॥ २ ॥ निष्म
 सर्वथा अनित ए, जित्यो किये न जाय ॥ तो दुर्यो
 धन ए जीवता, कहोने केम जिताय ॥ ३ ॥ तव कृ
 ष्ण कहे उपाय एकठे, निष्मने नियम ठे एह ॥ बिण
 हथीयारा स्त्री छिवने, न मारे गुण गेह ॥ ४ ॥ ताढा
 उपराढा प्रत्ये, निष्मनना बे बाण ॥ जेदे निष्मने
 जेदीए, साजलो वात निवाण ॥ ५ ॥ ते माटे पार्थ

वी गो तुम्हे, द्रुपद पुत्रकीव ॥ शिखंभीए रथे थापीने,
 तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ निष्मने जेदे वाणशु,
 गागेय नही नाखे वाण ॥ छीव शिखंभीया उपरे, एह
 उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णना,
 पांडव करी प्रमाणा ॥ बलथी ठल बहुअठे, जो होए
 बुद्धि विनाण ॥ ८ ॥

हाल तेहिज ॥ आस्थाननी देशी ॥ प्रजात थाते
 परवस्था, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पांडव कौरव मि
 ल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ १ ॥ राजद र
 णरग रसे चरघा, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर र
 से विराजता, गाजतां सिंह जेम नेकरे ॥ रा० ॥
 ॥ २ ॥ शिखडीयो रथे थापीने, तिहा पार्थ रही पूठे
 रे ॥ निष्मपे ज्यु जालीने, सजाली निज मुठेरे ॥ रा०
 ॥ ३ ॥ निष्म. छिवने जेदवा, समर्थ नही तक जोयरे
 ॥ आकर्णात ताणी वाणे मारघो, निष्म नाखे सो
 यरे ॥ रा० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म जेदीने हणे, जेद्या मा
 हुरा प्राणरे ॥ ए शीखडीयानु नही गजु, सही अर्जु
 न बाणरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिण,
 पड्यो रथ मजाररे ॥ तव शोकातुर थइ कौरव, आ
 ची रथ विंठ्यो तेणीवाररे ॥ रा० ॥ ६ ॥ अत समय
 ना वचन सुणवा, सहु थया सावधानरे ॥ तेवारे जी
 पमे तिहा सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ रा०
 ॥ ७ ॥ वाण बले प्रथवी जेदीने. निर्मल काढ्यु नीर

रे ॥ प्रपीतामहने पायने, सावधान कीध शरीरं ॥
 रा० ॥ ८ ॥ तव दुर्योधनने चीपम चाखे, ररे दुरम
 ति देखरे ॥ पारव समो प्रववी विपे, पराक्रमी नहि
 को ए पेखरे ॥ रा० ॥ ९ ॥ सुणी शीख ठेहली मान
 मेहली, कर तु एहसु मेखरे ॥ जो राज्यने जीववु वा
 वे, तो वचन माहारा मत ठेखरे ॥ रा० ॥ १० ॥ दु
 र्योधने तो काने न धरया, चीपम सामु रह्यो चालिरे
 ॥ क्रोधे करीने नजर करडी, गर्वे दिए मने गालिरे ॥
 रा० ॥ ११ ॥ गागेय तव देव वाणीए, सावध तजी
 व्रतधाररे ॥ अणसण तव अगी करीने, तज्या च्यारे
 आहाररे ॥ रा० ॥ १२ ॥ समाधी मरण करीने, वा
 रमे देवलोकरे ॥ अमरनो अवतार पाम्यो, जाण्यो
 धर्म फल थोकरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ प्रात समय रवि
 प्रगढ्यो, तव रणागणने जायरे ॥ द्रोणने करी सैन्या
 पति, दुर्योधन गयो धायरे ॥ रा० ॥ १४ ॥ अर्जुने
 निज गुरु जाणीने, द्रोणने करचो प्रणामरे ॥ वाण रु
 प दक्षिणा आपी, सजाली ल्यो स्वामरे ॥ रा० ॥ १५ ॥
 तेवारे जोरावर ते युद्धे लागा, तुरग पाम्या त्रासरे ॥
 अस्ताचल रवी आथम्यो, तव पोहोता सहु निज वा
 सरे ॥ रा० ॥ १६ ॥ बारमे दिने त्रिगर्ताधीप, अर्जुन
 शशक्तानरे ॥ गया जीतवा तव सैन्य लेह, आव्यो
 जगदत्त तिहा राजानरे ॥ रा० ॥ १७ ॥ गजे बेठो
 सेना अवगाही, दुष्टने दुर्दितरे ॥ कमलीनीने जेम

करीवर जेदे, तिम करि ते कल्पांतरे ॥ रा० ॥ १८ ॥
 ते सुणी अर्जुन आवीयो, ते युद्ध तजी ततकालरे
 ॥ गज सहित ते जगदत्तने, युद्धे हणयो ते तालरे
 ॥ रा० ॥ १९ ॥ रसीली ढाले गुणसागर बोले, उदय
 जेहनो होयरे ॥ तेह घरे रग वधामणा, महा हर्ष
 पामे सोयरे ॥ रा० ॥ २० ॥

दुहा ॥ जगदत्त पडते कौरवे, चिंता लही चक्र
 व्युह ॥ रच्यो तिहा एक रातमा, मेली सैन्य समुह
 ॥ १ ॥ अर्जुन तो युद्धे गयो, शशक्तक जितन हेत ॥
 प्रात समय अर्जीमन्यु तव, नीमादीक सुजट समेत
 ॥ २ ॥ चक्रव्युहमा सचरयो, तिहा दुर्योधन ने कर्ण ॥
 क्रपा क्रतवर्म द्रोण आदे, महा शस्त्रे आवर्ण ॥ ३ ॥
 तेहने अवगणी आघो वरयो, दुर्योधने रुध्यो जीम ॥
 तव अर्जीमन्यु पळ्यो एकलो, शूर विद्यानो शीम ॥
 ॥ ४ ॥ जयद्रथ युद्धे चळ्यो, दिव्यास्त्र शस्त्रे युद्ध
 ॥ वडी वार किधु तिणे, दिवश रह्यो एक मुहुर्त ॥ ५ ॥
 जयद्रथे बल ताकीने, अर्जीमन्यु पमाळ्यो अंत ॥
 कौरव तिहा कलरव करे, अरिनो पामी अंत ॥ ६ ॥
 ढाल तेहिज ॥ श्री विरने वादी पुठे श्री गौतम
 स्वामी ॥ ए देशी ॥ अर्जुन आव्यो तिहा हेलाएजी,
 जयदरथ मारुं आ वेलाएजी ॥ अर्जीमन्युने वेर वि
 रोधेजी, एम प्रतिज्ञा किधी क्रोधेजी ॥ १ ॥ क्रोधे कृ
 रीने युद्ध माळ्यो, द्रोणादीक सघाते ॥ चमुतो बहु चू

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदे तव
 आवीया, शत्यकी वायु पुत्र ॥ दुयोधनने जीम जुके,
 नुरीस्त्रगा शत्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उगारी सर्व
 सैन्यजी, जयदरथ दिठो महा मलानजी ॥ ते पट
 योद्धा जोर तिहा जुकेजी, तनमन यया क्रोधे ध्रुजेजी ॥
 ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने नुरीस्त्रवाना, मुज उपाडी ना
 खीया ॥ तव सत्यकीए नेठारे मारयो, शत्रु विजा
 शकीया ॥ ५ ॥ पार्थ पिण जयदरथना, तुरग रथ
 सारथी हणी, दिनाते जयदरथ मारयो, अरि ग
 ण सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहाने अक्कोही
 णी सातजी, पाडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव
 चिते ए पाडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुरा
 जी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करु इहा
 अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहुतो, राते मारु ठा
 य ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेड घेरी, पारुव वायश
 नी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अ
 वसरे ॥ ९ ॥ तव जीम पुत्र हेडवा जायोजी, अस्त्र ले
 इने साहमो आयोजी ॥ घटोत्कचने करी जुऊ जाओ
 जी, जग माहे जेहनो सघलो आओजी ॥ १० ॥ आ
 जावत ते अस्त्रजेरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया यु
 धे बहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बल बते ॥ ११ ॥
 बाण बहुला नाखीया, पिण तेह पागे न उंसरे ॥ त
 व वहनीकणा वृत शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपह

री ॥ १२ ॥ घटोत्कचनो करी सहारजी, पांडव सेना
 मा थयो हाहाकारजी ॥ कौरव सेना मन हरखाणीजी,
 कर्ण समो को नही वाणीजी ॥ १३ ॥ वाणी नही को
 इ कर्ण सरोखो, प्रजाते धरी प्रेम ॥ रणागणमा आ
 वीया, साहमे साहमा सागर जेम ॥ १४ ॥ विराट द्रु
 पद द्रोणे मारया महा युद्धने जोरे करी ॥ पांडवनु द
 ल थयु जाखु, अति आनद पाम्या अरी ॥ १५ ॥
 आ सुदर ढाले तक जोइ, गुणसागर इणीपरे कही ॥
 हरखनी केडे शोक हरी हरख शोक ते कर्म लही ॥ १६ ॥

दुहा ॥ पांडव दल थीर करी, धृष्टद्युमन साहमो आ
 य ॥ द्रोणने कहे रहे उचो, जीवतो आज ना जाय ॥
 ॥ १ ॥ गजश्व नट क्षय पमाब्ध्या, युद्ध तव जाम्यो
 जोर ॥ एहवे मालव रायनो, अश्वस्थामा गर्ज ते घो
 र ॥ २ ॥ अश्वस्थामा नामे तेह गज, पडयो रणमा जा
 म ॥ अश्वस्थामा मारीउ, जनसहु जाखे ताम ॥ ३ ॥
 द्रोणे ते वात साजली, विशस्तुल थयो जाम ॥ शोका
 कुल लहीने ठले, ते धृष्टद्युमनने हण्यो ताम ॥ ४ ॥
 द्रोण तव धरणी ढल्यो, अणसण करीने सोय ॥ मरण
 समाधी ते मरी, ब्रम्हदेव लोके सुर होय ॥ ५ ॥

ढाल तेहिज ॥ गर्व न करशो गात्रनो ॥ ए देशी ॥
 अश्वस्थामा तिहारे उचल्यो, आव्यो पामु व दल
 माय ॥ जलधरनी परे वरसतो, वाण धारा ते ठाय ॥
 जोरो जोयोरे युद्धनो ॥ १ ॥ पामुवना दल उपरे, अस्त्र

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदे तव
 आवीया, शल्यकी वायु पुत्र ॥ दुर्योवनने जीम कुजे,
 चुरीखवा शल्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उगारी सर्व
 सैन्यजी, जयदरथ दिठो महा मलानजी ॥ ते पट
 योद्धा जोर तिहा कुजेजी, तनमन यया क्रोधे ब्रुजेजी ॥
 ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने चुरीखवाना, मुज उपाडी ना
 खीया ॥ तव सल्यकीए नेठारे मारयो, शत्रु विजा
 शकीया ॥ ५ ॥ पार्थ पिण जयदरथना, तुरग रथ
 सारथी हणी, दिनाते जयदरथ मारयो, अरि ग
 ण सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहाणे अक्कोही
 णी सातजी, पाडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव
 चिंते ए पाडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुरा
 जी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करु इहा
 अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहुतो, राते मारु ठा
 य ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेड घेरी, पामव वायश
 नी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अ
 वसरे ॥ ९ ॥ तव जीम पुत्र हेडवा जायोजी, अस्त्र ले
 इने साहमो आयोजी ॥ घटोत्कचने करी कुज जाजो
 जी, जग माहे जेहनो सघलो आजोजी ॥ १० ॥ आ
 जावत ते अस्त्रजोरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया यु
 द्धे बहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बल ठते ॥ ११ ॥
 बाण बहुला नाखीया, पिण तेह पागे न उंसरे ॥ त
 व वहनीकणा वृत शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपह

परे, अबनि आकाश प्रळयांत ॥ तिर ते त्रिचुवने विस्त
 रया, जाणे कोप्यो क्रतात ॥ जो० ॥ १३ ॥ पन्नग अस्त्र क
 र्णें मुक्यु, पार्थे गरुड अस्त्र ताम ॥ एम अस्त्र अनेक अ
 फल्या करघा, अर्जुने तेणे ठाम ॥ जो० ॥ १४ ॥ शं
 खचूड निशा निधे, कर्ण मार्यो दिनात ॥ करण पड्यो
 कौरव तणी, जागी सघली भ्रात ॥ जो० ॥ १५ ॥
 आशा बलवंती जगमां कहीं, तव शल्य कर्यो शेना
 नि ॥ रणागणमा आविया, हजु हुश अठे जीत्यानि ॥
 जो० ॥ १६ ॥ शल्य ते शल्य सारिखो, बाणनो वरसतो मे
 ह ॥ तिहा युर्धाष्टीर एक थीर रह्या, थयु युद्ध अठेह
 ॥ १७ ॥ दीशी दावानल सारिखो, शकुनी आव्यो
 तक जोय ॥ उत्तर वयर सजारिने, शल्य युद्धीरे सोय
 ॥ १८ ॥ शक्ति मेलिने सहारियो, दिनाते दल माहे ॥
 एतो ढाल रसाल ए, वदे गुणसागर उठाहे ॥ जो० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ शल्य पडते महा शल्य थयो, कौरवने ते
 काल ॥ लोक माही लाजतो, मुख ढके मठराल ॥ १ ॥
 दुर्योधन तव नाशाने, अलोप थयो ते आप ॥ कोइ
 सरोवर माहि जइ पफ्यो, अताग देखी आप ॥ २ ॥

ढाल तेहिज ॥ चडि आव्यो लाल पार्थ प्रबल प्रता
 प ॥ ए देशी ॥ धी वी नगारा वाजता, बाहला, चर्यो
 दुर्योधननो सेनावन माहि बोली विधुरा ॥ वा० ॥ मुख मे
 हलता फेन ॥ १ ॥ माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे
 म्हारो मुजुरो आजुनो ॥ आवी मीलोरे, म्हारा नूप अ

नारायणी नामे ॥ मुफ्यु महा क्रोधे करी, विश्व कप्यु
 ते ठामे ॥ जोरो० ॥ २ ॥ जाणे कोलियो करणे विश्व
 नो, सैन्य लोधु सर्व घेर ॥ तेहने समर्थ नहि कोइ वा
 र्वा, जोरावर पिण थया जेर ॥ जोरो० ॥ ३ ॥ तव
 कृष्णने वचने पाडवे, आयुध मेहली दूर, विनय करि
 ते स्वपरि करे, हेजे रही हजुर ॥ जोरो० ॥ ४ ॥ न
 क्तिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते यइ शात ॥ वार पो
 होर युद्ध ते थयु, अनेकनो आव्यो तिहा अत ॥ जो०
 ॥ ५ ॥ कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ठाम ॥
 रणागण माहि आविया, वल्यो माहा सग्राम ॥ जो०
 ॥ ६ ॥ तव कर्णांत ताणी कोदरुने, कर्णने पार्थ दाय
 ॥ कल्पात काल रवीनि परे, क्रोधे कोप्या कुल होय ॥
 ॥ जो० ॥ ७ ॥ बले पूरा ते त्रिहु सदि, वाणावालि पि
 ण तुल्य ॥ सरिखे समाने वें नडे, नूजठे जेहना अतु
 ल्य ॥ जो० ॥ ८ ॥ नीम नूजा बलि नालीने, नाज्यो
 दु शासन ॥ नूजा काठी नूज बले, वीर हरया धरि म
 न ॥ जो० ॥ ९ ॥ रविए रेहेवाणु नहि, नाशी गयो
 निज गेह ॥ रात्रि पडी तव तजी, थानक पोहोता तेह
 ॥ जो० ॥ १० ॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने
 मारु आज ॥ शल्यने सारथी थापिने, शखनो करी
 अवाज ॥ जो० ॥ ११ ॥ रणागण माहि आवियो, ग
 र्जना करतो घोर ॥ दशो दिशी वहिरी करी, नय ला
 गो चिहु उर ॥ जो० ॥ १२ ॥ सजल जलद घटानि

दाना घाय ॥ मा० ॥ १० ॥ मल्लपरे ते बे मिल्या ॥ वा०
 ॥ पोढा पर्वत माही ॥ मा० ॥ उचा निचा उगले ॥
 ॥ वा० ॥ घडो घडी धरती घेराए ॥ मा० ॥ ११ ॥
 रोषारुण थया रातमा ॥ वा० ॥ जोया केणे न जाय
 ॥ मा० ॥ दुर्योधन नाठो घणु ॥ वा० ॥ प्रथवीए न
 मेली पाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ लघु लाघवी कला ल
 ही ॥ वा० ॥ बलवीण नवी ठेनराय ॥ मा० ॥ जघमा
 गढा जोरे शु ॥ वा० ॥ जीम मारे महाकाय ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ नूए पाडीने जीमने ॥ वा० ॥ मारी पाटुना
 प्रहार ॥ मा० ॥ मुकुट जागी जुगो करयो ॥ वा० ॥
 पूरव कोप सजार ॥ मा० ॥ १४ ॥ गुणसागर कहे सा
 जलो ॥ वा० ॥ एतो ढाल रसाल ॥ मा० ॥ विघन घ
 णा वाका जना ॥ वा० ॥ आवी पोहोते काल ॥ मा० ॥ १५ ॥
 दुहा ॥ सबधी जाणी ते समय, बलजद्र बहु रि
 साय ॥ पारुव सहुने अवगुणी, निसरी दूरे जाय ॥ १ ॥
 पाडव तव पुठे गया, आगे कृष्ण करेह ॥ बलजद्रने
 मनाववा, निज मने आणी नेह ॥ २ ॥ धृष्टद्युमन
 खेडीयो, रद्धाने रणमाही ॥ थिर करीने थापीया, र
 ह्या रण अवगाही ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ॥ शियल सुरगी चूनडी ॥ ए देशी ॥
 होजी दुर्योधनने ते आवी कहे, होजी ऋतवर्म कृपा
 अश्वस्थाम ॥ होजी अत समये आव्या अमे, होजी
 तम स्वरुप जोवाने काम ॥ १ ॥ साहेबीया बोल वो

ज्ञीमानी ॥ कुण० ॥ २ ॥ ए आकणी ॥ ॥ खाते वगडो खोलतां,
 ॥ वा० ॥ किहा एक लाधी जाला ॥ जल मध्ये तिहा जाणी
 ने ॥ वा० ॥ सहु बोले समकाल ॥ मा० ॥ ३ ॥ पाड
 व पिण पोहोता तिहा ॥ माहरा वधु ठविला ॥ कुण कर
 शेरे जोरे युद्ध आजुनो, रणमा आवोरे माहारा रणना
 रगिला ॥ ए आकणी ॥ तु अज्ञीमानी राजवी ॥ वा०
 ॥ तु सूर माहि सूर ॥ माहारा० ॥ तुजने न घटे नास
 वु ॥ वा० ॥ नहि रहे नासतां नूर ॥ मा० ॥ ४ ॥ का
 तु कुलने लाजवे ॥ वा० ॥ पुरप तनु करी मलीन ॥
 ॥ मा० ॥ पाणीमा पोढयो थको ॥ वा० ॥ डिसेठे म
 हादीन ॥ मा० ॥ ५ ॥ अर्जुन रुपे आयले ॥ वा० ॥
 कहेने किम रहेवाय ॥ मा० ॥ ए सरोवरनो स्यो आ
 सरो ॥ वा० ॥ सोपास्ये जो समुद्र सोपाय ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ अथवा तु जो उंसरे ॥ वा० ॥ सेनासु युद्ध
 न थाय ॥ मा० ॥ तो मन माने जेहशु ॥ वा० ॥ ते
 एकसु वढोरण ठाय ॥ मा० ॥ ७ ॥ जेणे तेणे वाते
 जाणीये ॥ वा० ॥ माथे आव्यु ठे मोत ॥ मा० ॥ ते
 माटे दिन तातजी ॥ वा० ॥ मरे तु सूर तन सहित ॥
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ तव तिहा दुर्योधन बोलीयो ॥ वा०
 ॥ गदा युद्ध ज्ञीमने साथ ॥ मा० ॥ मानी सरथी म
 गरस्यो ॥ वा० ॥ नीसरयो कौरव नाथ ॥ मा० ॥ ९ ॥
 पाडव कौरव सहु मीली ॥ वा० ॥ वेठा सजा वनाय
 ॥ मा० ॥ ॥ ज्ञीम दुर्योधन वे नडे ॥ वा० ॥ मारे ग

॥ १ ॥ पुत्र हणयाथी शोके अति, कौरवने पाडव
 नद ॥ स्वजनादिक सहु साथना, करिअ मृत कार्य
 नरिंद ॥ २ ॥ सरस्वति सरिता तटे, पाडवे मृत काज ॥
 उजमणीठ पालिया, सर्वेने शुभ साज ॥ ३ ॥

इति पाण्डव कौरव सग्राम चरित्र संपूर्ण

ढाल मलगी तेहिज ॥ नजो नरराम राम ॥ ए दे
 शी ॥ दुर्योधन सेनापति जीषम, कियो बलियो जाणी ॥
 धृष्टद्युमन पाण्डव थीर थाप्यो ॥ कटक तणो आगे वाणी
 हीराजा किधो आज नारथ ॥ १ ॥ अजिमन्यु कुमर अधी
 क बलवतो, सर्व सुनटने आगे ॥ रण रगे रमवा रलि
 यायत, ब्रहतबलसु जांगे हो राजा ॥ कि० ॥ २ ॥ जीष्म
 केतु अजिमन्यु कपि, जीष्म जीष्म होवे ॥ वेदे केतु जीम
 नी नृपति, देव तमासो जोवे हो राजा ॥ कि० ॥ ३ ॥ उत्तर
 कुवरने दु खदाइ, सल्य नरेसर देखी ॥ अर्जुन कौरव
 ना दल मोडे, जीष्म रीस विशेषी हो राजा ॥ कि० ॥
 ॥ ४ ॥ शड शीखडी आगे राखी, इद्र तणो सुत को
 पे ॥ जीष्म तनु तव बाणे विंध्यो, प्रनु मरजादा नलोपे
 हो राजा ॥ कि० ॥ ५ ॥ तृप्यावत नदी सुत जाणो,
 अर्जुन पावे पाणी ॥ सयारो करी स्वर्ग वारमे, हुवो
 अमर विमानी हो राजा ॥ कि० ॥ ६ ॥ द्रोणाचार्य
 सेन्या नायक, होइ रणमे आवे ॥ आरजी आरज घ
 णेरो, करतो शक न पावे हो राजा ॥ कि० ॥ ७ ॥
 श्री नगदत्त हरायो अर्जुन, जयदरथ अर्जुन नद ॥

लरे जे कहो ते करु अमे ॥ ए आकणी ॥ होजी तुमे
 तो सहने तजी, होजी सुता मरण गयाए ॥ होजी तो
 पिण आपो आगन्या, होजी ते काज करु उठाहे ॥
 सा० ॥ २ ॥ होजी आपोजो तुमे आगन्या, होजी
 तो पाम्वना शिस, होजी मुख आगे आणी मेलीए,
 होजी एह अमारी आशीस ॥ सा० ॥ ३ ॥ होजी
 वयण सुणी वेधालुया, होजी आपे यइ उनमाल ॥ हो
 जी वासो थापीने मोकल्या, होजी दुर्योधने ततकाल
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ होजी ते तिने रणमा जई, होजी
 युद्ध करीने जोर ॥ होजी धृष्टद्युमन श्रीखडीया हणी,
 होजी शून्य लही रणठोर ॥ सा० ॥ ५ ॥ होजी पाड
 वना पाच पुत्रना, होजी माया लेइ पच ॥ होजी मु
 ह आगले आणी मेलीया, होजी दुर्योधन लहि प्र
 पच ॥ सा० ॥ ६ ॥ होजी शीसु शीर उलखी बोलि
 यो, होजी तुमने पडो धिकार ॥ होजी वालहल्या मुऊ
 आपीने, होजी नारयो अति पापने नार ॥ सा० ॥
 ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो
 ते परलोक ॥ होजी ते पिण त्रीणे किहाइ गया, हो
 जी पामी लाजने शोक ॥ सा० ॥ ८ ॥ होजी गुणसा
 गर एम उच्चरे, होजी ढाल जली रसाल ॥ होजी मरण
 अकाले ते मरे, होजी जेहने पापनो ढाल ॥ सा० ॥ ९ ॥
 दुहा ॥ नक्तिनाव विनये करी, बलजत्रने बहु मा
 न ॥ देइ मनावी पाम्वा, आव्या करी रण स्थान ॥

सारारे परीवरथो, चाल्यो श्रीहरी राज ॥ प्रा० ॥ २१ ॥
 माता बधव अगना, पुत्रा केरोरे साथ ॥ विधीसु देइ
 प्रदह्नीणा, वाद्या श्री जगनाथ ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ देश
 ना सुणीरे स्वामीनी, नवी पाम्या प्रतीबोध ॥ सम
 ता रुपेरे प्राणीया, ठोडे वयर विरोध ॥ प्रा० ॥ २३ ॥
 राजेमतिरे सजम लीयो, नवही दसारा तेम ॥ महा
 नेमी रहनेमीशु, अवर ग्रहे व्रतनेम ॥ प्रा० ॥ २४ ॥
 सुर पोहता निज स्थानके, हरी पोहता पुरमाही ॥ प्र
 नु विचरेरे महीतले, साथे घणा सुर प्राही ॥ प्रा०
 ॥ २५ ॥ चालीसा सोमी ढालमें, राजेमती जिन
 प्यार ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, निवह्यो अधिक
 अपार ॥ प्रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ गजपुर पती गर्जे महा, पांडव प्रवल प्र
 ताप ॥ आज्ञा इश्वरता पणे, पाले प्रथवी आप ॥१॥
 नारद नाम महामुनी, चाली आयो ऋषी जाम ॥ बाप
 मायशु पाडवा, किधो ताम प्रणाम ॥ २ ॥ असजती
 ने अवरती, जाणी द्रोपदी देव ॥ मान्यो नही मुनी
 वरु, फिर चाल्यो ततखेव ॥ ३ ॥

ढाल १४१ मी ॥ चंद्रावलानी देशी ॥ रीस वसे
 चित्त चिंतवेरे, एक पुरुषनी नार, गरव करे मनमे घ
 एरे, हु मोटी ससारे जाणी ॥ पाच पुरुषनी नार वखा
 णी ॥ मद आठेहीसु राती अती, न्याय रहे रसर
 गे रती ॥ १ ॥ जी नारदजीरे, कदली तरुनी उप

यारे खेलता, जानीयासुरे जाय ॥ रगे राणीरे रुख
 मणी, बोली बोल लगाय ॥ प्रा० ॥ १० ॥ जाइ जला
 सुख नोगवे, रमणी सोल हजार ॥ स्या तुम कुमर रा
 जला, नारी एकहि लार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ तिर्थकरे
 आगे हुवा, नोगवी नोग विलास ॥ मुक्ति पहुतारे ते
 सही, तुम्ह को उपर आश ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ जाबुवति
 पनणे सखी, वादि करो तुम्ह खेद ॥ पुरुष नाहि ए
 हेजठे, मे लीधोठेरे नेद ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ नारी विना
 नर कीज रहे, पेखी पारेवा प्रेम ॥ अवरयीरे आवे
 धरयो, कामनी उपर केम ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ नामा जां
 खेरे नोलमी, तु नवी समजिरे वात ॥ नारी नरेविरे
 दोहिली, सासामे दिन जात ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ देवरी
 यारे डाह्यो खरो, फिरे निपुणस्यारे न्याय ॥ व्याह म
 नावोरे जोरशु, हरख्यो यादवराय ॥ प्रा० ॥ १६ ॥
 राजेमतीरे व्याहवा, आव्या तोरण वार ॥ हिसा दे
 खीरे बाहुढ्यो, चढीयो गढ गिरनार ॥ प्रा० ॥ १७ ॥
 राजुल राणीरे विनवे, नव नवना नरतार ॥ तुळ वि
 णी व्यापीरे वेदना, सो जाणे कीरतार ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
 सजम लीधोरे सादरो, सहस नरा परीवार ॥ घाती कर्म
 ने खय करी, पाम्या केवल सार ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ स
 मोसरण देवे रच्यो, मिलीया चोसठ इद्र ॥ वन रखवा
 लोरे आवीयो, प्रणम्यो कृष्ण नरिंद ॥ प्रा० ॥ २० ॥
 दान देहरे सतोखीया, मेली सुदर साज ॥ दसही द

धान कहावे, पचाली जगमे जस पावे ॥ तेहने पग
 अगुठे आणी, लाखमे जागे नावे तुऊ राणी ॥ जी०
 ॥ ७ ॥ एम कही ऋषीजी गयोरे, नृपने तो रढ ला
 गी ॥ विषया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती
 जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन
 किधो ताम ॥ सुर नाखे सा अवर न चाहे, शु कर
 सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जा
 णी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निद्रा आ
 करीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत
 जेवारे, पूरव सर्गीत काम समारे ॥ राजाना मदीरथी
 लीधी, पद्मनाचने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ मही
 ल माही अति नलोरे, ब्रह्म अशोक उदार ॥ आणी
 राणी द्रोपदीरे, कियो अति अर्वाचार ॥ कियो अति
 अविचार विभासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए का
 मथी तु जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा
 ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुऊने मत तेडावजेरे, ए कहुबु
 तुऊ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज
 ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणोरो,
 सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल
 कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाणयो ए अपहार ॥
 आरतीवती अति खरी, मनशु करे विचार ॥ १ ॥
 हथीणापुर किहा रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुऊ प्रित

मारे, जाणी काल विणास ॥ फल मुके तिम द्रोपदिरं
 पर्नीयो चाहे पास ॥ पडायो चाहे पास ते एतां, मु
 ऊने तो अण आदर देता ॥ तो हु जोरे विणसु का
 म, एम कही ऋषी चाल्यो ताम ॥ जी० ॥ २ ॥ सोल
 हजार ए देशमारे, वरते हरीनी आण ॥ पहोचावु
 तेही स्थानकेरे, जिहा न चाले हरी प्राण ॥ जिहा न
 चाले हरीनो प्राण, सोधु सो जइ निश्चल ठाण ॥ द्वी
 प समुद्र उलधी जाय, नारद करवा काज उमाय ॥
 ॥ जी० ॥ ३ ॥ धातकी खड भरतमेरे, सुरककाह उ
 गह ॥ पद्मनाभ राजा जलोरे, सात सया त्रय नाह
 ॥ सातसया त्रीय केरो नाह, आपुणपे जाणे गुण गा
 ह ॥ नारी निरोपम शु सुख वाशी, जोग पुरदर लि
 ल वीलाशी ॥ जी० ॥ ४ ॥ नारद चाली आइयोरे,
 महील माही मनरग ॥ राजा राणी साचवेरे, शेवा
 धर्म सुचग ॥ शेवा धर्म सुचगपणेरे, अति आदरशु
 नूप जणेरे ॥ मुऊ अतेजर सरीखो रुडो, किहा ए
 दिठो मती जाखो कूडो ॥ जी० ॥ ५ ॥ नारद जाखे
 रायजीरे, स्यो जूठो अहकार ॥ कुवा मीनक सारी
 खोरे, तु दिसत अपार ॥ तु दिसत अपार नरेशर,
 अवर न दीठी नार अलवेशर ॥ जीणेहि जेतो दे
 स्यो पेस्यो, ते तोही मन वात विशेष्यो ॥ जी० ॥ ६ ॥
 जवुद्धीपे जाणीपरे, खेत्र भरत सुस्थान ॥ हृषीणा
 पुरमे हर्षशुरे, पाडव नारी प्रधान ॥ पाडव नारी प्र

धान कहावे, पचाली जगमे जस पावे ॥ तेहने पग
 अगुठे आणी, लाखमे जागे नावे तुऊ राणी ॥ जी०
 ॥ ७ ॥ एम कही ऋषीजी गयोरे, नृपने तो रढ ला
 गी ॥ विपया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती
 जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन
 किधो ताम ॥ सुर जाखे सा अवर न चाहे, शु कर
 सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जा
 णी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निद्रा आ
 करीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत
 जेवारे, पूरव सर्गीत काम समारे ॥ राजाना मदीरथी
 लीधी, पद्मनाचने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ मही
 ल मही अति नलोरे, ब्रह्म अशोक उदार ॥ आणी
 राणी द्रोपदीरे, कियो अति अर्वाचार ॥ कियो अति
 आविचार विमासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए का
 मथी तु जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा
 ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुऊने मत तेडावजेरे, ए कहुवुं
 तुऊ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज
 ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणोरो,
 सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल
 कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाणयो ए अपहार ॥
 आरतीवती अति खरी, मनशु करे विचार ॥ १ ॥
 हथीणापुर किहा रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुऊ प्रित

म पांडव किहा, सखरो कारण तेव ॥ २ ॥ किहा ते
 मदीर मालीया, किहा रत्नाली सेज ॥ किहा दार्शा म
 लीयागिरी, बालपणानो हेज ॥ ३ ॥ ए हिमोलो मा
 हरो, पिण नवी ए मुऊ वाग ॥ कोइ वेंरी मुऊ अपह
 री, एम चितवे महा जाग ॥४॥ उलजा देइ आकरा,
 राणी विविध प्रकार ॥ देवमत उंगो उतरे, आज अठे
 तुऊवार ॥५॥ नृप अतेउरशु चली, आणी जणावे आ
 प ॥ केलवणी करतो घणी, ताम प्रकाशे पाप ॥ ६ ॥

ढाल १४२ मी ॥ बदलीनी देशी ॥ राजा कुमरी
 प्रते बोले, नारी कुण तारा तोले हो ॥ सुठर वयण
 सुणो ॥ ते नगरी माही सारी ॥ मृगनयणी पदमनी
 नारी हो ॥ सु० ॥ १ ॥ तुऊ रुपे रजा हारी, तुऊ न
 यनाकी वलीहारी हो ॥ सु० ॥ तोरी वात कही ब्रह्म
 चारी, रचीपची विध आप समारी हो ॥ सु० ॥ २ ॥
 तुऊ कारण देव मनायो, त्रिजे उपवासे आयो हो ॥
 ॥ सु० ॥ तोने तिहाथी आणी, एही साची सहनाणी
 हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ मनमे मतको रुर आणो, मुऊ नग
 री सबलो थाणो हो ॥ सु० ॥ कुण राजा रावण रा
 णो, मुऊथी को नवि सपराणो हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ह
 मसु हठ बोड हठिली, राजकुमरी रग रगिली हो ॥
 ॥ सु० ॥ माननी मन मान निवारो, मुऊ विनतडी अ
 वधारो हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सह राज तणी धणियाणी,
 तुऊ करी थापु पटराणी हो ॥ सु० ॥ मुऊ घरे पेहली

जे राणी, तुऊ आगल आणशे पाणी हो ॥ सु० ॥
 ॥ ६ ॥ धन्य दिन दरशण पायो, धन्य तुऊसु प्रेम ल
 गायो हो ॥ सु० ॥ लिलापति नाम धराज, गज गम
 नी विरह गमाज हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ मुऊ देखी कुमरी
 तु लाजी, हिवे किण वाते तु राजी हो ॥ सु० ॥ मन
 गाठ गोडी कर बोलो, गुघट पट परहो खोलो हो ॥
 सु० ॥ ८ ॥ कुमरी राजा प्रते जासे, व्रत राखण एम वि
 मासे हो ॥ सु० ॥ जे हुवे शियल अटको, तस वाल
 न होवे वक्रो हो ॥ सु० ॥ ९ ॥

दुहा ॥ काल खेपणा कारणे ॥ देवी करे अरदास,
 लागी मुवानो नहि समो, मागी लया घट मास ॥
 ॥ १ ॥ एटला माहि वाइरु, थाशे देव मुरार ॥ नहि
 तो वश बु ताहरे, राजा आरति निवार ॥ २ ॥ पाड
 व बलने हरी तणा, रथ जल थलमे जाय ॥ मनोरथ
 अनुसारथी, किहाहि न खलाय ॥ ३ ॥

ढाल १४३ मी ॥ राम पधारीयाजी, ब्राह्मण केरे
 गेह ॥ ए देशी ॥ धन धन धन सतीजी, आपुण राखे
 एम ॥ काल खेपणा करे घणीजी, नीरवाहे निज नेम
 ॥ ध० ॥ १ ॥ साठ सहस वरसा लगेजी, सुदरीए त
 प कीध ॥ काया करी अती दुबलीजी, प्रचु पासे व्र
 त लीध ॥ ध० ॥ २ ॥ सतिया माहि सीरोमणीजी,
 सत्यवति त्रीयदेखी ॥ राजा रावण आगलेजी, राखी
 टेक विशेष ॥ ध० ॥ ३ ॥ स्ववश तो अति सोहिलोजी,

शिल तणो सुविचार ॥ पिण तो परवश ढोहिलोजी,
 राखेवो आचार ॥ ध० ॥ ४ ॥ लेखण खटीका काम
 नीजी, हाथ पराड जाय ॥ सावत पाठी नावहिजी,
 लागे वचन ए प्राह्य ॥ ध० ॥ ५ ॥ रागी तो रावण
 घणोजी, दुति राणी तास ॥ तो पिण शियल नव ख
 डीयोजी, त्रिचुवनमे शावास ॥ ध० ॥ ६ ॥ गुफा मा
 हि एकलीजी, राजुल राणी आप ॥ पडतो देवर उध
 रयोजी, शीयल गुणे थिर याप ॥ ध० ॥ ७ ॥ चेना
 नूपतीनी सुताजी, सतानिक निज नार ॥ एवती प
 ति वेतरयोजी, सुजस घणो ससार ॥ ध० ॥ ८ ॥
 कष्ट पडीया कामनीजी, न तजे नेम लिगार ॥ मोटा
 माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ ध० ॥ ९ ॥
 दो उपवासे पारणोजी, आवील तपसु प्रेम ॥ करति
 वरते द्रोपदिजी, सानिध होवे केम ॥ ध० ॥ १० ॥
 युधीष्टार नृप जागीयोजी, देवी न दिसे ताम ॥ अरहु
 परहु सोधी घणुजी, सुद्ध न लाधी जाम ॥ ध० ॥ ११ ॥
 आज अम्हारा राजमाजी, कोन करे अन्याय ॥ लोह
 जड्यो शिर केहनोजी, कुलहिणीत ते थाय ॥ ध० ॥
 ॥ १२ ॥ बाप कन्हे आया चलिजी, जाखी सघली
 वात ॥ पाखरीया नड मोकल्याजी, वसुधा माही वि
 रुयात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सुनट सहु फिरी आवीयाजी,
 खबर न हुइ कोय ॥ राजा पडुजी खरोजी अरती
 वतो होय ॥ ध० ॥ १४ ॥ कुंतीशु पाडु कहेजी, द्वारा

मती तु जाय ॥ वात जणावो मुरारनेजी, जिम ए का
म सराय ॥ ध० ॥ १५ ॥ वेतालीस सोमी ढालमेजी,
कुती करवा काम ॥ श्री गुणसागरजी कहेजी ॥ किम
जेटे नृप शाम ॥ ध० ॥ १६ ॥

दुहा॥कुती आडबर घणे, वेशी वड गजराज ॥
आवी नगरी द्वारीका, कारीज करवा काज ॥ १ ॥
आप हरीसा वागमे, द्रुत मोकल्यो एक ॥ खबर कर
ण नत्रीजने, प्रनु तव करे विवेक ॥ २ ॥

ढाल १४३ मी ॥ शिथल सलुणी मयणरया स
तीरे ॥ ए देशी ॥ शोना विविध प्रकारशुरे, किधी न
गरीमे प्राहीरे ॥ जण जण जय जय उचरेरे, वाजा वा
जता उगहीरे ॥ १ ॥ नर्तजि नुवा शु सादरोरे ॥ ए
आकणी ॥ पेसारा विधी साचविरे, हय गय रथ पा
यक साररे ॥ वेसी बडे गजराजीएरे, साथे सहु परी
वाररे ॥ न० ॥ २ ॥ देतो दान महाबलिरे, हरजी
हरखे आवतरे ॥ दरशण देखी दुरथीरे, प्रनुजी सुख
पावतरे ॥ न० ॥ ३ ॥ हाथीथी तव उतरीरे, प्रणमी
नुवाना पायेरे ॥ नगाति करी नल नावसुरे, चितनो
चोखो चावरे ॥ न० ॥ ४ ॥ जन्म क्रतारथ तव मा
हरोरे, माहरो जीव सो उल्हासरे ॥ दिठो दरशण ता
हरोरे, सुफल हुइ सब आशरे ॥ न० ॥ ५ ॥ कंठे ल
गायो प्रेमसुरे, आणी अधीक जगीसरे ॥ फूली अ
ग नमावहिरे, तव नुवाजी दिए आशीपरे ॥ न० ॥

॥ ६ ॥ चिरंजीवे चिरनदजेरे, चिर लगी पाळजे रा
जरे ॥ चिर आश्रीत सह लोकरारे, प्रजु पूरे वरित
काजरे ॥ न० ॥ ७ ॥ जुवा जतिजो एकठारं, बेठा
वड गजराजरे ॥ नगरिमें पाउधारीयारे, घर घर हु
वो उवायरे ॥ न० ॥ ८ ॥ जोजाइ जगति महारे, न
णदिसु नेह उदाररे ॥ बहुतर सहस सुहामणारे, प्र
णमे हेत अपाररे ॥ न० ॥ ९ ॥ हलधरने हरजी त
णारे, नारी अधीक उमेदरे ॥ विसामण विधी साचवी
रे, टलियो सघलो खेदरे ॥ न० ॥ १० ॥ जोजन न
कती करी खरीरे, हरी पुठयो आगमनी वातरे ॥ वात
सुणता विशेषयीरे, हरी हासो हिए न समातरे ॥ न०
॥ ११ ॥ एकेलो हु एतलारे, केरो थाज रखवालरे ॥
ए पाऊव पाचे महा बलारे, नरखाणी एकहि बालरे ॥
॥ न० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे फूड साजलारे, मतकरो विं
ता लिंगाररे ॥ पातालाथी पेदा करुरे, सोपु तुज सुखका
ररे ॥ न० ॥ १३ ॥ आशासना दिधी घणीरे, आपी
बहुला मालरे ॥ पोहोचावी हथीणापुरेरे, सा आवी तत
कालरे ॥ न० ॥ १४ ॥ कृष्णे साद फिरावियारे, त्रिहु खं
ड खबर कढायरे ॥ लाधी नहि इहा द्रोपदारे, हरी मन
जाखो थायरे ॥ न० ॥ १५ ॥ त्रेतालिसा सोमी ढाल
मेरे, हरजी करयो ए कामरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी
रे, कहे मोटानो मोटो नामरे ॥ न० ॥ १६ ॥
दुहा ॥ एतले नारद आवियो, दिधो बहु सनमान ॥

आरति अति उतावली, पूठे श्री जगवान ॥ १ ॥ गा
म नगरपुर पाटणा, फिरता नव नव देश ॥ किहा
दिठी तुमै द्रोपदि, वात कहो सुविशेष ॥ २ ॥
सुरकका नगरी जली, पद्मनाभ नृप गेह ॥ मे पंचा
ली सारखी, दीठी पिपा सदेह ॥ ३ ॥ हरी जांखे ना
रद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद ॥ एम कहि उठी गयो,
निश्चे लह्यो नरिंद ॥ ४ ॥

ढाल १४४ मी ॥ वावा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ मा
धव कागल लिखीयो जलो, गजपुर नगर अठे गुण
निलो ॥ पाडू नूपति पाडव नू धणी, कागल माहि लि
खी हेत जणी ॥ १ ॥ मेरो जाग्य जलो मेरो जाग्य
जलो ॥ ए आकणी ॥ दूत तेडी हरी कागल नृप दियो,
करी जुहार तेणे उचो लियो ॥ द्रोपदि खबर कहेजे सु
खदाय, हथीणापुर तु वेगे जाय ॥ मे० ॥ २ ॥ धात
की खड इहाथी दूर, अमरकका नगरी धनपूर ॥ पद्म
नाभ नृप महील मजार, तिहाठे द्रोपदि राज कुमार
॥ मे० ॥ ३ ॥ कहेजे कृष्ण हुवा असवार, साथे ल
शकर अपरपार ॥ पूरव सागर तट वैताल, तिहा चा
ल्या वागी करनाल ॥ मे० ॥ ४ ॥ जाजो कटक साथे
लावज्यो, अमपासे वेगा आवज्यो ॥ दूत शिख लेइ चा
ल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥ मे० ॥
॥ ५ ॥ पाडुरायने कियो जुहार, कागद दियो हरख
अपार ॥ वाची कागद हुवा सतोष, पाडव लस्कर क

री बहु जोप ॥ मे० ॥ ६ ॥ हिवे नारायण जोर मन्त्र
 ण, गाम नगर करता मेलण ॥ अनुक्रमे दरिया कां
 ठे गया, जली ठाम जद डेरा दिया ॥ मे० ॥ ७ ॥ पा
 डव आव्या मननीरली, हरी दिठा मन वाठा फली ॥
 माहो माही मिल्या ससनेह, जिम हरखे जन वुठा मे
 ह ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्रीपति पाम्ब करे विचार, जादव
 जोर जुडयो दरवार ॥ कृष्ण कहे सुणजो सहु नूप,
 आगे सागर पदम सरुप ॥ मे० ॥ ९ ॥ लाख दौ जोज
 णनो मान, किम जलधयो जाइ असमान ॥ आप आ
 पणी मती केलवो, पाठे अरिपुर अठे जेलवो ॥ मे० ॥
 १० ॥ बोल्या बलनद्र दसे दसार, जलनीधी तरवो
 तुम्ह आधार ॥ निसुणी सहु राजानी वात, हिवे हरी
 करे कवण अवदात ॥ मे० ॥ ११ ॥ त्रण उपवास कि
 या रोकना, जिणयी हुवे वगीत थोकना ॥ त्रिजे दिन
 सुर प्रगट थयो, माधव मनमा आनद जयो ॥ मे० ॥
 १२ ॥ सुर नाखे सुण केशवराय, किण कारण स
 मरयो चित लाय ॥ कृष्ण कहे सुणो सुरराय, पदम
 नाज नृप कियो अन्याय ॥ मे० ॥ १३ ॥ ढाही को
 ट पाडु कागरा, मागे निख चुणे सागरा ॥ सुर बोले
 मतकरो हरी रिस, इहा वेठा तुम फले जगीश ॥ मे० ॥
 १४ ॥ पदमनाज तुम्ह लागे पाय, द्रोपदी पिण
 आणुं इण ठाय ॥ सघली नगरी आणु इहा, सायर त
 रो र्थे जावो किहा ॥ मे० ॥ १५ ॥ को तो नगरी साय

र धरु, तरली माटी उपर करु ॥ तिणे मूरख जो कि
 यो अकाज, तुमे हठ मतकरो महाराज ॥ मे० ॥ १५ ॥
 कृष्ण कहे ए सघलु जलु, पिण एकवार जइ एहने
 मिलु ॥ सायर मारग मांगु उवाह, एह तणी मुऊने ज
 स चाह ॥ मे० ॥ १७ ॥ चमालिसा सोमी ढाल, कहे
 गुणसागर अधीक रसाल ॥ द्रोपदी सीयल तणे सु
 प्रकार, उपनो हियडे हरख अपार ॥ मे० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ दिधो मारग मोकलो, पाडवने नृप शाम
 ॥ पट रथ सायर उतरी, आया ककापुरी ताम ॥ १ ॥
 दारुक नामा सारथी, नृप कन्हे गयो तेह ॥ सिंघास
 ए लाते हएयो, काढि जाला रेह ॥ २ ॥ दुरवचने
 नीभ्रठियो, रेरे लपट चूप ॥ कृष्ण वारे आविया, था
 साहमो धरी चूप ॥ ३ ॥ राजा कोप्यो ततद्वणे, दू
 तने देइ अपमान ॥ चनीयो आडवर घणे, दलवल
 ने मडाण ॥ ४ ॥ करी शिणगार शोजा धरी, हाथ अ
 हि शर चाप ॥ गज अइरावत पर चडी, आयो सन
 मुख आप ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे पाडव प्रते, अरी साथे स
 ग्राम ॥ तुम करशो के हु करु, जाखे पाडव ताम ॥ ६ ॥

ढाल १४५ मी ॥ वीराजी गज थकी उत्तरो ॥ ए
 देशी ॥ हमे हरसा सग्रामने, तुमे देखो एक वारोरे ॥
 हरी पगे लागी रथ चढ्या, वचन कह्यो अविचारोरे
 ॥ १ ॥ पाडव कहे हरजी सुणो ॥ ए आकणी ॥ पद
 मनाज के अम्हे नहि, एम कही सनमुख चाल्यारे ॥

माधव तिहा विचारीयो, पहेले वचने पाल्यारे ॥ पा० ॥
 ॥ २ ॥ वेहु दल एकठा मिल्या, वाग्या वाणना शोकोर ॥
 पायकमु पायक जिने, नाठा काठा लोकोरे ॥ पा० ॥ ३ ॥
 सहदेव जोशी योगणी, डावी नैरव घेररे ॥ लाह को
 ट नड कटकमे, कृष्ण दुहाइ फेररे ॥ पा० ॥ ४ ॥ द
 समन नूप नुजग मन, कुल नकुल परे धावेरे ॥ धर्म
 पुत्र पुकारीया, वडा वडा विरुद बोलावेरे ॥ पा० ॥ ५ ॥
 पदमनाज चडी आइयो, पडी ददामा ठोररे ॥ हल
 कारा वड वागीया, पनी लडाइ जोरोरे ॥ पा० ॥ ६ ॥
 अर्जुने वाण सजारीया, जिम धोरीधर धीरोरे ॥ स
 नमुख को आवे नही, पासे वहे हथीयारोरे ॥ पा० ॥
 ॥ ७ ॥ अर्जुने नीम करण नणी, नीम गदा लेइ धा
 योरे ॥ पदनाज मन चितवे, ए दाणव किहार्थी आयोरे
 ॥ पा० ॥ ८ ॥ आप नूप रोसे चढ्यो, पाच लाखपे
 जायोरे ॥ पाच सहस कर एकठा, अरजुनने ठहरा
 योरे ॥ पा० ॥ ९ ॥ पदमनाज परपचथी, अर्जुन म
 न अकुलावेरे ॥ शस्त्र सघलाहि चालवे, हाथ कोइ
 नवी फावेरे ॥ पा० ॥ १० ॥ दिश मुजाणी पाडवा, उ
 ज्ञा तव पिठतायोरे ॥ सूरवीर पिण शु करे, वचन ठ
 ले ठेतरायोरे ॥ पा० ११ ॥ नाठा जाग्या आवीया,
 पाचे पामव सूररे ॥ विलखाणा मन आपथी, कायर
 देह न नूररे ॥ पा० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे पाडव सु
 णो, रहो उजा मती जूरोरे ॥ हिवे नाशी किहा जाइसो,

द्वारका तो रही दूरेरे ॥ पा० ॥ १३ ॥ एही वचन म
ऊ मानजो, दुममन दूर नसावुरे ॥ पदमनाजने जी
वतो, अपुठो तास वधावुरे ॥ पा० ॥ १४ ॥ पेता
लीसा सोमी ढालमे, सनमुख उठ्यो सोइरे ॥ श्री गु
णसागर देखजो, हिवे कुण तमाशो होइरे ॥ पा० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ ऊऊ करण माधव चढ्यो, करी आरुवर जोर
॥ पदमनाज सेना सजी, उजो एकणकोर ॥ १ ॥
आज अमारो जय हुशे, पदमनाजनो नाश ॥ एम
कही रथ उपर चढ्या, ढारुक सारथी पास ॥ २ ॥

ढाल १४६ मी ॥ कडखानी देशो ॥ धजा रथ फ
रहरे देखी वैरी डरे, एक रथ सहस रथ आखी दिसे ॥
जाणे गढ जेलशे कोनी सुजट मेलस्ये, कृष्ण लोचन
अरुण हुउरीसे ॥ १ ॥ हिवे गढ जेलवा चढ्यो वसुदे
व सुत, सूर जीम तेज दिपे सवायो ॥ अमर ककापु
री रतन माणक जरी, जय करी यिर हरी कोण आ
यो ॥ हि० ॥ २ ॥ पाच पारुव तणी वात श्रवणे सुणी,
रोस धरी रथ चढी कृष्ण आवे ॥ दूरथी अटकल्यो, गाम
नृप खलजल्यो, एकुण सामत तुम सबल दावे ॥ हि० ॥ ३ ॥
देव दिठे पड्या रथेरथ आथाम्या, कृष्ण मुख हाथशु
शख वायो ॥ तिसरो जाग लशकर तणो घटि गयो,
मिट गयो नूप वलतो न आयो ॥ हि० ॥ ४ ॥ धनुष्य
सारग मनरग हरी कर धरी, पिण वढण काज तिण
वार नाठो ॥ जाग त्रिजो कटक सुजट पग चातरया,

पदम पग गोडीया हुतो नाठो ॥ हि० ॥ ५ ॥ अमर
 कका जडी नगर जागज पडी, खलजलया त्योऊ सह
 एम जाखे ॥ जुप ए लपटी न्याइ प्रचूता घटी, नासतां
 जागता कवण राखे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अमरकका जिहा
 कृष्ण आवे तिहा, रथी उतरी कोट देखे ॥ ढाहि ढ
 म ढेर करी सुसाहि ततखिणे, रुप नरसिहनो करी सु
 विशेषे ॥ हि० ॥ ७ ॥ हिवे कृष्ण नरसिहनो रुप
 सबलो कियो, अमरककापुरी कोट पाड्यो ॥ वड व
 डा मेहेल तो रण पड्या धडहडी, पोलनो वार हरी
 आप उघाड्यो ॥ हि० ॥ ८ ॥ अमरकका धणी, चि
 त चिता घणी, एकले कवण ए काम कियो ॥ कटक
 नाशी गयो, कोट पिण इण लियो, कोटि दे राखीए आ
 प जियो ॥ हि० ॥ ९ ॥ आप आलोच करि हियो नि
 ज ठाम करी, द्रोपदि पासे नूपाल आवे ॥ माहरी ध
 र्मरी वेहेन मुऊ राबले, सुमती दे ताहरी दाय आवे
 ॥ हि० ॥ १० ॥ द्रोपदी कहे सुण वाणी कल्याण मुऊ,
 पदम तु रदन करे देश सारो ॥ सार नकारथी लाल
 बहु मालले, लाग्य हरी पाय जो जाग्य थारो ॥ हि०
 ॥ ११ ॥ दिन दिवो धरी लेइ अतेठरी, त्रणो दात ध
 री साथ मोरे ॥ मन हठ परहरी हाथ जोडी करी, रा
 खले माधवा शरण तोरे ॥ हि० ॥ १२ ॥ हु कहु तिम
 करो कृष्णथी मत डरो, चरण लागी करी एम जाखो ॥
 स्वामीनो शरण ससार तारण तरण, मुऊ गुनह माफ

कर माम राखो ॥ हि० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोल्या तव बुट
 स्यो किम हिवे, वहिन तें माहरी केम आणी॥मारी शत
 खड नुजदफ शीर मुड करी, करु तेम बेल बहे
 जेम घाणी ॥ हि० ॥ १४ ॥ हिवे मुऊने मिल्यो कोप
 सघलो टल्यो, जा घर ताहरे पदम पापी ॥ द्रोपादि ले
 इ करी तिहा थकी सचरी, द्वारका गमनरी वात
 थापी ॥ हि० ॥ १५ ॥ कृष्ण पांडव मिल्या, द्रोपदी ले
 इ वल्या, बहु रथ पाळली राते चाल्या ॥ जाग्य मोठे
 कीसन नाहि कोइ वसन, घणा पकवान लेइ साथ घा
 ल्या ॥ हि० ॥ १६ ॥ द्रोपदी सिल वले किसन शोजा
 ग्य वले, पाडु सुत जाग्य वले विजय पायो ॥ पारको
 वध धावली पारकी, पारकी जइ जलनीधीमे सवायो
 ॥ हि० ॥ १७ ॥ ढाल सेतालीसा सोमी सुहामणी, द्रो
 पदी सिल थकी काज सरीया ॥ श्रीगुणसूरि गुरु नवीक
 ने शिखवे, सियल केडे व्रत सघलाही धरीया ॥ हि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ तिणे कालेने तिण समे, धातकी खड मऊार ॥
 पूरव धातकी जरतमे, चपा नगरी सार ॥ १ ॥ नगरी
 वाहीर उद्यानमे, विराजे श्रीजिनराज ॥ कपीळपूर मुख
 परखदा, बैठी अधिक सकाज ॥ २ ॥

ढाल १४७ मी ॥ इडर आवा आवलीरे ए देशी ॥
 जिन दरशन मन उलसेरे, आणद अग न वाय ॥
 जिन देशना सहुको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥ १ ॥
 जिनेसर इम जाखे उपदेश ॥ ए आकणी ॥ तिण वे

ला सुणी तिहारे, शख शब्द घननाद ॥ चित्त चम
 क्यो नृप चितवेरे, मन उपनो विखवाद ॥ जि० ॥ २ ॥
 कोइ नवो इहा उपनोरे, वासुदेव बलवत ॥ मुऊ सरी
 खो जाणीएरे ॥ जीण बले अचल चलत ॥ जि० ॥
 ॥ ३ ॥ हरी पूठे जिनने नमीरे, शख शब्द सबव ॥
 जिन बोले ये मत डरोरे, पदमनाच प्रवध ॥ जि० ॥
 ॥ ४ ॥ एक खेत्र एकणसमेरे, चक्री जिनबलदेव ॥ वासुदेव
 पिण जोरलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जि० ॥ ५ ॥ पद
 मनाचसु ऊऊतारे, कृष्ण बजायो शख ॥ ते साज
 ली तुऊ उपनीरे, वासुदेव निशक ॥ जि० ॥ ६ ॥ क
 पील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो मन सदेह ॥ जि
 न वादी एम विनवेरे, कृष्ण मिलण मुऊ नेह ॥ जि० ॥
 ॥ ७ ॥ बलतु मुनीसुव्रत नणेरे, वासुदेव सुण वाण ॥
 हुउं न होशे हुइ नहीरे, ए तु निश्चे जाण ॥ जि० ॥
 ॥ ८ ॥ हरी हरीने नवी मिलेरे, जो करे कोड उपाय ॥
 देखिश ध्वज हरी रथ तणीरे, सागर तट तिहा जाय
 ॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रचुने वादी गज चडीरे, कपील चा
 ल्यो ततकाल ॥ सागर विच दिठी तिसेरे, घजा पि
 त शितलाल ॥ जि० ॥ १० ॥ शंख बजायो मन रली
 रे, कृष्ण सुणी अरदास ॥ एकवार देदार दियोरे ॥
 मुऊ मन पूरो आश ॥ जि० ॥ ११ ॥ हरी पिण शंख
 बजाइउरे, शखे शंख मिलत ॥ घणी चोमी अमो आ
 वीयोरे ॥ रथ पाठा न बलत ॥ जि० ॥ १२ ॥ हरख

धरी पावो वल्योरे, सुरकका नणी जाय ॥ पद्मनाम
 पिण साहमोरे, आवी लाग्यो पाय ॥ जि० ॥ १३ ॥
 पद्म नणी तव पुढीयोरे, किस्थो नगरी प्रकार ॥ कुण
 वैरी ए तुऊनेरे, सताप्यो निरधार ॥ जि० ॥ १४ ॥
 स्वामी ताहरी साहीवीरे, लेवा कारण आज ॥ हरी
 आपण आव्यो हतोरे, मे आयो तस वाज ॥ जि०
 ॥ १५ ॥ कंपील क्रोधातुर थयोरे, साजली एहवी वा
 ण ॥ आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो दु.ख असमा
 न ॥ जि० ॥ १६ ॥ तेभावी तस नदनेरे, थाप्यो नर
 पती पाट ॥ राजा निज स्थानक गयोरे, टाली दु ख
 उचाट ॥ जि० ॥ १७ ॥ सडतालीस सोमी कहीरे,
 ढाल अनोपम एह ॥ गुणसागर जिन वाणीएरे, उप
 जे अधीको नेह ॥ जि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ मारग जाता इम कहे, पाम्वने हरी राय ॥
 सुस्तीक सुर जेटी करी, हु आवीश सुखदाय ॥ १ ॥
 थान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विश्राम ॥ प्रवहण
 पावो मूकज्यो मुऊ कारण अजीराम ॥ २ ॥ गगाने त
 ट आवीया, पाम्व पच उदार ॥ ठठी राणी द्रोपदी, र
 थ वाहन अति सार ॥ ३ ॥ नावा मोठी मनोहरु, वे
 ठो सघलो साथ ॥ खेम कुशल जल उतरया, चित
 चितवे नर नाथ ॥ ४ ॥

ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कवल कोइ न लेशी ॥
 ए देशी ॥ चित चितवे तव नर नाथो, एक मतो वे

सघलो साथो ॥ होणहार मेव्यो नवी जाय, सघला
 नी मती सरखी थाय ॥ १ ॥ कुरु कुडनो जूदो पाणी,
 तुरु तुडनी जूदी वाणी ॥ मस्तके मस्तके मती ठे जुड,
 पिण सहुनि एकज हूड ॥ २ ॥ सहु सयाणा सोचो का
 इ, जावीनो बल मोटो प्राहो ॥ पाडवजी सरखा जो
 चूके, सुमति सरोवर तो कुण दुके ॥ ३ ॥ हासि मिसे
 उपाय उठावे, सातकमे वेताल जगावे ॥ एह अजा
 णपणो जय मोटो, जाणी वुजी खाजे खोटो ॥ ४ ॥
 नाव ठिपावे एम विचारी, कितनो एक बलवत मूरारी ॥
 हासो काम विणा सणहारो, हासाथी चिड थाइ पीया
 रो ॥ ५ ॥ शाम तदा सुरने सतोखी, प्रिती पनोती
 परघल पोखी ॥ श्री गगा तटी चाली आया, नाव न
 देखे तव हरी राया ॥ ६ ॥ एक हाथे रथ खेडु घोडा,
 विजे हाथ तिरे जल थोडा ॥ पाट नदिनो जोजन वा
 सठ, ते पिण जोजन देव तणो पट ॥ ७ ॥ जल अध
 विचे आया जामो, थाक्या आति न तिराइ तामो ॥
 चित चिंतरे ए चिंता थापी, पारुव तो बलवता आ
 पी ॥ ८ ॥ नाव विना ए पयरी उपाणी, हय रथने नी
 रवाहे राणी, एह अचनो दिसे नारी, किम आया अ
 री आगे हारी ॥ ९ ॥ जाणी हरी चिंताए चप्यो,
 गगा देवीनो आसण कप्यो, गगा देवीए दिघो थाह,
 हरी मन उपज्यो अधीक उगाह ॥ १० ॥ पाणी पय
 री काठे लागे, पाडव आवी उजा आगे ॥ श्री हरी

पाडव प्रेम अपारो, अब उपजे मन माहि विकारो ॥

॥ ११ ॥ दुषण तो हरीनो नवि दिसे, पाडवनो तो
विसवा विशे ॥ लुगडातो धोवत कुहाडा, न रहे साजो
होइ अति जाफा ॥ १२ ॥ अडतालिस सो ढालसु
जाखी, चद सूरज दो दिधा साखी ॥ श्री गुणसागर
सूरि प्रकाशे, मति चुक्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ कृष्ण कहे पाडव सुणो, तुम बलवत अपार
॥ गगा जल जुजबले तिरया, नारी लिधा वली लार
॥ १ ॥ जल अधविचे आवियो, हु अति थाक्यो ताम ॥ ग
गादेवीए माहरी, सानिध्य करी सकाम ॥ २ ॥ तो ह
मथी बलवत तुमो, जाखे हरी ससनेह ॥ पद्मनाभ नृ
प आगले, हारया एह सदेह ॥ ३ ॥ गाथा ॥ सरला
जाखे सरली वाणी, नवि मेले कोइ दुजी आणी ॥ आहि
ल्या जाख्यो हरी मम जार, गगा दाख्यो हर जरतार ॥ ४ ॥

दुहा ॥ कपट तजी पाडव जणे, आणी सरलो जाव
॥ जावा तुम बल कारणे, हमे ठिपावी नाव ॥ ५ ॥

ढाल १४९ मी ॥ मारा घणारे पीयारा प्रचुजी ॥
ए देशी ॥ निसुणी एह कहाणी, हरी ऋदयामा रीस
जराणी ॥ हो कुवुद्धी, यु क्यु अकल तुज आइ ॥ बा
लपपोथी जेला, वस्ता थइ एवडी वेला हो ॥ कु० ॥
॥ १ ॥ गोवरधन गिरिराज, मे उपाख्यो बल काज
हो ॥ कु० ॥ वली वालपणे महा जाग्य, मे नाथ्यो
काली नाग हो ॥ कु० ॥ २ ॥ वली जरासध लमा

इ, हुवता पिण अर्धीक वमाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
 म करी मे साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ३ ॥ द्विल खलवण कहाय, उलर्धी जीत्यो
 वडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर जगडो जेय, तिहा हु
 ता आपण सहु सेथ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ लडना पदमोत
 र जग, तुम जागी आव्या मुज सग हो ॥ कु० ॥ दे
 खी मुज बल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेटो मेहे
 ल माही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
 हा आवी नम्यो ते नूप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते बल ना
 व्यो तुम दाय, हजी केतो बल जोवाय हो ॥ कु० ॥
 एतो आव्या पुण्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारुशु जा
 य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
 वाट जुवे वत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरिया
 काम, तरे कुण विचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
 ण एटली तो नवि जाणी, जे रोशे हरी पटराणी हो
 ॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोता हुसे वालगोपा
 ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गगा मजार, तो कु
 ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
 मीठ, तुज ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥ १० ॥
 तुम वात सकल में लाधी, तुम पाचे वडा अपरा
 धी हो ॥ कु० ॥ द्विवे तजवो तुम्ह साथ, एम जाखे
 श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न कबु वातके का

ज, तुम्ह किधो अधीक अकाज हो ॥ कु० ॥ तुम्ह
नीस्नेहि थया आज, मुऊ लेखे न किधा काज हो ॥
कु० ॥ १२ ॥ लोह दड उपाडीने आयो, केशवजी को
पे जरायो हो ॥ कु० ॥ एगुणपचास सोमी ए ढाल,
गुणसागर कहे सुविशाल हो ॥ कु० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ नूप नुजगम सारिखा, जालविया सुख हो
य ॥ आसगे असुहामणा, पांखनी परे जोय ॥ १ ॥
केशव कोपे पूरीयो, देखी थरहरी वाल ॥ आडी फि
री उची रही, नाखे वचन रसाल ॥ २ ॥

ढाल १५० मी ॥ रायजी अमने हिंदुआणा रा
य गराशीयारे लोल ॥ ए देशी ॥ कृष्णजी तुमने क
हु करजोरु के, सुणो प्रनु विनतीरे लोल ॥ प्रनुजी
नहि कोइ तुमारो दोपके, निठोर थया मुऊ पतीरे लो
ल ॥ प्रनुजी तुमसु एवनी हाशके, करवी केम घटेरे
लोल ॥ प्रनुजी लिख्या ठीना लेखके, मिटाख्या नवि
मिटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रनुजी दोश नहि तुम कोइके,
किरतार एहि गमेरे लोल ॥ प्रनुजी गेरु कुबेरु था
यके, मावित्र तोहि खमेरे लोल ॥ वधव तुमारी मो
टी लाजके, काज विचारीयेरे लोल ॥ प्रनुजी विनवु
गोद विवायके, रोस निवारीएरे लोल ॥ २ ॥ प्रनुजी
तुमे मोटा माहाराजके, मनमा जाणीयेरे ॥ लो० ॥
प्रनुजी पोतानो परीवारके, दिलमें आणीएरे ॥ लो०
॥ प्रनुजी मोटा होय दातारके, बोले मुख मीठडुरे

इ, हुवता पिण अधीक वनाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
 म करी मे साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ३ ॥ द्विल खलवण कहाय, उलर्घी जीत्यो
 वडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर जगडो जेय, तिहा हु
 ता आपण सहु सेथ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ लडता पदमोत
 र जग, तुम जागी आव्या मुज सग हो ॥ कु० ॥ दे
 खी मुऊ बल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहे
 ल माही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
 हा आवी नम्यो ते नूप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते बल ना
 व्यो तुम दाय, हजी केतो बल जोवाय हो ॥ कु० ॥
 एतो आव्या पुण्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारुशु जा
 य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
 वाट जुवे वत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरियां
 काम, तरे कुण विचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
 ण एटली तो नवि जाणी, जे रोशे हरी पटराणी हो
 ॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोता हुसे बालगोपा
 ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गगा मजार, तो कु
 ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
 मीठ, तुज ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥ १० ॥
 तुम वात सकल में लाधी, तुम पाचे वडा अपरा
 धी हो ॥ कु० ॥ हिवे तजवो तुम्ह साथ, एम जाखे
 श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न कबु वातके का

॥ लो० ॥ प्रजुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो
 डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके,
 मनसु विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अं
 तके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लो
 ह दडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया
 चकचूरके, पाडव उजा जिहारे ॥ लो० ॥ ९ ॥ नाखे
 रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे ॥ लो० ॥
 पारुव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो०
 रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे
 ॥ लो० ॥ प्रजुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम
 जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रजुजी रथ मर्दनने ठामके,
 कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रजुजी सैन सकल तेणी
 वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रजुजी द्वारापुरी सहु
 साथके, पोहोता ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रजुजी एकसो प
 चासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ पाडव प्रजु सोचे घणु, कीयो किसो कीर
 तार ॥ ॥ विगडी वात विशेषथी, खीज्यो देवमुरार
 ॥ १ ॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो
 प्रजुजी पामीए, त्रुसाहि सतोष ॥ २ ॥ पाचे पारुव द्रो
 पदी, तिहाथी आया गेह ॥ पाडुराय कुता मिलि, जाग्यो
 अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्या अगज देखने, पूठे पाडु
 विचार ॥ कुति बेठी साजले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥
 ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगने नवि

॥ लो० ॥ प्रनुजी मोटा न कये आलके, करे अण
 दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रोपदी ताहरा पतिना बोलके,
 खीण खीण साजलेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी द्रणे कीवा जे
 कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी मारी
 एरुज वातके, गदा पाठी नवी फीरेरे ॥ लो० ॥ एहने
 बल देखाडु आजके, हरी मन रोस धरेरे ॥ लो० ॥
 ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेषीवारके, आखे आसु ढ
 लेरे ॥ लो० ॥ चाइजी एवढो मकरो रोसके, उनी ए
 म टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी फूड कुताजीनी लाजके,
 दिलमा आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी पडुराय मयायके,
 मनमा जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रनुजी गौब्राह्मण प्र
 तिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी तुम्ह
 शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रनु
 जी नीठोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥
 लो० ॥ प्रनुजी कठण मरमनी वातके, वाक केहनो
 नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रनुजी माणस होशे एह तो,
 वात घणी थइरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी बाहे ग्रह्यानी ला
 जके, राखो हेत लेइरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी करणी तणा
 फल एहके, तुमारी बेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी पूरव न
 वनो पापके, तास वेला पडीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ प्रनुजी
 एवढी तुमारी धाकके, हिवे हु कीम सहुरे ॥ लो० ॥
 प्रनुजी अखड एवा तण राखके, जाऊ शुं कहुरे ॥ लो०
 ॥ प्रनुजी राखो एटली लाजके, गोरु करी गेडवोरे ॥

॥ लो० ॥ प्रनुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो
 डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके,
 मनसु विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अं
 तके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लो
 ह दडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया
 चकचूरके, पाडव उजा जिहारे ॥ लो० ॥ ९ ॥ जाखे
 रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे ॥ लो० ॥
 पारुव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो०
 रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे
 ॥ लो० ॥ प्रनुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम
 जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रनुजी रथ मर्दनने ठामके,
 कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी सैन सकल तेणी
 वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी द्वारापुरी सहु
 साथके, पोहोता ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रनुजी एकसो प
 चासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पाडव प्रनु सोचे घणुं, कीयो किसो कीर
 तार ॥ ॥ विगडी वात विशेषयी, खीज्यो देवमुरार
 ॥ १ ॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो
 प्रनुजी पामीए, त्रुसाहि सतोष ॥ २ ॥ पाचे पारुव द्रो
 पदी, तिहायी आया गेह ॥ पाडुराय कुता मिलि, जाग्यो
 अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्या अगज देखने, पूठे पाडु
 विचार ॥ कुति वेठी साजले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥
 ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगने नवि

॥ लो० ॥ प्रचुजी मोटा न कये आलके, करे अण
 दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रोपदी ताहग पतिना बालके,
 खाण खाण साजलेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी दूणे कावा जे
 कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी मारी
 एरुज वातके, गदा पाठी नवी फारेरे ॥ लो० ॥ एहने
 वल देखाडु आजके, हरी मन रीस धरेरे ॥ लो० ॥
 ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आवे आसु ठ
 लेरे ॥ लो० ॥ चाइजी एवढो मकरो रोसके, उनी ए
 म टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी फूड कुतार्जीनी लाजके,
 दिलमा आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी पडुराय मयायके,
 मनमा जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रचुजी गौब्राह्मण प्र
 तिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी तुम्ह
 शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रचु
 जी नीठोर यथा तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥
 लो० ॥ प्रचुजी कठण मरमनी वातके, वाक केहनो
 नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रचुजी माणस होशे एह तो,
 वात घणी थडरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी बाहे ग्रह्यानी ला
 जके, राखो हेत लेडरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी करणी तणा
 फल एहके, तुमारी बेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी पूरव न
 बनो पापके, तास वेला पडीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ प्रचुजी
 एवढी तुमारी धाकके, हिवे हु कीम सहुरे ॥ लो० ॥
 प्रचुजी अखड एवा तण राखके, जाऊ शुं कहुरे ॥ लो०
 ॥ प्रचुजी राखो एटली लाजके, गोरु करी गोडबोरें ॥

॥ १० ॥ पत्नी हरी बोल्या एम, गगा तिरीने हो थे कि
 म आइया ॥ नावा हती अम्ह पास, तिण हम तिरी
 या हो पाचे जाइया ॥ ११ ॥ वली माधव बोलत, किम
 ते नाणी हो सनमुख नावडी ॥ निज चुज तरशे केम, ह
 री बल जोर्या हो अमे एम तेवडी ॥ १२ ॥ वचन सु
 णी निज कान, कृष्ण रिसाणो हो बोले आकरो ॥ कृ
 तघ्न मुंढ नीटोल, पाडव ते दिठा हो वचन कह्यो वू
 रो ॥ १३ ॥ लाख जोयण दो मान, सागर उलधी
 हो आणी तुम बहु ॥ मुज बल तोहि न दिठ, थें मन कु
 डा हो जगत जाण सह्यु ॥ १४ ॥ मुख न देखामजो
 मुढ, एम उलजो हो देइने हरी गया ॥ अमे पिण तिहां
 थी एय, दुमना आया हो तुम्ह दरसण थया ॥ १५ ॥
 पाडुराय सुणी वात, बलता बोले हो पुत्र ये वूरी क
 री ॥ कृष्ण किया कुण काम, माम वधारी हो तुम्हे
 तो एवी करी ॥ १६ ॥ मोतीने मन लाख, लाखने मू
 ले हो मोती तो मिले फिरी ॥ पिण मन जाग्यो जाण,
 ते रग नावे हो कोड जतन करी ॥ १७ ॥ पाडुराय
 महीपती ताम, कुती तेडीने हो वचन एसो कहे ॥ मत
 करो अवर विचार, श्रीपति पासे हो जायवा मन वहे
 ॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुल्प, माधव लज्या हो रा
 खो हिवे माहरी ॥ ते पूर्या मन कोड, वली हु श्रीप
 ति हो चुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख,
 कुती चाली हो पोहती एम अनुक्रमे ॥ द्वारामतीनो

जावु हो ॥ ए देशी ॥ पाडव वोल्या बोल, माता पी
 ताजी हो एक वचन सुणो ॥ श्रीपति सेनि प्रीत, ऊ
 ऊरी हुती हो सुख पिण हुतो घणो ॥ १ ॥ सप्रती रु
 ठो जाण, केहेने जइ कर्हाए हो देशवटो दियो ॥ वचन
 कह्या दसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणे हियो
 ॥ २ ॥ पूवे पाडु नरिंद, ए किम खटपट हो थ हरीसु
 करी ॥ सायर काठे जाय, हरी पाय लागी हो उजा
 हेत धरी ॥ ३ ॥ सुस्थीत सुर आराव, श्रीपती साथे
 हो पट रथ लेइ करी ॥ पहुता पेले पार, जिहा कण
 दिसे हो अमर कका पुरी ॥ ४ ॥ माधव कियो सुबो
 ल, ऊऊ करीने हो कटक जगाडीयो ॥ कियो नरसिंह
 रूप, गढमढ पाडी हो पदम नसानीयो ॥ ५ ॥ द्रोपदी
 आणीने दिध, हरी पगे लागी हो पदम पाठो वल्यो ॥
 रथ चढी पूरण प्रित, जलधी उलधी हो हरी सुरने मि
 ल्यो ॥ ६ ॥ अम्ह दिधो आदेश, गगा जइने हो पा
 र तुमे करो ॥ हु पिण आइस वेग, जाइजी पामव
 हो मन धीरज धरो ॥ ७ ॥ हम पिण गगा आय, ना
 व चढीने हो गगातट लह्यो ॥ हरीनी जोता वाट, त
 रु तले बेठा हो हियडो गह गह्यो ॥ ८ ॥ एतले कृ
 ण्ण नरेश, शिख करीने हो सुर शेती वली, आया
 गगा तीर, नीर निहाले हो तरणी अटकली ॥ ९ ॥
 नाव न लाधी काइ, हरी चुज बले हो गगा उतरी ॥
 अमे लाग्या हरी पाय, हिली मिलीने हो उजा हेत धरी

नो शी लावे निर, स्वादन आवे हो मूल एम धारज्यो
 ॥ ३० ॥ कुती मानी वात, तिहा थकी आवी हो प
 ती सुतने कह्यो ॥ हिवे कुण करे विचार, गजपुर मा
 ही हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ जिहां लगे पुण्य प्र
 काश, तिहा लगे बधव हो सुजन मेलावयो ॥ गुणसा
 गर कहे एम, जिहा लगे सूरज हो तिहा लगे तावडो
 ॥ ३२ ॥ पाडुराय मथुरा निवास, नगर वसावी हो र
 ह्या मननी रली ॥ सुखमें पाले राज, एकावनसोमी
 हो ढाल जाखी जली ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ श्री जिन नेम दयालजी, अतिशयवत अ
 शेस ॥ अरती असुख दु ख टालता, विचरे देश विदे
 श ॥ १ ॥ जद्विलपुर आया सही, हरख्या लोक अपा
 र ॥ राजा वदन आवीयो, साथे सहु परीवार ॥ २ ॥
 सुलसा सुधी श्रावीका, नारी निरोपम नाम ॥ घट न
 दनसु आवीया, श्री जिन वदन ताम ॥ ३ ॥

ढाल १५२ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ दे उपदेश
 सुहामणोरे, ए ससार असार ॥ सुदर सुखकारी ॥ धन
 जीवन परीवार सहरे, कोइ न आवे लार ॥ सु० ॥
 ॥ १ ॥ दसे ब्रष्टाते दोहिलोरे, माणसनो जव एह ॥
 सु० ॥ आलस तजी आतुर थहरे, किजे धर्म सने
 ह ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री जिन वाणी साजलीरे, ते पट
 ही सुकुमार ॥ सु० ॥ समजावे माता पिता
 रे, लेवा सजम नार ॥ सु० ॥ ३ ॥ वत्रीसे वर कामनीरे,

राय, माधव आवी हो चुवाने पाये नमे ॥ २० ॥
 पुरुषोत्तम करजोरु, कुर्ती पुर्गी हो केम पधारीया ॥ कु
 ती जाखे एम, तेतो रिसे हो पाडव वारीया ॥ २१ ॥
 त्रण खरु प्रथवी माही, आण तुम्हारी हो सघली शि
 र वहे ॥ जाइ चलपण जाण, ठाम वतावो हो वीरा
 जिहा रहे ॥ २२ ॥ गोरु उपर रिस, मात पितानी हो
 पाणी वल रहे ॥ वली मनावे आप, खोले वेसाडी हो
 शिख वचन कहे ॥ २३ ॥ जो येँ करसो रोस, तो
 जाइ पाडव हो जइने किहा वसे ॥ वली मोटो सताप,
 देखी दुरजन हो दुर्योधन सुत हसे ॥ २४ ॥ बाहुव
 ल नरतने जिम, रोस धरीने हो वधव निपेदीयो ॥
 आणी जाइ सनेह, पडता अपुठो हो तास जीलीलियो
 ॥ २५ ॥ आप उठेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फ
 ल नवीदिए ॥ ए सोहे तुम पास, दूर मतकाढो हो को
 गुण लेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी उल, आश वि
 रानी हो चुवाने हुती घणी ॥ थोडामा दियो ठेद, वा
 त विचारे हो एतो आवी बणी ॥ २७ ॥ दीन वचन
 सुणी एम, माधव जाखे हो चुवा दु ख मती धरो ॥
 उंबू मतआणशो एह, पाडवथी माहरे हो अधीक न को
 खरो ॥ २८ ॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो
 वेल वहे जिहा ॥ तिहा रहेज्यो चित लाय, पाडु मयु
 रा हो नगरी वाशी तिहा ॥ २९ ॥ कहे चिर लगी पा
 लजो राज, अदिठ शेवार्थी हो कारीज सारज्यो ॥ उ

तो याय ॥ सु० ॥ १४ ॥ कुप वागने गौतणोरे, परत
 ख देवी विचार ॥ सु० ॥ देता दान न थाकीएरे, दा
 न बडो ससार ॥ सु० ॥ १५ ॥ दिधा राणी देवकीरे,
 मोदक खरा अमोल ॥ सु० ॥ एतले विजो आवीयो
 रे, सघाडो समतोल ॥ सु० ॥ १६ ॥ बावनसोमी ढा
 लमेरे, दाता करता दोय ॥ सु० ॥ श्री गुणसागर सू
 रिजीरे, एक सरीखा होय ॥ सु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सोइ लाडु याल सोइ, विधी वदन पिण सो
 इ ॥ सोइ जाव उदारसु, प्रतीलाच्या मुनी दोइ ॥
 ॥ १ ॥ देव योग एवो हुवो, त्रिजो जुगल जिवार ॥ श्री
 हरी जननीने घरे, आया सही तिणीवार ॥ २ ॥
 उंही लाडु उंही विधी, वोहराव्या मुनी तेह ॥ पिणतो
 शका उपनी, राणीने मन एह ॥ ३ ॥

ढाल १५३ मी ॥ पूगी हो पूढि कोइनार एदेशी ॥
 पूढे हो पूढे राणी वात, फिरि फीरि हो आया तुम्ह
 घर माहरेजी ॥ वारी हो वारी हु सोवार, वारी हो वा
 री दर्शण ताहरेजी ॥ १ ॥ मिलीया हो मिलीया साधु
 अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग अहारनोजी ॥
 करवी हो पिंड गवेपणा सुध, करवो हो उद्यम सुधा
 चारनोजी ॥ २ ॥ मुनिवर हो मुनिवर जाखे वाण, वाणी
 हो वाणी अमृत सारखीजी ॥ हम पट हो हम पटवध
 व जाण ॥ न सके हो कोइ जुदा पारखीजी ॥ ३ ॥ न
 दिल हो नदिलपुर अवतार, सुलसाहो सुलसा माता मा

अमर्गिने अवतार ॥ सु० ॥ बत्रीशे कचन तपीरे, को
 डी तजी तेहीवार ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन मुख सत्रम
 उठेरे, पाले सुधाचार ॥ सु० ॥ दो उपवासे पारणो
 रे, सदा करे सुखकार ॥ सु० ॥ ५ ॥ स्वामी पधारया
 द्वारीकारे, वदन श्रीहरी राय ॥ सु० ॥ आयो आडब
 र घणोरे, वाणी सुण्या सुख याय ॥ सु० ॥ ६ ॥ प
 ट बधवनो पारणोरे ॥ एकण दिन सुविशेष ॥ सु० ॥
 सधाडा त्रण जुजुवारे, पामी प्रनु आदेश ॥ सु० ॥
 ॥ ७ ॥ नगरी माही आवीयारे, जूदा पनीया जाम
 ॥ सु० ॥ एक जुगल हरी मदीरेरे, आया तव अजि
 राम ॥ सु० ॥ ८ ॥ दिठा राणी देवकीरे, विधी वदन
 अधीकार ॥ सु० ॥ अतरजामी आत्मारे, हेज जणा
 वण हार ॥ सु० ॥ ९ ॥ लाडु तो हरी केसरीरे, वोह
 राव्या नरी थाल ॥ सु० ॥ निज हाये उलटपणेरे, आ
 णी जाव रसाल ॥ सु० ॥ १० ॥ जेहनो चित्त देवा
 तणोरे, तेहने चित्त मजोय ॥ सु० ॥ वित्तवतने चित्त
 नहीरे, चित्त वीत्त पुण्ये होय ॥ सु० ॥ ११ ॥ चित्त वी
 त्त दोइ सपज्यारे, पात्र पोखे तोवादी ॥ सु० ॥ पात्र
 वडो ससारमारे, सुकृत सहनि आदी ॥ सु० ॥ १२ ॥
 पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह ॥ सु० ॥
 विण शिंगाही जाणीएरे, ढोर सरीखो तेह ॥ सु० ॥
 ॥ १३ ॥ व्याजे दिया दूणो वधेरे, चतुर गुणो व्यव
 साय ॥ सु० ॥ खेति सेहेसे गुणा हुवेरे, दान दिया अव

ढाल १५४ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तु
 म्ह अवतार ॥ ए देशी ॥ बलीजाठ प्रचुजी, चाजो ए
 ह सदेह ॥ साधु सलुणा देखताजी, उपनो अधीक
 सनेह ॥ व० ॥ १ ॥ साजल राणी देवकीजी, चाखे
 श्री जगनाथ ॥ ए षट नदन ताहराजी, नीसुणे स
 घलो साथ ॥ व० ॥ २ ॥ सारद नामे सारदाजी, सा
 रद देवी होय ॥ वडवखती तुळ सारखीजी, नारी न
 बीजी कोय ॥ व० ॥ ३ ॥ कस कर्म आदे करीजी, सं
 जलाव्यो विरतत ॥ हरखी राणी देवकीजी, वादी
 श्री जगवत ॥ व० ॥ ४ ॥ घर आवी एम चिंतवेजी,
 जाया नदन सात ॥ बालपणे न रमाडीयोजी, एकहि
 धीग मुळ मात ॥ व० ॥ ५ ॥ जाग्यवती सा जामनी
 जी, बालिक जेहने गोद ॥ हुलरावे हियडे धरीजी,
 वासर जाय विनोद ॥ व० ॥ ६ ॥ मे कुण कुण पूरव
 जवेजी, प्रोढा पातिक कीध, केसर वरणो नानडोजी,
 एहवो मुळ देवे न दीध ॥ व० ॥ ७ ॥ एम केहती ध
 रती खीलेजी, सजल सलुणा नेण ॥ थया अणगम
 ता काननेजी, वाली सखीय न वेण ॥ व० ॥ ८ ॥ अर
 ती अलुर वाधी घणीजी, आहट दूहट ध्यान ॥ पगे
 लागवा आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥ व० ॥ ९ ॥
 च्यार च्यारसे मायनेजी, हरी नमे नित्य आय ॥ ए
 म ठ मासे वांदताजी, नीज जननीना पाय ॥ व० ॥
 १० ॥ निज पखेरा आतरोजी, मोटा नाणे कोइ ॥

हरीजी ॥ निस हो तिस अने दोड नार, एति हो को
 डी कनकनि परीहरीजी ॥ ४ ॥ नेट्या हो नेट्या नेम
 जिणद, जाण्यो हो जाण्यो जिन जग तारणोजी ॥
 लीधो हो लीधो सजम चार, किजे हो दोड उपवासे
 पारणोजी ५ ॥ जोडा हो जोडा तीने आज, आया हो
 वोहरण यारे श्राविकाजी ॥ लालच हो लाडुनी नहीं
 कोइ, लालचि हो शिवनी पुण्य प्रजाविकाजी ॥ ६ ॥
 राणी हो चितमु चिते ताम, मुऊसु हो निमितीये एम
 चाखीयोजी ॥ यारे हो यारे उत्तम नद, होशे हो होशे
 एम कहि दाखीयोजी ॥ ७ ॥ म्हारो हो म्हारो कान नरिंद,
 जेहवा हो तेहवा पट जाणीएजी ॥ मुऊयी हो मुऊयी सुल
 सा सोय, मोटी हो मोटी आज वखाणीएजी ॥ ८ ॥ वदन हो
 वदन नेम जिणद, आवी सा उतावलीजी ॥ देखी हे देखी
 तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननी रलीजी ॥ ९ ॥ सु
 रहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए
 घणोजी ॥ नयणा हो नयणा ज्ञानी होय, उलखी हो उलखी
 ले जण आपणोजी ॥ १० ॥ ढालज हो ढालज मीठी
 चुर, त्रेपन हो त्रेपनने सोमी नलीजी ॥ श्री गुण हो श्री गु
 णसागर सूरि, माता हो माता सुत मनसा रलीजी ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ पूढे राणी देवकी, नेम जिणदा पास ॥ ए पट
 मुनिवर देखता, माहरे मन उल्हास ॥ १ ॥ ए नव
 के पर नव तणो, सगपणको व्यवहार ॥ देव दया क
 री दाखवो, ज्ञान तणा नडार ॥ २ ॥

२ ॥ ए देशी ॥ राणीजी हो जायो पुत्र रतन, जिहो
 कोमल जिम गजतालु ॥ लाला ॥ नामे गजसुक
 माल ॥ रा० ॥ १ ॥ जिहो हररूयो श्रीहरी राजीयो
 ॥ ला० ॥ हररूया दसेही दसार, जिहो हरखी माता
 देवकी ॥ ला० ॥ हररूयो सहु परिवार ॥ रा० ॥ २ ॥
 जिहो बदिखाना गोडीया ॥ ला० ॥ किधा बहु मडा
 ण, जिहो नगरीनी शोना घणी ॥ ला० ॥ वाजे गुहि
 र निसाण ॥ रा० ॥ ३ ॥ जिहो यादव नारी सामटि
 ॥ ला० ॥ आवे गावे गीत, जिहो आरण कारण किजीए
 ॥ ला० ॥ साचवीए शुन रित ॥ रा० ॥ ४ ॥ जिहो दि
 जे मयगल मोटका ॥ ला० ॥ दिजे हयवर हार, जिहो
 दिजे सोना सावटु ॥ ला० ॥ दिजे अरथ जमार ॥ रा०
 ॥ ५ ॥ जिहो वारसमो दिन आवीयो ॥ ला० ॥ ना
 म दियो अनिराम, जिहो चदकला जिम वाधतो ॥
 ला० ॥ रुप कला गुणधाम ॥ रा० ॥ ६ ॥ जिहो खे
 लावणी हुलरावणी ॥ ला० ॥ चुवावणी चित लाय,
 जिहो न्हवरावणी पहेरावणी ॥ ला० ॥ आगी अग लगाय
 ॥ रा० ॥ ७ ॥ जिहो आखलडी अजावणी ॥ ला० ॥
 जाले करावण चद, जिहो गाला टाकी सामली
 ॥ ला० ॥ आर्लिगन आनद ॥ रा० ॥ ८ ॥ जिहो प
 गमडण अहि आगुली ॥ ला० ॥ ठमुक ठमुकती चा
 ल, जिहो बोलण जापा तोतली ॥ ला० ॥ रिजावणी
 अति रूयाल ॥ रा० ॥ ९ ॥ जिहो रोटी दहिय जिमा

मेह अने गशी देवताजी, सहुने सरीखा जोइ ॥ व०
 ॥ ११ ॥ उपजाणे अरती तणोजी, माता मनहि म
 जार ॥ श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार वि
 चार ॥ व० ॥ १२ ॥ वीनय करीने वीनवेजी, जननी
 श्री हरी राय ॥ माय मया करी जाखीएजी, आरती एव
 डी काइ ॥ व० ॥ १३ ॥ अति लावो निसासडोजी,
 मेलहि बोली माय ॥ सात नदन मे जाइयाजी, तुज
 सरीखा हरी राय ॥ व० ॥ १४ ॥ पट वाध्या सुलसा
 घरेजी, तु पिण गोकुल माहि ॥ हुश न पुगी महारी
 जी, बाल रमाडण प्राहि ॥ व० ॥ १५ ॥ उं दिनथी प
 रवश पणेजी, वैरी केरे वासा ॥ नदन होवे आठमोजी,
 तो मुऊ पूरे आस ॥ व० ॥ १६ ॥ माय मनोरथ पूर
 वाजी, कान्हे किया उपवास ॥ देव चवीने आवीयोजा,
 राणी उदर निवास ॥ व० ॥ १७ ॥ जो जो सच्यो
 पुण्यनाजी, माग्या नदन होइ ॥ चेलणा चुया कारणेजी,
 रोइ न लहिए सोइ ॥ व० ॥ १८ ॥ चोपन सोमी
 ढालमेंजी, माधव केरी मात ॥ श्री गुणसागर सूरि क
 हेजी, सुख माही दिन जात ॥ व० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ जविक जीव प्रतिबोधवा, जिनवर करे वि
 हार ॥ पाप तिमर निरघाटवा, सहस किरणदिनकार
 ॥ १ ॥ गर्ज दिवस पुरा करी, जायो सुंदर नद ॥ घ
 र घर रग वधामणा, घर घर अति आनद ॥ २ ॥

ढाल १५५ मी ॥ नमिराय धन धन तुम अवता ।

तरुवर वासो ॥ हाट मिल्यो वाजीगर केरो, पसरे प्रग
ट तमासो ॥ तिरथ मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहा
र विमासो ॥ जे० ॥ २ ॥ अत्र मटल जिम उपजे
विणसे, तनु धन जोवन जाणो ॥ गगन नगर सरी
खो साचो, पद्मनी प्रेम प्रमाणो ॥ साजन साथ स
रिस सुहावो, विद्युतवान वखाणो ॥ जे० ॥ ३ ॥ (२
अथ शरण जावना ॥) मृग शावक वन माही फिर
तो, करतो केली विचारो ॥ सिंहसूरि देखी सुविसेखी,
ले चलियो निरधारो ॥ काल तणी असवारी होता,
कोइ न राखण हारो ॥ जे० ॥ ४ ॥ (३ अथ स
सार जावना) ॥ चउगति फेरी करीय घणोरी, अम
र थयो ए प्राणी ॥ नरगतिरी अवतार अनता, पाप
तणी अहि नाणी ॥ नरनवे धन वन रामा रामा, वि
जी वात न जाणी ॥ जे० ॥ ५ ॥ (४ अथ
एकत्व जावना ॥) जिहा तिहा नर आप एकिलो,
फिरे रमतो सोइ ॥ परनवे जाता जोइ पनोता, साथे
नावे कोइ ॥ का धन का धनियाणी धरति, धर्म सखाइत
होइ ॥ जे० ॥ ६ ॥ (५ अथ अन्यत्व जावना) ॥
जीव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे ॥
उ शिव वठे उ नव इठे, उजागे उ सोवे ॥ आत्म देहि
विचारे जूदि, सोइ अघ मल धोवे ॥ जे० ॥ ७ ॥ (६ अ
थ अशुचि जावना ॥) काय अशुचि अनेक प्रकारे,
धोया सुधि न पावे ॥ दसाहि द्वार श्रवे निसवासर,

वर्णा ॥ ला० ॥ लिळा वाल विनोद, जोहो सबहीपरे
 माय देवकी ॥ ला० ॥ पावे अधिक प्रमोद ॥ रा० ॥
 ॥ १० ॥ जीहो पढ्यो गुण्यो मति आगलो ॥ ला० ॥
 जट्टपती जीवन जोय, जीहो प्यारो प्राण यकी खरो
 ॥ ला० ॥ माताजीने सोइ ॥ रा० ॥ ११ ॥ जीहो ए
 टले नेम समोसरया ॥ ला० ॥ वदन देवमुरार, जी
 हो लघु जाइ आगे करी ॥ ला० ॥ परीवरीयो परिवार
 ॥ रा० ॥ १२ ॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता ॥
 ॥ ला० ॥ परणावणने काज, जीहो मूकि मदिर आप
 ए ॥ ला० ॥ जइ वादे जिनराज ॥ रा० ॥ १३ ॥ जी
 हो पूजा प्रणमी साजले ॥ ला० ॥ वेठि परखटां वार,
 जीहो श्री जिनवाणी विस्तरी ॥ ला० ॥ नविकजना
 सुखकार ॥ रा० ॥ १४ ॥ जीहो पंचावन सोमी ढाल
 म ॥ ला० ॥ कुवर गजसुखमाल, जीहो श्री गुणसा
 गर सूरिजी ॥ ला० ॥ धर्म सुणे सुविसाल ॥ रा० ॥ १५ ॥
 दुहा ॥ उपदेसे श्री नेम जिन, जीवा जीव विचार
 ॥ दान शियल तप जावना, श्री जिन धर्म उदार
 ॥ १ ॥ नव नय हरवा जावना, वार तणो विस्तार
 ॥ विवराशु विवरी कहे, त्रिचुवन तारण हार ॥ २ ॥
 ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर नही ॥ ए देशी ॥
 जे क्षण जायठेरे, फिरी नावेठे तेह ॥ चेत चेत नर
 चेतिए हो, कर कर धर्म सनेह ॥ जे० ॥ १ ॥ (१ अथ
 अनित जावना) ॥ ए ससार असार विच्यारो, पखी

काल अनतो सोवत, अवहि क्यु नवि जागे ॥जे०॥१४॥
 आगे जीव अनत विगुतो, पडीया घन प्रमादे ॥ विष
 या वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे ॥ पिण
 परमार्थ एह न जाण्यो, तरवो गुरु प्रसादे ॥ जे०॥१५॥
 एकसो वप्पनमी ढाले, श्रीमुख जिन उपदेशा ॥ चविक
 जना मन मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा ॥ श्री गु
 णसागर सूरि सुहावे, समताजाव विशेषा ॥ जे० ॥१६॥

दुहा ॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, गज सुखमाल कु
 मार ॥ विपयाथी विरच्यो खरो, मनसु करे विचार ॥ १ ॥
 विषया विषहीथी वुरी, विपीया नाम कुनाम ॥ विष
 या वाह्या मानवी, दो चव गमे निकाम ॥ २ ॥ आग
 अने विपया कही, एक सरीखी जोय ॥ सिलगीने वा
 हिर पडी, हाथ न आवे सोय ॥ ३ ॥ धुरही दावी रा
 खीए, लहे अति विस्तार ॥ ए निश्चय मनमा धरयो,
 व्याह तणो परीहार ॥ ४ ॥

ढाल १५७ मी ॥ कानजी मेलोने कावलीरे ॥ ए
 देशी ॥ प्रभु प्रणमी घरे आवीयोरे, माताजीनी पास
 ॥ अनुमतीने उतावलोरे, सजमसु उल्हास ॥ १ ॥
 माता अनुमत दिजीएरे, लेसु सजम चार ॥ जइ जो
 उ उतावलोरे, मुक्ती मनोहर नार ॥ मा० ॥ २ ॥ मूर्वा
 णी मा देवकीरे, वात सुणता ताम ॥ जाया तु मुऊ वा
 लहोरे, प्राण यकी अजिराम ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुरलज
 उवर फूल जीउरे, सानलवो जग माही ॥ तो देखेवो

ते किम सोच लहावे ॥ साते धाते पृग्नि ए तनु, बा
 हिर सोह देखावे ॥ जे० ॥ ८ ॥ (७ अथ आश्रव
 जावना ॥) श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना
 फरस कहिजे ॥ हरिण पतंग जमरने मठी, मयगळ
 मरण लहिजे ॥ एक एक इन्द्रिय कारणे एतो, पचे क्यु
 न कशीजे ॥ जे० ॥ ९ ॥ (८ अथ सवर जावना) ॥ आश्र
 व रोक्या होवे सवर, सवरची फल मोटो ॥ व्यापारी व्या
 पार करता, जाणी न खाइ खोटो ॥ समऊ समऊरे जीव
 सलुणा, दु ख घणो सुख थोमो ॥ जे० १० ॥ (९ अ
 थ निर्झरा जावना ॥) उदय उदिरण दुनी प्रकारे,
 कर्म निर्झरा कहिए ॥ श्री जिनशासन वाडी अनेरा,
 एतो मर्म न लहीए ॥ तप जप दु कर करणीने बले,
 निश्चल हुइने रहिए ॥ जे० ॥ ११ ॥ (१० अथ लो
 क जावना ॥) चउद राज तिम उचो निचो, लोक
 प्रमाण विचारो ॥ सात पाचने एक राजवृवर, चउडप
 णे अवधारो ॥ कियो न किणहि कोइ न करेगो, जिन
 ठे तिम निरधारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ (११ अथ बो
 ध जावना ॥) यावरची ए त्रसपणो दुर्लज त्रसची
 इद्री पूरा ॥ पाचे इद्रीमें माणसनी गती, आर्य खेत्र
 सनूरा ॥ साधु योग सजमनो धरवो, जोतो पुण्य अ
 कूरा ॥ जे० ॥ १३ ॥ (१२ अथ धर्म जावना ॥)
 धर्म विना सब धदो दिसे, काइ हाथ न लागे ॥ धर्म
 विना रुलीयो जव जवमे, रे मन मूरख आगे ॥ वित्यो

सोमल सुसरो आवियोरे, शिर माटीनी पाल ॥ अं
 गारा लेइ खेरनारे, धगधगता ततकाल ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ मेलि मस्तके चालीयोरे, साधु न चूक्यो
 ध्यान ॥ चडते परीणामे लह्योरे, केवल पद निरवाण
 ॥ मा० ॥ १७ ॥ षटमासी रजनी थइरे, सुत विरहे
 विकराल ॥ प्राति पधारी प्रनु कन्हेरे, देखण गजसु
 खमाल ॥ मा० ॥ १८ ॥ वाढा उपर हिसतिरे, सुरहि
 आवे जेम ॥ सुत मुख निरखण साजलिरे, माता आ
 वी तेम ॥ मा० ॥ १९ ॥ अकुलाणी अणदेखवेरे, पु
 ष्या त्रिचुवन स्वाम ॥ नद हुउ आनदमेरे, पोहोचा
 अविचल ठाम ॥ मा० ॥ २० ॥ फरसी ठेदी डाली
 जीउरे, ढली पमी सा माय ॥ रोवे गोरी गहवरीरे, ह
 री हलधर दु ख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ हरी पूबयो
 जिनवर कह्योरे, धसकि बुटशे प्राण ॥ बधव हता ते
 जाणवोरे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥ मा० ॥ २२ ॥
 सेरी वाटे आवतारे, सोग धरी हरीराय ॥ सोमल सा
 साहीमे मुउरे, किधाना फल पाय ॥ मा० ॥ २३ ॥
 उत्कृष्टा पातिक जे करेरे, उत्कृष्टी हि वार ॥ पापे
 पचे घणु आपणेरे, नहि सदेह लिगार ॥ मा० ॥
 ॥ २४ ॥ जे हुवा त्रिचुवनपतिरे, तेहनो सोग न को
 य ॥ कीधी हरी समजावणिरे, नेम जिणदा जोय ॥
 ॥ मा० ॥ २५ ॥ सत्तावन सोमी ए ढालमेरे, मुगती
 गया सुखमाल ॥ श्री गुणसागर सुरिजीरे, प्रणमु चर

किहारे, तिम तम दरसण प्राही ॥ मा० ॥ ४ ॥ पान
 फूलनो जीव तुरे, कोमल केली समान ॥ लहुतने अ
 त लाडीलोरे, लाल न लिला यान ॥ मा० ॥ ५ ॥
 चारीत्र काठोठे खरोरे, जिन वचने विरुयात ॥ मिण
 तणे दाते करीरे, लोह चणा न चवात ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ वाक नरेवो कोथलोरे, चालवो खाडा धार ॥
 सायर तरवो जुज वलेरे, द.कर सजम नार ॥ मा०
 ॥ ७ ॥ धुरी होइ उतावलोरे, गनी घर व्यापार ॥ प
 ठी परीसह उपग्योरे, ढिला पडेही अपार ॥ मा० ॥
 ॥ ८ ॥ लुदल जावे जातीनोरे, दोभें एक न होय ॥ ना
 घर ना सजमपणोरे, वादी गमे नव दोइ ॥ मा० ॥ ९ ॥
 कुमर कहे माजी सुणोरे, रागीनो ए माग ॥ जाणेवो
 जुगतो सहिरे, पिण जुदो वैराग ॥ मा० ॥ १० ॥ जे
 वठक एह लोकनारे, नवि वठक परलोक ॥ ते कायर
 ने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ॥ ११ ॥
 सूरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास ॥ तेहने तो
 सहु पाधरोरे, काइ न दोहिलो तास ॥ मा० ॥ १२ ॥
 जोबनने धन कारीमोरे, अने कारमीदेह ॥ साणपणा
 नो नाम एरे, सजम साथे सनेह ॥ मा० ॥ १३ ॥ घ
 नजीवो सजोगथीरे, त्रपती न पावे जीव ॥ सतोखी
 सुखीया महारे, समतावत सदिव ॥ मा० ॥ १४ ॥ स
 मजावी सजम लिउरे, नेमी जिनेश्वर हाथ ॥ ध्यान ध
 रघो समसानमेरे ॥ दुज दियो जगनाथ ॥ मा० ॥ १५ ॥

ती उपजे अति घणैरे, हरी हलधरने जोय ॥ म० ॥
 ॥ ८ ॥ जाइ सुतने सुदरीरे, अवर अनेरा कोइ ॥
 दिरुया लिप सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होइ ॥ म० ॥
 ॥ ९ ॥ केता एक दिक्का ग्रहिरे, केता नगरी मजार
 ॥ आया हरी निज मदिरेरे, उपकर्मा अधिकार ॥
 ॥ म० ॥ १० ॥ मदीरा नगरी बाहिरेरे, कीधी सघली
 जाम ॥ दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम
 ॥ म० ॥ ११ ॥ जरत कुमर उदाशीउरे, वनही माही
 वसत ॥ खाडो पथथर उपरेरे, घाढो करी घसत ॥ म०
 ॥ १२ ॥ खिस्यो अणि तव आकलोरे, पाणी माही
 पसत ॥ गिलीयो मोठे माठलेरे, पडीयो जाले तुरत ॥
 ॥ म० ॥ १३ ॥ उदरथी कियो दूकडोरे, तिर तणे
 आकार ॥ निरुलीयो ते तिरशुरे, खायो हरीण गिमा
 र ॥ म० ॥ १४ ॥ हरीण गयो वनमे चलीरे, मा
 रयो जरत कुमार ॥ तरकस माहि राखीयोरे, सोइ
 तिर ते वार ॥ म० ॥ १५ ॥ आठावन सोमी ढालमें
 रे, साचा श्री जिन बोल ॥ श्री गुणसागर सूरिजरे,
 अमिय समो निर मोल ॥ म० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ चढ चले सूर्ज चले, चले सोइ नरिंद ॥ शेष चले
 सायर चले, चले सुवडगिरिंद ॥ १ ॥ पिण न चले
 जर्धीतव्यता, एहनो जोर अपार ॥ साव प्रमुख अ
 ति सामटा, खेलण चल्या कुमार ॥ २ ॥

ढाल १५९ मी ॥ हिचे राणि पदमावतिरे हा ॥ ए

ए त्रीकाल ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, पुण्य घटनो आपा
दिसेवे तेहि कारणे, उपज्या ए सताप ॥ १ ॥ मोटा
ना तो कुररा, आसगे नहि कोइ ॥ जाइ हणयो सुख
माल सो, बडो अचनो जोइ ॥ २ ॥

ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए
देशी ॥ श्री बलदेव विनो करीरे, पूठ्या नेमी जिनेश
॥ होतार्थ जे आगलोरे, सुख दुःख हरख किलेश ॥ १ ॥
मया करी स्वामी करो प्रसाद, जे उगे ते आयमेरे,
कोइ नहि विखवाद ॥ ए आकणी ॥ ए नगरी ए सा
हिवीरे, ए श्री कृष्ण नरेश ॥ कव लगी रेहसे एह
वोरे, यादव जोर विशेष ॥ म० ॥ २ ॥ नेम कहे स
हु साजलोरे, जुठो जग व्यवहार ॥ मिलता दिन ल
गे घणारे, विठडता नही वार ॥ म० ॥ ३ ॥ रग कु
सुम पतगनोरे, दिसे अर्धीक सुचग ॥ दिवस दशाने
आतरेरे, सो फीर याइ विरगा ॥ म० ॥ ४ ॥ तन धन जो
बन कारमोरे, परीअणने परिवार ॥ च्यार दिवसनो
चह चहोरे, पाठे विरस अपार ॥ म० ॥ ५ ॥ द्वारा
मति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास ॥ बारसमे व
रसे होसेरे, करसे ए श्री व्यास ॥ म० ॥ ६ ॥ निज
खाडे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ ॥ वन कौ
सवे निश्चेशुरे, मरण कह्यो जगनाथ ॥ म० ॥ ७ ॥
एह सुणता वातडीरे, खलजलीया सहु कोय ॥ आर

॥ जा० ॥ १० ॥ ए मूरख मुऊ नंदनेरे हां, खिजा
 व्या तुम्ह आज ॥ जा० ॥ क्कमा करो ऋपीरायजीरे
 हा, तुम्हने सघली लाज ॥ जा० ॥ ११ ॥ चदन क
 चन सैलडीरे हा, अगर रसोइ वस ॥ जा० ॥ सता
 प्या ए अति घणारे हां, टंचन राखे डस ॥ जा० ॥
 ॥ १२ ॥ व्यास कहे हरीजी सुणोरे हा, जूठी अव म
 नोहार ॥ जा० ॥ करयो नियाणो आकरोरे हा, ते न
 मिटे किरतार ॥ जा० ॥ १३ ॥ तुम्ह दो बंधव वाहिरोरे
 हा, अवर न बोडू कोइ ॥ जा० ॥ सजमधारी जगरेरे
 हा, तुगरसे गृहि होइ ॥ जा० ॥ १४ ॥ तव घर आ
 यो आपणेरे हा, माधव महीमावत ॥ जा० ॥ द्वायक
 समकितनो घणीरे हां, निश्चेवत अनत ॥ जा० ॥
 ॥ १५ ॥ व्यासे नियाणो वाधीयोरे हा, द्वारामती दु-
 ख हेत ॥ जा० ॥ उपज्यो अग्नी कुमारमेरे हा, आ
 णी मिल्यो सकेत ॥ जा० ॥ १६ ॥ ए गुणसाठसो ढा
 लमेरे हा, लिजे सजम चार ॥ जा० ॥ श्री गुणसाग
 रसूरि वधेरे हां, साधानो परीवार ॥ जा० ॥ १७ ॥

गाथा ॥ खड खड रस ठे नव नवा, सुणता मिठा
 साकर लवा, श्री हरीवश चरित्र जय जयो, आठमो
 खड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसारे हरीवस चरित्रे
 आठमो खड समाप्त ॥

अथ ढालसागरे श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन नवमो खड प्रारंभ
 दुहा ॥ मन वचन क्रम शुद्धसु, नेमी नमु सुख

देशी ॥ आवि मदिरा वासनारे हा, हरस्या कुवर जा
 म ॥ जावि बलवति ॥ सघला आव्या आसनारे हा ॥
 खाधी मदिरा ताम ॥ जा० ॥ १ ॥ ठाकू चढ्यो वयला
 घणोरे हा, घुमता चालत ॥ जा० ॥ दिठो दिपायण
 जतिरे हा, तव अमरप पालत ॥ जा० ॥ २ ॥ सब
 कहे सहु साजलोरे हा, एहनो किजे नास ॥ जा० ॥
 नगर अने घर यादवारे हा, एहथी ठे विपनास ॥
 ॥ जा० ॥ ३ ॥ लात धवुका लाकडीरे हा, गाढो कु
 ढ्यो तेह ॥ जा० ॥ मुवो जाणि मुकियोरे हा, दियो स
 धुकण एह ॥ जा० ॥ ४ ॥ कुमर साप डसावियोरे
 हा, सूरि डाढमे वाल ॥ जा० ॥ लग्नवार ते वर हुवेरे
 हा, आइ मील्यो ततकाल ॥ जा० ॥ ५ ॥ प्रतिकेश
 व केशव करेरे हा, पावे सही वीपनास ॥ जा० ॥ सी
 तापती नल पाडवारे हा, जोगविरे वनवास ॥ जा० ॥
 ॥ ६ ॥ दुःशासन खेच्या खरारे हा, पचालिना चीर ॥
 ॥ जा० ॥ नूजा उखाडी जीमजीरे हा, हणीया सोइ वी
 र ॥ जा० ॥ ७ ॥ किचक तणा कुसीलथीरे हा, बधव
 शतहि सहार ॥ जा० ॥ सयण सयाणो स्यु करेरे हा,
 जाविनो अधिकार ॥ जा० ॥ ८ ॥ रिसवसे तिहा ता
 पसेरे हा, किधो इम नियाण ॥ जा० ॥ दुखदाइ द्वा
 रामतिरे हा, होज्यो तपहि प्रमाण ॥ जा० ॥ ९ ॥ वा
 त सुणी उतावलारे हा, हरी हलघर आवत ॥ जा०
 ॥ विविध प्रकारे खामणारे हा, पगे लागी खामत ॥

यो हु नव वैरागीहो ॥ यो अनुमति तो लेउ दिहा,
 जिन बचने रढ लागी हो ॥ अ०॥९॥ समजाव्यो बाबा
 ने बुढो, समजाव्यो निज तातो हो ॥ चारित्रने उमा
 ह्यो अधीको, अवगमे नहि वातो हो ॥ अ०॥१०॥ साठ
 अने एकसोमी ढाले, हरीनो लहि आदेसो हो ॥ श्री गुण
 सागर सूरि पयपे, बाध्यो जाव विशेषो हो ॥ अ०॥११॥
 दुहा ॥ मातासु विनती घणी, काम करे करजोड
 ॥ सजम लेवा भेलवे, केलवणीनी कोड ॥ १ ॥ जिम
 थी तिम धसकी पडी, न रही सुद्ध लिगार ॥ बाहे ध
 री वेठी करी, करी करी अति उपचार ॥ २ ॥

ढाल १६१ मी ॥ सौदागर लाल चलण न देशा
 ॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल ॥ एसी न कीजे, तु
 म विण आ ठे लाल कहो किम किजे ॥ प्या० ॥ उ
 तिया मेरी लाल तिखी काति, कालज कापे लाल अ
 ति अकुलाती ॥ प्या० ॥१॥ तुम विरहेरे लाल वित
 क विते, फीर क्यु चाहु लाल वेदि न गिते ॥ प्या०
 दु.ख गतिया मेरे लाल आगज उठि, तनु जालेरे ला
 ल न समजे ऊठी ॥ प्या० ॥ गतियामे लाल दु ख
 न सभावे, दाडिम ज्युरे लाल फाटी आवे ॥ प्या० ॥
 ॥ २ ॥ तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किउ
 चाहु लाल उदिन गिते ॥ प्या० ॥ दु ख हु तेरे लाल
 जेते चारे, तुम्ह आइरे लाल नीठ विसारे ॥ प्या० ॥
 ॥ ३ ॥ च्यारे दिनाकी लाल करीय उजवाली, पुनरपि

कार ॥ अब नवमा अधिकारनो, जर्वाक मुणो सुवि
चार ॥ १ ॥ कामदेव एम चितवे, सारीजे निज का
ज ॥ ससारीक सुख जोगव्या, सारीजे शिन राज ॥ २ ॥

ढाल १६० मी ॥ श्री रामजीए नार गमाड हो ॥
ए देशी ॥ अनुमती मागे हो, विनो करी पगे लागे
॥ मदन उजो हरी आगे, मोह निंदयी जागे ॥ अ०
॥ १ ॥ अनुमती नाम सुणता मुरग्या, हरी हलवर
शु देवा हो ॥ वज्रपात सम वात विचारी, धरणी प
ख्या ततखेवा हो ॥ अ० ॥ २ ॥ सजम स्योने स्यो
तु कुवर, किजे जोग विलासहो ॥ विणाहि धाने जे वि
प खाइ, ते तो पावे हास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुवर
कहे जिन वचने शका, मुऊने काइ नावे हो ॥ द्वार थ
की निज मदिर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥
अ० ॥ ४ ॥ पडीत मूरख बुढा वाला, कायर सूरजो
इ हो ॥ राजा राणी रविमुत आगे, रहेण न पावे को
इ हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आदीनाथ आदी चोवीसे, जिन
वर चक्री वारे हो ॥ केशव युग गण हरने हलधर, ए
सहुए यम सारे हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ मात पीताने बधव
वेटा, वार अनता पाया हो ॥ परजव जाता कोइ प
नोता, मुऊने आढा नायाहो ॥ अ० ॥ ७ ॥ नूल्यो
बु तो अतिही नूल्यो, अब नूल्यो नवी जाइ हो ॥ अ
णजाण्या विष खाधो केवल, जाण्या विष न खवाइ हो
॥ अ० ॥ ८ ॥ जगत तणी स्थिती कृणीक देखी, थ

त्रिभुवन जोसु ॥ प्या० ॥ ११ ॥ देव युगति लाल
 कहि समजावी, काम कुमरे लाल माय मनावी ॥ प्या०
 ॥ एकसठ सोमी लाल ढाल सुहावी, कहे गुणसूरि
 लाल नविक मन चावी ॥ प्या० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मातानी अनुमति लह, अत पुरमां जाय ॥
 समजावे अतेजरी, वाणी वदे सुखदाय ॥ १ ॥ प्री
 तीवत नीसुणो प्रिया, हमे ग्रहाण दिख ॥ पाठे रुमा
 चालजो, एह हमारी शिख ॥ २ ॥

ढाल १६२ मी ॥ वीसजणासु वाद न कीजे ॥
 ॥ ए देशी ॥ बोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नय
 णे पाणीजी ॥ आरतिवंत आतुर सघळी, जाखे गद
 गद वाणीजी ॥ वो० ॥ १ ॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वा
 णी, किम नाखोगे आजजी, चारीत्रनी चतुराइ ठां
 डो, तुम्हने करवो राजजी ॥ वो० ॥ २ ॥ तुम्ह प्रनु
 इद्र तणे अवतारे, हम इंद्राणी रुपजी ॥ लिजे लाहो
 नरभव केरो, साजल जादव नूपजी ॥ वो० ॥ ३ ॥
 नारीने कारण नर जगमें, कष्ट करतां कोडजी ॥ एक
 मना उजा नृप आगे, सेव करे करजोडजी ॥ वो० ॥
 ॥ ४ ॥ अधीक नयकर सागर लघे, आटविमे पयसं
 तजी ॥ रोल महा सग्रामे सूरा, आतुर थइ घसतजी
 ॥ वो० ॥ ५ ॥ अहिल्या रुपे इद्र विगुतो, ए प्रगटो
 अवदातजी, एक लाख हजार केइ, न सरधु खा
 धी लाचजी ॥ वो० ॥ ६ ॥ पाराशर सरीखा पातरी

थाइ लाल रगनी काली ॥ प्या० ॥ दृश्य मनाइ लाल
 ल ए दिन लोने, कहा करो हो लाल तोडा तोडे ॥ प्या० ॥
 ॥ ४ ॥ वेटा केरी लाल आस्या एति, कहिय न जा
 इ लाल अवर जेति ॥ प्या० ॥ देश प्रदेगा लाल सु
 खनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतरी वडाइ ॥ प्या०
 ॥ ५ ॥ सुदर जाइ लाल सुदर जायो, नेइ वसेरे लाल
 ज्यु घर आयो ॥ प्या० ॥ सुदर जाइ लाल खरीय स
 पूति, सिंहणी ज्युरे लाल सुखनर सूती ॥ प्या० ॥
 ॥ ६ ॥ उची लेइरे लाल आजे अडाइ, निचि किएरे
 लाल जात वनाइ ॥ प्या० ॥ दु ख न सहाइ लाल क
 हि जे कासु, सोक्रा वासो लाल होसे हासु ॥ प्या० ॥
 ॥ ७ ॥ लाल नगीनो लाल तु मुऊ किको, तुऊ विण
 लागे लाल ए सहु फिको ॥ प्या० ॥ रोवत अति हे
 लाल रुखमणी राणी, नर नर आवे लाल नयणे पा
 णी ॥ प्या० ॥ ८ ॥ मदन कहे लाल मायन रोजे, जेम
 दिन आयो लाल कियु सोखे सोजे ॥ प्या० ॥ मोहन
 किजे लाल मोहन माच्यो, सग अनेके लाल प्राणी
 नाच्यो ॥ प्या० ॥ ९ ॥ अथीर मेलोरे लाल कहो किम
 गजे, सर्द घन ज्युरे लाल फोगट गाजे ॥ प्या० ॥
 जन्म जरारे लाल पूठे लागी, कियु बूटिजे लाल तेह
 थी जागी ॥ प्या० ॥ १० ॥ उत्कृष्टीरे लाल किजे
 करणी, तो तो मीटेरे लाल यमकि रुणी ॥ प्या० ॥
 अजर अमररे लाल अब हम होसु, सिद्ध थइने लाल

ग युगती जालवतां, हुवा मोहक हजुरजी ॥ वो० ॥
 ॥ १७ ॥ तुम वाट पाडी मुक्ति पथनी, जाणी श्री जि
 नरायजी ॥ सहस व्याणु तजे समकाले, तो वैरागी था
 यजी ॥ वो० ॥ १८ ॥ चारीत्र कठण होवे कता, कर
 वो केसा लोचजी ॥ परघर आसा धरवि नीतकि, नी
 द्हाकेरो सोचजी ॥ वो० ॥ १९ ॥ उन्हो पाणी आठ
 ण वाणी, पिधो कहो किम जायजी ॥ अणुवाणा पा
 ए चालेवु, फीरी पढतावो थायजी ॥ वो० ॥ २० ॥
 नाह विना नारी नीरधारी, निपट नीकामी होयजी ॥
 अगुठाविण आगुलीया जिम, नारीनिहाली जोयजी
 ॥ वो० ॥ २१ ॥ सासरने सुखसाता न लहे, नलहे पिय
 र मानजी ॥ धणी गया धणियापो वुटे, घर आगण म
 साणजी ॥ वो० ॥ २२ ॥ बेटा पोता जनक जमाइ,
 गाठे जाजा दामजी ॥ अलवेसर अलगायी कहिए, तो
 पिण नाम कु नामजी ॥ वो० ॥ २३ ॥ धन धन दवदं
 ति सतवति, धन धन पाडव नारजी ॥ आपदमाहि
 साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ वो० ॥ २४ ॥
 नारीने पियु साथे नलो, का घर का वनवासजी ॥ प
 तिब्रता ब्रत साचो ते, सुख दु ख सरीखो जासजी ॥
 ॥ वो० ॥ २५ ॥ पिउनी लारे सजमलेसा, साधसा निज
 काजजी ॥ महेल मुगतमें सामी सरसी, करसा अवि
 चल राजजी ॥ वो० ॥ २६ ॥ वासठने एकसोमी ढा
 ले, हररुया काम कुमारजी ॥ श्री गुणसागर निजपद

यो, पातरीयो श्री व्यासजी ॥ सत्यकी वेला शु पातरी
 यो, पाम्यो प्राण विणासजी ॥ वो० ॥ ७ ॥ ब्रह्मा पु
 त्रिसु पातरीयो, तापस तरुणी देखजी ॥ वरशी तप त
 रु गली चाटतो, राच्यो रूप विठोपजी ॥ वो० ॥ ८ ॥
 नरत सुदरी साथे मोह्यो, दिस्व्या लेण न दिवजी ॥
 साठ सहस वरसा तप तपवे, काया खिणी क्रिधजी
 ॥ वो० ॥ ९ ॥ प्रजापति नृप कियो किरावर, ते तो
 न करे कोइजी ॥ दस रुधर दस माया शेति, लका
 सरीखी खोइजी ॥ वो० ॥ १० ॥ रामचद्र सीताने का
 जे, क्रिधो किम विलापजी ॥ पवन जय पदमनीने ली
 धे, देह तजेतो आपजी ॥ वो० ॥ ११ ॥ शातनु नद
 न आरतीवतो, निपम पूरी आशजी ॥ करमता कु
 तिने कारण, पाम्ब हुवो उदाशजी ॥ वो० ॥ १२ ॥
 देव हमारे सुसरे सुदरी, सासु काजे किलेसजी ॥ अ
 ष्टदश अद्दोहणीसु, मारयो वडो नरेशजी ॥ वो० ॥
 ॥ १३ ॥ पाम्ब हरी पर खरु शिधाव्या, पचालीने का
 मजी ॥ नाम कहु केता जग जोता, पार न पावे स्वा
 मजी ॥ वो० ॥ १४ ॥ नैरव ऊपा कमलनी पूजा, क
 रवत कासि माहिजी ॥ पचाग्नी साधे सीर उधे, धुउ
 घुटे प्राहिजी ॥ वो० ॥ १५ ॥ एहवि कलपना करीने
 कामी, वडे नारी जोगजी ॥ नाह पामीने परहरीए, कि
 ण दीठो परलोकजी ॥ वो० ॥ १६ ॥ काम कहे काम
 नी तुमे नीसुणो, जोग जोगवी जल नूरजी ॥ योगी यो

लागी ॥ ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० ॥ १० ॥
 अतेजर ए विधि किजे, पिउ साथे सजम लिजे, राजे
 मती पासे रहीजे हो ॥ सं० ॥ ११ ॥ जानु कुमरे पि
 ण लिधो, चारीत्र साथे चित्त दिधो ॥ तिनी पिण का
 रज सिधो हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ रुखमणी आदे पट
 नारी, ए आठे सुविचारी ॥ चारीत्र लिधो सुख
 कारी हो ॥ सं० ॥ १३ ॥ मदन महा मनिराया, प
 रमारथसु चित लाया ॥ ए साध सकलहि सुखदाया
 हो ॥ सं० ॥ १४ ॥ त्रेसठ अने सोमी ढाले, मुनी चोखु
 चारीत्र पाले, गुणसागर कुल उजय्याले हो ॥ सं० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ हरी हलधर जिनने नमी, आसु ढाले अ
 पार ॥ मन मेली कुवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥
 ॥ १ ॥ मेहेल मांढि नवि सुदरी, सजा माहि सुकुमा
 रा ॥ अणदेख्या हरी जाणीयो, सुनो सह ससार ॥ २ ॥

ढाल १६४ ॥ मी राम रसे राची घणु ॥ ए देशी
 ॥ श्री हरीजी आलगे नहि, ते वात न जाइ कहि हो
 ॥ श्री० ॥ १ ॥ रोम रोमसम राचियो, रुखमणी केरो
 राग हो ॥ खाचि काढ्यो दु खहि, नहि उषधनो लाग
 हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूना मदीर मालिया, सूनी घर
 पटसाल हो ॥ सूनी सेज डरामणी, विण रुखमणी सु
 कुमाल हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ खाट हिंचोले हिंचता, ह
 रीनो हियो जराय हो ॥ उचो नीचो देखाहि, पतिव्रता
 नहि पाय हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जोजन तो जावे नहि,

वाप्यो, श्री अनीरुद्र कुमारजी ॥ वी० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उठव माड्या अतिघणो, सजमनो मढाण
॥ धन विलसे मन मोकले, साजन मिल्या सुजाण ॥१ ॥
नूपतने नूपतिनी सुता, मीत्रोने परीवार ॥ सजम ले
वा चालियो, श्री परजून कुमार ॥ २ ॥

ढाल १६३ मी ॥ दर्धासुत विनतडी सुणजो ॥ ए
देशी ॥ सजम लेवा सचरीयो, समतारससु चित न
रीयो ॥ प्रनु परीवारे परवरीयो हो ॥ सं० ॥ १ ॥ हा
थी उपर आरोहे, सीर ठत्र महा मन मोहे ॥ चामरकी
सोना सोहे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ तव वाजा वाजे वारु,
तव नाचे पात्र उदारु ॥ तव दीजे दान अपारु हो ॥
सं० ॥ ३ ॥ हरी हलधर साये आवे, लोकानो पार
नवि पावे ॥ पुरमाहि होइ सिधावे हो ॥ सं० ॥ ४ ॥
माधवजी सरीखो तातो, रुखमणीजी सरीखि मातो ॥
एह अचजानि वातो हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ आपणपे
तो प्रनुताइ, ए सवि वाते वडाइ ॥ गडी जे ए ठकु
राइ हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ चिबी विबी अति बूढी, सा
चि पति तणी तो कूढी ॥ न तजाइ मनकि गूढी
हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ खेचरनी धरती साधी, नूच
रनी प्रनुता लाधी प्रनु चाहे सीव आराधी हो ॥
॥ सं० ॥ ८ ॥ एम सुणता आया, जिनराज समीपे
सोहाया ॥ तव श्री मुखे सजम पाया हो ॥ सं० ॥
॥ ९ ॥ साव कुमर वर वैरागी, व्रत साथे महा लय

मदन कुमरनि मूरति, जोवता जग मांहि हो ॥ मारी
 खी अणदेखवे, पुरुषोत्तम दु ख प्राहि हो ॥ श्री० ॥
 ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणा, फरके फरके हाथ हो
 ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, सजारे जगनाथ हो ॥
 श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, उलजो अधी
 कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस
 सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साव अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह
 ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥
 चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गु
 पति खप करे, जीती विषय कपाय ॥ २ ॥ एषणा सु
 ध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधु
 नो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतावासे, गुण धरे,
 साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल सचरे, ने
 मिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल १६५मी ॥ प्रणमी सहगुरु पाय, गुणरे गासु रा
 जेमति सतीजी ॥ ए देशी ॥ साव परजुन मुणिद, चारीत्र पा
 ले निरमलोजी ॥ प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग जलोनी
 ॥ १ ॥ जगम थावर जीव, आप समाना राखिएजी ॥
 जाणी दोष अपार, मृपा जाख न जाखीएजी ॥ २ ॥
 स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥
 वाडी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥
 अतर बाहिर नेद, परीग्रह सह परीहरेजी ॥ रात्री

नहीं पाणी प्यास हो ॥ आरत्रा न लागे मोवता ॥
 लात्रा लिए निसास हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जो कदाचि
 त देवधी, पलक मिलति जोय हो ॥ सुपने रुखमणी
 सु खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जा
 ग्याधी काइ नहीं, अरतिवत मुरार हो ॥ आव्य नि
 रासी निद्रडी, फीरी ज्यु देखुं नार हो ॥ श्री० ॥ ७ ॥
 उठत बेसत चालता, सहस रुखमणी होय हो ॥ आ
 रूया आगे रुखमणी, सुख पामे अवलोय हो ॥ श्री०
 ॥ ८ ॥ आसन शयन विलोकता, वेदन तो असमा
 न हो ॥ साजनिया साले नहि, साले ए अहि ठाण हो
 ॥ श्री० ॥ ९ ॥ अवरा पासेवे नहीं, रुखमणीको सु
 विलास हो ॥ आवलिया नवि पुगहिं, आवा केरी आ
 स हो ॥ श्री० ॥ १० ॥ सिता विठोहो रामजी, नय
 ण श्रावण मेह हो ॥ ऊडमडी वरसे सही, नारी नी
 रोपम नेह हो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ हु कुण तु कुण इम
 कही, लखमणजीसु राम हो ॥ जूरी जूरी पजर हुवा,
 मुद्रा ककण नाम हो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अवरा साये
 न एहवो, जेहवो त्रीयसुं चाव हो ॥ मेलावा निकोप
 री, वैद कियो उपाव हो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ रुप नहि
 काइ एहवो, कला एहवि नाहि हो ॥ मटका मोटा मो
 हवा, नारी न अवरा माहि हो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आ
 द्दर चारु रुखमणी, हीए वसी हरी राय हो ॥ वासर
 तो निठे नहि, रयणी ब्रमासी थाय हो ॥ श्री० ॥ १५ ॥

मदन कुमरनि मूरति, जोवता जग माहि हो ॥ मारी
 खी अणदेखवे, पुरुषोत्तम दु ख प्राहि हो ॥ श्री० ॥
 ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणा, फरके फरके हाथ हो
 ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, सजारे जगनाथ हो ॥
 श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, उलजो अधी
 कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस
 सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साव अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह
 ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥
 चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गु
 पति खप करे, जीती विषय कपाय ॥ २ ॥ एपणा सु
 ध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधु
 नो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतावासे, गुण धरे,
 साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल सचरे, ने
 मिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल १६५मी ॥ प्रणमी सहगुरु पाय, गुणरे गासु रा
 जेमति सतीजी ॥ ए देशी ॥ साव परजुन मुण्डि, चारीत्र पा
 ले निरमलोजी ॥ प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग नलोनी
 ॥ १ ॥ जगम थावर जीव, आप समाना राखिएजी ॥
 जाणी दोष अपार, मृपा जाख न जाखीएजी ॥ २ ॥
 स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥
 वाडी विसुध विशेष, सुघो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥
 अतर बाहिर नेद, परीग्रह सह परीहरेजी ॥ रात्री

चोजन त्याग, पट काया रक्ता करेजी ॥ ४ ॥ जित्या
 विषय विकार, पाच इत्रीना पाडूवाजी ॥ निरलोनी
 अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी क
 मा गुण सार, पडीलेहण चल चावशुजी ॥ करण वि
 सुध विहार, चतुर महा चित चावशुजी ॥ ६ ॥ स
 जम सुध विसुव, मन वचन काय करी जिएजी ॥
 शिता दिक्नी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥
 ॥ ७ ॥ मरणातिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीए
 जी ॥ आदि थकी ए टेक, पाठा पावन दिजीएजी ॥
 ॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दु कर तप करणी करेजी
 ॥ पामी लबधी अपार, सुर थडने सचरेजी ॥ ९ ॥
 एकातरयी माडी, मासा आया उल्हशीजी ॥ उत्क
 ष्टा तप किध, कचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥
 पच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥
 समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥ ११ ॥
 वर्षा काल विशेष, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डास मसा
 शु द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाले अ
 ति थाडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, वाए
 शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीषमकाले जोय, लूतावड
 वाजे आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शी
 लावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सेज, इहा
 काकरामे सथरीएजी ॥ चालता चढी गजराज, इहा
 अणवाणे पाठ धारीएजी ॥ १५ ॥ करता सोल शिण

गार, इहा उठण जिण पठेवडीजी ॥ चुवा चदन वा
 स, इहा मलसु मैली देहडीजी ॥ १६ ॥ पाडे था जग
 त्रास, इहा साती होइ चाले खराजी ॥ आलस नही
 लिगार, साधु किरियासुं सादराजी ॥ १७ ॥ परीसा
 सहे वावीस, सूरपणाथी जितीयाजी ॥ हिंसादिक अढा
 र, पाप सहु अलगा कियानी ॥ १८ ॥ तेज तपत
 दिनकार ॥ चद जिम चढती कलाजी ॥ सायर जेम
 गनीर, गुण आचारे आगलाजी ॥ १९ ॥ पढीया
 द्वादश अग, नवीक नरा प्रति बुजवेजी ॥ चावे चाव
 ना वार, आपे आपो सुजवेजी ॥ २० ॥ आया गढ
 गिरनार, कर्म सवल दल नाशीयोजी ॥ पाम्या केव
 ल ज्ञाने, लोकालोक प्रकाशीयोजी ॥ २१ ॥ च्यार
 प्रकारा देव, खेचर नूचर आवीयाजी ॥ जादव जाद
 वराय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि
 केवल उवाह, ऋषीमुख देशना साजलेजी ॥ जीवा
 जीव धिचार, सशय नव नवना टलेजी ॥ २३ ॥ मा
 लव देशे स्वामि, साथे सहसु चालीयाजी ॥ निस्ता
 र्या बहु लोक, पाप परा नवना टालीयाजी ॥ २४ ॥
 पासठ सोमी ए ढाल, वैरागी सुखीया सहुजी ॥ पन
 णे श्री गुणसूरि, रागी दु ख पावे बहुजी ॥ २५ ॥
 दुहा ॥ द्वाराभतीनो द्वेषीयो, ते द्वीपायण देव ॥
 तप बले पोहची नवीशके, पिण न तजे अहमेव ॥
 ॥ १ ॥ चावीनो बल आवीयो, काल विनाश जेवारा ॥

नोजन त्याग, पट काया रक्षा करेजी ॥ ४ ॥ जित्या
 विषय विकार, पाच इट्टीना पाट्टवाजी ॥ निरलोनी
 अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी क
 मा गुण सार, पडीलेहण जल जावशुजी ॥ करण वि
 सुध विहार, चतुर महा चित चावशुजी ॥ ६ ॥ स
 जम सुध विसुव, मन वचन काय करी जिएजी ॥
 शिता दिरुनी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥
 ॥ ७ ॥ मरणातिरु उपसर्ग, आया अहिया सिजीए
 जी ॥ आदि थकी ए टेक, पावा पावन दिजीएजी ॥
 ॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दु कर तप करणी करेजी
 ॥ पामी लवधी अपार, सुर थडने सचरेजी ॥ ९ ॥
 एकातरथी माडी, मासा आया उल्हशीजी ॥ उत्क
 ष्टा तप किध, कचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥
 पच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥
 समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥ ११ ॥
 वर्षा काल विशेष, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डस मसा
 शु द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाळे अ
 ति थाडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, वाए
 शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीषमकाले जोय, लूतावड
 वाजे आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शी
 लावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सेज, इहा
 काकरामे सथरीएजी ॥ चालंता चढी गजराज, इहा
 अणवाणे पाउ धारीएजी ॥ १५ ॥ करता सोल शिण

लवे वाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी
 चाखे नाहसु, सघला साथे तोड हो ॥ ता० ॥ जोम्नी
 थी मुऊथी खरी, अबका जाउं गेड हो ॥ ता० ॥
 बा० ॥ १० ॥ वालक बलता विनवे, माताजीसु एम
 हो ॥ ता० ॥ जठराग्नीथी राखिया, आज न राखे
 केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसु स्वामी क
 हे, नित्यहि रेहेता पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता
 लागवा, अबका जाउं नास हो ॥ ता० ॥ बा० ॥
 ॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोमो घाली हो
 ॥ ता० ॥ अब मुऊ मूकि चाइजी, का जाउं मुह ठा
 लि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माह
 रा, मतिसागर तुऊ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य
 जो टले, तो तुऊ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥१४ ॥ कयने देखी कामनी, कामनिया पिण कथहो
 ॥ ता० ॥ जे जिम था ते तिम बल्या, अइ अइ न
 गवत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ बहोत्तरकुल बहोत्तर
 कोडीनो, नगरी माहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि
 पुरवाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १६ ॥
 ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगरी बलति देखिने
 रे, घणु हुवा दिलगीर ॥ हियहु लाग्यु फाटवारे चाइ,
 नयणे बटुटा निररे ॥ माधव एम बोले ॥ १ ॥ बधव
 वेहु तिहा मिलारे, वात करे करुणा ए ॥ दु ख साले
 द्वारका तणुरे चाइ, कथ्यु काइ न जायरे ॥ मा० ॥ २ ॥

॥ लोक पड्या परमादमे, स्वदग्धाहार विहार ॥ २ ॥

ढाल १६६ मी ॥ साहीन बाहु जिणेसर विनवु ॥
 ॥ ए देशी ॥ तापस उल पाम्यो ते देवता, उलका
 पात अपार हो ॥ हो तापस ॥ किथी वाय विकुर्वणा,
 आणी पुरी मजार हो ॥ १ ॥ तापस वाले नगरी द्वा
 रीका, द्विपायन अति क्रोध हो ॥ ॥ ता० ॥ रिस व
 से नर आधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ता० ॥
 वा० ॥ २ ॥ काट घणाने तृण घणा, जुहरनो सम
 दाव हो ॥ ता० ॥ आणी मेल्यो एकठो, पामीने प्र
 स्ताव हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हाहाकार हुवो घणो,
 आरड जेरड चूरहो ॥ ता० ॥ दूर गया जे मानवी,
 आणी किया हजुर हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ४ ॥ गढ
 मढ पोल प्रकारशु, मदिर महील उदार हो ॥ ता० ॥
 राज जुवन सुविशेषधी, बलता न लागे वार हो ॥
 ता० ॥ वा० ॥ ५ ॥ बाल हत्या ने गौ हत्या, ब्रह्मह
 त्या ने नार हो ॥ ता० ॥ चार हत्या चडालनी, किधी
 कोडी प्रकार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ६ ॥ पार नही प
 शु पर्खाया, पदमनी करे पूकार हो ॥ ता० ॥ अरे अ
 देखा पापीया, करे किसु कीरतार हो ॥ ता० ॥ वा०
 ॥ ७ ॥ गेरु गोरु आपणा, गती आगे राख हो ॥
 ता० ॥ बलती वाला बलवले, दीन महा अति नाख
 हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ८ ॥ माहो माहि आफले, सहि
 न जाइ जाल हो ॥ ता० ॥ निकलवा पावे नहि, वि

लवे वाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी
 चाखे नाहसु, सघला साये तोड हो ॥ ता० ॥ जोमी
 थी मुऊथी खरी, अबका जाउ ठोड हो ॥ ता० ॥
 वा० ॥ १० ॥ बालक बलता विनवे, माताजीसु एम
 हो ॥ ता० ॥ जठराभीथी राखिया, आज न राखे
 केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसु स्वामी क
 हे, नित्यहि रेहेता पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता
 लागवा, अबका जाउ नास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोनो घाली हो
 ॥ ता० ॥ अब मुऊ मूकि जाइजी, का जाउ मुह ठा
 लि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माह
 रा, मतिसागर तुऊ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य
 जो टले, तो तुऊ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥१४ ॥ कयने देखी कामनी, कामनिया पिण कथहो
 ॥ ता० ॥ जे जिम या ते तिम बल्या, अइ अइ न
 गवत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ बहोत्तरकुल बहोत्तर
 कोडीनो, नगरी माहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि
 पुरवाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १६ ॥
 ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगरी बलति देखिने
 रे, घणु हुवा दिलगीर ॥ हियडु लाग्यु फाटवारे जाइ,
 नयणे बटुटा निररे ॥ माधव एम वोले ॥ १ ॥ बधव
 वेहु तिहा मिलारे, वात करे करुणा ए ॥ दु ख साले
 द्वारका तणुरे जाइ, कथ्यु काइ न जायरे ॥ मा० ॥ २ ॥

किहा द्वारकानि साहिवीरे, कीहा गजदलनी ठाठ ॥
 साजन मिलावो किहा गयोरे जाइ, लिणामे हुवा घन
 घाटेरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ माधव कहे सुणो वववारे, जा
 र्ग्या पूर्वला पाप ॥ अग्नी चउदसं परजलीरे जाइ, का
 ढो मायने वापरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ मातपिता कहे सुणो
 टावरारे, न फिरे नेमनी वाण ॥ न्रूए सथारो आद
 रोरे, तजी अन्नने पानरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ रथ जोडी री
 खन आणीनेरे, लागी चौदिसे लाह ॥ आपण बहुज
 ण ताणीएरे जाइ, बलद लेवा कुण जायरे ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ रथे जुता वे वधवारे, अग्नी विचे पाडी वाट
 ॥ देवतातो कौप्यो सहिरे जाइ, तुटीने पडीयो माट
 रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ रथ घोमाने वेलु वलेरे, बले बे
 तालीस लाख ॥ अडतालिस क्रोड पाला वलेरे जाइ,
 खिणमाहि होइ गइ खाखरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ हरी जाखे
 बलदेवनेरे, धिग धिग जीवत मोय ॥ नगरी वले मु
 ऊ देखतारे, मारो जोर न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥
 बलती नगरी देखीनेरे, हु राखि न सकु एम ॥ इद्र
 धनुष्य अमे धारीयोरे जाइ, ते बल जागो केमरे ॥ मा०
 ॥ १० ॥ जेणी दिसे आपणे जोवतारे, सेवक सेहेस अ
 नेक ॥ हाथ जोडी रहेता खमारे जाइ, आज न दी
 से एकरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वादल विज तणी परेरे, ऋ
 द्वि विललाइ सोय ॥ एणी वेलामा आपणुरे, सगो न दी
 सेकोयरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, सरणे

रहेतां आय ॥ उलटो सरणो ताकीयोरे जाइ, वेरण
 वेला पायरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हरी जाखे बलदेवनेरे,
 साजलो वधव वात ॥ धरति आपणसु फिर गइरे जा
 इ, कोइ दुसमनने वतायरे ॥ मा० ॥ १४ ॥ माधव व
 चन साजलीरे, हलधर बोले एम ॥ पाडव फिरी कुंता
 तणारे जाइ, चालो तेने गामरे ॥ मा० ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज मूलगी ॥ हरी माताने रोहिणी, श्री
 वसुदेव तिवार हो ॥ ता० ॥ अणसणने बले पामीयो,
 देव तणो अवतार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १७ ॥ सो
 ल सहस हरीनी त्रिया, अणसण बले सुर लोक हो
 ॥ ता० ॥ पोहति यादवनी त्रिया, अवर अनेरो जो
 य हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १८ ॥ नेमिनाथनो शिष्यबु, कर
 तो एम पूकार हो ॥ ता० ॥ नदन श्री वासुदेवनो,
 देवालियो उबार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ १९ ॥ श्री हरी हलधर
 निकल्या, उजा वाहिर जाय हो ॥ ता० ॥ बलती दे
 खी द्वारिकां, दुख हिए न समाय हो ॥ ता० ॥ बा०
 ॥ २० ॥ हलधर श्री हरीसु कहे, आपा अलगी वात
 हो ॥ ता० ॥ नगरी अवर वमावसा, साजल सुदर
 आत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २१ ॥ सगो सगानी ज
 रु अठे, सगो सगा आधार हो ॥ ता० ॥ प्रजुजी पा
 डव सजारीया, आपदने अधीकार हो ॥ ता० ॥ वा०
 ॥ २२ ॥ पाडु मथुराने चल्या, केवल वधव टोय हो
 ॥ ता० ॥ पाणीहि पावा जणी, साथ न त्रिजो कोय

हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २३ ॥ न हय न गय वाहणी,
 पाला पुलाया सोड हो ॥ ता० ॥ अतर नयणे नीर
 खज्यो, दिन पलटे इम होइ हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥२४॥ गर्व मतकरजो लठिनो, कोइ एक लिगार हो
 ॥ता०॥ जो न हुइ नीज कतनी, विजा कवण विचार
 हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २५ ॥ लठि आवती जालि, जा
 ता जाय विगोय हो ॥ ता० ॥ एतो पडवो आशनो,
 द्वारामति पति जोय हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २६ ॥ फि
 टो लठी कुलक्षणी, वटकी देखायो वेह हो ॥ ता०
 ॥ दैव कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ॥
 ता० ॥ वा० ॥ २७ ॥ निजवल परवल पाधरो, दिन
 पाधरो जेवार हो ॥ ता० ॥ दिन वाके वाकु स
 हु, घणु किस्सु वितार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २८ ॥ हरी
 हलधर तनु बल घणो, सुर बलनो नवी पार हो ॥ ता०
 ॥ एकही आडो नावीयो, मेटण व्यास विकार हो
 ॥ ता० ॥ वा० ॥ २९ ॥ पट मासा लगी द्वारीका, व
 ली बुझाणी जाण हो ॥ ता० ॥ सायर जल विंठी
 वल्यो, पूरवले परीमाण हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ३० ॥
 गसठ सौमी ढालमें लठि न चाले लार हो ॥ ता० ॥ श्री गु
 णसागर सूरिजी, पुण्य वनो ससार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ ३१ ॥
 दुहा ॥ कर्म इद्र विगोइयो, कर्म चद्र कलक ॥ क
 र्में मोटा राजवी, वनमें जम्या निशक ॥ १ ॥ सतवं
 इति आदे सति, कर्म करी सदोश ॥ कर्मागल नवि बु

टिया, हरी हर ब्रह्मा सरोस ॥ २ ॥

ढाल १६७मी॥माहाविदेह खेत्र सुहामणो ॥ ए देशी ॥ की
धाकर्मन ठटिए, राय रक सम जाय लालरे ॥ हरी हलधर
दोइ चालिया, पाडव मथुरा जाय लालरे ॥ कि० ॥

॥ १ ॥ हस्ती कल्पनामे सहि, आयो पुर अजीराम
॥ ला० ॥ दोइ वधव तिहा वागमे, तरु तले ले विस

राम ॥ ला० ॥ कि० ॥ २ ॥ साजन जन लोगा तणो,
हरीने बहुलो दु ख ॥ ला० ॥ एताहिमे आकरि, आ

वी लागी नूख ॥ ला० ॥ कि० ॥ ३ ॥ जुडी नूख अ
जागणी, वाल्हा खाए तारुं नाम ॥ ला० ॥ आप ज

णावण आकति, न गणे ठाम कुठाम ॥ ला० ॥ कि०
॥ ४ ॥ हलधरसु हरजी कहे, ए वैरीनो वास ॥ ला० ॥

नृपणे दत डरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला०
॥ कि० ॥ ५ ॥ ल्यो मुऊ करनी मुद्रडी, वेची सारो

काम ॥ ला० ॥ लावो खावा सुखडी, बाकी लावो दा
म ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ हलधर पुरी माहे चल्यो,

कदोइनी पास ॥ ला० ॥ नामाकित सा मुद्रडी, जोइ
वाचे उल्हास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ७ ॥ वात जणावी

रायने, राजा दलबल साज ॥ ला० ॥ घेरी लीधो सा
कडे, नाद कियो बलराज ॥ ला० ॥ कि० ॥ ८ ॥ नाद

सुणी हरी धाइयो, मारे लात किमान ॥ ला० ॥
उडीने अलगा पढ्या, आणी जिती राडा ॥ ला० ॥ कि० ॥

॥ ९ ॥ नाग नली पिण खोखरी, तो पिण हाडी योग

॥ ला० ॥ राजा धर्मा पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग
 ॥ ला० ॥ कि० ॥ १० ॥ पुनरपी आया वागमे, हलवर शु
 नृप स्वामी ॥ ला० ॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे
 ताम ॥ ला० ॥ कि० ॥ ११ ॥ वन कौसत्रे पोहोचीया,
 त्रप्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु गय
 डी, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलव
 र जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो
 वाण तिहा सार्धीयो, जाणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि०
 ॥ १३ ॥ विवाणो पग वाणशु, धिग धिग करतो सो
 य ॥ ला० ॥ जरत कुमर हरी आगले, आवी उन्नो
 होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी नाखे सुण नाइला,
 तुज्जने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, ह
 लधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी
 ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चा
 ल्यो एतले, वुढ्या हरीना प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥ १६ ॥
 वाशठ सोमी ढालमे, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥
 श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥
 लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो,
 आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म
 न फिरे किरताररे ॥ गर्व० ॥ १ ॥ सडण पडण विद्वसण, जे
 हवो माटीनु नडरे ॥ क्षिणमा वाजे ते खाखरु, ते कि
 म रहे अखररे ॥ ग० ॥ २ ॥ मोहने पूढीने जे जिमे, पान

खाय चूटी चूटी वींटेरे ॥ ते मोह वधाणा जाडुए, काग
 डा चरकता वींटेरे ॥ ग० ॥ ३ ॥ मोह मरमने मोजो
 करे, कामनीसु करे गजे केलरे ॥ ते जइ सुए सम
 सानमां, मोह ममताने भेलरे ॥ ग० ॥ ४ ॥ हस हस
 बोलता हेजमा, नरनारी लाख कोडिरे ॥ ते जइ सुए
 मसाणमां, धनकण कचन गोमिरे ॥ ग० ॥ ५ ॥ को
 रु उपाय जो किजीए, तो पिण नवि रहे नेटीरे ॥ स
 जन मिली सहु तेहने, करे अगननी नेटिरे ॥ ग० ॥
 ॥ ६ ॥ कृष्ण सरिखो जुठ राजीठ, बलजद्र सरिखो
 जो वीररे ॥ जगल माहे जुठ तेहने, ताकी मारशे तीररे ॥
 ग० ॥ ७ ॥ वत्रीस सहस अतेउरी, गोवालीणी सो
 ल हजाररे ॥ तिरसे तरुफे ते त्रीकमो, नही को पाणी
 पानाररे ॥ ग० ॥ ८ ॥ कोरु सिला करे धरी, गिरधारी
 धरयु नामरे ॥ वेठा न थाय ते बले, जुठ कर्मना कामरे
 ॥ ग० ॥ ९ ॥ जन्मता केणे नवि जाणीठ, मरता नही
 को रोनाररे ॥ महा अटवी माहे एकलो, पढ्यो करे पू
 काररे ॥ ग० ॥ १० ॥ ठविलो ठत्र धरावतो, फेरवतो
 चारे दिश फोजरे ॥ वनमा वासुदेव जिहा वसा, वसे
 जिहा वनचर रोजरे ॥ ग० ॥ ११ ॥ गजे बेसी जेह
 गाजता, यती जिहा नगारानी ठाररे ॥ घुअड होला
 तीहा घुघवे, सावज करेठे सोररे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ज
 रा कुमर तीण जगल वसे, ते खेलेठे सकाररे ॥ हरी
 पगे पदम ते हेरीठ, मृगनी भ्राते तेणे ठाररे ॥ ग० ॥

॥ ला० ॥ राजा वशी पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग
 ॥ ला० ॥ कि० ॥ १० ॥ पुनरपी आया वागमे, हलधर शु
 नृप स्वामी ॥ ला० ॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे
 ताम ॥ ला० ॥ कि० ॥ ११ ॥ वन फौसवे पोहोचीया,
 त्रप्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु गय
 डी, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलध
 र जल लेग गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो
 वाण तिहा सार्थीयो, जाणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि०
 ॥ १३ ॥ विवाणो पग वाणशु, धिग धिग करतो सो
 य ॥ ला० ॥ जरत कुमार हरी आगले, आवी उनो
 होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी जाखे सुण जाइला,
 तुऊने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, ह
 लधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी
 ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चा
 ल्यो एतले, वुढ्या हरीना प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥ १६ ॥
 गशठ सोमी ढालमे, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥
 श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥
 लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो,
 आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म
 न फिरे किरताररे ॥ गर्व० ॥ १ ॥ सडण पडण विद्वसण, जे
 हवो माटीनु चडरे ॥ क्षिणमा वाजे ते खाखरु, ते कि
 म रहे अखररे ॥ ग० ॥ २ ॥ मोहने पूर्णिने जे जिमे, पान

भु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥ २ ॥

ढाल १६८ मी ॥ गुराजी थें मुने गोडे न राख्यो
 ॥ ए देशी ॥ उठो प्रनुजी पिवो पाणी, अणमिलता ए
 ती वार लगाणी ॥ तु मुऊ बधव प्राण पियारो, चाइ
 जी मानो बोल हमारो ॥ उ० ॥ १ ॥ हुतो शेवक आ
 दि तुमारो, गोकुलमा तु फिरत कुमारो ॥ ते दिनथी
 तु प्रितम प्यारो, हु न रहु तुमथी खिण न्यारो ॥ उ०
 ॥ २ ॥ पूर्व नवतर नेह घणेशो, गगदत्तने ललीताग
 नलेरो ॥ चारीत्र पाली देव विमानी, पुनरपी आप
 ण प्रित थपाणी ॥ उ० ॥ ३ ॥ एतितो प्रनु कदही न की
 धी, हम तुम्ह एकला सप्रसिधी ॥ वासर जाणी आ
 ज अपूठो, कहेरे बधव तु पिण रूठो ॥ उ० ॥ ४ ॥ दु-
 ख नरी आख्या आसु ढाले, उचो निचो खरोही नि
 हाले ॥ कोइ नही जे रीतो राखे, रान रोज मिली ए
 ही साखे ॥ उ० ॥ ५ ॥ खाधे धरी चाल्या बलदेवा,
 पटमास लगी करता सेवा ॥ सुर द्रष्टात अनेक वतावी,
 दाघ दियो हलधर समजावी ॥ उ० ॥ ६ ॥ चारण ऋ
 पि समजावा आयो, जिन्ननो प्रेरयो वली मन जायो ॥
 सजम लेइ पाले निरतो, विपय कपाय थकी मन वि
 रतो ॥ उ० ॥ ७ ॥ रुखमणी आदि आठे देखि, इग्या
 रे अग पढी सुविशेखी ॥ वरस विस व्रत पाली सारी,
 मास सलेखणा मोद्ध सिधारी ॥ उ० ॥ ८ ॥ सब अ
 ने परजुन मुनिसा, चारीत्र पाली सोल वरीसा ॥ ३

॥ १३ ॥ तीर मारयो तेणे तार्णाने, पग तले बल पूरे
 ॥ पग जेदीने ते निसरयो, तीग पद्यो जइ दूररे ॥ ग०
 ॥ १४ ॥ आप बले तत्र उठी कहे, रे रे ह्यु कृष्णरे ॥
 वाणे केणे मुजने विंधीत, एहयो कोण ठे पापीष्टरे ॥
 ग० ॥ १५ ॥ गव्द ते कृष्णतो साजली, वृक्ष तले
 जरा कुमाररे, कहे वसुदेव पुत्रु, रह्यु आरण्य मजाररे
 ॥ ग० ॥ १६ ॥ कृष्ण रखोपाने कारणे, वगस यथा
 मुजने वाररे ॥ पिणमे न दीठु कोइ मानवी, आज ल
 गे नीरधाररे ॥ ग० ॥ १७ ॥ दुष्ट कर्म तणे उदे, इ
 हा आव्या तुमे आजरे ॥ मुजने हच्यारे आपवा, व
 ली लगाडवा लाजरे ॥ ग० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे उरो
 आव वववा, जिण कारण तु सेवेठे वन्नरे ॥ ते हु कृष्ण
 ते मारीत, न मिटे श्री नेमना वचनरे ॥ ग० ॥ १९ ॥
 ए निसाणी पाडवाने आपजो, तु इहाथी जारे वेगरे ॥
 नही तो बलजद्र मारशे, उपजशे उदवेगरे ॥ ग० ॥
 ॥ २० ॥ आ समे किम जाउ वेगलो, जोरे मोकलेठे
 मराररे ॥ फिरी पाठो जोतो थको, वरसतो आसु जलधा
 ररे ॥ ग० ॥ २१ ॥ दृष्टि अगोचर ते थयो, ए ढाल अ
 ति रसालरे ॥ उदयरत्न कहे एटली थइ, सहुको सुण
 जो उजमालरे ॥ ग० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ जरत कुमर वेगे करी, पाडव मथुरा जाय
 ॥ जल लेइ हरी पाखती, हलधर आयो धाय ॥१॥ उ
 ठो प्रनु पाणी पिवो, देव न बोले जाम ॥ रिसाणो प्र

वे हो, रूप नहि ए फद ॥ रु० ॥ माननिया मत मो
 हनि हो, पाठा फिरघारे मुण्डिद ॥ रु० ॥ ४ ॥ एको
 गहिल गिमारडी हो, राचे रूप रसाल ॥ रु० ॥ सब
 वीधी सुदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ॥
 ॥ ५ ॥ चद समावे तापने हो, ए जग प्रगटी रीत ॥
 रु० ॥ लहे ताप जग चदथी हो, एतो अति विपरीत
 ॥ रु० ॥ ६ ॥ सूर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अं
 धार ॥ रु० ॥ सूर नहि ए साचलो हो, राहु तपो अ
 वतार ॥ रु० ॥ ७ ॥ नाव करीबं निरमे हो, जावण
 पेले पार ॥ रु० ॥ जो बोले जलधारमे हो, तो कुण
 राखणहार ॥ रु० ॥ ८ ॥ अजरामर कारी कह्यो हो,
 आठा अमृत पान ॥ रु० ॥ कुण वडतण वाधवो हो,
 करता जगनो जान ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिठे दरिशाण सा
 धुने हो, सजम गुणनो पोख ॥ रु० ॥ जो रे असजम उ
 पजे हो, तो ए मोटो दोष ॥ रु० ॥ १० ॥ जाणी ला
 न विशेषथी हो, साह करे व्यापार ॥ रु० ॥ तोटे जे
 विरचे नहि हो, पावे नाम गिमार ॥ रु० ॥ ११ ॥
 आज पणी वस्ती विशे हो, मे नावेवो एह ॥ रु० ॥
 किधो निश्चे आकरो हो, जगल साथे नेह ॥ रु० ॥ १२ ॥
 ॥ दु कर तप करणी करे हो, समता रुपी होइ ॥ रु० ॥
 ॥ वनमाहि आहारानि हो, करे गवेपणा सोइ ॥ रु० ॥
 ॥ १३ ॥ मास खमण करता जला हो, साठि महा सुख
 कार ॥ रु० ॥ पाच खमण पण एटला हो, चार चौमा

जुजे सवारो साधी, मोटा मोटी पदवी लावी ॥ ३० ॥
 ॥ ९ ॥ साद्वं त्रिकोटी कुमर कहिया, मदन सामिनेसा
 ये लहिया ॥ ते सघलाए शिष्य गती पासी, नाथ नि
 रजन अतरजामी ॥ ३० ॥ १० ॥ अनीक्यसादिक
 ते पट वधु, क्रियावत महा गुणसिंधु ॥ विमल पणे
 विमलाचल आवी, अमल विमल गति उत्तम पावि ॥
 ३० ॥ ११ ॥ जादवने जादवनी नारी, मोक्ष गया ब
 हु कर्म निवारी ॥ नामसु गोत सदा सुखदाइ, त्रिवि
 धि त्रिकाल नमु चितलाइ ॥ ३० ॥ १२ ॥ अडसठ
 अने सोमी ढाले, श्रीवलदेव महा व्रत पाले ॥ श्रीगुणसा
 गर सूरि सोहावे, हर्ष धरी ऋषीना गुणगावे ॥ ३० ॥ १३ ॥
 दुहा ॥ श्रीवलदेव महा मुनी, द्विविध शिष्य सयूत
 ॥ पंडित राज शिरोमणी, समदम गुण सपूत ॥ १ ॥
 तुगीया गिरी शिखरे, ध्यान तणो अधिकार ॥ निह्ना ले
 वा पुरी जणी, आवे श्री अणगार ॥ २ ॥
 ढाल १६९ मी ॥ जुमखरानी देशी ॥ निह्ना ले
 वा पुर जणी हो, आवे श्रीअणगार ॥ रुडा साधु नमु
 ॥ इया मारग सोधता हो, गयवरनी गति सार ॥ रु
 डा साधु नमु ॥ १ ॥ कुवा काठे कामनी हो, सात पा
 चनी जोड ॥ रु० ॥ काढे पाणी हेजशु हो, खाचे हो
 डा होड ॥ रु० ॥ २ ॥ रुपे मोही जामनीहो, गाफील
 थइ ते वार ॥ रु० ॥ फासो देइ सुतने गले हो, न ल
 हे शुद्धि लिगार ॥ रु० ॥ ३ ॥ श्री ऋषीजी चित चित

र ॥ ज० ॥ २ ॥ लुण विना जिम रसवती, जोजन वि
 ण तबोल ॥ दान विना कमला जिसी, साच विना जि
 म बोल ॥ ज० ॥ ३ ॥ कथ विना जेम कामनी, सील
 विना सिणगार, पुत्र विना घर आगणो ॥ राय विना द
 खार ॥ ज० ॥ ४ ॥ करणी तिम वड जावना, न लहे
 सोन लिगार ॥ नार थकी नारे धडो, जाव वमो ससा
 र ॥ ज० ॥ ५ ॥ दान नाम धनथी हुवे, सिल रोकेवो
 वित्त ॥ तप करी काया सोखवि, जावे न लागे वित्त ॥
 ज० ॥ ६ ॥ श्री मरुदेवा स्वामिनी, आदिनाथनी मा
 त ॥ जाव बले नवल तरि, ए प्रगट्यो अवदात ॥
 ज० ॥ ७ ॥ श्री नरते सर जावना, जावे ते केवल लाव ॥
 तिमही आठ पटोधरा, जावन जोर अगाध ॥ ज० ॥
 ८ ॥ पुत्र एलाची जोइ ज्यो, किण विध सारथा का
 ज ॥ एम द्रष्टात अनेकजी, परतद्ध दिसे आज ॥
 जि० ॥ ९ ॥ दूध जीमण जिम जावना, काजी क्षूद्र प्रणाम
 ॥ जावनाठे नव नासनी, लाज घणो विण दाम ॥ ज०
 ॥ १० ॥ सत्तर सोमी ढालमे, जाव कियो शिरदार ॥ श्री
 गुणसागर न्यायए, हरिण लह्यो पद सार ॥ ज० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ जरत कुमर जाइ कह्यो, चुवा जाइया
 साय ॥ विद्धसण द्वारामति, काल कियो जगनाय ॥
 ॥ १ ॥ ए आनरण हरी कठनो, आप्योठे धरी नेह ॥
 चुवाजी हिवे आजथी, आस मत करसो एह ॥ २ ॥
 ढाल १७१ मी ॥ जाग्य प्रवल नृप चदनोरे ॥ ए

सी सार ॥ रु० ॥ १४ ॥ पृष्ठि अपृष्ठि रावकं हो, वे
 से ध्यान अनूप ॥ रु० ॥ मतिको देखे खेचरी हं, मो
 हें माहरे रूप ॥ रु० ॥ १५ ॥ अमृतवाणी वीशपथी
 हो, विधीसु दीए उपदेस ॥ रु० ॥ वाघ सिघ प्रतिबो
 धीया हो, हींसा तजेरे असेस ॥ रु० ॥ १६ ॥ हरिण
 एक हख्यो खरो हो, सेवा करे सुजाण ॥ रु० ॥ स्युये
 फिरे जिम चेलणा हो, पान्यो पुण्य प्रमाण ॥ रु० ॥
 ॥ १७ ॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी नोजन यो
 ग ॥ रु० ॥ साधु पधारया वोहोरवा हो, मिलीयो शून
 सजोग ॥ रु० ॥ १८ ॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वो
 होरे श्री ऋषीराय ॥ रु० ॥ जावना जावे हरिणलो हो,
 घनी पोहोति आय ॥ रु० ॥ १९ ॥ तुष्टि शाखा तरु
 ताणे हो, चपाणा ते तिन ॥ रु० ॥ स्वर्ग पचमे देव
 ता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥ रु० ॥ २० ॥ ए गुण
 तरसोमी ढालमे हो, राम ऋषी निरवाण ॥ रु० ॥ श्री
 गुणसागर सूरिजी हो, किजे सघ कल्याण ॥ रु० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ राम ऋषी सुरगति लहि, तपतणे परकार
 ॥ दान गुणे रथकारजी, मृगलो वडो विचार ॥ १ ॥

ढाल १७० मी ॥ आजतो आणद वधामणा, दि
 ठा ऋषन जिणद ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नवि साजलो,
 एहनो एह विचार ॥ दान सीयल तपने विषे, जावन
 जो अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोटी जावना, जावो इद
 य मजार ॥ जाव थकी नवनीधी तरे, पामे नवनो पा

मजावणीरे, माता साथ करतरे माय ॥ उपज्यो ते वि
 एसे सहीरे, एम कहे अरिहतरे माय ॥ कु० ॥ ११ ॥
 इद्र चद्र नर देवतारे, जिण चक्री गणधाररे माय ॥
 जम आगल नवी बुटीयारे, अवरा किस्यो विचाररे
 माय ॥ कु० ॥ १२ ॥ चाल्या ते चाली गयारे, नही
 ते घालण द्वारे माय ॥ समजी न करे आपणीरे, सा
 चो सोड गिमाररे माय ॥ कु० ॥ १३ ॥ चावनचावी
 आपणारे, पथी पथ पुलायरे माय ॥ तिम आगल कि
 रतारनेरे, रच न रहेणो जायरे माय ॥ कु० ॥ १४ ॥
 ए उपदेश विशेषथीरे, माताजी सुसता थायरे माय ॥
 धरम करेवा कारणेरे, खिण लाखेणी जायरे माय ॥ कु०
 ॥ १५ ॥ एकोत्तर सोमी ढालमेरे, धर्म नंदना बोलरे
 माय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमीय समा निर
 मोलरे माय ॥ कु० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ पाडव प्रचु मन चिंतवे, साधु योग जो था
 य ॥ तो तो कारज सारीए, ज्ञान बले जिनराय ॥ १ ॥
 धर्मघोष मुनिश्वरु, पाच सया परीवार ॥ पाडव मथु
 रा आवीया, सर्व जीवा हितकार ॥ २ ॥ पाडव ताम
 पधारीया, वदन श्रीगुरु देव ॥ देशना सुणे सुहामणी,
 साचवता अति शेव ॥ ३ ॥

ढाल १७२ मी ॥ हनुमतो वीर आयो ॥ ए देशी
 ॥ समजो हो तुम्हे नवी प्राणी, ए जगत विणाशि
 जाणी ॥ श्री जिन धर्म आराधो, समताए शिवही सा

देशी ॥ कृति कालिज कापीयेरे, धरणी पडी ततकाल
 रे माय ॥ दु ख जरती अति रोवतिरे, त्रिलोसा अस
 रालरे माय ॥ कु० ॥ १ ॥ हाहा ए स्यु निपतुरे, अण
 चितव्यु वली आमरे माय ॥ जाइ नामे घणु पामतारे,
 शितलता अजिरामरे माय ॥ कु० ॥ २ ॥ हरी हलध
 रनी सुरतिरे, मुरती अवर न कोयरे माय ॥ मरदाना
 मरदा सिरेरे, एह अवस्था होयरे माय ॥ कु० ॥ ३ ॥
 इद्रपुरी द्वारामतिरे, सघलाही जगनो साररे माय ॥
 कनक मय सुर निरमइरे, जली वली हुइ ठाररे माय
 ॥ कु० ॥ ४ ॥ गुण सजारो एहनारे, निरमल गगा
 नीररे माय ॥ हनुकुदण लागी हिणरे, नवणे चाल्या
 निररे माय ॥ कु० ॥ ५ ॥ परजपगार शिरोमणीरे, हा
 बवव हा आतरे माय ॥ वहीला आवो वालहारे, कर
 वा मोसु वानरे माय ॥ कु० ॥ ६ ॥ हियडा हिवे तु स्युं
 रह्योरे, गयो ते तुज आधाररे माय ॥ जाइ माधव मि
 लस्ये क्यारे, जिडनो जजण हाररे माय ॥ कु० ॥ ७ ॥
 द्राजा ढाया पापीयारे, तापस थारी वाटरे माय ॥ पर
 ज्यो मारे कोसणरे, उपायो उचाटरे माय ॥ कु० ॥
 ॥ ८ ॥ जग्यो आडवर घणरे, आयमता नही वाररे
 माय ॥ सूर सरीखो जाद्वारे, होइ गयो जवहाररे मा
 य ॥ कु० ॥ ९ ॥ साजनीया साले घणुरे, सजारया
 सो वाररे माय ॥ जेविण घडी नवी चालतुरे, किम
 चालसे जम वाररे माय ॥ कु० ॥ १० ॥ धर्मनद स

वतरनी वली, जाखो श्री गुरुराज ॥ नवसायरने तार
वा, तुम्ह वरु सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलणा
जी ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नृप साजलोजी, पूर्व नवतर
वात ॥ पाचहि तुम परनव तणाजी धुरथी सुणो अ
वदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी,
पच सहोदर सार ॥ करसणनी अजीविकाजी, आप
दनारे नडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनु जा
णीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुनद्रक
पाचमोजी, प्रितीतणो मडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री
जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो सजम नार ॥ सुमति
गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥
॥ ४ ॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आ
चार ॥ शास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म
विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति करथो कनकावलिजी,
रतनावलिय विशेष ॥ सातनु सूरी मुगतावलिजी, सुम
ति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिंहनि केडी न
साचव्योजी, आविल तप वृधमान ॥ साधु सनद्रनो जा
णावोजी, ए तप पच प्रधान ॥ सा० ॥ ७ ॥ मास स
लेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुत्तर पाम ॥ ए तुम आ
विने उपनाजी, पचही पाडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥
एम सुणि व्रत आदर्याजी, परीक्षतने देइ राज ॥
पच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे आपणा काज ॥

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वाता वैरागो, जोग जयंकर
 र नागो ॥ जोगे जुल्या जे जोला, जटके जिम गिरी
 टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, बाधी रही
 अति माया ॥ पहीरण खाण अणुगी, रोग व्यथा करी
 पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहु गती माहे नर गाढो, रुल
 ता नविहुत थाढो ॥ आज लगी अत नवी आवे, द
 रसणधी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
 खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
 करता जवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इद्री जीतेवा काठा,
 इद्रीयाना फल घाठा ॥ नरक नीगोदमे परीया, काल
 घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
 पाम्या प्रचुता जारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
 जाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंमे
 वे एहा हुना ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
 रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
 सधी अति डरीए ॥ दिन दु खी उद्धरीए, पुण्ये करी
 घर जरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, अ
 मृतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पाडव पा
 चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढाले, पा
 डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
 नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशना, दूध सरीखी जाण ॥
 घुट घुट पिधी पाडवा, पूढे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वज

गति मजारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न
 करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अ
 नारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्यां
 नविजन घणां, केइ समकिन केइ व्रत धारतो ॥ ध० ॥ ५ ॥
 जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीर
 नारतो ॥ दिधी ठेली देशना, जीव घणाना काम समा
 रतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पच सया षट तिससु, सयारो
 हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरता सामठा, आया
 इद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी प
 धारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रनु आययो अ
 ततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसु, सिद्धगुणे हे सोहे न
 गवततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ ससकार काया नणि, चदन
 काठे हे किधोठे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर
 लोके हे पूजण अनीरामतो ॥ ध० ॥ ९ ॥ द्वीप गया नं
 दिश्वरे, आठ दिवसहे उठव अधिकार तो ॥ हरी पोहता
 निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो ॥ ध०
 ॥ १० ॥ श्री गिरनारे जिन तणा, दिख्या नाण हे अ
 ने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने जला, ते माटे हे ए
 स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणद आ
 णदमे, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रग वि
 नोद वधामणा, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ ध० ॥
 ॥ १२ ॥ चमोत्तर सोमी ढालमे, नारुयो नारुयोहे नि
 रवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सा० ॥ ९ ॥ मात कुताने द्रोपदिर्जा, चार्गीत्र लियो ते
 हीवार ॥ कर्मपखे तिम धर्मनेर्जा, पद्दु तजी नहि ला
 र ॥ सा० ॥ १० ॥ तिहुत्तर सोमी ए ढालमेर्जा, पाड
 वनोरे वैराग ॥ श्री गुणसागर सावसेर्जा, मुनिवर
 मोद्धनो माग ॥ सा० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ जगजीवन जगवत्तलु, जगपति जग प्रतिपा
 ल ॥ विचरेवे महिमडले, श्री जिन नेम दयाल ॥ १ ॥
 नेम दयाले देवता, सौरापुरी उद्यान ॥ रेवतकाचल म
 स्तके, हार मनाइ जाण ॥ २ ॥ जरासधना युद्धमे, ज
 रा व्यापना काल ॥ दल रोकी सहु राखिया, जूप अ
 पुठो वाल ॥ ३ ॥ दहनकाले द्वारामति, जो जिन हुतो
 माहि ॥ तो द्विपायन द्वारिका, वालि न शकतो प्राहि
 ॥ ४ ॥ गुण अनत जगवतना, कहिता न आवे अत
 ॥ गगनवमे गुण आगला, गाढो विद्यावत ॥ ५ ॥

ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सोरोमणी ॥ ए
 देशी ॥ धन धन नेम जिनेसरु, धन धन यादव वस
 उदारतो ॥ पुरुष रतन जिहा उपना, तेतो त्रीचुवनना
 शीणगारतो ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव घणा प्रजु तारीया,
 तारीतारी राजेमाति वर नारतो ॥ पहिले मुगते मोकली,
 जाणो जाणो राखे ठाम समारतो ॥ ध० ॥ २ ॥ प्रिती
 पनोती पालवी, गाढि गाढि हे काठी जगमे जोयतो ॥
 राजुल साथे नेमजी, बेहा बेहे हे निपाहि सोइतो ॥
 ध० ॥ ३ ॥ किहा नर जव किहा सुरजवे, किहारे मनोहर मु

गति मजारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न
 करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अ
 नारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्या
 नविजन घणा, केइ समकित केइ व्रत धारतो ॥ ध० ॥ ५ ॥
 जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीर
 नारतो ॥ दिधी बेली देशना, जीव घणाना काम समा
 रतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पच सया षट तिससु, सथारो
 हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरता सामठा, आया
 डद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी प
 धारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रनु आयो अ
 ततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसुं, सिद्धगुणे हे सोहे न
 गवततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ ससकार काया नणि, चदन
 काठे हे किधोठे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर
 लोके हे पूजण अनीरामतो ॥ ध० ॥ ९ ॥ द्वीप गया नं
 दिश्वरे, आठ दिवसहे उज्व अधिकार तो ॥ हरी पोहता
 निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो ॥ ध०
 ॥ १० ॥ श्री गिरनारे जिन तणा, दिख्या नाण हे अ
 ने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने नला, ते माटे हे ए
 स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणद आ
 णदमे, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रग वि
 नोद वधामणा, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ ध० ॥
 ॥ १२ ॥ चमोत्तर सोमी ढालमे, नारुयो नारुयोहे नि
 रवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सूरि साधु सुजाणतो ॥ ध० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ पाडव पाच महामुनी, वठी कुता माय ॥
पचाली ए सातहि, तप करी सोले काय ॥ १ ॥ गुण
आचारे आगला, दु कर दु कर कार ॥ घरम शरीरी
प्राणीया, पुनरपी नहीं अवतार ॥ २ ॥

ढाल १७५ मी ॥ ते मुनी वदो ते मुनी वदो ॥ ए
देशी ॥ मुनिसर पाडव पच सुहावदा, सुहावदारे सु
हावदा ॥ महामुनीसर कहावदा, वन आगणे जि
हा आवदा, तिहा मोती थाल वधावदा ॥ मु० ॥ १ ॥ गा
म नगर पुर पाटण विचरे, नवी नरा मन जावदा ॥ ज्ञान
ध्यानसुं तत्व पिठानी, एकात्म समजावदा ॥ मु० ॥
॥ २ ॥ राग द्वेष दो दूर निवारी, त्रिकर्ण सुध करा
वदा ॥ च्यार कपाय तजण चतुराइ, इद्री पाच दमाव
दा ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिहरीया पट काया केरा, नय सा
ते नवी आणदा ॥ मद आठे परीहरी नव विध, सि
थल सदा सुख जाणदा ॥ मु० ॥ ४ ॥ दसही प्रकारे
धर्म धरदा, इग्यारे अग पठावदा ॥ वारे व्रत प्र
तीमा पाले, क्रिया तेर तजावदा ॥ मु० ॥ ५ ॥ ष
उदे जेदे जीव विचारी, कोडा कारज सारदा ॥ जगम
तिरथ जिवन जगना, आप तरे पर तारदा ॥ मु० ॥
॥ ६ ॥ इती कल्पपुर वनमे आया, वहरिण साधु ख
दा वदा ॥ मोक्ष कल्याणीक नेम तणो सुणी, शेत्रुजे सि
धावदा ॥ मु० ॥ ७ ॥ अठारे हजार मुनी परीवारे,

सयारो ग्रहावदा ॥ माताजीसु पाचे पाडव, केवल
 मोक्ष लहावदा ॥ मु० ॥ ८ ॥ अवर मुनिश्वर केइ म
 गति, केइ स्वर्ग वमावदा ॥ शेष कर्म बाकी सोवन
 ने, सुर सुखनो चित लावदा ॥ मु० ॥ ९ ॥ पचाली
 पचम सुर लोके, नवही माही रहावदा ॥ अणगम
 तो आहार दियाथी, अजुह पार न पावदा ॥ मु० ॥
 ॥ १० ॥ नारद ऋषी विधी वात करीने, निश्चल मन
 फरसावदा ॥ पाप पखाली अणसण पाली, शिव गति
 नु दरसावदा ॥ मु० ॥ ११ ॥ पचाहत्तर सोमी ढाले,
 पारुव शिव पद पावदा ॥ श्री गुणसागर सुरि उजाग
 र, नागर गुरु गुण गावदा ॥ मु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ सघ चतुरविध तिर्थमे, शातिनाथ दातार॥
 थूलिन्द्र आचारमे, मत्रमे नवकार ॥१॥ मणीमा मणी
 चिंतामणी, ग्रह गणमे दिनकार ॥ श्री गौतम गुरु गणध
 रा, तरुमे सुरतरु सार ॥ २ ॥ सुर माहि जिम सुरप
 ती, नरमे नरपती जेम ॥ वसामे हरी वसजी, वि
 श्व वदीतो तेम ॥ ३ ॥

ढाल १७६ मी॥ श्रेणीक राय हुरे अनाथी निग्रथ
 ॥ ए देशी ॥ मे गायो श्रीहरी वश उदार, सरीयारे
 मन वणित काज ॥ मे० ॥ पामी परससा खरी, अधि
 काइरे उपनी आज ॥ मे० ॥ १ ॥ वारे दसमा जिन
 तणे, वस ए उतपन ॥ मे० ॥ विस्तरी शाखा घणी,
 काइ हुवारे बहु पुरुप रतन ॥ मे० ॥ २ ॥ अपर ना

म सोहामणो, नृप यदुधी जोय ॥ मे० ॥ राय याद्व
 राजीवा, काइ पहरीरे परसिद्धा सोय ॥ मे० ॥ ३ ॥
 विसमोवली बावीसमो, ए वगे जिणद॥मे०॥उपजीया
 आणद, काइ आयारे तिहा चोसठ इद्र ॥ मे० ॥४॥
 कृष्णने बलदेवजी, वसमे श्रवतस ॥ मे० ॥ वासी न
 गरी द्वारीका, काइ किधोरे आर कुल विध्वस ॥ मे०॥
 ॥ ५ ॥ मात फूड्याए जाइ जला, धर्म नदने जिम ॥
 ॥ मे० ॥ शक्र सुत शोभा धरी, काइ प्रौढीरे पौरखनी
 जिम ॥ मे० ॥ ६ ॥ सब अने परजुनना, बल तणो
 नही पार ॥ मे० ॥ एक एकाथी वना, काइ अगणीत
 रे हरी वश कुमार ॥ मे० ॥ ७ ॥ इद्रनगरी द्वारीका,
 द्वारीका पिण सोय ॥ मे० ॥ उपमा सरखी सही, कां
 इ अतररे न दिसे कोय ॥ मे० ॥ ८ ॥ नित हरख वि
 नोदमें, नित हरख विलास ॥ मे० ॥ द्वारीका नगरी
 तणो, काइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ मे० ॥ ९ ॥
 नित्य सुत जनमोड्वु, नित्य सुत निसाल ॥ मे० ॥ नि
 त्य सुत परणेतना, काइ करीएरे घर घर कल्याण ॥
 मे० ॥ १० ॥ खेल खेलनातो खरा, घुघराना घमकारन
 मे० ॥ धोक धपमप मादला, काइ वाजेरे वार्जीत्र अ
 पार ॥ मे० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवना, साधु जाग
 ती अपार ॥ मे० ॥ जली जावे जावना, काइ जाविया
 रे जल जाव उदार ॥ मे० ॥ १२ ॥ प्रघल जाव प्र
 जावना, परम पुण्य प्रकाश ॥ मे० ॥ श्रीफला श्री

कागणी, कांड पुगिरे पुगी मन आश ॥ मे० ॥ १३ ॥
 नारी निक्की शोचती, पहेरीयां पटकूल ॥ मे० ॥ तनु
 सोल शिणगार करी, काइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥
 मे० ॥ १४ ॥ रगरोल कचोलना, थाले मोती सार ॥
 मे० ॥ करे सुगुरु वधामणा, काइ वरतेरे जिनमतनी
 वार ॥ मे० ॥ १५ ॥ आज अठे दिवालिका, नारी जा
 क ऊमाल ॥ मे० ॥ आज परव पजूसणां, काइ किजे
 रे उन्नव सुविसाल ॥ मे० ॥ १६ ॥ मीले साहमी सा
 मटा, साहमीणी सुविचार ॥ मे० ॥ धवल मगल चा
 रसु, काइ जन जनरे जय जयकार ॥ मे० ॥ १७ ॥
 गठ स्वगठ परिमाणसु, विजयवत विशेष ॥ मे० ॥
 श्री विजय गठ राजीया, काइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश
 ॥ मे० ॥ १८ ॥ विजयऋषी विद्याबली, धर्मदास मु
 निश ॥ मे० ॥ क्लमासागर खेमजी, काइ जेहनिरे ज
 गमाहि जगिज ॥ मे० ॥ १९ ॥ श्री पद्मसागर सूरिजी,
 सुजस सुजस नरपूर ॥ मे० ॥ पाय प्रणमी श्रीगुरु त
 णा काइ पन्नणेरे गुणसागर सूरि ॥ मे० ॥ २० ॥ स
 मत सोल बहोत्तरे, मास श्रावण शुद्ध ॥ तिज सोम सु
 मुहूरता, काइ वासररे वारु अविरुद्ध ॥ मे० ॥ २१ ॥
 कुर्कटश्वर नगरमें, पार्श्व स्वामी पसाय ॥ सघने उठ
 कपणे, काइ रचियेरे मे चरित सुजाय ॥ मे ॥ २२ ॥
 ढालसागर नाम ए, श्री हरिवसनो विस्तार ॥ शुद्ध
 चावे साजले, काइ पामेरे सुख सपत्ति सार ॥ मे० ॥

म सोहामणो, नृप यदुधी जोय ॥ मे० ॥ राय यादव
 राजाया, काइ पहरीरे पगसिद्धा सोय ॥ मे० ॥ ३ ॥
 विसमोवली बावीसमो, ए वजे जिणद॥मे०॥उपजीया
 आणद, काइ आयारे तिहा चोसठ इद्र ॥ मे० ॥४॥
 कृष्णने बलदेवजी, वसमे श्रवतस ॥ मे० ॥ वामी न
 गरी द्वारीका, काइ किधोरे आर कुल विध्वस ॥ मे०॥
 ॥ ५ ॥ मात फूड्याए जाइ जला, धर्म नदने निम ॥
 ॥ मे० ॥ शक्र सुत शोभा धरी, काइ प्रौढीरे पौरखनी
 शिम ॥ मे० ॥ ६ ॥ सब अने परजुनना, बल तणो
 नही पार ॥ मे० ॥ एक एकाथी वना, काइ अगणीत
 रे हरी वश कुमार ॥ मे० ॥ ७ ॥ इद्रनगरी द्वारीकां,
 द्वारीका पिण सोय ॥ मे० ॥ उपमा सरखी सही, कां
 इ अतररे न दिसे कोय ॥ मे० ॥ ८ ॥ नित हरख वि
 नोदमें, नित हरख विलास ॥ मे० ॥ द्वारीका नगरी
 तणो, काइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ मे० ॥ ९ ॥
 नित्य सुत जनमोच्यु, नित्य सुत निसाल ॥ मे० ॥ नि
 त्य सुत परणेतना, काइ करीएरे घर घर कल्याण ॥
 मे० ॥ १० ॥ खेल खेलनातो खरा, घुघराना घमकारन
 मे० ॥ धोक धपमप मादला, काइ वाजेरे वार्जीत्र अ
 पार ॥ मे० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवना, साधु जाग
 ती अपार ॥ मे० ॥ जली जावे जावना, काइ जाविया
 रे जल जाव उदार ॥ मे० ॥ १२ ॥ प्रघल जाव प्र
 जावना, परम पुण्य प्रकाश ॥ मे० ॥ श्रीफला श्री

•

॥ २३ ॥ एकसो गहुत्तरे ए, ढालनो सोजाग ॥ आदे
तो आशावरी, काइ अतेरे धन्याथी राग ॥ मे० ॥
॥ २४ ॥ जत्र लगे गिरी मेरुजा, सङ्गल गिरीवर इश
॥ तव लगे हरीवस ए, काइ याज्येरे वीर विश्वा
विस ॥ मे० ॥ २५ ॥

कलश ॥ हरिवस गायो सुजम पायो, ज्ञान बुद्धि
प्रकाशनो ॥ पाप त्राठो गयो नाठो, पुण्य आयो आशनो
॥ १ ॥ कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणत सोहाम
णो, पुज्य श्री गुणसूरि जपे, सघरग वधामणो ॥ २ ॥
॥इति हरिवस ढालसागर खड ९ ढाळा १७६ समाप्त ॥

(२५३०३ . ६)
॥ १०११ ॥



जैन धर्म सवधी ठापेला पुस्तकोनु सूचीपत्र.

- १ अन्नना सतीको रास २२ ढाळालो किमत १ आना
- २ स्तवन सजाय संग्रह प्राग बिजो किमत ४ आना
- ३ अनुपूर्वकी पोथी कपडाका कवहर वाणी किमत १ आना
- ४ सिद्धचक्र जगवानको मढळ पाटो किमत २ आना
- ५ श्री चोविस तीर्थकराका दरसणकी पोथी किमत १ आना
- ६ आनंद बननी छत चोवीसी स्तवन किमत ८१॥ आना
- ७ देवचंद्रमी छत चोवीसी स्तवन किमत ८१॥ आना
- ८ आणुपूर्वी साधी किमत अर्धा आना
- ९ जैन चैत्य वदन संग्रह किमत १ आना
- १० जैन घोषो (जिन स्तुती) संग्रह किमत १॥ आना.
- ११ मृह्दालोयया किमत ८१॥ आना

